Samvid® BOOKS

हिन्दी

व्याकरण व पाठ्यपुस्तक

उत्तर पुस्तिका

कक्षा

6

© Publishers

वैधानिक चेतावनी

इस पुस्तक के किसी भी अंश या भाग की पुन: प्रस्तुति या प्रतिलिपि किसी भी रूप में अन्यत्र नहीं की जा सकती है। प्रकाशक की लिखित पूर्व अनुमति के बिना किये गए ऐसे किसी भी कार्य के लिए संबंधित व्यक्ति वैधानिक कार्यवाही या वाद के भागीदार होंगे। सब तरह के वैधानिक विवादों का निपटारा मथुरा न्यायालय के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत होगा। पुस्तक को लिखते समय यद्यपि पूर्ण सावधानी रखी गयी है, फिर भी मुद्रण में किसी प्रकार की त्रुटि के लिए प्रकाशक व मुद्रक की जिम्मेदारी नहीं है ।

हिन्दी–6

1 विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** बरसाने **(ख)** सरसाने
   (ग) भीषण **(घ)** संकट
   (ङ) पूर्ण
2. **(क)** कवि के अनुसार हमारा ध्येय स्वतन्त्रता प्राप्त करना है।
   (ख) झंडे को ऊँचा रखने से तात्पर्य है कि भारतवासी तिरंगे को गौरव का प्रतीक मानते हैं। कवि चाहता है कि ऐसे गौरवशाली देश का राष्ट्रीय झण्डा 'तिरंगा' सदैव ऊँचा ही रहे, जिससे हमारे देश का मान-सम्मान सदा बना रहे।
   (ग) कवि ने झण्डे को 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' इसलिए कहा है क्योंकि यह 'तिरंगा' सम्पूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त करने वाला है। साथ ही हमारी राष्ट्रीय भावनाओं का प्रमुख प्रेरणा स्रोत है।
   (घ) कवि मातृभूमि को स्वतन्त्रता दिलाने के उद्देश्य से वीरों को जान की बाजी लगा देने के लिए बुला रहा है।
   (ङ) तिरंगे को देखकर वीरों के मन में अपने देश की रक्षा हेतु जोश, आनन्द एवं साहस के भाव जाग्रत होते हैं।
   (च) स्वतन्त्रता संग्राम में भारत माँ के वीर सपूतों के साहस और पराक्रम को देखकर शत्रु काँप उठते हैं।
3. **(क)** कवि कहता है कि तिरंगा झण्डा हमारी मातृभूमि का गौरव है। यह सदैव ऊँचा रहे और देश का गौरव बढ़ाता रहे।
   (ख) कवि कहता है कि आजादी के भीषण संग्राम में भारत के स्वतंत्रता सेनानियों का जोश तिरंगे झण्डे को देखकर प्रत्येक क्षण बढ़ता जाता था अर्थात् वे लोग दुगने उत्साह के साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते थे।
   (ग) कवि कहता है कि इस झण्डे के नीचे रहते हुए हम निर्भय होकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् हम संगठित रहेंगे तो सदैव स्वतंत्र रहेंगे।
   (घ) कवि कहता है कि भारत की शान एवं गौरव के प्रतीक इस झण्डे की प्रतिष्ठा में तनिक भी आँच नहीं आनी चाहिए। इसकी रक्षा में भले ही हमें अपने प्राणों को न्योछावर करना पड़े।

भाषा की बात

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करें।
2. पूर्ण, शान, वीरो, ऊँचा।
3.

शब्द	पर्यायवाची
सुधा –	अमृत, अमिय
विश्व –	जगत, संसार
झंडा –	ध्वज, पताका
माता –	जननी, माँ
शत्रु –	अरि, बैरी
तन –	देह, शरीर

4. **शब्द –** **विलोम**
   स्वतंत्र– परतंत्र
   शत्रु – मित्र
   नीचे – ऊपर
   विजय– पराजय

प्रायोजना कार्य

1. छात्र स्वयं करें।
2. छात्र स्वयं करें।
3. छात्र स्वयं करें।
4. (i) झंडे को सूर्योदय के बाद तथा सूर्यास्त से पहले फहराया जाना चाहिए।
   (ii) झंडे को जमीन पर नहीं छूने देना चाहिए।
   (iii) राष्ट्रगान के समय सावधान मुद्रा में खड़े हों।
   (iv) कार्यक्रम के अंत में ध्वज को सम्मानपूर्वक उतारें।
5. छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (ब), **3.** (द), **4.** (स), **5.** (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. तन–मन **2.** काँपे
3. भय–संकट **4.** ध्येय
5. देश–धर्म

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (घ)।

2 कटुक वचन मत बोल

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. (क) (iii) कठोर **(ख)** (ii) औषधि

2. (क) अगर जीभ **(ख)** मानव
(ग) मधुर **(घ)** नर्क

3. (क) मालिक ने लुकमान की बुद्धिमानी की परीक्षा प्रश्न पूछकर ली और कहा— अगर तुम उत्तर देने में कामयाब हो गए तो तुम्हें गुलामी से छुट्टी दे दी जाएगी।

(ख) जिज्ञासु ने कन्फ्यूशस से यह प्रश्न किया कि सबसे दीर्घजीवी कौन होता है?

(ग) श्रीमती शास्त्री नौकर पर क्रोधित इसलिए हुईं क्योंकि उससे कोई काम बिगड़ गया था।

(घ) राजा ने स्वप्न में देखा कि उसके सारे दाँत टूट चुके हैं।

(ङ) बुलबुल— (*सुबह-सुबह ताजे खिले फूल से*) "अभिमानी फूल! इतराओ मत! इस बाग में तुम्हारे जैसे बहुत फूल खिल चुके हैं।"
फूल— (*हँसकर*) ''मैं सच्ची बात पर नाराज नहीं होता, पर एक बात है कि कोई भी अपने प्रिय से कड़वी बात नहीं कहता।''

4. (क) लुकमान ने अपने मालिक से दोनों प्रश्नों के उत्तर में जीभ ही इसलिए कहा क्योंकि यदि जीभ अच्छी है, तो सब अच्छा है और जीभ अच्छी नहीं है तो सब बुरा है अर्थात् जीभ के कारण ही सारी बुराई और भलाई है।

(ख) जो नम्र होता है, वही अधिक समय तक जीता है। पाठ के अनुसार एक उदाहरण यह है कि जीभ दाँतों से पहले जन्म के समय ही मुँह में होती है और दाँत बाद में आते हैं। दाँत अपनी कठोरता के कारण पहले चले जाते हैं परन्तु जीभ कोमल होती है, लचीली होती है, नम्र होती है इसलिए वह अधिक समय तक रहती है।

(ग) जीभ के दुरुपयोग से समाज में नर्क के समान कष्टमय वातावरण पैदा हो जाता है। मीठी वाणी के प्रयोग से ही समाज में खुशहाली आ सकती है परन्तु जब उसका सही उपयोग नहीं होता तो पूरा संसार संकट में पड़ जाता है। महाभारत का युद्ध भी जीभ के दुरुपयोग के कारण ही हुआ था।

(घ) प्रस्तुत कथन का भाव यह है कि सभी लोगों को वाणी मिली हुई है लेकिन उसका सही उपयोग सबको नहीं आता। किसी की वाणी प्रेम की वर्षा करती है, तो किसी के द्वारा बोले गए शब्द कई झगड़ों को पैदा कर देते हैं। अत: बोलने की कला किसी-किसी को ही प्राप्त है।

(ङ) वस्तुत: पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा विनम्र और मधुर बोलना चाहिए। विनम्रता और प्रेमपूर्ण भाषा के प्रयोग से मनुष्य दीर्घजीवी होता है। कड़वी बातें झगड़ों का कारण बनती हैं। वाक्चातुर्य ही व्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है।

5. (क) मनुष्य की जीभ मात्र तीन इंच लम्बी होती है लेकिन इसके द्वारा बोले गए कटुवचन छ: फुट लम्बे आदमी के तन-मन को वेध देते हैं। वह मरे के समान हो जाता है। इस वाणी का दुरुपयोग ही तो झगड़ों की जड़ है।

(ख) किसी का हृदय कटु वाणी से इसलिए दु:खी नहीं करना चाहिए क्योंकि कटु वचन तीर के समान कानों के मार्ग से प्रवेश करके सारे शरीर को वेध डालते हैं और शरीर को दु:ख पहुँचाते हैं।

(ग) मनुष्य बातों के द्वारा ही असम्भव कार्य को सम्भव बना सकता है। मृदु वचन और नम्रतापूर्ण आचरण से मनुष्य महत्वपूर्ण बन सकता है और इसके विपरीत आचरण से वह अपने महत्व को खो बैठता है। अत: बात बोलने के ही माध्यम से व्यक्ति समाज में आदरणीय और निरादरणीय बनता है।

6. (क) यदि लुकमान की जगह मैं होता तो उसके प्रश्नों का यह उत्तर देता कि संसार में जीभ सारी

भलाई और बुराई की जड़ है। जीभ के मृदु वचन बोलने पर सर्वत्र सुख, कटु वचन बोलने पर सर्वत्र कलह फैलता है। अत: मेरा भी उत्तर वही होता।

(ख) यदि हमें वाणी का वरदान न मिला होता तो हम अपने मन के भावों को अपने दूसरे साथियों से न कह पाते। दूसरों के भावों को सुनकर उनकी सहायता न कर पाते।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें और लिखें।
2. जिज्ञासु, दार्शनिक, हृदय, प्रशंसा, हँसकर।
3. **स्वप्न—** स्वप्न देखने के साथ-साथ कर्मशील भी बनना चाहिए।

   लोकप्रिय—मधुर वाणी व्यक्ति को लोकप्रिय बना देती है।

   ऐश्वर्य— प्रभु का ऐश्वर्य संपूर्ण जगत में फैला हुआ है।

   कारावास— जवाहरलाल नेहरू ने आजादी के लिए काफी समय कारावास में बिताया।

   अभिमानी— रावण अभिमानी व्यक्ति था।
4. **(क) विकारी शब्द—** लड़की, तालाब, गाँव, नगर।

   (ख) अविकारी शब्द— ही, भी, तथा, इधर।

प्रायोजना कार्य—

1. छात्र स्वयं करें। यथा—

   तोता और कोयल

   एक बार की बात है, एक बाग में तोता और कोयल रहते थे। तोता कड़वी बातें करता, कोयल मधुर स्वर में बोलती। लोग कोयल की बातें सुनते और उसे दाना-पानी देते। तोते से कोई भी बातें नहीं करता, इस प्रकार तोता अकेला पड़ गया।

   शिक्षा— कड़वी वाणी अकेला बना देती है।
2. मीठी वाणी बोलने की सलाह देते हुए अपने भाई को पत्र

   प्रिय भाई रवि,

   सप्रेम नमस्ते।

   आशा करता हूँ कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगे। भाई! मैं तुमसे एक बात विशेष रूप से कहना चाहता हूँ—हमेशा मीठी वाणी बोलो। मीठे शब्द न केवल सामने वाले का दिल जीतते हैं, बल्कि अपने जीवन को भी सुंदर बना देते हैं।

   कड़वी वाणी बोलने से रिश्ते टूट जाते हैं। एक कहावत है— ''वसीकरण एक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर'' अर्थात् मधुर वाणी से लोग वश में हो जाते हैं। अत: सबसे नम्रता से बोलो। मीठी वाणी तुम्हें सबका प्रिय बना देगी।

   तुम्हारा बड़ा भाई,

   सुशील
3. छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. बुद्धिमान **2.** मानव **3.** वाक्चातुर्य
4. दाँत **5.** कड़वा

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

3 हार की जीत

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) मंदिर में **(ख)** (i) अपाहिज बनकर
2. **(क)** छवि **(ख)** अस्तबल

   (ग) कँगले **(घ)** गरीबों
3. **(क)** बाबा भारती अपने घोड़े को सुलतान नाम से पुकारते थे।

   (ख) खड्गसिंह एक कुख्यात डाकू था।

   (ग) खड्गसिंह बाबा भारती के पास घोड़ा देखने के लिए गया था।

   (घ) खड्गसिंह ने जाते समय बाबा भारती से कहा कि बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

   (ङ) खड्गसिंह ने अपने को वैद्य दुर्गादत्त का सौतेला भाई बताया था।

4. **(क)** बाबा भारती गाँव से बाहर एक मन्दिर में रहते थे और भगवान की पूजा किया करते थे। खाली समय में अपने घोड़े सुलतान की सेवा किया करते थे। यही उनकी दिनचर्या थी।

(ख) यह कथन बाबा भारती ने डाकू खड्ग सिंह से कहा, क्योंकि खड्गसिंह सुलतान को देखने की चाह लेकर आया था।

(ग) अपाहिज ने बाबा भारती से कहा– ''ओ बाबा! इस कँगले की सुनते जाना।'' बाबा भारती ने पास आकर कष्ट पूछा तो उसने बताया कि बाबा मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। यहाँ से तीन मील दूर 'रामवाला' तक जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो तो परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।

(घ) बाबा भारती ने खड्गसिंह से इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करने के लिए इसलिए कहा क्योंकि इस घटना को जानकर लोगों का गरीब और दीन-दुखियों से विश्वास उठ जाएगा।

5. **(क)** खड्गसिंह इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। वह सुलतान को किसी भी तरह प्राप्त कर लेना चाहता था लेकिन उसका इस तरह घोड़े को ले जाना उचित नहीं था, क्योंकि इस घटना को जानने के बाद गरीब की कोई भी व्यक्ति सहायता करने के लिए तैयार नहीं होगा और इस तरह गरीबों का विश्वास खत्म हो जाएगा।

(ख) बाबा भारती के शब्द खड्गसिंह के कानों में लगातार गूँज रहे थे। वह सोचने लगा कि कितने ऊँचे विचार हैं। यह बाबा वास्तव में मनुष्य न होकर साक्षात देवता है। इन विचारों ने उसके हृदय को बदल दिया और उसने घोड़े को चुपचाप ले जाकर उनके अस्तबल में बाँध दिया और जब वहाँ से चला तो उस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। उसे लगा कि आज उसने कोई अच्छा काम किया है।

6. **(क)** यदि बाबा भारती घोड़ा नहीं दिखाते, तो खड्गसिंह उस घोड़े को चुराने का प्रयास करता।

(ख) यदि बाबा भारती अपाहिज की आवाज सुनकर घोड़े को नहीं रोकते तो खड्गसिंह किसी अन्य योजना के द्वारा घोड़े को छीनकर ले जाने का प्रयास करता।

(ग) यदि बाबा भारती की जगह मैं होता तो उस अपाहिज बने डाकू खड्गसिंह द्वारा घोड़े को छीनकर ले जाने पर अनुनय-विनय से रोकने की कोशिश करता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें और लिखें।
2. बलवान, सुलतान, नमस्कार, प्रार्थना।
3. **करुणा—** सिद्धार्थ को पक्षी की छटपटाहट पर करुणा आ गई थी।

अपाहिज—हमें दीन-दुखी और अपाहिजों की सहायता के लिए तैयार रहना चाहिए।

पवित्र— माँ शारदा के पवित्र दर्शन के लिए प्रतिवर्ष यात्री जाते हैं।

घमण्ड— व्यक्ति का घमण्ड उसके पतन का कारण बन जाता है।

4.

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
कीर्ति, खेत, बाबा भारती, खड्ग सिंह, मंदिर	तुम्हें, उसकी, उन्हें, उनका, उस	कुख्यात, पवित्र, प्रसन्न, सुन्दर, विचित्र	चिल्लाना, हिनहिनाना, तनना, बोला, दिखाया

5. अपाहिज; अस्तबल; प्रशंसक; परनिंदक।
6. **(क)** का, **(ख)** की, **(ग)** का, **(घ)** को, **(ङ)** की, **(च)** के।
7. • 'इया' प्रत्यय वाले शब्द—

(i) दु:ख + इया = दुखिया
(ii) लिख + इया = लिखिया
(iii) लट्ठ + इय = लठिया
(iv) साथ + इया = साथिया
(v) खाट + इया = खटिया

• 'आहट' प्रत्यय वाले शब्द—

(i) मुस्करा + आहट = मुस्कराहट
(ii) चिल्ला + आहट = चिल्लाहट
(iii) खिलखिला + आहट = खिलखिलाहट
(iv) घबरा + आहट = घबराहट
(v) बिलबिला + आहट = बिलबिलाहट

अनुभव विस्तार

1. छात्र स्वयं करें।
2. **कहानी के आगे**

उन्होंने अपना रथ रोक दिया। राजा दयालु था। उसने भिखारी को रथ में बिठा लिया और उसे राजमहल ले गया। राजा ने भिखारी

को भोजन कराया और धन देकर उसकी सहायता की, जिससे वह भीख माँगने का काम बंद कर कोई कारोबार कर सके। राजा की दया-भावना को देखकर भिखारी की आँखों में आँसू आ गए। भिखारी ने राजा को धन्यवाद दिया और अपने घर चला गया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (ब), **4.** (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. खड्गसिंह **2.** घोड़ा
3. वायु-वेग **4.** अपाहिज
5. खड्गसिंह

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

4 अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) भूमण्डलीकरण के **(ख)** (ii) सन्तोष।

2. **(क)** भाव **(ख)** आन्दोलन
(ग) बात **(घ)** हिन्दुस्तान

3. **(क)** हम सारी दुनिया में टी. वी. और टेलीफोन के माध्यम से घूम रहे हैं।

(ख) साक्षरता से आशय किताबी ज्ञान से है।

(ग) भूमण्डलीकरण का परिवारों पर यह प्रभाव पड़ा है कि वे दूर-दूर बिखर गये हैं। पारिवारिक समरसता समाप्त हो रही है। आपसी सम्बन्ध टूट रहे हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे से बातचीत तक नहीं कर रहे हैं। उनमें आपसी सम्बन्ध समाप्त होते चले जा रहे हैं।

(घ) मन के भावों को उत्साहित कर देने वाली काव्यधारा अब लुप्त हो रही है। मन में देश-प्रेम, समता, एकता, मर्यादा पालन, अन्याय की समाप्ति तथा न्याय की प्राप्ति के लिए जन-जन को जगाने वाली काव्य रचनाओं का सृजन अब नहीं हो रहा है।

(ङ) उक्त पंक्ति के माध्यम से कवि बताना चाह रहा है कि लोगों में धन एकत्र करने की लालसा बढ़ गई है। यद्यपि धनाभाव नहीं है फिर भी वे उचित-अनुचित साधनों से धन एकत्र करने में जुटे हुए हैं। आन, मान तथा शान की उन्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं है।

(च) अपने नैतिक मूल्यों के बल पर भारत ने जो विश्व गुरु की पदवी प्राप्त की थी तथा विश्व में जो पहचान बनाई थी, किन्तु अब हम भारतीय अपने देश, अपने समाज, अपनी संस्कृति सभ्यता को भूल चुके हैं। अत: अब हमें स्वयं को पहचानना होगा।

(छ) जिन कवियों के नामों का उल्लेख किया है वे हैं— कुलगुरु कालिदास, राजा भोज, सूरदास, तुलसीदास, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रामधारी सिंह 'दिनकर', रहीम और रसखान।

4. **(क)** कवि कहता है कि टी. वी., टेलीफोन तो बज रहे हैं लेकिन परिवार के सदस्य आपस में बातचीत नहीं कर रहे हैं। आज के कवियों द्वारा रचित कविताओं में टूटते परिवारों की तरह ही बिखरे हुए छंद दिखाई देते हैं।

(ख) कवि कहता है कि आज के नेताओं ने राजनीति को कूटनीति में बदल दिया है। वे अपने स्वार्थ में लगे हुए हैं। उन राजनेताओं में अब जन-सेवा का भाव नहीं रहा। समता और एकता विलुप्त हो चुकी है। नाव चलाकर स्वधर्म का पालन करने वाला रामराज का केवट, पता नहीं कहाँ खो गया है।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं उच्चारण करें और लिखें।

2. हिन्दुस्तान, दुनिया, परिवार, मृदु, सन्तोष।

3. **संस्कार—** भारतीय संस्कृति में में उच्च संस्कार हैं।

आन्दोलन— देश की आजादी के लिए देशवासियों ने अनेक आन्दोलन चलाए।

वैभव— भारत भूमि सांस्कृतिक वैभव से परिपूर्ण है।

राजनीति— देश की राजनीति अब भटक चुकी है।

शिक्षा—व्यक्ति को शिक्षा का उद्देश्य पहचानना चाहिए।

4. ऊँचे-ऊँचे, जन-जन, बड़ी-बड़ी, बड़े-बड़े, जन्म-जन्म, दैव-विधान, कूट-चाल, जन-सेवा, राम-राज।

5. ताकत, जरा, फूहड़, टी॰ वी॰, टेलीफोन।

अनुभव विस्तार

1. छात्र स्वयं करें।

2. छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (अ), **4.** (द), **5.** (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. महानगर **2.** परिवारों **3.** सन्तोष **4.** हनुमान **5.** फूहड़

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

5 व्याकरण – परिवार

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iv) क्रिया देवी के बिना

(ख) (ii) विशेषण

2. **(क)** आघात **(ख)** विशेषण

(ग) क्रिया देवी **(घ)** सम्बन्धबोधक

3. **(क)** संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

(ख) सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों के बदले में आते हैं।

(ग) समुच्चयबोधक दो या दो से अधिक वाक्यों को जोड़ने अथवा अलग करने का काम करते हैं।

4. **(क)** संज्ञानन्द और क्रिया देवी के तीन बच्चे हैं—एक पुत्र और दो पुत्रियाँ। पुत्र का नाम सर्वनाम है। उनकी दो बेटियों के नाम हैं—विशेषण तथा क्रिया-विशेषण। उनके दो नौकर भी हैं जिनके नाम हैं—सम्बन्धबोधक तथा समुच्चयबोधक।

(ख) व्याकरण के परिवार में विशेषण का बहुत बड़ा महत्व है। विशेषण संज्ञा और सर्वनाम की विशेषताओं, उनके गुणों को बताने वाला शब्द है। विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं—

सामान्य अवस्था, तुलनात्मक अवस्था, उत्तमावस्था। जैसे— महान, महानतर, महानतम।

5. **(क)** क्रियाविशेषण द्वारा किसी वाक्य में क्रिया की विशेषता बताई जाती है; जबकि विशेषण अपने वाक्य में प्रयुक्त किसी संज्ञा या सर्वनाम की ही विशेषता स्पष्ट करता है।

(ख) संकट के समय यदि हमारे मित्र अचानक साथ छोड़ दें, तो हमें अचम्भा या विस्मय होगा। लेकिन हम प्रयास करेंगे कि उस मित्र का सहयोग हमको मिले। यदि किसी कारण ऐसा नहीं होता है तो हम स्वयं संकट का मुकाबला करने को तैयार रहेंगे।

(ग) विस्मयादिबोधक शब्द हमारे मन के भय, आक्रोश, कष्ट, खुशी, प्रशंसा, अचम्भा आदि भावों को प्रकट करते हैं।

6. **(क)** हम समुच्चयबोधक शब्दों के अभाव में अपनी बात पूरी कर तो सकते हैं लेकिन अनावश्यक रूप से शब्दों की आवृत्ति बढ़ने से वाक्य की संरचना का रूप बिगड़ सकता है।

(ख) यदि भाषा में क्रिया का प्रयोग न किया जाए तो वाक्य अधूरा रहेगा और बात का उद्देश्य पता नहीं चलेगा।

(ग) यदि व्याकरण में सर्वनामों का प्रयोग न होता तो संज्ञाओं के प्रयोग बार-बार करने पड़ते जिससे हमें भाषा को बोलने, पढ़ने अथवा लिखने के प्रति अरुचि बनी रहती।

भाषा की बात

1. **सन्नाटा पसरना—** कोरोना काल में सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहता था।

गप्पें लड़ाना— चौराहे पर बैठे लोग आपस में गप्पें लड़ाते रहते हैं।

आदत में शुमार होना— बड़ी-बड़ी बातें करना राहुल की आदत में शुमार है।

हाथ बँटाना— बच्चों को घर के कामकाज में हाथ बँटाते रहना चाहिए।

2.

शब्द	विलोम शब्द
सुत	सुता
मित्र	शत्रु
प्रशंसा	निंदा
हर्ष	विषाद
नीरस	सरस
सत्य	असत्य
आशा	निराशा

3. **घर—** गृह, सदन, भवन।
पुत्र— बेटा, सुत, तनय।
पुत्री— सुता, बेटी, तनया।
हाथ— कर, हस्त, बाहु।
मित्र—दोस्त, सखा, साथी।

4. 1. यह कथन विशेषण का है। विशेषण का काम है संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताना।
2. यह कथन क्रिया विशेषण का है। क्रिया विशेषण की विशेषता बताती है।
3. यह वाक्य संज्ञानन्द का है। किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।
4. यह कथन सर्वनाम का है। सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के बदले करते हैं।

5. (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया
(ग) विकारी शब्द (घ) अविकारी शब्द
(ङ) भूतकाल

6.

● संज्ञा	भेद
प्राणियों	जातिवाचक संज्ञा
वाणी	जातिवाचक संज्ञा
वरदान	भाववाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
मानव	जातिवाचक संज्ञा
सत्कर्मों	भाववाचक संज्ञा
स्वर्ग	व्यक्तिवाचक संज्ञा
पृथ्वी	व्यक्तिवाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
प्रेम	भाववाचक संज्ञा
व्यवहार	भाववाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
गोपाल कृष्ण गोखले	व्यक्तिवाचक संज्ञा
बचपन	भाववाचक संज्ञा
बुद्धि	भाववाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
जीवन	भाववाचक संज्ञा
बुढ़ापा	भाववाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
गंगा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
हिमालय	व्यक्तिवाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
लड़के	जातिवाचक संज्ञा
● **संज्ञा**	**भेद**
पुस्तक	जातिवाचक संज्ञा

अनुभव विस्तार—

1. व्याकरण परिवार के सदस्यों के नाम हैं—
संज्ञानन्द, क्रिया देवी, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक।

संज्ञानंद—किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव आदि के नाम का बोध संज्ञानंद के द्वारा होता है।

क्रिया देवी—क्रिया देवी के बिना कोई भी बात पूरी नहीं होती।

सर्वनाम—संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है।

विशेषण—ये संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषण बताते हैं।

क्रियाविशेषण—क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

संबंधबोधक—जो अव्यय शब्द संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध

वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। जैसे— के ऊपर, से पहले आदि।

समुच्चयबोधक—जो अव्यय शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं वे समुच्चयबोधक कहलाते हैं, जैसे—ताकि, क्योंकि, और आदि।

विस्मयादिबोधक—ये शब्द हर्ष, विषाद, घृणा, भय आदि शब्दों को प्रकट करते हैं; जैसे— बाप रे!, हाय!, छी-छी!, शाबाश! आदि।

2. छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (ब), **4.** (ब), **5.** (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अर्द्ध गोलाकार **2.** पत्रिका
3. संस्कृत **4.** देवभाषा
5. अपभ्रंश

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (ख)।

6 विजय गान

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) बाधाएँ **(ख)** (iv) पाप से

2. **(क)** तलवारों **(ख)** अंगार
(ग) काल स्वयं **(घ)** अगस्त्य

3. **(क)** वीरों के पथ में बाधाएँ बरस रही हैं।

(ख) नभमण्डल से अंगार उगलने के लिए कहा गया है।

(ग) कवि समुद्र को हिमालय से, सूर्य को चन्द्रमा से, धरती को आकाश से टकरा देना चाहता है।

(घ) कवि नवयुवकों को तपस्वी इसलिए बन जाने को कह रहा है जिससे उनके ऊपर माया-मोह का प्रभाव न पड़ सके।

(ङ) प्राणों की पतवार से कवि का आशय है कि हे वीर पुरुषों तुम बाधाओं के सागर को पार करने में प्राणों की बाजी लगा दो ताकि किसी तरह का डर तुम्हारे सामने न टिक न सके।

(च) जब वीर पक्का इरादा कर लेते हैं, तब काल उनसे डरने लगता है।

(छ) कवि वीरों को विजय पथ पर बाधाओं की चुनौती स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने के लिए कह रहा है। मनुष्य जीवन एक महासंग्राम है। इसमें अनेक तरह की रुकावटें आती हैं। इन रुकावटों पर सफल होने के लिए साहसपूर्वक आगे बढ़ना चाहिए।

मनुष्य प्राण-शक्ति के सहारे विपत्तियों के सागर को पार करने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

4. **(क)** कवि कहता है कि हे वीरो! तुम्हारे मार्ग में रुकावटों की वर्षा हो रही है। वर्षा जलधारा के समान ये बाधाएँ झड़ी लगाकर बरस रही हैं; परन्तु हे वीरो! तुम्हें घबराना नहीं है क्योंकि तुम वीर हो और वीर तो अपनी प्राण शक्ति की पतवार से विपत्तियों के सागर को पार कर जाते हैं।

(ख) कवि कहता है कि हे वीरो! तुम्हें किसी भी प्रकार का मोह अपने जाल में न जकड़ सके इसके लिए तुम एक तपस्वी की तरह रूप धारण कर लो तथा तुम लोहे के सदृश हृदय वाले बन जाओ ताकि काल भी तुमसे भयभीत हो उठे। तुम्हें ध्रुव के समान पक्के इरादों वाला बनना है।

भाषा की बात

1. छात्र अपने अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करना सीखें।

2. वीरवर, निश्चय, तलवार, अंगार।

3. • **हिमाचल**—भारत के एक प्रांत का नाम हिमाचल प्रदेश है।

• **मंडल**— मंडल में लोगों की भीड़ जमा हो रही थी।

• **अम्बर**— गर्मियों में अम्बर से आग बरसने लगती है।

• **हृदय**— दयावान व्यक्ति का हृदय बड़ा होता है।

4. सम्हल-सम्हल, उमड़-उमड़, घुमड़-घुमड़।

5. 'अवनी-अम्बर में : 'अ' वर्ण की।
'पाप-ताप' में 'प' वर्ण की।
ध्रुव से ध्रुवतर में 'ध्रु' एवं व वर्ण की।

6. अज्ञानता और असफलता।

7. **सूर्य** = दिवाकर, दिनकर, आदित्य।
चन्द्रमा = शशि, सुधांशु, सुधाकर।
सिन्धु = समुद्र, सागर, वारिधि।
अग्नि = आग, पावक, हुताशन।
अम्बर = आकाश, नभ, गगन।

प्रायोजना कार्य–

(क) छात्र देशप्रेम व उत्साह से पूर्ण अन्य कविताओं का संकलन करें। यथा–

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
हाथ में ध्वजा रहे बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
प्रात हो कि रात हो संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो चंद्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो।
एक ध्वज लिए हुए एक प्रण किए हुए
मातृभूमि के लिए पितृभूमि के लिए
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
अन्न भूमि में भरा वारि भूमि में भरा
यत्न कर निकाल लो रत्न भर निकाल लो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

(ख) छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (स), **4.** (स), **5.** (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. सम्भल-सम्भल **2.** टकराने
3. जल **4.** नभ मंडल
5. काल

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

विविध प्रश्नावली–1

1. **(क)** (ii) कन्फ्यूशस
(ख) (iii) भवन
(ग) (ii) विक्रमादित्य
(घ) (ii) प्रत्यय
(ङ) (ii) भास्कर

2. **(क)** महाभारत **(ख)** सुलतान
(ग) सन्तोष **(घ)** 'वि'
(ङ) मीठी

3. **(क)** स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीय वीरों के साहस व पराक्रम को देखकर शत्रु काँप रहे थे।
(ख) अपना घोड़ा वापस पाकर बाबा भारती ने सन्तोष की साँस ली और बोले कि अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।
(ग) वर्तमान समय में दी जाने वाली शिक्षा संस्कारविहीन है, जिससे जन-सेवा का भाव समाप्त हो रहा है।
(घ) संज्ञानन्द की पत्नी का नाम क्रियादेवी था।
(ङ) 'खाई-कुएँ' से आशय है वीरों का मार्ग कठिनाइयों और बाधाओं से भरा होता है।
(च) पतित पावनी 'गंगा माता' की कहा गया है।

4. **(क)** शास्त्रीजी ने अपनी पत्नी को जो पंक्तियाँ सुनायीं। वे निम्नवत् हैं–
कुदरत को नापसन्द है सख्ती जबान में,
इसलिए तो दी नहीं हड्डी जबान में।
जो बात कहो, साफ हो, सुथरी हो, भली हो।
कड़वी न हो, खट्टी न हो, मिश्री की डली हो।
शास्त्रीजी के द्वारा कही गई पंक्तियों को सुनकर उनकी पत्नी का क्रोध हमेशा के लिए समाप्त हो गया।
(ख) बाबा भारती द्वारा कहे गए शब्द खड्गसिंह के दिमाग में गूँजते रहे वह सोचने लगा कि बाबा को घोड़े के छीन लेने का कोई कष्ट नहीं है, उन्हें तो केवल यही ख्याल रहा कि कहीं लोग

गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। कितने ऊँचे विचार हैं? बाबा भारती कोई सामान्य आदमी नहीं, यह तो निश्चय ही कोई देवता हैं। इन बातों से खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन हो गया और उसने बाबा भारती के घोड़े को वापिस कर दिया।

(ग) अगस्त्य ऋषि अपने हाथों की अंजलि जैसे छोटे साधन में विशाल समुद्र के जल को भरकर पी गए थे। उसके घमण्ड को चूर-चूर कर दिया था। अत: कवि भारतीयों को उनके इतिहास का परिचय दोहराता है और कहता है पक्के इरादों वाले हे वीरवरो! तुम भी विपत्तियों पर विजय पाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो। कवि ने भारतीय वीरों में अपने मजबूत इरादे को बनाए रखने और अपने उद्देश्य से न डिगने के लिए अगत्स्य ऋषि का उल्लेख किया है।

(घ) 'अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?' कवि ने यह प्रश्न इसलिए किया है क्योंकि भूमण्डलीकरण के इस युग ने हिन्दुस्तान की संस्कृति और सभ्यता को बदलकर रख दिया है। धन के लालच में लोगों के पारिवारिक सम्बन्ध टूट चुके हैं। भारत से वैदिककालीन शिक्षा समाप्त हो चुकी है। मन्त्रों का घोष यन्त्रों की आवाज तले लुप्त हो चुका है। शिक्षा संस्कारविहीन हो चुकी है। गीतों और कवियों में मधुमास की सरसता, श्रेष्ठ, काव्य सृजन की शक्ति का ह्रास हो चुका है। इन सभी बातों को सोचकर कवि को अपना हिन्दुस्तान कहीं नजर नहीं आता है।

5. (क) कवि देश के वीरों को संबोधित करते हुए कहता है कि तुम्हें अत्यन्त पक्के इरादों वाला हो जाना चाहिए। तुम्हें अगस्त्य ऋषि के समान बन जाना चाहिए, जिससे बाधाओं के दुर्दम (कठिनाई से वश में किए जाने वाला) सागर को भी वश में करना तुम्हारे लिए बिल्कुल भी कठिन नहीं होगा। अत: हे श्रेष्ठ वीरो! तुम्हें सँभलकर तलवार की धार पर चलना है अर्थात् तुम्हें चुनौतीपूर्ण कार्य कर दिखाना है।

(ख) कवि कहता है आज कविकुल गुरु कालिदास की सी काव्य रचना करने की शक्ति नजर नहीं आती। मिठास भरा श्रृंगार रस तो आज के फूहड़ गीतों में बदल गया है। मन में उत्साह भर देने वाली कविता की धारा ही कहीं विलुप्त हो गयी है। साथ ही साहित्य को सम्मानित राजा भोज जैसे साहित्य प्रेमी भी नहीं दिखाई पड़ रहे।

6. (क) वाणी का प्रयोग हर कोई ठीक से नहीं कर पाता। ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोगों की वाणी से प्रेम झलकता है, तो किसी की बात इतनी चुभने वाली होती है कि झगड़ा हो जाता है। कड़वी बात संसार में कितने ही झगड़े पैदा कर देती है और उसका प्रभाव बहुत ही दु:खदायी होता है। इसलिए लेखक कह रहा है कि वाणी (जीभ) सभी को प्राप्त है परन्तु उससे बोलना तो किसी-किसी को ही आता है। अर्थात् बहुत कम लोग बोलना जानते हैं।

(ख) व्यक्ति का स्वभाव होता है कि अपनी या अपनी किसी वस्तु की प्रशंसा सुनकर मन खुश हो जाता है। इसी बात को लेकर लेखक कहता है कि बाबा भारती भले ही संन्यासी थे लेकिन थे तो मनुष्य ही। खड्ग सिंह के मुख से अपने घोड़े की तारीफ सुनने की चाह उनके मन में जाग उठी और वे व्याकुल हो उठे।

(ग) लेखक का मन अपनी मातृभूमि के प्रेम में रच-वश गया है। उसके अन्दर किसी भी अन्य वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रह गई है जिसके लिए उन्हें अपनी मातृभूमि का त्याग करना पड़े। उसकी यह हार्दिक इच्छा है कि वह अपने जीवन के शेष समय को यहीं रहकर व्यतीत करे तथा जिस मातृभूमि ने उसे जन्म दिया, जिसका अन्न-जल खा-पीकर बड़ा हुआ, उसी मातृभूमि की पवित्र गोद में रहकर अपनी जीवन लीला समाप्त करे अर्थात् अपनी प्यारी भूमि की गोद में ही वह अपने प्राण त्यागने का सौभाग्य प्राप्त करे।

7. माँ की ममता

बहुत समय पहले की बात है। अफगानिस्तान के प्रसिद्ध शासक सुबुक्तगीन अपने सैनिकों के साथ शिकार पर निकले। जंगल में उन्होंने एक सुंदर हिरणी देखी। उन्होंने तुरंत उसका पीछा करना शुरू कर दिया। हिरणी कहीं पहाड़ी के पीछे छिप गई, सुबुक्तगीन सारा दिन उसे ढूँढ़ता रहा। तभी हिरनी का मासूम बच्चा वहाँ आ गया।

सुबह से भूखे-प्यासे सुबुक्तगीन ने उस हिरनी के बच्चे को पकड़ लिया और अपने घोड़े पर रखकर चल पड़ा। यह देख छिपी हुई हिरणी निकलकर आ गई और सुबुक्तगीन के घोड़े के पीछे-पीछे चलने लगी।

सुबुक्तगीन ने सोचा, 'जिसके लिए मैं सारा दिन

परेशान रहा और खोज न सका वही हिरणी स्वयं ही कैसे अपने बच्चे के प्रेम में निकलकर बाहर आ गई।' उसका हृदय माँ की ममता को देखकर पिघल गया और उसने बच्चे को छोड़ दिया। अब वह मासूम बच्चा अपनी माँ से लिपट गया और माँ उसे चाटने लगी। इस दृश्य को देखकर सुबुक्तगीन की आँखों में आँसू आ गए और उसका हृदय पिघल गया। हिरणी सुबुक्तगीन के पास निर्भय खड़ी थी मानो उसे अब ज्ञात हो गया हो कि सुबुक्तगीन अब उसका शत्रु नहीं रहा। इस घटना ने सुबुक्तगीन का हृदय परिवर्तन कर दिया और उसने फिर कभी भी शिकार न करने की कसम खा ली।

8. 1. शिवा के लिए सभी धर्म पूज्य हैं।
2. शिवा चाहता है कि देश में हिन्दू नहीं, बल्कि सच्चे स्वराज्य की स्थापना हो।
3. शीर्षक 'शिवा जी'।

7 हम बीमार ही क्यों हों?

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iv) पाँच **(ख)** (i) आकाश
(ग) (iii) सात गुना **(घ)** (i) लाल रक्त कण

2. **(क)** वजन के 100 भागों में से 70
(ख) एक, दो **(ग)** बुद्धि

3. **(क)** 1. आकाश, 2. अग्नि, 3. जल 4. वायु एवं 5. पृथ्वी।

(ख) 'आरोग्य सम्राट्' आकाश तत्व को कहा गया है।

(ग) हमें सन्तुलित, प्राकृतिक आहार लेना चाहिए। गेहूँ, दाल, घी, तेल आदि का एक हिस्सा एवं चार हिस्सा दूध, फल और हरी सब्जियाँ आदि संतुलित आहार में होना चाहिए।

(घ) आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पाँच तत्वों की सन्तुलित मात्रा शरीर को स्वस्थ रखती है। साथ ही सन्तुलित प्राकृतिक आहार लिया जाना चाहिए। अत: शरीर को स्वस्थ रखने में इन चीजों को शामिल करना चाहिए।

4. **(क)** जल को जीवन इसलिए कहा गया है क्योंकि जीवन के लिए जल तत्व अत्यन्त आवश्यक है। हमारे शरीर के वजन के 100 में से 70 भाग केवल जल है। जल पसीने के रूप में फेफड़ों से, वाष्प के रूप में पेट से, मल-मूत्र के रूप में शरीर की गन्दगी को बाहर निकालता है। जल से पाचन क्रिया ठीक रहती है।

(ख) सन्तुलित आहार के अन्तर्गत एक हिस्सा गेहूँ, दाल, घी, तेल आदि होना और इसके अतिरिक्त चार हिस्सा दूध, फल, हरी सब्जियाँ आदि का होना अनिवार्य है। सन्तुलित आहार में पृथ्वी तत्व का सामंजस्य अनिवार्य है। भोजन में शामिल सभी वस्तुएँ जो खाने और पीने योग्य हैं, वे सभी पृथ्वी तत्व में शामिल हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार आवश्यक है।

(ग) सूर्य हमें प्रकाश और ताप ही नहीं देता बल्कि वह हमें बुद्धि और लम्बी आयु भी प्रदान करता है। सूर्य की प्रात:कालीन किरणों से हमें विटामिन 'डी' मिलता है जिससे लाल रक्त कण उत्पन्न होते हैं, जिससे हमारी जीवन शक्ति बढ़ती है। सूर्य से प्राप्त गर्मी से पृथ्वी तत्व, अन्न, फल, जल, सब्जियाँ आदि की प्राप्ति होती है, जिससे हमारा जीवन विकसित होता है। सूर्य को हमारे ही देश में नहीं अपितु सभी जगहों में पूजते हैं। सूर्य से जीवन संरक्षित होता है।

(घ) पृथ्वी हमें जन्म देती है, वह हमें धारण करती है। सन्तुलित और प्राकृतिक आहार पृथ्वी की देन है, यह हमारा पोषण करने वाली और अन्त में अपनी ही गोद में विश्राम देने वाली है। जिस प्रकार मछली जल के बिना और पक्षी आकाश के बिना नहीं रह सकते उसी प्रकार हम पृथ्वी के बिना नहीं रह सकते। अत: पृथ्वी को हमारी माता कहा गया है।

5. **(क)** यदि पृथ्वी पर जल की मात्रा बिल्कुल कम हो जाए तो प्राणियों का जीवन असम्भव हो जाएगा। जल ही जीवन है अर्थात् शरीर में सबसे अधिक मात्रा जल की है। जल हमारे भोजन का अनिवार्य तत्व है। इसके सहयोग से खून शरीर के अति सूक्ष्म अवयवों का पोषण करता है। जल ही शरीर की गन्दगी को बाहर निकालता है। अत: शुद्ध जल की प्राप्ति से ही जीवन सम्भव है।

(ख) यदि हमें सब्जियाँ न मिलें तो सन्तुलित

आहार की पूर्ति फल, दूध और जल आदि अन्य चीजों से पूरी करेंगे। साथ ही सूर्योदय से पहले खुले मैदान में स्वच्छ वायु सेवन से अन्य आवश्यक विटामिनों की पूर्ति कर सकेंगे।

(ग) शरीर में जल की मात्रा कम हो जाने पर इसकी पूर्ति के लिए ठण्डे जल से स्नान करेंगे। रसदार फलों और सब्जियों का उपयोग करेंगे। नींबू, नारियल, ओआरएस, सूप और दूध का सेवन बढ़ा देंगे। इस तरह धीरे-धीरे जल की कमी की पूर्ति कर सकते हैं।

6. (क) यदि हमें पृथ्वी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह पर जाना पड़े तो हम अपने साथ वे सभी वस्तुएँ ले जाना चाहेंगे जो हमारे जीवन को बनाए रखने में सहायक हो सकें। जैसे— जल, वायु तथा खाद्य वस्तुएँ आदि।

(ख) यदि हमें पाँच तत्वों में से मात्र दो तत्व लेने पड़े तो हम जल और पृथ्वी तत्व को लेना चाहेंगे क्योंकि पृथ्वी तत्व से अन्न, फल, दूध एवं सब्जियाँ आदि प्राप्त हो जायेंगी। जीवन की प्रक्रिया चल सकेगी तथा जल तत्व हमारे शरीर में जल की पूर्ति करेगा।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से अपनी कक्षा में स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. सुरक्षा, वायुमंडल, साँस, निर्मल, भक्ति।

3. लिखावट, सजावट, दिखाई, सिलाई।

4. आकाश— नभ, व्योम। सूर्य—सूरज, भानु। पृथ्वी— धरती, वसुन्धरा। अग्नि— आग, अनल। नदी— सरिता, तटिनी।

5.

शब्द	विलोम शब्द
लाभ	हानि
स्वस्थ	अस्वस्थ
शुद्ध	अशुद्ध
सम	विषम
ऊपर	नीचे
प्रसन्न	अप्रसन्न

6. ● प्राचीन—भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन है।

● भोजन—सबको संतुलित भोजन करना चाहिए।

● संयम—नियम-संयम से चलो सारे काम स्वयं बन जाएँगे।

● सदाचार—बालक में सदाचार का गुण होना अनिवार्य है।

● पवित्र—गंगा एक पवित्र नदी है।

प्रायोजना कार्य

1. स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित बातों को अपनाना चाहिए—

(i) नियमित व्यायाम करें।

(ii) संतुलित आहार लें।

(iii) नियमित रूप से साफ-सफाई रखें।

(iv) खाने के बाद न तुरंत सोएँ और न तुरंत उठें।

(v) प्रतिदिन अपने दाँतों की सफाई करें।

(vi) शुद्ध और सुरक्षित पानी पिएँ।

(vii) अधिक-से-अधिक प्रकृति के साथ जुड़ें।

2. प्रातः भ्रमण का महत्व बताते हुए मित्र को पत्र

सेवा में,

प्रिय मित्र नरेन्द्र,

सप्रेम नमस्कार!

आशा करता हूँ आप सकुशल और स्वस्थ होंगे। मैं अपना अनुभव साझा करते हुए आपको प्रात:कालीन सैर के बारे में बताना चाहता हूँ। प्रात:काल का सुंदर वातावरण ताजगी से भरा होता है, जो हमारे तन और मन को सुकून पहुँचाता व स्वस्थ रखता है। नियमित सैर से रक्त संचार, पाचन क्रिया तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

मुझे विश्वास है यदि तुम प्रात: उठकर भ्रमण करना शुरू करोगे तो शीघ्र ही इसका लाभ अनुभव करोगे। अत: मेरा यही सुझाव है कि तुम इस आदत को अपनाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करो। शेष मिलने पर...।

तुम्हारा परम

स्नेही मित्र

सुशील कुमार

दिनांक 12/07/20--

3. सूर्य नमस्कार की विभिन्न मुद्राएँ—

(i) प्रणाम आसन (ii) हस्त उत्तानासन

(iii) हस्तपाद आसन (iv) अश्व संचालन आसन

(v) दंडासन (vi) अष्टांग नमस्कार
(vii) भुजंग आसन (viii) पर्वत आसन
(ix) अश्व संचालन आसन
(x) हस्तपाद आसन (xi) हस्तउत्तान आसन
(xii) ताड़ासन।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (स), **4.** (ब), **5.** (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. आकाश **2.** अमृत
3. लाल रक्त कण **4.** निर्जीव
5. पेट

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (ङ), **4.** (ख), **5.** (क)।

8 संगीत शिरोमणि स्वामी हरिदास

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) तानसेन **(ख)** (i) दीपक राग

2. **(क)** स्वामी हरिदास
(ख) संगीत शिरोमणि
(ग) मेघ मल्हार
(घ) राजमहल

3. **(क)** सम्राट अकबर ने तानसेन से।
(ख) तानसेन ने अपनी गुरु बहन रूपा से।
(ग) स्वामी हरिदास ने अपने शिष्य तानसेन से।

4. **(क)** सम्राट अकबर हिन्दुस्तान की पवित्र जमीन को सलाम करते हैं क्योंकि इसका दुनिया में कोई जवाब नहीं है। यहाँ की कला, संगीत एवं यहाँ की मीठी-मीठी बोलियों को यहाँ के नृत्य भावों को समझना सौभाग्य की बात है।

(ख) दीपक राग के गायन से तन में गर्मी बहुत बढ़ जाती है। इस राग को गाने का मतलब है सीधा मृत्यु को निमन्त्रण देना। इस दीपक राग के गाने से पहले मेघ मल्हार गीत गाए जाने का प्रबन्ध कर लेना चाहिए। जब दीपक राग गायक के शरीर में आग पैदा करने लगे, तब मेघ मल्हार राग गाकर गायक के प्राणों की रक्षा की जा सकती है।

(ग) स्वामी हरिदास ने संगीत की शिक्षा को 'समाज' इसलिए कहते थे क्योंकि उनके संगीत की मिठास से सभी लोग प्रभावित हो उठते थे। वे स्वयं अपने स्वार्थ के लिए नहीं, अपनी प्रसिद्धि और सम्मान के लिए नहीं अपितु संसार के स्वामी को रिझाने के लिए गाते थे। अत: उन्होंने संगीत की शिक्षा को 'समाज' कहा है।

(घ) दीपक राग सुनने के पीछे सम्राट् का भाव यह था कि उन्हें तानसेन के साथ ही उसके गुरु स्वामी हरिदास से मेघ मल्हार सुनने का मौका मिल जाएगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। स्वामी हरिदास ने अपने संगीत को ब्रज बिहारी कृष्ण को समर्पित कर दिया था। वे कृष्ण की भक्ति में ही गीत गाते थे। किसी राजदरबार में स्वार्थ या लोभ के कारण गीत नहीं गाते थे।

(ङ) तानसेन और हरिदास के गायन में मुख्य अंतर यह था कि तानसेन अपना गीत हिन्दुस्तान के शहंशाह को खुश करने के लिए गाते थे जिससे उसके संगीत में पराधीनता, परवशता आ जाती थी, जबकि स्वामी हरिदास जी, संसार के स्वामी को रिझाने के लिए गाते थे अर्थात् वे अपना गीत गाने के लिए किसी के अधीन नहीं थे।

5. **(क)** तानसेन ने अपने गुरु को अंतर्यामी इसलिए कहा क्योंकि तानसेन को गुरुदेव स्वामी हरिदास ने बहुत उदास देखकर उसका कारण पूछा कि तुम दु:खी क्यों प्रतीत हो रहे हो? इसका उत्तर देते हुए तानसेन ने अपने गुरु से निवेदन किया कि हे गुरुदेव, आप तो अन्तर्यामी हो। ऐसा कहते हुए तानसेन ने स्पष्ट किया कि सम्राट् अकबर दीपक राग सुनना चाहते हैं, वह भी आज ही रात को। मुझे बताइए मेघ मल्हार का प्रबन्ध किए बिना दीपक राग कैसे सुनाया जा सकता है। इस चिन्ता को आपने समझ लिया है।

(ख) अकबर तानसेन से दीपक राग इसलिए सुनना चाहते थे क्योंकि उन्हें स्वामी हरिदास जी का मेघ मल्हार सुनने का मौका मिलेगा, किन्तु बीच में रूपा के आ जाने से वे मेघ मल्हार सुनने से वंचित रह गए। अत: स्वामी हरिदास

की गायकी सुनने से वंचित रह जाने के कारण अकबर ने स्वयं को बदकिस्मत कहा।

(ग) संगीत सुनने गए सेवक वेषधारी सम्राट अकबर और तानसेन का रूप उनके हाव-भावों से छिप न सका और हरिदास ने उन्हें पहचान लिया, तब स्वामी हरिदास के चरण स्पर्श करते हुए अकबर ने कहा कि आपके संगीत को सुनने का मौका किसी अन्य तरीके से मिलना असम्भव था। आज अपने इस रूप में तानसेन और उसके सेवक बने अकबर ने आपका संगीत सुन लिया। अत: निर्मल मन द्वारा सुनाए गए स्वच्छंद संगीत को सुनकर अकबर ने संगीत को 'जन्नत का संगीत' कहा।

6. (क) यदि निपुण गायिका रूपा तानसेन की मदद नहीं करती और राजहठ के चलते, तानसेन दीपक राग गाता तो उस राग की सिद्धि पर तानसेन के शरीर में अग्नि जल उठती और उसके प्राणों पर संकट आ पड़ता और हो सकता है दीपक राग की महिमा के मुताबिक तानसेन को जान से हाथ भी धोना पड़ जाता।

(ख) तानसेन के स्थान पर यदि मैं होता तो प्राणों पर संकट के बाद भी मैं सम्राट् की आज्ञा का पालन करता क्योंकि सम्राट की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य होता। इतने समय तक राजभवन में नवरत्न के पद पर रहते हुए परीक्षा की घड़ी आने पर भला मैं किस प्रकार पीछे हट सकता था।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें और अपनी पुस्तिका में लिखें।

2. अन्तर्यामी, निमंत्रण, प्रतीक्षा, सम्मान।

3.

विशेषण	**विशेष्य**
निपुण	राधिका
अच्छा	भाग्य
सम्राट	अकबर
नव	रत्न

4. उप + स्थित = उपस्थित
उप + करण = उपकरण
उप + लब्ध = उपलब्ध
उप + वास = उपवास

5. संगीत— मध्यप्रदेश को <u>संगीत</u> स्थली के रूप में जाना जाता है।

विधाता— <u>विधाता</u> द्वारा बनाए गए नियम का सबको पालन करना पड़ता है।

दीवाना—हरिदास के संगीत ने सभी श्रोताओं को प्रभु का <u>दीवाना</u> बना दिया था।

प्रभात— मनोहर <u>प्रभात</u> बेला में उठकर योग करता है।

6. (क) तो इसमें भय कैसा? दीपक राग तो तुम्हें आता है। सुना देना। चिन्ता की क्या बात है?

(ख) दीपक राग तो मुझे आता है, गुरुदेव! आपने ही मल्हार की छत्रछाया में मुझे इस राग का अभ्यास कराया है। अगर मल्हार का प्रबन्ध किए बिना दीपक राग सुनाया तो मैं स्वयं भस्म हो जाऊँगा।

प्रायोजना कार्य

एक नगर में भीषण अकाल पड़ा। लोग सर्वत्र त्राहि-त्राहि कर रहे थे। प्रजा के दु:ख से राजा भी दु:खी थे। पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सभी की दृष्टि-आशा के साथ आसमान पर लगी थी, तभी राजा को गुप्तचरों से पता चला कि पास के गाँव में एक संगीत सम्राट है, जो मेघ मल्हार संगीत से वर्षा करा सकता है। राजा ने वहाँ पहुँचकर मेघ राग गाने की विनती की। मेघराग से चारों ओर भरपूर वर्षा हुई। खेतों में फसलें लहलहाने लगीं। नगर में फिर से शांति का वातावरण छा गया और प्रजा खुश हो गई।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (स), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. दीपक राग
2. प्रीति
3. सम्राट अकबर
4. प्राण न्योछावर
5. स्वामी हरिदास

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

9 पद और दोहे

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) प्रेम की बेल **(ख)** (ii) कबीर ने **(ग)** (iii) तरवारि।

2. **(क)** कानि **(ख)** छाछ **(ग)** साहब **(घ)** प्रकृति

3. **(क)** मीराबाई ने श्रीकृष्ण की पति रूप में उपासना की है

(ख) कबीर ने जिन दो बातों की सीख दी है वे हैं—पहली साहब (ईश्वर) की वन्दना करना और दूसरी भूखे को भीख (भिक्षा) देना।

(ग) जीवन का कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि क्षण भर में ही मृत्यु हो सकती है। अत: कल का काम आज ही कर लेना चाहिए।

(घ) रहीम ने उत्तम प्रकृति का महत्व चन्दन के पेड़ का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि शीतलता देने वाले चन्दन के वृक्ष पर अनेक सर्प लिपटे रहते हैं, फिर भी उस पर साँपों के जहर का प्रभाव नहीं होता है।

(ङ) सच्चे मित्र अपने मित्र का साथ विपत्ति के समय भी नहीं छोड़ता अर्थात् विषम परिस्थितियों में वह साथ रहता है। यही सच्चे मित्र की पहचान है।

4. **(क)** **भाव—** मीराबाई अपने पद के माध्यम से कहती हैं कि मैं भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हूँ और संसार के रंग-ढंग को देखकर रोती हूँ अर्थात् दु:खी होती हूँ। मीरा प्रभु श्रीकृष्ण की प्रार्थना करते हुए कहती हैं कि हे प्रभु! मैं आपकी दासी हूँ। आप इस भवसागर से मुझे पार उतारिए।

(ख) **भाव—** कबीरदास जी कहते हैं कि सच्चा पीर, संत वही है जो दूसरों की पीड़ा को समझे। जो दूसरों के दु:ख को नहीं जानते हैं, वे बेदर्द हैं, निष्ठुर हैं और काफिर हैं।

(ग) **भाव—** रहीम कहते हैं कि पहले एक काम पूरा करने की ओर ध्यान देना चाहिए। बहुत से काम एक साथ शुरू करने से कोई भी काम ढंग से नहीं हो पाता, वे सब अधूरे रह जाते हैं। एक ही काम को एक बार में किया जाना ठीक है। जैसे एक ही पेड़ की जड़ को अच्छी तरह सींचा जाए तो उसका तना, शाखाएँ, पत्ते, फल-फूल सब हरे-भरे रहते हैं।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. अश्रुओं, भक्त, जिसके, त्रिशूल, प्रलय, अब, कब, विपत्ति।

3. **(क)** असुर **(ख)** तनय **(ग)** लोभ **(घ)** अशिष्ट **(ङ)** पुरुष।

4. (i) 'मोर-मुकुट-मेरो' शब्दों में 'म' वर्ण की आवृत्ति होना।
(ii) साधे, सब, सधै, सब, साधे, सब' शब्दों में 'स' वर्ण की आवृत्ति होना।
(iii) सम्पति, बनत, बहु, रीत शब्दों में 'त' वर्ण की आवृत्ति होना।
(iv) पर, पीर, काफिर, बेपीर शब्दों में 'प' और 'र' वर्ण की आवृत्ति होना।

5.

शब्द	विलोम शब्द
पण्डित	मूर्ख
देव	दानव
प्रेम	घृणा
सुख	दुख
जल	थल
दिन	रात

6. पराजय, पराभव, पराक्रम, निरंजन, निवेश, निदान।

7.

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
सजाना	आवट	सजावट
लिखना	आवट	लिखावट
बनाना	आवट	बनावट
टकराना	आहट	टकराहट
मुस्कराना	आहट	मुस्कराहट
चिल्लाना	आहट	चिल्लाहट
घबराना	आहट	घबराहट

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (द), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (द)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. पति **2.** चूनरी **3.** साँचे **4.** तरवारि **5.** फूल

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

10 क्या ऐसा नहीं हो सकता?

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) टॉवेल **(ख)** (ii) पैर
2. **(क)** बिस्तर **(ख)** करीने **(ग)** धुंध **(घ)** समन्दर
3. **(क)** धुंध से लेखक का यह अभिप्राय है कि प्रत्येक मनुष्य के चेहरे पर अभावों के अन्धकार की छाया छाई हुई है अर्थात् व्यक्ति की जर्जर व्यवस्था को उसके चेहरे के हाव-भाव से सहज पहचाना जा सकता है।

   (ख) मित्र अपने फटे बिस्तर को उजली चादर से ढककर छिपाता है।

   (ग) अव्यवस्थाओं के होते हुए भी मित्र लेखक से रुकने का आग्रह इसलिए करता है क्योंकि वह यह दिखाना चाहता है कि लेखक के आने पर मित्र को कोई आपत्ति नहीं है, जबकि लेखक के आने और रुकने से मित्र का कार्य बाधित होता है लेकिन वह इसे छुपाना चाहता है।

   (घ) लेखक अपने मित्र को राजनीति और साहित्य के बदले उसे अपने बाल-बच्चों से सम्बन्धित, घर और गृहस्थी की बातें करने की सलाह देता है।
4. **(क)** लेखक के लिए मित्र घर में चीजों के न होने पर उन्हें छिपाकर और लेकर आता है। इन चीजों को किसी से उधार भी लेकर आता है। फटे बिस्तर को नई चादर से ढक देता है और पड़ोसी से स्वच्छ आईना लाकर रख देता है। भोजन कर लेने पर बच्चे से पान मँगाकर रख देता है। राजनीति और पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य की बातों में उलझा देता है। बिखरी पुस्तकों को करीने से लगा देता है। इस तरह की अनेक सुविधाओं को जुटाता है।

   (ख) लेखक को मित्र के चेहरे पर निश्चिन्तता का भाव इसलिए दिखाई नहीं दिया, क्योंकि वह वास्तविकता को छिपाता है जबकि उसके घर में गृहस्थी की चीजों का अभाव है, जिनका इन्तजाम वह लेखक से छिपकर करता है। कहीं पड़ौस से दर्पण और तौलिया लाकर रखता है। कहीं फटे बिस्तर को नई चादर से छिपाता है। बच्चे को भेजकर लेखक के लिए पान मँगाकर रखता है। खूँटी पर बेतरतीब रखे कपड़ों को और बिखरी पुस्तकों को करीने से लगाता है। घर-गृहस्थी की बातें न करके राजनीति और साहित्य की बातों में उलझाने का प्रयास करता है।

   (ग) लेखक अपने मित्र से अपेक्षा करता है कि वह अपने फटे बिस्तर को वैसे ही बना रहने दे। टूटे हत्थे वाली कुर्सी पर ही लेखक को बैठने दे। धुँधले दर्पण और फटे गन्दे तौलिए को ही लेखक को नहाने के बाद, बदन पोंछने के लिए दे। वह बनावटी बातों को छोड़कर उससे अपने घर-गृहस्थी की बातें करे। वह लेखक से समस्याओं के समन्दर से निकलने का मार्ग सुझाए क्योंकि जो उसका हाल है वही उसके साथी मित्र का भी है।

   (घ) लेखक मित्र को निम्नलिखित रूप से व्यवहार करने की सलाह देता है–

   - जिस फटे तौलिए से अपना शरीर पौंछते हो, उसी से मुझे भी अपना शरीर पोंछने दो। जिस दर्पण में तुम अपना चेहरा देखते हो उसी से मुझे भी देखने दो।
   - हम दोनों मित्र ठीक वैसे ही मिलें जैसे हम हैं। बनावटी दिखने का प्रयत्न बन्द करें।
   - जैसी सूखी रोटी तुम खाते हो, वैसी ही मुझे खिलाओ। राजनीति और साहित्य में मत उलझाओ।

5. **(क)** अपने लिए मुझे कष्ट उठाते हुए व्यवस्था जुटाने में लगे मित्र को देखकर मेरे मन में यह विचार आएँगे कि मेरा मित्र वही रूखी-सूखी रोटी खिलाए, जो वह स्वयं खाता है। वह मुझसे अपनी हकीकत न छिपाए, बल्कि उसे मेरे समक्ष हूबहू रखे क्योंकि हो सकता है समस्याओं से उभरने का कोई विकल्प निकले। वह मेरे साथ बैठने का समय दे, व्यवस्थाओं को जुटाने में न लगे।

(ख) मित्र अपने फटे बिस्तर को चादर से छिपाने का प्रयास इसलिए करता है ताकि उसकी वास्तविक स्थिति का पता लेखक को न हो सके। मित्र की अभावों भरी गृहस्थी का आभास लेखक को होगा, तो उसे कष्ट होगा। हो सकता है मित्र वास्तविकता को जान ले तो कहीं उसे भूल न जाए और जरूरत पड़ने पर वह उसका साथ न दे।

6. **(क)** अगर अचानक मेरे घर मेहमान आ जाते हैं और उस समय मेरे माता-पिता नहीं हैं तो मैं ऐसी दशा में जो भी कुछ व्यवस्था सरलता से कर सकता हूँ, करूँगा। बैठने के लिए कहूँगा। शुद्ध ताजा पानी पीने को दूँगा, फिर प्रयास करूँगा कि मैं अपने माता-पिता को उनके आगमन की सूचना दूँगा और माता-पिता के आने तक उन्हें रोकने का प्रयास करूँगा। उनका उचित आतिथ्य करूँगा।

(ख) मेरी दृष्टि में उधार लेकर अथवा माँगकर व्यवस्था जुटाना बिल्कुल भी उचित नहीं है। अपनी परिस्थिति के अनुसार जो भी सम्भव है, उसी से अतिथि का सत्कार करना मैं उचित समझता हूँ। आडम्बर करते हुए सच्चाई को छिपाना स्वयं अपने लिए मुसीबत उत्पन्न करना है क्योंकि इस तरह छुपकर व्यवस्था करने पर हमारे अपने चाहकर भी हमारी मदद नहीं कर सकेंगे।

(ग) किसी के घर जाने पर हम उसके फटे बिस्तर पर ध्यान नहीं देंगे। स्नेह की पवित्रता मेरे लिए महत्वपूर्ण है और मैं उसी को प्राथमिकता दूँगा।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने और लिखने का अभ्यास करें।
2. राजनीति, अवकाश, विश्वास, दृष्टि।
3. (क) बालक स्कूल जा रहे हैं।
   (ख) गायें चर रही हैं।
   (ग) नदियों में बाढ़ आई है।
   (घ) वे पुस्तक पढ़ रहे हैं।
4. **(क)** पलकों पर बैठाना— हमारे गाँव के लोग मेहमानों को पलकों पर बैठाते हैं।
   (ख) कलेजे पर साँप लोटना— राकेश की नौकरी लगने पर, पड़ोसी के कलेजे पर साँप लोट गया।
   (ग) आम के आम गुठलियों के दाम— महाकालेश्वर के मेले में दुकान लगायी और प्रभु के दर्शन किए। मेरे लिए तो आम के आम गुठलियों के दाम वाली बात हो गई।
   (घ) कंगाली में आटा गीला— रमेश ने बड़ी मुश्किल से साइकिल खरीदी और वह भी चोरी हो गई। इसे कहते हैं— कंगाली में आटा गीला।
5. **(क)** छिपाना— सकर्मक।
   (ख) रहना— अकर्मक।
   (ग) रोना— अकर्मक।
   (घ) उड़ना— अकर्मक।
6. **गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए मित्र को पत्र**

सेवा में,
प्रिय मित्र हरिओम,
सप्रेम नमस्कार!
कैसे हो? आशा करता हूँ कि आप पूर्ण स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।
आज मैं इस पत्र के माध्यम से अपको गणतंत्र दिवस की बधाई देना चाहता हूँ। यह दिन हम सब भारतवासियों के लिए गर्व और सम्मान का प्रतीक है। 26 जनवरी, 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ और भारत एक गणराज्य बना। तुम्हारे विद्यालय में भी इस अवसर पर ध्वजारोहण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ होगा। यदि तुम्हें समय मिले तो अपने विद्यालय के कार्यक्रमों का विवरण अगले पत्र पर अवश्य लिखना।
एक बार पुनः गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद, जय भारत!

तुम्हारा मित्र,
बद्री विशाल
दिनांक: 10/07/20--

प्रायोजना कार्य

1. तैते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सोर–
अर्थ– सामर्थ्य के अनुकूल खर्च करना।
2. हम अपने घर आए मेहमानों का स्वागत बड़ी तन्मयता और खुशी के साथ करेंगे। उन्हें घर पर पहले बैठने के लिए कुर्सी डालेंगे या चारपाई बिछाएँगे फिर उन्हें ठण्डा पानी, शरबत देंगे या चाय पिलाएँगे। उनकी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है? इसके बारे में पूछेंगे। उनके साथ बैठकर बातचीत करेंगे। उनके माता-पिता का स्वास्थ्य कैसा है? आदि समाचार पूछेंगे।

(नोट– छात्र अपने अनुसार अपने मन के भाव व्यक्त करें।)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (द), **3.** (स), **4.** (ब), **5.** (ब)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. मेहमान **2.** पान
3. दो घड़ी साथ **4.** निश्चिंतता
5. निर्निमेष

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (ग), **3.** (ख), **4.** (क)।

11 झाँसी की रानी

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) बरछी, ढाल
(ख) (iii) शस्त्र कला
(ग) (iii) काना और मुंदरा
(घ) (ii) लेफ्टिनेंट वॉकर
(ङ) (ii) तेईस वर्ष
2. **(क)** गाथाएँ **(ख)** वैभव
(ग) शत्रु **(घ)** आजादी
3. **(क)** लक्ष्मीबाई ने बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी अपने बचपन में ही चलाना सीख लिया था।
(ख) झाँसी के राजा नि:सन्तान ही मर गए थे। अंग्रेजों ने ऐसा नियम बनाया था कि लावारिस राज्य पर सरकार का शासन होगा। यह नियम ब्रिटिश शासकों की राज्य हड़ नीति थी। डलहौजी इस कारण प्रसन्न हुआ कि अब झाँसी का राज्य भी ब्रिटिश शासन में शामिल हो जाएगा।
(ग) अंग्रेजों ने राज्य हड़प नीति के तहत भारतीय राज्यों को अपने अधिकार में कर लिया। भारतीय राज्यों के बहुत से शासक नि:सन्तान थे और उन्हें पुत्र गोद लेकर राज्य का वारिस बनाने का कोई अधिकार नहीं था।
(घ) 'हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता नारी थी' से कवयित्री का आशय है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने स्वतंत्रता के लिए खुद को बलिदान कर दिया। उन्होंने स्वतंत्रता की नारी के रूप में जन्म लिया था। उन्होंने हमें आजादी का मार्ग दिखाने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। वे स्वतंत्रता की साक्षात् देवी थीं जिन्होंने हम भारतीयों को वतन के लिए बलिदान होना सिखा दिया था।
(ङ) 'झाँसी की रानी' कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम अपनी मातृभूमि की आजादी की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर भी करें। अन्याय का विरोध करना सीखें। साथ ही, हमारे अन्दर राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल बनाएँ।
4. **(क) भावार्थ–** वीरता की साक्षात मूर्ति लक्ष्मीबाई की वैभव से भरी झाँसी में सगाई हो गई। उनका विवाह राजा गंगाधर राव के साथ हुआ और वे झाँसी में रानी बनकर आ गईं।
(ख) यहाँ कवयित्री सुभद्रा जी कहती हैं कि उन भारतीय राजाओं की क्या बात करें जिन्होंने अंग्रेजों के सामने घुटने टेक दिए। आओ, झाँसी के युद्धक्षेत्र में चलें, जहाँ लक्ष्मीबाई पुरुष बनकर वीर योद्धा के रूप में खड़ी हैं।

(ग) कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान कहती हैं, जब रानी का घोड़ा नाले को पार करने में अड़ गया उसी समय पीछा करते अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें पुन: घेर लिया और दोनों ओर से वार पर वार होते चले गए। शेरनी–सी रानी घायल होकर गिर गईं, जिससे उन्हें वीरगति प्राप्त हुई।

(घ) रानी लक्ष्मीबाई स्वर्ग सिधार गईं। उन्हें अब चिता पर लिटा दिया गया। उनकी आत्मा का तेज आग के तेज में मिल गया क्योंकि वे उस तेज की सच्ची अधिकारी थीं अर्थात् रानी की चिता को आग लगा दी गई।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करें।

2. कीमत, फिरंगी, झाँसी, उदित, खूब, बुन्देले, शत्रु, मनुज।

3. तत्सम शब्द— कृपाण, चिन्ता, सौभाग्य, शोक, शत्रु।

तद्भव शब्द— बूढ़ा, मुँह, पिता, सीख, मनुज।

4. **'सु' उपसर्ग वाले शब्द—**

सु + मति = सुमति

सु + लेख = सुलेख

सु + मुखी = सुमुखी।

'वि' उपसर्ग वाले शब्द—

वि + राट = विराट

वि + रूप = विरूप

वि + जय = विजय

'सम्' उपसर्ग वाले शब्द—

सम् + मुख = सम्मुख

सम् + योग = संयोग

सम् + ऋद्धि = समृद्धि

5.
- **सिंहासन—** श्रीकृष्ण ने सुदामा को सिंहासन पर बैठाया।
- **गाथा—** रानी चेन्नम्मा की वीरता की गाथा सम्पूर्ण भारत गाता है।
- **मैदान—** युद्ध के मैदान में वीरों की पहचान होती है।
- **वीरगति—** स्वतन्त्रता के लिए अनेक वीरों ने वीरगति पाई।
- **स्वतंत्रता—** रानी लक्ष्मीबाई ने भारतीयों को स्वतंत्रता का मंत्र सिखाया।

6. **स्वर्ग सिधारना—** मृत्यु प्राप्त करना।

प्रयोग— स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से युद्ध करते हुए अनेक वीर स्वर्ग सिधार गए।

मुँह की खाना— बुरी तरह पराजित होना।

प्रयोग— हल्दीघाटी के मैदान में राणा प्रताप की सेना के सामने मुगल सेना को मुँह की खानी पड़ी।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (अ), **3.** (स), **4.** (द), **5.** (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. सत्तावन **2.** कानपुर

3. वीर शिवाजी **4.** वीरानी

5. तेईस

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

12 डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) ट्राम्बे में

(ख) (i) सन् 1941 में

2. **(क)** जे. एस. भाभा **(ख)** ग्रामोफोन

3. **(क)** भारत में अणु शक्ति का विकास प्रथम वैज्ञानिक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने किया।

(ख) डॉ. भाभा को विज्ञान में रुचि के अलावा गणित, संगीत, नृत्य एवं चित्रकला से भी भारी लगाव था।

(ग) डॉ. भाभा की एकमात्र इच्छा थी कि भारत विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़े।

(घ) चित्रकार ने डॉ. भाभा के बनाए चित्र को देखकर कहा कि यह बालक एक दिन महान कलाकार बनेगा।

(ङ) अणुशक्ति के रचनात्मक प्रयोग के

लिए डॉ. भाभा के अनुरोध पर मुम्बई में सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट द्वारा 'टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेन्टल रिसर्च' नामक संस्था स्थापित की गई।

4. **(क)** डॉ. भाभा के बारे में कहा जाता है कि उन्हें बचपन में नींद नहीं आती थी। वे प्राय: रोते रहते थे। इससे पिता को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने डॉक्टर की सलाह ली लेकिन कोई समाधान न मिलने पर, परेशान होकर उन्होंने एक उपाय किया जो कारगर सिद्ध हुआ। डॉ. भाभा के सामने ग्रामोफोन बजाया जाने लगा। इससे उनका ध्यान बँट जाता और वे चुप हो जाते थे। इस प्रकार उनका संगीत के प्रति लगाव हो गया।

(ख) वर्ष 1954 में वे अणुशक्ति के निर्माणकारी उपयोग के सिलसिले में जिनेवा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। डॉ. भाभा अणुशक्ति से अणुबम बनाने के पक्ष में नहीं थे। अणुबम से लाखों लोगों की जान चली जाती है इसलिए वे अणुशक्ति का प्रयोग शांतिपूर्ण एवं रचनात्मक कार्यों के लिए करना चाहते थे।

(ग) डॉ. भाभा की प्रारंभिक पढ़ाई मुंबई के कैथेड्रल और जान कैनन हाईस्कूल में हुई। मुंबई विश्वविद्यालय से ई.एम.सी. की परीक्षा पास करके आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करके गणित और भौतिक विज्ञान की शिक्षा के लिए उन्होंने कैम्ब्रिज केयस कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉस्मिक किरणों के अनुसंधान के फलस्वरूप उन्हें लन्दन की रॉयल सोसाइटी का फैलो चुना गया। उन्हें विभिन्न विश्वविद्यालयों से पी.एच. डी. तथा डी.एस.सी. की उपाधियाँ प्राप्त हुईं।

(घ) 24 जनवरी, 1966 को भारतीय विमान सेवा का कंचनजंघा नामक जेट विमान मुम्बई से जिनेवा जा रहा था। डॉ. भाभा भी उसी विमान से यात्रा कर रहे थे। जिनेवा के पास एक बहुत ऊँचे पहाड़ माउन्ट ब्लॉक से वह विमान टकराकर गिर गया। इस दुर्घटना में डॉ. भाभा की मृत्यु हो गई।

5. **(क)** परमाणु ऊर्जा का उपयोग विकास कार्यों के लिए वरदानस्वरूप है। कृषि, चिकित्सा उद्योग आदि क्षेत्रों में इसका उपयोग होना चाहिए। नहरों, बाँधों तथा खानों के निर्माण के लिए इसका उपयोग होना चाहिए। विद्युत परमाणु रिएक्टरों के माध्यम से विद्युत उत्पादन किया जाना चाहिए। नाभिकीय रियेक्टर से प्राप्त उष्मा पानी को गर्म-करके भाप बनाने के काम आती है, जिसका बिजली उत्पन्न करने में उपयोग किया जाता है।

(ख) किसी कार्य से ध्यान बँटाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं—

(i) प्राकृतिक रूप से आकर्षक स्थलों पर भ्रमण किया जा सकता है।

(ii) संगीत सुनने का कार्य किया जा सकता है

(iii) रचनात्मक कार्य किए जा सकते हैं, जैसे—चित्रकारी आदि।

(iv) हास्य-व्यंग्य कार्यक्रमों को देखा जा सकता है।

(v) अच्छा साहित्य पढ़ा जा सकता है।

(ग) विमान दुर्घटनाएँ इंजन में खराबी आने से हो सकती हैं। परन्तु कभी-कभी पर्वतीय क्षेत्रों के मध्य से या ऊपर से गुजरने पर उन स्थलों की बनावट व ऊँचाई का सही ज्ञान न होने पर दुर्घटना होती है। आकाश में उड़ते पक्षियों से टकरा जाने पर विमान असन्तुलित होकर गिर सकते हैं या फिर इंजन में आग लग जाती है। पेट्रोल टैंक के अचानक फट जाने से भी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। तेज तूफान आने पर कुहरा या धुंध छाये रहने से दृष्टिबाधित होने की स्थिति में विमान दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। रडार यंत्र की खराबी से विमान सम्पर्क टूट जाने पर विमान भटककर दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं।

6. **(क)** यदि 15 वर्ष की आयु में ही डॉ. होमी जहाँगीर भाभा को यूरोप में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल जाता तो वे थोड़े समय में ही विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करके भारत लौट आते और अपनी प्रशंसनीय सेवाओं को देश को समर्पित करते। देश विविध क्षेत्रों में प्रगति करता और विश्व में अपने विकास से एक विशेष स्थान बना पाता।

(ख) यदि डॉ.भाभा का दुर्घटना में निधन नहीं होता तो अणुशक्ति द्वारा किए गए उनके शान्तिपूर्ण प्रयासों का विश्व पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता। अणुशक्ति का विनाशकारी रूप (बम) के निर्माण में प्रयोग नहीं किया जाता। देशों में

अपनी सुरक्षा के नाम पर बनने वाले विध्वंसक यंत्र नहीं बनते। विश्व में पर्यावरणीय समस्याओं का कुछ समाधान निकाला गया होता। पानी हवा आदि स्वच्छ रहते। अनेक रोगों से मुक्ति मिलती। विश्व के देश अपेक्षाकृत अधिक विकसित होते, सुख और शान्ति बढ़ती। भारत विकास के क्षेत्र में काफी समृद्ध होता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. अणु-शक्ति, पढ़े-लिखे, संगीत-प्रेमी, साथ-साथ
3. • संसार– विश्व, दुनिया।
   • उपवन– बाग, बगीचा।
   • दीप– दीया, दीपक।
   • मार्ग– पथ, राह।
4.

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
प्रभु	त्व	प्रभुत्व
पशु	त्व	पशुत्व
नारी	त्व	नारीत्व
पुष्प	इत	पुष्पित
सम्मान	इत	सम्मानित
प्रभाव	इत	प्रभावित
दर्शन	ईय	दर्शनीय
राष्ट्र	ईय	राष्ट्रीय
भारत	ईय	भारतीय

5.

शब्द	मूल शब्द	नया शब्द
अ	शुभ	अशुभ
अ	ज्ञान	अज्ञान
अ	सभ्य	असभ्य
सु	मार्ग	सुमार्ग
सु	गंध	सुगंध
सु	संस्कृत	सुसंस्कृत
दुर्	जन	दुर्जन
दुर्	गति	दुर्गति
दुर्	गुण	दुर्गुण

6. गृह, क्षेत्र, लज्जा।
7. • **अणुशक्ति**– अमेरिका ने सर्वप्रथम अणुशक्ति का प्रयोग जापान में किया था।
   • **संगीत-प्रेमी**– डॉ. अब्दुल कलाम बचपन से ही संगीत-प्रेमी थे।
   • **वैज्ञानिक**– चन्द्रशेखर वेंकट रमण भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे।
   • **सपूत**– डॉ. भाभा भारत माता के सच्चे सपूत थे।
8. **(क)** 'जाना' **मुख्य क्रिया** तथा 'है' **सहायक क्रिया**।
   (ख) 'पढ़ना' **मुख्य क्रिया** तथा 'चना है' **सहायक क्रिया**।
   (ग) 'लिखना' **मुख्य क्रिया** तथा 'रही है' **सहायक क्रिया**।
   (घ) 'गया' **मुख्य क्रिया**। 'था' **सहायक क्रिया**।

प्रायोजना कार्य–

1. **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम–**
   (i) डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम, तमिलनाडु में हुआ।
   (ii) वे एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे।
   (iii) उन्होंने भारत के मिसाइल कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
   (iv) उन्हें 'मिसाइल मैन' कहा जाता है।
   (v) वे ISRO और DRDO से जुड़े थे।
   (vi) उन्होंने भारत के पहले स्वदेशी SLV का नेतृतव किया।
   (vii) वे भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति बने।
   (viii) वे बच्चों और युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं।
   (ix) उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
   (x) 27 जुलाई 2015 को शिलांग में भाषण देते हुए उनका निधन हो गया।
2. **सी. वी. रमन–**
   (i) डॉ. रमन का जन्म 7 नवम्बर 1888 को हुआ।
   (ii) वे एक महान भौतिक विज्ञानी हैं।
   (iii) उन्होंने प्रकाश के प्रकीर्णन पर शोध किया।
   (iv) 1928 में उन्होंने 'रमन प्रभाव' की खोज की।
   (v) इसके लिए उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार मिला।
   (vi) वे नोबेल पाने वाले पहले एशियाई वैज्ञानिक थे।

(vii) उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान, बंग्लौर में कार्य किया।
(viii) वे 'रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट' के संस्थापक भी थे।
(ix) भारत सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया।
(x) उनका निधन 21 नवम्बर, 1970 को हुआ।

2. छात्र स्वयं करें।

3. 'विकास के लिए अणु-शक्ति का उपयोग' पर संक्षिप्त निबंध

आज के वैज्ञानिक युग में ऊर्जा की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है। अणुशक्ति एक ऐसी शक्ति है जो कम ईंधन से अधिक ऊर्जा प्रदान करती है। यह ऊर्जा परमाणु विखंडन या संलयन प्रक्रिया से प्राप्त की जाती है।

भारत में अणुशक्ति का उपयोग शांति एवं विकास के कार्यों में हो रहा है। इसका उपयोग बिजली उत्पादन, चिकित्सा, कृषि एवं उद्योगों में किया जा रहा है। इससे ऊर्जा संकट को कम करने में सहायता मिलती है। परमाणु ऊर्जा प्रदूषण रहित होती है और पर्यावरणको नुकसान नहीं पहुँचाती। यदि इसका सही उपयोग किया जाए तो भारत जैसे विकासशील देशों के लिए वरदान साबित होगा। अत: इस परमाणु शक्ति का उपयोग शान्ति और विकास के लिए होना चाहिए।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. इंजीनियरिंग **2.** अणुबम
3. अध्यक्ष **4.** संगीत प्रेमी
5. अत्यन्त सरल, उदार

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

13 बसन्त

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. (क) (i) वृक्ष काटकर
(ख) (ii) अमुआ पर
(ग) (i) कोयल **(घ)** (iv) बसंत

2. (क) हरियाली **(ख)** जीवन
(ग) कुहू-कुहू **(घ)** स्वागत

3. (क) हरियाली बसन्त ऋतु लाती है।

(ख) बसन्त में चम्पा, चमेली और गेंदा के फूल खिलते हैं।

(ग) अब पहले की तरह बसन्त इसलिए नहीं आता है क्योंकि लोगों ने पेड़-पौधे और जंगल काट दिए हैं।

(घ) पूर्व की तरह बसन्त अब तभी आएगा जब चारों ओर बंजर पड़ी धरती पर लोग पेड़-पौधे लगाएँगे और फिर से हरियाली आएगी।

(ङ) बसन्त में चारों ओर मस्त हवा बहने लगती है। आसपास का वातावरण खुशबू से भर जाता है, हरियाली छा जाती है, तरह-तरह के फूल खिल उठते हैं। आम पर बौर आने लगते हैं। उनकी डालियों पर झूले पड़ जाते हैं। मोर-मोरनी नाचने लगते हैं। कोयल पत्तों के झुरमुट में कुहू-कुहू की धुन में गीत गाती है।

4. (क) कवि कहता है कि हे बसंत! जब तुम आते थे तो मतवाली हवा बहने लगती थी, उसमें पागल हुआ मन झूम उठता था। वन में मोर भी मोरनी के साथ नाचने लगता था।

(ख) कवि के पूछने पर बसंत जवाब देता है कि मैं कहाँ पर आऊँ? क्योंकि मेरे ठहरने के हरे-भरे पेड़ तुमने काट दिए हैं, बताओ तो मैं अब कहाँ ठहरूँ?

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. (क) चमेली। **(ख)** मयूर।
(ग) जंगल। **(घ)** उजाड़।

3. फूल– सुमन, कुसुम
मयूर– मोर, केकी

जंगल— वन, कानन
पवन— हवा, वायु
वृक्ष— पेड़, विटप

4. • चम्पा चमेली रंग।
• कुहू कुहू धुन आती थी।
• तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
• सुनु सिय सत्य असीस हमारी।

5.

विशेषण	विशेष्य
मस्त	पवन
सुन्दर	फूल
काली	कोयल

प्रायोजना कार्य—

1. छात्र स्वयं करें।
2. बसंत ऋतु में खिलने वाले फूलों की सूची— गेंदा, गुलाब, चमेली, कचनार, पलाश, सूरज-मुखी, सरसों, गुलमोहर आदि।
3. छात्र स्वयं करें।
4. वसंत ऋतु के आगमन से वातावरण में निम्न परिवर्तन आते हैं—
(i) वातावरण ताजगी और मिठास से भर जाता है।
(ii) पेड़-पौधे फूलों से सज जाते हैं।
(iii) कोयल की कूक सुनाई देने लगती है, तितलियाँ मँडराने लगती हैं।
(iv) मौसम सुहावना हो जाता है।
(v) ये ऋतु आनंद, उल्लास और नई ऊर्जा लेकर आती है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (स), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. हरियाली **2.** अमुआ
3. मस्त **4.** जीवन
5. हरियाली

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (ख)।

विविध प्रश्नावली–2

1. **(क)** (ii) सरोजनी नायडू ने
(ख) (iv) ट्रॉम्बे में
(ग) (iii) थलचर
(घ) (ii) आरोग्य सम्राट की

2. **(क)** बुद्धिमत्ता **(ख)** दीपक
(ग) पद्म भूषण **(घ)** भारत
(ङ) मुझसा

3. **(क)** सूर्य की किरणें हमारे शरीर में विटामिन डी की वृद्धि करती हैं।
(ख) मीराबाई ने अपने पति की निशानी बताई है कि वे अपने सिर पर मोर-मुकुट धारण करते हैं।
(ग) बसन्त के स्वागत में कोयल गाती थी।
(घ) 'मेघ मल्हार' वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला राग है जो बादलों को आमन्त्रित करता है।
(ङ) झाँसी की रानी की कहानी हमने बुन्देलखण्ड के हरबोलों के मुख से सुनी है।

4. **(क)** सम्राट अकबर स्वामी हरिदास के गायन को सुनने के लिए सेवक का वेष धारण करके उनके आश्रम पर पहुँचे। स्वामीजी का संगीत सुनकर भाव-विभोर हुए अकबर ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वामी जी आपका संगीत सचमुच ही 'जन्नत का संगीत' है।
(ख) रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम छबीली था। वे अपने पिता की इकलौती सन्तान थी। वे कानपुर के नाना साहब के साथ ही पढ़ती थीं और खेल भी उनके साथ खेलती थीं। बरछी, ढाल, तलवार और कटारों से खेलना उनका प्रिय खेल था। वे बड़ी साहसी थीं। उन्होंने अपने बचपन में ही वीर शिवाजी की वीरता से भरी कहानियाँ सुनीं और जवानी याद थीं।
(ग) कबीर ने अपने पुत्र कमाल को यह सीख दी कि केवल दो बातें सीख ले, पहली ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। दूसरी, जो व्यक्ति दीन और

भूखा हो, उसे भिक्षा देनी चाहिए। भूखे व्यक्ति को भोजन कराना बड़े पुण्य का काम है।

(घ) रहीम के अनुसार विपत्ति रूपी कसौटी पर कसे जाने पर ही सच्चे मित्र की पहचान होती है। जिस तरह शुद्ध सोने की परख कसौटी पर घिसकर की जाती है, उसी तरह सच्चे मित्र की पहचान भी उस समय होती है जब विपत्ति काल में वह अपने मित्र की सहायता करने को तत्पर रहता है।

5. (क) भावार्थ— भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में उन्होंने आँसू बहाते हुए, उनके प्रति प्रेम की बेल को बोया है और लगातार सींचा है। वह बेल अब फूलकर फैल चुकी है। उस पर अब तो आनन्द के फल लगने शुरू हो गए हैं।

(ख) भावार्थ—रानी लक्ष्मीबाई शत्रुओं से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गईं। जिस समय वह वीरगति को प्राप्त हुईं, उस समय उनकी उम्र मात्र तेईस वर्ष की थी। उन्होंने सचमुच मनुष्य के रूप में भारतीयों को अपने वतन के लिए मर मिटने हेतु सीख देने के लिए अवतार लिया था। बुन्देले हरबोले आज भी उसकी गौरव गाथा गाकर बताते हैं कि रानी लक्ष्मीबाई ने बड़ी बहादुरी से युद्ध किया था।

(ग) भावार्थ— बसन्त कवि को उत्तर देते हुए कहता है कि मैं कहाँ पर आऊँ, क्योंकि मेरे ठहरने के स्थान हरे-भरे पेड़-पौधे थे, उनको तुमने काट डाला है। बताओ तो मैं अब कहाँ ठहरूँ। हरियाली से परिपूर्ण जंगलों को तुमने उजाड़ दिया है। हरे-भरे वन ही मेरे निवास स्थान थे, उन्हें ही काटकर मेरा घर बरबाद कर तुमने वनों को आपस में बाँट लिया है। मेरे लिए तो रहने का स्थान छोड़ा ही नहीं है। अब मैं कहाँ आऊँ?

(घ) भावार्थ— रहीम जी कहते हैं कि विपरीत समय को देखकर किसी भी कार्य की सिद्धि न हो सकने की दशा में शान्तिपूर्वक बैठ जाना ही उचित है। ऐसे समय में व्यक्ति को अधीर नहीं होना चाहिए क्योंकि जब अच्छा समय आएगा, तो सारी बातें अपने आप ही बन जाती हैं।

6. (क) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि पुड़िया में दूत द्वारा लाई गई मिट्टी उस स्थान की है, जहाँ के लोगों ने हमेशा मानवता की रक्षा की। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर स्वेच्छा से, प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणों का बलिदान कर दिया इसलिए यह मिट्टी बहुत ही सम्मानित है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि संसार के लगभग हर मनुष्य के चेहरे से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके पास किसी-न-किसी वस्तु का अभाव है परन्तु हम लोग उस अभाव को छिपाने का ढोंग करते हैं। यह अभाव एक ऐसा धुँधलापन है जो मनुष्य की वास्तविकता को प्रकट करता है।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि हमारे शरीर की रचना पाँच भौतिक तत्वों से हुई है। ये पंचभूत पाँच तत्व कहलाते हैं—

1. पृथ्वी, 2. जल, 3. अग्नि, 4. आकाश, 5. समीर (वायु)।

इन पाँच भौतिक तत्वों को संतुलित रखने से ही इस पंचभूत शरीर को पूर्ण स्वस्थ रखा जा सकता है।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि किसी राजा या शासक द्वारा राजदरबार में मिल जाने वाला सम्मान सदैव सुख देने वाला नहीं होता है। कभी-कभी इस प्राप्त किए गए सम्मान की परीक्षा देनी पड़ती है। उस परीक्षा में प्राण भी जा सकते हैं।

7. कविता के अनुसार बसन्त ऋतु में चम्पा, चमेली और गेंदे, सरसों, गुलमोहर, कचनार, सूरजमुखी, पलास आदि के फूल खिलते हैं।

8. 1. नरेन्द्रनाथ के गुरु का नाम 'स्वामी रामकृष्ण परमहंस' था।

2. स्वामी जी ने गुरु से यह प्रश्न किया कि क्या उन्होंने ईश्वर को देखा है?

3. स्वामी विवेकानन्द को गुरु ने आदेश दिया कि 'जन सेवा ही प्रभु सेवा है।'

4. उचित शीर्षक है—'स्वामी रामकृष्ण परमहंस और उनके शिष्य विवेकानंद'।

9. छात्र व्याकरण भाग से 'पत्र लेखन' देखें और स्वयं करें।

10. छात्र व्याकरण भाग में 'निबन्ध लेखन' देखें और स्वयं करें।

14 नारियल का बगीचा–केरल

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) केरल में **(ख)** (iii) कथकली
2. **(क)** ओणम **(ख)** चाय
   (ग) त्रिवेन्द्रम **(घ)** हिन्दी
   (ङ) शौकीन
3. **(क)** रामकृष्ण मेनन का वतन केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में था।

   (ख) लेखक को प्लेटफार्म पर खड़े सज्जन पर दया इसलिए आ गई, क्योंकि एक पहलवाननुमा लड़का डिब्बे के दरवाजे में खड़ा होकर उसे डिब्बे में चढ़ने नहीं दे रहा था और गाड़ी चलने वाली थी। लेखक की पहल पर वह बेचारा प्लेटफार्म से डिब्बे में चढ़ सका।

   (ग) केरल के वनों में सागौन, शीशम, रबर और चन्दन के वृक्ष होते हैं। नारियल का पेड़ वहाँ के लोगों की प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

   (घ) केरलवासी नारियल को कल्पवृक्ष कहते हैं।

   (ङ) केरल के लोग गर्मी की अधिकता के कारण प्राय: ढीले–ढाले व सफेद रंग के कपड़े पहनते हैं। यहाँ के पुरुष लुंगी के अलावा कुछ नहीं पहनते तथा स्त्रियाँ धोती व ब्लाउज पहनती हैं।

   (च) कथकली नामक नृत्य–कला में अनेक कथाओं को नृत्य में ढाल लिया जाता है इसलिए इसे कथकली कहा जाता है।
4. **(क)** नारियल अमृततुल्य मीठा पानी प्रदान करता है। उसकी गिरी से साग–सब्जी और चटनी बनाई जाती है। उसके गोले से तेल निकाला जाता है जो भोजन के अतिरिक्त साबुन बनाने और सिर में डालने के काम आता है। इसके तने का उपयोग नाली बनाने में किया जाता है। उससे रस्सी, मोटे रस्से, चटाई, कूँची, पायदान बनाये जाते हैं। नारियल के छिलकों से कटोरे, प्याले, चमचे आदि बनाए जाते हैं। मकान बनाने के लिए नारियल की लकड़ी और मकान की छत के लिए पत्तियों का उपयोग किया जाता है।

   (ख) केरल की प्राकृतिक सुन्दरता अनोखी है। जिस तरह भारत के कश्मीर में प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा है, वैसे ही यहाँ के वन समूह में अनेक तरह के पेड़–पौधे पाये जाते हैं। इन पेड़–पौधों ने केरल को प्राकृतिक सुन्दरता दे दी है। रंग–बिरंगे फूलों और चन्दन आदि के वृक्षों की गंध चारों ओर बिखरती रहती है इसलिए केरल को भारत का नन्दनवन कहते हैं।

   (ग) चावल केरल के लोगों का मुख्य भोजन है। वहाँ चावल से भिन्न–भिन्न वस्तुएँ बनाई जाती हैं। चावल के साथ रसम तथा सांभर भी बनता है। रसम एक तरह का मसालेदार पानी होता है और सांभर एक प्रकार की दाल होती है। वहाँ इडली और डोसा प्रिय खाद्‌य पदार्थ है, जो पूरे भारत में लोकप्रिय हैं।

   (घ) केरल का मुख्य त्योहार ओणम है। इस त्योहार पर घरों को सजाया जाता है। नौका और लक्ष्मी की पूजा की जाती है। अनेक मिठाइयाँ बनती हैं। नौका प्रतियोगिता होती है। नौकाओ में बैठे लोग मीठे स्वरों में गीत गाते हैं। दोनों किनारों पर दर्शकों की अपार भीड़ जमा होती है। इस अवसर पर हाथियों पर देवताओं की सवारी निकाली जाती है। संगीत और नृत्य के कार्यक्रम होते हैं।

   (ङ) केरल में कथकली नामक नृत्यकला विकसित हुई है। यह कथकली नृत्य आज पूरे भारत में प्रसिद्ध है। इस कला की यह विशेषता है कि इसमें अनेक कथाओं को नृत्य में ढाल लिया जाता है। इसलिए इसे कथकली कहा जाता है।
5. **(क)** जैसा देश वैसा वेष रामकृष्ण ने इसलिए कहा क्योंकि मनुष्य जिस स्थान और जलवायु वाले प्रदेश में रहता है, तो वह वहाँ के मौसम के अनुकूल अपने वस्त्रों का चुनाव करता है।

   (ख) केरल में सफेद कपड़े पहनते हैं क्योंकि वहाँ मौसम गर्म होता है। गर्मी के कारण लोग ढीले–ढाले कपड़ों का चुनाव करते हैं जिससे उन्हें गर्मी कम लगे। सफेद कपड़ा ऊष्मा को कम शोषित करता है जिससे लोगों को गर्मी का कम अहसास होता है।

   (ग) रामकृष्ण मेनन का जन्म त्रिवेन्द्रम में हुआ है और त्रिवेन्द्रम केरल की राजधानी है, इसलिए केरल को अपना वतन कहते हैं।

   (घ) पहलवाननुमा लड़का सज्जन को ट्रेन के अन्दर इसलिए नहीं आने दे रहा था क्योंकि वह

डिब्बे में भीड़ नहीं चाहता था। साथ ही वह दरवाजे पर खड़ा होकर बाहर का दृश्य देख रहा था और खुली हवा ले रहा था।

6. **(क)** यदि लेखक उस सज्जन को ट्रेन के अन्दर आने में मदद नहीं करते तो वे बेचारे उसी प्लेटफार्म पर रह गए होते और ट्रेन चली जाती। वे रातभर उसी प्लेटफार्म पर ही पड़े रहते। दूसरी गाड़ी जो उनके गन्तव्य तक ले जाती उसका इंतजार करते फिर उससे आते।

(ख) यदि केरल का मौसम कश्मीर जैसा होता, तो वहाँ का जन–जीवन अब की अपेक्षा बिल्कुल विपरीत होता। वहाँ का प्राकृतिक वातावरण भी कश्मीर जैसा ही होता। उनका खान–पान बिल्कुल भिन्न होता। वे ढीले–ढाले कपड़ों के स्थान पर गर्म कपड़े पहनते। वे रंगीन कपड़े पहनना पसन्द करते। उन लोगों के शरीर का रंग भी गोरा होता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. वृक्षों, गौर, आत्मीयता, हाँफते, पत्तियों, कार्यक्रम।
3. (i) सरलता, (ii) कठिनता, (iii) तरलता, (iv) समीपता, (v) मलिनता।
4.

शब्द	इक	नया शब्द
संस्कृत	इक	सांस्कृतिक
संसार	इक	सांसारिक
समाज	इक	सामाजिक
प्रकृति	इक	प्राकृतिक
धर्म	इक	धार्मिक

5.

तत्सम	तद्भव
पितृ	पिता
भगिनी	बहन
वानर	बंदर
रज्जु	रस्सी
नृत्य	नाच
चन्द्रमा	चाँद
रात्रि	रात

6. **(क)** मैंने **(ख)** मैं
(ग) मुझे **(घ)** मेरी
(ङ) वह

अनुभव विस्तार–

राज्य	भाषा	नृत्य	त्योहार
पंजाब	पंजाबी	भाँगड़ा	बैसाखी
असम	असमिया	बिहू	बिहू
गुजरात	गुजराती	गरबा	नवरात्रि
महाराष्ट्र	मराठी	कोली	गणेश चतुर्थी
मध्यप्रदेश	हिन्दी	जाबरा	लोकरंग महोत्सव

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (अ), **4.** (स), **5.** (द)।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. रेल **2.** चावल
3. प्लेटफार्म **4.** नृत्य, संगीत
5. कथकली

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

15 दस्तक

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) सोनू **(ख)** (ii) कोवलम।
2. **(क)** हरीबाबू **(ख)** समाज सेवा
3. **(क)** सोनू छत से गिर पड़ा और सदमे से वह अचेत हो गया था।

(ख) गरीबा बीमार हो गया था। मुलाकात न होने के कारण लेखक उससे मिलने उसके घर गया था।

(ग) सोनू के छत से गिरने पर उसे मूर्छित देखकर शीला स्वयं मूर्च्छित हो गई थी।

(घ) लेखक ने आठवर्षीय गणेशन के पैर में

चुभी कील को निकाला और पट्टी बाँध दी। उसे अपनी पीठ पर लादकर ऑटो स्टैण्ड तक पहुँचाया। इस प्रकार उसने गणेशन की मदद की।

4. **(क)** शीला अपने पति से इसलिए नाराज रहती थी क्योंकि वे (पति) अपने अपने कामों की चिन्ता छोड़कर समाज के कामों में लगे रहते थे। लोगों की समस्याओं का समाधान करने हेतु (लेखक महोदय) लगे रहते थे। अपने घर और गृहस्थी से वे बेफिक्र हो जाते थे।

(ख) लेखक के पुत्र का नाम सोनू था जो एक बार छत से गिर पड़ा, मूर्च्छित हो गया। जिस किसी ने भी यह समाचार सुना, वही सहायता के लिए दौड़ पड़ा। शीला पुत्र को मूर्च्छित दशा में देखकर स्वयं मूर्च्छित हो गई थी। एकत्र हुए समाज के लोगों ने स्वयं की सहायता में खड़े पाना, शीला के व्यवहार में परिवर्तन का कारण था। इतनी संख्या में सहायकों और सहयोगियों को देखकर शीला के व्यवहार में परिवर्तन हो गया और समाज सेवा में उसका विश्वास बढ़ गया।

(ग) लेखक अपने घर–गृहस्थी के काम छोड़कर समाज सेवा में तत्पर रहते थे। एक दिन जब उनका बेटा सोनू छत से गिर पड़ा, अचेत हो गया, तो समाज के लोग ही उसे अस्पताल ले गए। लेखक की गैर–मौजूदगी में भी समाज के लोगों ने उनके पुत्र सोनू के लिए बहुत सहयोग दिया क्योंकि लेखक चौबीस घण्टे समाज की सेवा में लगे रहते थे, तो उस दिन समाज ने भी अपनी कृतज्ञता का परिचय दिया। अत: समाज ने वही किया, जैसा उन्होंने समाज के लिए किया था।

(घ) शीला स्वयं के साथ सामाजिक लोगों का बर्ताव देखकर उनसे प्रभावित हुई। अब वह भी मौहल्ले में जाकर महिलाओं के बीच समाज सेवा करने लगी। वह कहने लगी कि समाज की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। जो व्यक्ति समाज की उपेक्षा करके, अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट होता रहता है और जिसे समाज के कल्याण की चिन्ता नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों का प्रकृति स्वयं नियन्त्रण करती है। समय आने पर उन्हें दण्ड भी देती है।

5. लेखक की पत्नी शीला इस कथन के माध्यम से समाज में फैल रहे स्वार्थ और निजी जीवन में लिप्त लोगों की विचारधाराओं का खण्डन करती है। वह बताती है कि जो व्यक्ति सिर्फ अपने स्वार्थ में लगा रहता है और सदैव समाज की उपेक्षा करता रहता है, कभी न कभी उसके जीवन में ऐसा समय आ जाता है जब प्रकृति उन्हें खुद दण्ड देती है और उनके द्वारा किए गए कार्यों पर नियंत्रण स्वयं ही हो जाता है अर्थात् जब ईश्वर हिसाब करता है तो दूध का दूध और पानी का पानी कर देता है।

6. **(क)** अपने पुत्र सोनू के छत से गिर जाने पर समाज के लोगों ने शीला को जो सहयोग दिया इससे उसके विचारों में परिवर्तन आ गया था। उसने समझ लिया कि सेवा का बदला सेवा के रूप में ही प्राप्त होता है। यह समझकर शीला मोहल्ले–मोहल्ले जाकर समाज–सेवा करने लगी।

(ख) छत की दुर्घटना से बचने के लिए मकान की छत की मुंडेर की ऊँचाई अधिक होनी चाहिए। छत के किनारे ग्रिल लगी होनी चाहिए। ध्यान दिलाते रहना चाहिए कि छत पर सावधानी बरतें, खेलते हुए बच्चे या युवक आपस में धक्का–मुक्की न करें। छत पर पतंग लूटना या उड़ानी नहीं चाहिए।

7. **(क)** यदि त्रिवेन्द्रम में लेखक की जगह मैं स्वयं होता तो गणेशन को ऑटो स्टैण्ड पर लाकर ऑटो से अस्पताल पहुँचाता और उसकी उचित मरहम–पट्टी करवाता और उसको घर पहुँचाकर ही, अपने काम को पूरा करता।

(ख) यदि मैं हरीबाबू की तरह ऊँचे पद पर होता तो अवश्य ही समाज कल्याण के कार्य करता। ऊँचे पद पर होने का अर्थ यह नहीं है कि मानवता को भुला दिया जाए और व्यक्ति अपने स्वार्थों की पूर्ति भर ही करता रहे। सरकारी अधिकारी भी जनता का सेवक होता है। जनता की किसी भी असुविधा का निवारण करना, उसकी सेवा करना ही उसका धर्म है। मैं रिश्वतखोरी और चापलूसी से बचकर रहता। गरीब और सरल व्यक्तियों की मदद करता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. मनोरंजन, अन्तर्द्वन्द्व, हृदय, चंचल, दर्शन।

3.

शब्द	विलोम शब्द
उपस्थित	अनुपस्थित
कठिन	सरल
अमीर	गरीब
उन्नति	अवनति
कठोर	कोमल

4. ● संज्ञा– शीला, हरीबाबू, सोनू, गरीबा।
● सर्वनाम– वे, वह, मैं, उसने।
● क्रिया-चिल्लाना, बोलना, बड़बड़ाना, अघाना।

5. प्लास्टर, लाचार, सरेआम, फिल्मी, खाँसी, देहात, आरामखाना, मनुहार, दम, अमुक, कार, तमाम, गन्दी, माफ, मोहल्ला, लायक, बेताब, टेपरिकार्डर, हवाइयाँ, ऑटो स्टैण्ड, किलोमीटर, रूमाल, अस्पताल।

6. बुरा + आई = बुराई
लड़खड़ाना + आहट = लड़खड़ाहट
चतुर + आई = चतुराई
गुनगुनाना + आहट = गुनगुनाहट
भला + आई = भलाई
लड़ना + आई = लड़ाई
गुदगुदाना + आहट =गुदगुदाहट
चहचहाना + आहट = चहचहाहट

7. ● तिल का ताड़ बनाना– छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
प्रयोग– आजकल लोग छोटी-छोटी बातों को तिल का ताड़ बनाकर कहते हैं।
● नाक में दम करना– परेशान कर देना।
प्रयोग– छुट्टी वाले दिन बच्चे घरवालों की नाक में दम कर देते हैं।
● सीधे मुँह बात न करना– घमण्ड करना।
प्रयोग– जब से गोलू की लॉटरी लगी वह किसी से भी सीधे मुँह बात नहीं करता है।
● कान भरना– चुगली करना।
प्रयोग– मंथरा राम-लक्ष्मण के विपरीत कैकेयी के कान भरती रहती थी।

अनुभव विस्तार

1. **परोपकार का महत्व**

परोपकार का अर्थ है—दूसरों की भलाई करना। वह भी निःस्वार्थ। यह एक महान गुण है जो मानवता की असली पहचान है। परोपकारी व्यक्ति समाज में आदर और सम्मान प्राप्त करता है।

दूसरों की सहायता करके न केवल हम उनका जीवन सँभालते हैं, बल्कि आत्मिक सुख भी प्राप्त करते हैं। जरूरतमंदों की मदद करना, दीन-दुखियों को सहारा देना और शिक्षा या अन्न आदि देना परोपकार के रूप हैं। परोपकार से समाज में प्रेम, भाईचारा और सहयोग की भावना बढ़ती है।

इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में परोपकार को अपनाना चाहिए, क्योंकि परोपकार ही सच्चा धर्म है।

2. बचपन में मैं गंगा स्नान करने अपने बड़े भाई के साथ गया था। वहाँ भीड़ अधिक होने पर मैं अपने भाई से बिछड़ गया और रात हो गई तब एक व्यक्ति ने मुझे मेरे घर तक पहुँचाया।
एक बार दो बच्चे अपने माँ-बाप से बिछड़ गए थे। मैंने उन्हें अपने घर लाकर उन्हें खाना खिलाया और उनके अभिभावक तक पहुँचाया। मैं समझता हूँ, जैसा किसी ने मेरे साथ किया वैसा ही मैंने किसी अन्य व्यक्ति के साथ भलाई का कार्य किया।
(नोट– बच्चे अपने बारे में घटित घटना लिखें)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. गरीबा **2.** चंचल
3. सोनू **4.** गणेशन
5. सोनू

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

16 श्रम की महिमा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) किसान **(ख)** (iii) जुलाहा
   (ग) (ii) वकील **(घ)** (ii) श्रम करना
2. **(क)** बीज **(ख)** कंकड़
   (ग) सफाई **(घ)** जुलाहों
3. **(क)** इस पंक्ति से कवि का आशय यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी काम को करने से छोटा या बड़ा नहीं होता है।
   (ख) आश्रम के कार्य गांधीजी स्वयं ही करते थे क्योंकि वे श्रम करने को ही ईश्वर की पूजा मानते थे।
   (ग) 'ऐसे थे गांधीजी' सम्बोधन में कवि का संकेत यह है कि आश्रम के हर कार्य को चाहे वह सूत कातना हो, अनाज से कंकड़ अलग करना हो, कपास धुनना हो, चक्की पीसना हो, कपड़ा बुनना हो, स्वयं किया करते थे। उन्हें स्वच्छता पसंद थी।
   (घ) गांधीजी ने सेवा के काम को ईश्वरीय सेवा इसलिए माना है क्योंकि सेवा के काम में समर्पण, त्याग और निष्ठा का भाव होता है। इसके द्वारा ही व्यक्ति महान बनता है और अपने मन की सारी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है।
   (ङ) इस कविता से हमें यह सीख मिलती है कि अपने सभी काम व्यक्ति को स्वयं करने चाहिए। काम करने से कोई भी व्यक्ति नीचा-ऊँचा अथवा बड़ा या छोटा नहीं होता है। काम करने के पीछे सेवा की भावना होती है। सेवा का कार्य ही ईश्वर की पूजा है।
   (च) गांधीजी छोटे-से-छोटे कार्य को महत्त्व इसलिए देते थे क्योंकि छोटे से छोटा कार्य भी महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्येक छोटे कार्य से ही बड़े कार्य करने का मार्ग खुलता है और मन में व्याप्त हो रहे अहंकार का स्वयं ही विनाश हो जाता है।
4. **(क)** कवि कहते हैं कि गांधी जी का मानना था कि सेवा भाव से किया गया कोई भी काम ईश्वर सेवा होता है।
   (ख) गांधीजी का मानना था कि कर्म करने वाला हर व्यक्ति समान होता है। घड़ी बनाने वाला हो या चप्पल बनाने वाला मोची हो। सभी के अपने-अपने कार्य होते हैं। इसमें कोई भी व्यक्ति काम करने से छोटा या बड़ा नहीं होता है।
   (ग) कवि कहता है कि गांधीजी और उनका आश्रम ऐसा था, जिसमें वे श्रम को ही पूजा मानते थे।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. पुस्तक, जुलाहों, ईश्वर, उत्साह।
3.

तद्भव	तत्सम
दूध	दुग्ध
घर	गृह
सूरज	सूर्य
मुँह	मुख
दाँत	दंत
आग	अग्नि

4.

(क) मुहावरे	(ख) अर्थ
1. चक्की पीसना	कड़ी मेहनत करना
2. कागज काले करना	व्यर्थ प्रयास करना
3. अक्ल ठिकाने आना	बात समझ आना
4. हाथ बढ़ाना	मदद के लिए आगे आना

5. (i) चश्मा (ii) लाठी
   (iii) खादी की धोती (iv) चरखा
   (v) घड़ी
6. ● व्यापारी– रामनगर में एक व्यापारी रहता था।
   ● कपड़ा– पहले जुलाहा कपड़ा बुनता था।
   ● आदमी– आदमी अपना काम स्वयं करता है।
   ● चक्की– बचपन में मेरी माँ जी सुबह जल्दी उठकर चक्की पीसती थीं।

प्रायोजना कार्य–

1. हाँ, मैं स्वावलंबी हूँ। मैं अपने बहुत से काम स्वयं करता/करती हूँ। ये पाँच काम मुझे स्वावलंबी बनाते हैं–
   (i) मैं अपने कपड़े स्वयं धोता/धोती हूँ।
   (ii) मैं स्कूल का होमवर्क बिना किसी की मदद के करता/करती हूँ।
   (iii) मैं समय पर स्कूल के लिए तैयार होता/होती हूँ।

(iv) मैं किताबों और कॉपियों को खुद ही सँभाल कर रखता/रखती हूँ।
(v) मैं अपना कमरा आप ही साफ करता/करती हूँ।

2. छात्र स्वयं करें।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (ब), **4.** (द), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. झाड़ता **2.** बल
3. पूजा **4.** ईश्वर
5. पीसेंगे

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

17 संकल्प

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) मन में **(ख)** (ii) फूल से
2. **(क)** गरज-गरज। **(ख)** गिर-गिरकर।
   (ग) चुन-चुनकर।
3. **(क)** आत्म-विश्वास कार्य करने से बढ़ता है।
   (ख) 'उद्‌गम रूप धरें' का आशय यह है कि बूँदें लगातार गिरने से नदी का उद्‌गम बन जाती हैं अर्थात् नदी के प्रवाह को रूप दे देती हैं।
   (ग) जब यह धरती सूरज की गरमी सहन करती है और फिर बादलों के बरस पड़ने पर ताप सहने वाली धरती जल को सोखती है, फिर धरती अपने अन्दर से बीज को उगाकर फल देती है।
   (घ) सूर्य की किरणें जल को प्रतिदिन भाप के रूप में बदलती रहती हैं, वही भाप बादल का रूप धारण कर लेती है।
   (ङ) कविता में संकल्प करने पर इसलिए बल दिया गया है, क्योंकि दृढ़ संकल्प करके ही व्यक्ति अपने सुविचारित कार्य में सफलता प्राप्त करता है।
   (च) अनेक हाथों से एक-एक तोड़े गए फूलों को धागे में पिरोने पर ही हार बनता है।
4. **(क) भावार्थ**—कवि कहता है कि जिस प्रकार आकाश से एक बूँद गिरती है, तो वह सूख ही जाती है लेकिन वही बूँद बार-बार गिरेगी तो वह एक घड़े को भर देती है। बूँदों के गिरने की निरन्तरता किसी भी नदी का उद्‌गम बन जाती है अर्थात् नदी के प्रवाह को रूप दे देती है। इसलिए बार-बार गिरकर हम चलना सीखते हैं। हमें गिरने से कभी डरना नहीं चाहिए। कवि के कहने का तात्पर्य है कि जीवन में असफलताएँ आती रहती हैं, पर हमें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि असफलता ही सफलता की सीढ़ी है।
   (ख) कवि कहता है कि एक-एक फूल को चुनकर अनेक हाथों से गूँथे जाने पर ही हार (माला) बन पाता है। यदि हम जीतने का संकल्प लेकर विजय-पथ पर आगे बढ़ें तो हमें सफलता से कोई नहीं रोक सकता। हमें अपने जीवन में आने वाली रुकावटों से, बाधाओं से कभी डरना नहीं चाहिए।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. बूँदें, संकल्प, दुर्गम, किरणें, पर्वत।
3. विश्वास — अविश्वास
   पराजय — जय
   धरती — आकाश
   सुगम — दुर्गम
4. ● **पथ**— जीवन के <u>पथ</u> पर अनेक बाधाएँ आती हैं।
   ● **प्रतिदिन**— अपना कार्य <u>प्रतिदिन</u> पूरा करो।
   ● **बादल**— कुछ <u>बादल</u> गरजते भी हैं और बरसते भी हैं।
   ● **विजय**— संघर्ष से ही <u>विजय</u> मिलती है।
   ● **काँटा**— पैर में <u>काँटा</u> चुभने पर बहुत दर्द हो रहा था।
5. सविता, पाहन, पीयूष, लता, गगन।
6. **(क)** ● पथ-पर्वत
   (ख) ● बार-बार

(ग) • गिर–गिर कर

(घ) • बादल बरस

अनुभव विस्तार

(क) बूँद–बूँद से घड़ा भरता है।

अर्थ— छोटे–छोटे प्रयासों से बड़ा कार्य होना।

(ख) फल और काँटे का जीवन में यह महत्व है कि जब व्यक्ति फल की चाह करता है तो उसे काँटों से गुजरना पड़ता है अर्थात् जीवन में लक्ष्य (फल) प्राप्त करने के लिए मार्ग में आने वाली बाधाओं (काँटों) को झेलना पड़ता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (स), **4.** (अ), **5.** (अ)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. निज **2.** घट

3. गिर–गिर **4.** छोटा

5. सागर

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

18 परमानन्द माधवम्

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. (क) (i) 23 नवम्बर, 1909

(ख) (iii) चाँपा **(ग)** (ii) कुष्ठ रोग

(घ) (i) 16 मई, 1977

2. (क) करुणा **(ख)** कुष्ठ निवारण

(ग) अपनी पुत्री **(घ)** लखुर्री

3. (क) सदाशिवराव कात्रे का जन्म गुना (मध्य प्रदेश) जिले के आरौन ग्राम में हुआ था।

(ख) कुष्ठ रोगी से घृणा भाव होने का कारण कुष्ठ रोगी के घावों से द्रव का निरन्तर बहते रहना और भिनभिनाती मक्खियाँ हैं।

(ग) सदाशिवराव कात्रे सोचते थे कि कुष्ठ रोगी पिता की कन्या का वरण कौन करेगा। इस दृष्टि से उन्होंने अपनी पुत्री प्रभावती को पढ़ाया।

(घ) सदाशिवराव कात्रे के अथक परिश्रम एवं राष्ट्रभक्ति के भाव से समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने लगा।

(ङ) मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम हरिभाऊ पाटस्कर से प्रेरणा प्राप्त करके सदाशिवराव कात्रे ने कुष्ठ रोगियों की सेवा का कार्य प्रारम्भ किया।

4. (क) सदाशिवराव कात्रे के कुष्ठ रोग के कारण जीवन में घृणा, दुराव और निराशा भर गई थी परन्तु फिर भी उनके अन्दर जीवन जीने की लालसा स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। उन्होंने इन सभी विपरीत स्थितियों में कुष्ठ रोग को दूर करने का व्रत लिया और सुनियोजित प्रयास किए। इससे लगता था कि उनमें जिजीविषा विद्यमान थी।

(ख) सदाशिवराव कात्रे को परमानन्द माधवम् इसलिए कहा जाता था कि उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय तक कुष्ठ रोगियों की सेवा की, आश्रम व चिकित्सालय की स्थापना की। आश्रम में हर क्षण भगवत् भवन और संकीर्तन चलता रहता था। उनके प्रयास से कुष्ठ रोगियों का उपचार किया, समाज में रोगियों के प्रत सही धारणा बनने लगी। साथ ही सदाशिव का अर्थ परमानन्द और गोविन्द का नाम माधव भी होता है इसलिए उन्हें परमानन्द माधवम् कहा जाने लगा।

(ग) जब सदाशिराव कात्रे ने कुष्ठ रोगियों के इलाज का संकल्प लिया तब उनकी भेंट मध्य प्रदेश के राज्यपाल महामहिम हरिभाऊ पाटस्कर से हुई। उनसे प्रेरणा लेकर सेवा के कार्य में खुशी–खुशी लगे रहे। उन्हें कुष्ठ रोगियों की चिकित्सा एवं आवास के लिए लखुर्री नामक ग्राम में स्थान मिल गया। आगे चलकर यह आश्रम भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, चाँपा के नाम से सन् 1962 में विधिवत स्थापित हो गया।

5. (क) प्रकृति ने भी सदाशिवराव कात्रे के साथ क्रूर उपहास किया है। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि सदाशिवराव कात्रे के पिता का देहावसान उस समय हो गया जब इनकी आयु आठ वर्ष थी। इनकी शिक्षा 'काका' के यहाँ झाँसी में हुई। इनका विवाह हुआ, इसी बीच उन्हें कुष्ठ रोग ने घेर लिया। इन्हें अपनी अल्पायु से ही आपदाओं ने घेरा हुआ था। कुष्ठ रोग एक भयानक रोग

है जिससे समाज और अपने सभी छूट जाते हैं, किन्तु इन्होंने व्रत लेकर आजीवन कुष्ठ रोग से संघर्ष किया।

(ख) आश्रम में रहकर कोई कार्य करने हेतु इसलिए नहीं तैयार होता था क्योंकि रोगियों के अंगों से रिसता द्रव, भिनभिनाती मक्खियों से लोगों को घृणा लगती थी। बीमारी को देखकर सबकी अंतर्भावना डिग जाती थीं। सबको रोगों से भय लगता था।

(ग) सदाशिराव कात्रे के हृदय में करुणा उत्पन्न होने के दो कारण निम्नवत् हैं–

1. वे स्वयं कुष्ठ रोगी थे जिन्होंने स्वयं लोगों के बर्ताव को भोगा था।

2. उन रोगियों के प्रति घृणा एवं उपेक्षा भरा जीवन, सामाजिक असम्मान और घृणास्पद व्यवहार।

(घ) सदाशिवराव कात्रे को चाँपा नगर में कुष्ठ रोगियों के लिए चिकित्सा और आवास के लिए लखुर्री ग्राम में स्थान मिल गया। यह संस्था पंजीबद्ध हो गई। सदाशिवराव के प्रयासों से, रामचरितमानस और महाभारत के दृष्टांतों से लोगों में कुष्ठ रोगियों के प्रति सेवा भाव जगने लगा। चाँपा के प्रतिष्ठावान और समझदार उदार व्यक्तियों ने विचार किया कि एक व्यक्ति ने रोगी होते हुए भी अपने पुरुषार्थ से आश्रम की स्थापना की, तब लोग कुष्ठ रोगियों की सेवा हेतु प्रेरित हुए। इस प्रकार सदाशिवराव के अथक परिश्रम और राष्ट्रभक्ति के भाव से लोगों में सकारात्मक सोच पैदा होने लगी।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण का अभ्यास करें।
2. आश्रम, देहावसान, दैदीप्यमान, अंतर्द्वन्द्व, राष्ट्र।
3. दुर्, उप, अ, अनु, वि।
4. भलाई, लिपाई, पुताई, लिखाई, पढ़ाई, खवाई।
5. चिकित्सा + आलय, देह + अवसान, विवाह + उपरान्त, अल्प + आयु, मत + अवलम्बी।
6. ● **आत्मबल**– व्यक्ति को कभी भी अपना आत्मबल नहीं खोना चाहिए।
   ● **व्यवस्था**– सभी लोगों के सहयोग से आश्रम की व्यवस्था हुई।
   ● **सन्तोष**– जिसे सन्तोष है वही सुखी है।
   ● **कुष्ठरोगी**– लोग कुष्ठरोगी से बात नहीं करते।
   ● **जन्म**– मानव जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अरौना **2.** चाँपा
3. कुष्ठरोग **4.** 16 मई, 1977
5. प्रभावती

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

19 खूनी हस्ताक्षर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) सुभाषचन्द्र बोस का
   (ख) (iii) रक्त की स्याही से
   (ग) (i) हिन्दुस्तानी विश्वास
2. **(क)** खून **(ख)** साधारण
   (ग) युवक **(घ)** सौदा
3. **(क)** सुभाषचन्द्र बोस ने देश की आजादी के लिए बलिदान करने को कहा।
   (ख) शीशों के फूल चढ़ाने से कवि का तात्पर्य अपनी मातृभूमि के लिए आत्मबलिदान करने से है।
   (ग) जिस खून में आजादी प्राप्त करने के लिए उत्साह मर चुका होता है, जीवन की गति शून्य हो जाती है, वह खून-खून नहीं, पानी के समान होता है। ऐसे खून को पानी के समान कहा जाता है।
   (घ) आजादी का इतिहास रक्त की लाल स्याही से लिखा जाता है।

(ङ) जिस कागज पर सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीयों से खूनी हस्ताक्षर करवाए थे उसे आजादी का परवाना कहा गया है।

(च) खूनी हस्ताक्षर से कवि का आशय इस बात से है कि हम भारतीय अपनी मातृभूमि के लिए लहू बहाने, बलिदान देने को तैयार हैं।

(छ) सुभाषचन्द्र बोस के नारे का यह प्रभाव पड़ा कि भारतीय नवयुवकों में आजादी के लिए जोश भर गया। वे उसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हो गए और रणक्षेत्र में जाने के लिए हुंकार भर उठे।

4. **(क) भावार्थ–** कवि कहते हैं कि स्वतंत्रता की देवी के चरणों में देशवासियों के शीशरूपी फूलों से गुँथी हुई विजयमाला समर्पित करनी होगी। यह आजादी की लड़ाई ऐसी नहीं लड़ी जाती।

(ख) भावार्थ– कवि कहते हैं कि नेताजी के आह्वान पर सभास्थल में मौजूद सभी लोग हुंकार भरकर कहने लगे कि हम भारत माता की आजादी के लिए अपना खून देने को तैयार हैं। भारत की स्वतंत्रता की देवी के चरणों में हम अपना रक्त चढ़ाने के लिए तैयार हैं। जितना चाहे ले लो। युवकों में जोश तथा साहस भरा था।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. पानी– जल, तोय।
फूल– पुष्प, सुमन
धन– दौलत, द्रव्य
माता– जननी, जन्मदात्री

3.

शब्द	**विलोम शब्द**
स्वतन्त्रता	परतन्त्रता
सही	गलत
काला	सफेद
जीवन	मरण
विश्वास	अविश्वास

4.

खून	– रक्त
कुरबानी	– बलिदान
आजादी	– स्वतंत्रता
कलम	– लेखनी
रवानी	– प्रवाह, गतिशीलता

5. • **खून में उबाल आना–** आतताइयों के अत्याचार से युवकों के खून में उबाल आ गया।
• **शीश कटाना–** देश की आजादी के लिए अनेक युवक शीश कटाने को तैयार हो गए।
• **खून की नदी बहाना–** भारतीय युवक देश की आजादी के लिए खून की नदियाँ बहाने को तैयार थे।

6. • अर्पण– वीर सुभाष ने देश के लिए अपना सबकुछ अर्पण कर दिया।
• परवाना– आजादी के लिए अनेक परवाने अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार हो गए।
• जयमाल– भारवासी भारत माता के चरणों में आजादी की जयमाल चढ़ाने को तैयार हो गए।
• संग्राम– अंग्रेजों और भारतीयों के बीच घोर संग्राम छिड़ गया।
• रणवीर– रण में दुश्मन को ललकारने वाला योद्धा रणवीर कहलाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. उबाल **2.** जीवन
3. खूँ **4.** बर्मा
5. कटाने

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

20 रुपए की आत्मकथा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) रुप्यकम् **(ख)** (ii) 64 पैसे
(ग) (iii) देवनागरी

2. **(क)** शेरशाह सूरी **(ख)** 1957 ई.

3. **(क)** शेरशाह सूरी के सिक्के का वजन 178 ग्रेन था जो लगभग 11.5 ग्राम के बराबर था। उस

कार्यकाल में रुपया चाँदी के सिक्के के रूप में था।

(ख) रुपए को कागज के एक ओर बैंक ऑफ बंगाल ने मुद्रित किया था।

(ग) प्राचीन समय में सोने और ताँबे के सिक्के रुप्यकम् के नाम से जाने जाते थे।

(घ) रुपए के नए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप (₹) की डिजाइन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के प्राध्यापक श्री उदय कुमार ने की।

4. (क) हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में रुपए का नाम रुपया शब्द की समानता लिए हुआ है। जैसे गुजरात में रुपियाँ, कन्नड़ में रुपाई, मलयालम में रुपा, मराठी में रुपए नाम से जाना जाता है। इन सब भाषाओं में थोड़े परिवर्तन के साथ रुपए का स्वरूप एक ही है।

(ख) दशमलवीकरण से पूर्व रुपए को आने, पैसे और पाई में बाँटा जाता था। उस समय, (स्वतन्त्रता से पूर्व) तीन पाई का एक पैसा, चार पैसे का एक आना होता था। इस प्रकार सोलह आने का एक रुपया होता था।

(ग) वर्तमान में विभिन्न देशों की मुद्राओं के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक प्रयोग में लाए जाते हैं। अमेरिका में 'डॉलर', ब्रिटेन में 'पौण्ड स्टर्लिंग', जापान में 'येन' व यूरोपीय संघ की मुद्रा 'यूरो' और भारत की मुद्रा रुपया।

5. (क) जब रुपया प्रचलन में नहीं था तब बाजार में लेन-देन वस्तु के बदले वस्तु द्वारा होता था। उस समय बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। जब किसी को दूध की जरूरत है तो वह दूधवाले के पास गेहूँ लेकर जाता था और यदि दूध वाले को गेहूँ की जरूरत है तो बात बन जाती थी।

(ख) रुपये को कागज में मुद्रित करने के अनेक लाभ हैं। मुद्रित रुपयों को लाने और ले जाने में आसानी और सुगमता होती है। चोरी और लूट का अंदेशा कम हो गया है। मुद्रा के नष्ट होने पर शीघ्र ही छपाई होकर उसकी भरपाई की जा सकती है। रुपये की सभी को जरूरत है क्योंकि उसे देकर कोई भी चीज खरीदी जा सकती है।

(ग) अब भारतीय रुपया विदेश जाने पर चल सकेगा क्योंकि अब रुपये ने अपना अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली है। रुपये ने भी डॉलर, पौण्ड और यूरो की तरह अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में पहचान बना ली है।

6. (क) यदि रुपए का प्रचलन न होता तो बाजार में वस्तु विनिमय प्रणाली चलती। इस प्रकार वस्तुओं के खरीदने और बेचने में बड़ी कठिनाई होती। वस्तु के बदले वस्तु को भार के रूप में इधर से उधर लाना और ले जाना पड़ता। साथ ही, वस्तु का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। खरीदने वाले की वस्तु का मूल्य बेचने वाले के द्वारा निर्धारित होता। इस तरह व्यापारी खरीदार को ठगता।

(ख) यदि कागज पर रुपये की शुरुआत न होती तो धातु की मुद्रा का बोझ लादकर बाजार में वस्तु खरीदने के लिए जाना पड़ता। कागज की मुद्रा आसानी से और बिना भार के एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाई जा सकती है। ठगी और चोरी का डर बढ़ गया होता। धातु की मुद्राओं के गिनने में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण और लिखने का अभ्यास करें।
2. मुद्रित, आर्थिक, चिह्न, दशमलव, बाँटा।
3. अनु + राग ('अनु' उपसर्ग)
अप + मान ('अप' उपसर्ग)
अनु + मान ('अनु' उपसर्ग)
अप + कार ('अप' उपसर्ग)
4. भारत + ईय = भारतीय
यूरोप + ईय = यूरोपीय
स्वर्ग + ईय = स्वर्गीय,
शासक + ईय = शासकीय
5. • **पाठ्यपुस्तक**– हिन्दी की पाठ्यपुस्तक पढ़ने में बड़ी रोचक लगती है।

   • **सिक्का**– प्राचीन भारतीय सिक्का बेश-कीमती था।

   • **स्वतन्त्रता**– सबको मौलिक स्वतन्त्रता का अधिकार है।

   • **मुद्रा**– अब भारतीय मुद्रा को प्रतीक मिल चुका है।

● **शासन**– अंग्रेजी शासन में लोग डरे-सहमे रहते थे।

6. शिक्षा + अर्थी, कवि + ईश्वर, नदी + ईश, भानु + उदय, महा + आत्मा, परीक्षा + अर्थी

7. **(क)** उचित शीर्षक है– रुपये का स्वरूप।

(ख) हम रुपये को सजावट और माला में उपयोग न करें। साथ ही उसे तोड़-मरोड़कर न रखें। इसके स्वरूप को बनाए रखकर सुरक्षित रख सकते हैं।

8. दृष्टि, दर्शन, कर्म, गृह, सूर्य, क्रम।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. इण्डोनेशिया	**2.** कागज
3. बैंक ऑफ बंगाल	**4.** 15 जुलाई, 2010
5. विदेशों	**6.** नए पैसे

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (ख), **4.** (क)।

21 मेरी माँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iv) सोमदेव **(ख)** (iii) अधीर

2. **(क)** पढ़ना-लिखना **(ख)** आर्यसमाज

(ग) माता **(घ)** बहुत प्रसन्न

(ङ) शिक्षा

3. **(क)** बिस्मिल का सेवा समिति में सहयोग देना पिताजी और उनकी दादीजी को पसन्द नहीं था।

(ख) रामप्रसाद 'बिस्मिल' में जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह उनकी माताजी और गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपा का फल था।

(ग) बिस्मिल की दादीजी ने अपनी छोटी बहन को शाहजहाँपुर बुला लिया था। उन्हीं ने माताजी को गृहकार्य आदि की शिक्षा प्रदान की।

(घ) बिस्मिल की बहनों को छोटी आयु में उनकी माताजी शिक्षा दिया करती थीं।

(ङ) शिक्षादि के अतिरिक्त माताजी बिस्मिल को देश सेवा और धार्मिक जीवन में भी सहायता करती थीं। वे संकटों के समय भी बिस्मिल को अधीर नहीं होने देती थीं। वे बिस्मिल के आत्मिक, धार्मिक और समाजिक जीवन में भी सहायक रहीं।

4. **(क)** एक बार कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने पिताजी की अनुपस्थिति में बिस्मिल को बुलवाकर उनसे वकालतनामे पर अपने पिताजी के हस्ताक्षर करने को कहा। बिस्मिल ने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म के विरुद्ध होगा। इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। सदैव सत्य के मार्ग पर चलने वाले बिस्मिल ने वकील साहब के यह समझाने पर भी हस्ताक्षर नहीं किया।

(ख) बिस्मिल की माताजी का उनके लिए सबसे बड़ा आदेश यह था कि उनके द्वारा किसी के भी प्राणों की हानि न हो। उनका कहना था कि कभी अपने शत्रु को भी प्राणदण्ड न देना। माताजी के इस आदेश की पूर्ति करने के लिए कई बार बिस्मिल को मजबूरी में अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी। बिस्मिल के जीवन और चरित्र-निर्माण में उनकी माताजी का बहुत बड़ा योगदान था।

(ग) बिस्मिल की एकमात्र इच्छा बस यह थी कि वह एक बार श्रद्धापूर्वक अपनी माताजी के चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना सकें। उनकी यह इच्छा उन्हें पूरी होती इसलिए नहीं दिखाई दे रही थी क्योंकि काकोरी कांड में उनके साथियों के साथ उन्हें भी फाँसी की सजा सुनाई गई थी। इस कारण माताजी की सेवा करने की उनकी इच्छा उन्हें अधूरी रहती दिखाई पड़ रही थी।

(घ) धर्म की रक्षा के लिए जब गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों को जीवित दीवार में चिनवा दिया गया, तब इस दुखद घटना की सूचना पाकर भी उनकी पत्नी तनिक भी विचलित नहीं हुई बल्कि अपने पुत्रों की खबर सुनकर वह प्रसन्न हुई और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर उन्होंने मिठाई बाँटी और गर्व का अनुभव किया।

(ङ) बिस्मिल ने अन्तिम समय में अपनी माँ से यह वर माँगा कि हे जन्मदात्री! वर दो कि

अन्तिम समय भी उनका हृदय विचलित न हो। वह यह भी चाहते थे कि वह अन्तिम समय में अपनी माँ के चरण-कमलों को प्रणाम कर व परमात्मा को स्मरण करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का त्याग कर सकें।

5. (क) रामप्रसाद 'बिस्मिल' की दादीजी और पिताजी को उनका इस प्रकार क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेना पसन्द नहीं था। वे चाहते थे कि समय पर बिस्मिल का विवाह कर दिया जाये ताकि वह अपने परिवार की जिम्मेदारियों को समझें। यदि बिस्मिल की दादीजी और पिताजी की इच्छानुसार उनका विवाह कर दिया जाता तो वह भी एक सामान्य गृहस्थ की तरह अपने घर-परिवार में उलझकर रह जाते और उन्हें देश-सेवा करने का अवसर तक प्राप्त न हो पाता। इस प्रकार माँ भारती अपने ऐसे यशस्वी पुत्र के साहसिक कारनामों के लाभ से वंचित रह जाती जिन्हें देख-सुनकर अंग्रेजी सरकार काँप उठती थी। इस प्रकार एक सच्चे देशभक्त के रूप में आज उन्हें जो सम्मान प्राप्त हुआ है, वह न हो पाता।

(ख) यदि बिस्मिल के प्रति माताजी का व्यवहार भी पिताजी की तरह कठोर होता तो उनकी साहसिक भावनाएँ दमन होकर रह जातीं। उनके व्यक्तित्व में वीरता, शौर्य, पराक्रम, दूरदर्शिता, देशप्रेम, सत्य, दया, करुणा और ओज जैसे श्रेष्ठ मानवीय गुण भी विकसित नहीं हो पाते। वे पिताजी की इच्छानुसार विवाह करके गृहस्थ जीवन का निर्वाह करने में लग जाते किन्तु एक महान देशभक्त और स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में जो स्थान आज वे पा सके हैं, कभी न प्राप्त कर पाते।

6. (क) अपने गाँव को पर्यावरण की सुरक्षा और प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिए मैं सभी गाँववालों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें स्वच्छ पर्यावरण मानव जीवन को मिलने वाले लाभ के बारे में जानकारी दूँगा। साथ ही हरे-भरे पेड़ों के काटने पर प्रतिबन्ध लगवाऊँगा। साथियों के सहयोग से एक दल बनाकर जगह-जगह नये पौधे लगाऊँगा तथा उनके पेड़ बनने तक उनकी देखभाल करूँगा। जल के सभी उपलब्ध स्रोतों को साफ रखने के लिए उनके आस-पास जानवरों को नहलाने, कपड़े धोने, गन्दगी फैलाने, कूड़ा-करकट डालने पर रोक लगाऊँगा। लोगों को प्लास्टिक का उपयोग न करने की सलाह दूँगा।

(ख) यदि मुझे विद्यालय के छात्र संघ का अध्यक्ष बना दिया जाए तो मैं सबसे पहले विद्यालय के वातावरण को शिक्षा के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करूँगा। इसके अतिरिक्त मेरा ध्यान नियमित पूरी कक्षाएँ लगवाने, विद्यार्थियों की समस्या का निदान ढूँढ़ने, अनुशासन बनाये रखने इत्यादि पर होगा। इसके अतिरिक्त मैं यह भी चाहूँगा कि मेरे विद्यालय में पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ खेलकूद के लिए भी उपयुक्त व्यवस्था हो ताकि विद्यार्थी मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2.

'क्ष'	'छ'	'च्छ'
कक्षा	छाता	इच्छा
शिक्षा	छात्र	स्वेच्छा
क्षमा	छतरी	मच्छर

3. सहयोग, जीवन, दृढ़ता, कदापि, भोजनादि, शिक्षादि, अवर्णनीय, कलंकित, धार्मिक, आत्मिक, सामाजिक।

4.

धृष्टता	– ('ता' प्रत्यय)
सामाजिक	– ('इक' प्रत्यय)
वर्णनीय	– ('ईय' प्रत्यय)
कलंकित	– ('इत' प्रत्यय)
व्यक्तित्व	– (त्व' प्रत्यय)
दृढ़ता	– ('ता' प्रत्यय)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. लखनऊ **2.** ग्यारह
3. पढ़ने **4.** धार्मिक
5. सोमदेव

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

22 मैं श्रीमद्भगवद्गीता हूँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) युद्धभूमि में
   (ख) (iv) पाँच हजार वर्ष पूर्व
   (ग) (ii) अर्जुन के मन में
   (घ) (iii) अठारह
2. **(क)** हरियाणा **(ख)** गाण्डीव
   (ग) विचलित **(घ)** श्रीकृष्ण
   (ङ) स्वधर्म पालन
3. **(क)** कौरवों और पाण्डवों के बीच राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध हुआ। पाण्डव अपना अधिकार चाहते थे, जबकि कौरव उन्हें सुई की नोक भर भी नहीं देना चाहते थे।
   (ख) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान का उपदेश दिया।
   (ग) श्रीकृष्ण के अनुसार संसार में आत्मा के अतिरिक्त सभी कुछ नाशवान है।
   (घ) गीता ने आसुरी स्वभाव वाले व्यक्ति को नापसन्द किया है।
4. **(क)** धैर्यवान पुरुष और सुख-दु:ख को समान समझने वाले व्यक्ति को इन्द्रियों और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते। ऐसा व्यक्ति मोक्ष के योग्य होता है।
   (ख) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता के माध्यम से पुरुषार्थी बनने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि पलायन कभी भी मनुष्य के यश में वृद्धि नहीं कर सकता। मनुष्य को सत्य, न्याय और अधिकार की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर युद्ध के लिए तत्पर रहना चाहिए। आत्मा अजर एवं अमर है, उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता। अत: परिजन, मोह त्यागकर उसे अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए युद्ध करना चाहिए।
   (ग) युद्धभूमि में अपने कर्त्तव्य से विमुख शोकमग्न अर्जुन को स्वधर्म का मार्ग बतलाने और मोह तथा अज्ञान से मुक्त कराने के लिए श्रीकृष्ण ने गीता ज्ञान का उपदेश दिया। इसलिए साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकली हुई होने के कारण गीता को परमात्मा की वाणी भी कहा जाता है।
   (घ) युद्धभूमि में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से, जो उनके रथ के सारथी भी थे, अपना रथ दोनों सेनाओं के बीच ले चलने के लिए कहा। श्रीकृष्ण अर्जुन के रथ को दोनों सेनाओं के मध्य ले गए। अर्जुन ने जब दोनों ओर अपने सगे-सम्बन्धियों, परिवारजनों, प्रियजनों को खड़े देखा तो वह मोहपाश में जकड़कर भ्रमित हो गया।
   (ङ) भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकली श्रीमद्भगवद्गीता वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है। आज भी न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म का युद्ध व्यक्ति के अन्दर चल रहा है। स्वार्थ और आसुरी वृत्तियाँ आज भी समाज में संघर्ष, तनाव तथा भय पैदा करती रहती हैं। मोह-ममता से ग्रसित व्यक्ति आज भी कर्तव्य पालन से कतराता है। वह सत्य व्यवहार नहीं करता। अत: मैंने तब भी कहा था कि न्याय और धर्म का पक्ष लेना चाहिए, मोह रहित होना चाहिए। जीवन की सार्थकता मोह और कायरता त्यागने में है।
5. **(क)** जब गीता नहीं थी तो लोगों को जीवन जीने की कला की शिक्षा सम्भवतया महापुरुषों से प्राप्त होती रही होगी। ऋषि-मुनि एवं साधु-सन्त तब के लोगों को उत्तम और सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करते रहे होंगे। साथ ही, मनुष्य संस्कारों और अपने पूर्वजों के उच्च आदर्शों का अनुकरण करते हुए जीवन को सही मार्ग की ओर ले जाता होगा।
   (ख) 'गीता ने कहा है कि सात सौ श्लोक मेरे संदेशवाहक हैं।' इसकी सार्थकता इस प्रकार है कि गीता एक अनुपम कृति है जो राग-द्वेष रहित जीवन जीने और आसुरी प्रवृत्तियों का विरोध करने की शिक्षा देती है। वास्तव में गीता की सम्पूर्ण शिक्षाएँ कुल अठारह अध्यायों में संरक्षित हैं। ये शिक्षाएँ इन अठारह अध्यायों में सात सौ श्लोकों में विद्यमान हैं। इन सात सौ श्लोकों में से प्रत्येक श्लोक मानव-जीवन के कल्याण हेतु एक सच्चे संदेशवाहक का कार्य करता है जिसका अनुसरण करके व्यक्ति मोह भ्रम से रहित हो जाता है।
   (ग) कौरव और पाण्डवों के बीच हुए युद्ध को न्याय-अन्याय का युद्ध इसलिए कहा गया है पाण्डव अपनी मर्यादा में रहते हुए धर्म और न्याय के पक्ष में युद्ध कर रहे थे और कौरव मद में चूर राज्य-लोलुपता और मर्यादा की रेखा तोड़ कर अधर्म के पक्ष में युद्ध कर रहे थे। पाण्डव

अपना नैतिक एवं जायज अधिकार चाहते थे जबकि कौरव उन्हें सुई की नोंक के बराबर भूमि भी देने को तैयार न थे। ऐसे में धर्म और अधर्म के बीच युद्ध आवश्यक हो गया।

(घ) यदि हम आसक्ति भाव से कर्म करेंगे तो हमारा ध्यान, कर्म पर न लगकर उससे प्राप्त होने वाले परिणाम पर केन्द्रित रहेगा और हानि-लाभ तथा भय से संशय युक्त हो जाएगा और वांछित लाभ दुर्लभ हो जाएगा। साथ ही वांछित परिणाम प्राप्त न होने पर मनुष्य का मन हीन भावना एवं अवसाद से घिर जाएगा। इसीलिए गीता आसक्ति रहित कर्म करते रहने की प्रेरणा देती है।

6. (क) यदि कौरवों और पाण्डवों में युद्ध न हुआ होता तो एक तरफ मानव सभ्यता महाभारत जैसे भीषण युद्ध की विभीषिका से बच जाती वहीं दूसरी तरफ उसे मानव कल्याण रूपी गीता जैसे अमृत ग्रन्थ की प्राप्ति भी न हो पाती।

(ख) यदि कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन द्वारा सगे-सम्बन्धियों को देखकर मोह उत्पन्न न हुआ होता तो भगवान श्रीकृष्ण ने अकारण ही गीता का उपदेश नहीं दिया होता।

इस प्रकार गीता जैसे महान ग्रन्थ की रचना भी नहीं हुई होती और मानव सभ्यता गीता के उपदेशों से वंचित रह जाती।

(ग) यदि अर्जुन की जगह मैं होता तो मुझे भी अर्जुन की तरह मोह घेरता किन्तु यदि मुझे भगवान श्रीकृष्ण का साथ मिलता तो मैं अवश्य युद्ध करता। मैं कायरता के भाव को अपने मन में न आने देता और अपने क्षत्रिय धर्म का बखूबी पालन करता। युद्ध का परिणाम कुछ भी क्यों न होता।

(घ) यदि कृष्ण, अर्जुन के सखा एवं हितैषी न होते तो मोहवश अपने क्षत्रिय धर्म से विमुख अर्जुन को उसके कर्तव्य का ज्ञान कौन कराता ? ऐसे में पाण्डवों को कौरवों के सामने संभवत: टिकना मुश्किल हो जाता। इतिहास में उसका नाम एक वीर योद्धा के रूप में दर्ज न होकर युद्ध से पलायन करने वाले एवं मोहमाया में जकड़े एक कायर के रूप में लिखा होता। साथ ही, आसुरी प्रवृत्तियों का बोलबाला हो जाता और अधर्म के सामने धर्म अस्त्र डालने के लिए मजबूर हो जाता।

(ङ) यदि दुर्योधन किसी तरह राज्य का उत्तराधिकारी बन जाता तो चारों ओर अन्याय और अधर्म का साम्राज्य होता। ऐसे में सत्य और धर्म का आचरण करने वालों का जीवन जीना कठिन हो जाता। चारों ओर लूट-खसोट और अराजकता फैल जाती। इस प्रकार, अधर्म करने वाले लोग समाज में फलते-फूलते और भारतीय संस्कृति कलंकित हो जाती।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करें।

2. भ्रमित, वितृष्णा, विरक्ति, किंकर्तव्य, हतप्रभ, संन्यास, तात्विक, सम्मत, संघर्ष, व्याप्त।

3. गुरु+त्व=गुरुत्व; पुरुष+त्व=पुरुषत्व; कृति+त्व=कृतित्व।

4. **राज्य प्राप्ति**– पाण्डवों को कौरवों से युद्ध करके ही राज्य प्राप्ति हुई।

युद्धभूमि– दु:शासन युद्धभूमि में मारा गया।

कारागार– पुलिस ने चोर को पकड़कर कारागार में डाल दिया।

मोर्चा– राणाप्रताप ने मुगलों के विरुद्ध स्वयं युद्ध का मोर्चा सँभाला।

शिथिल– धर्म के सामने अधर्म शिथिल पड़ गया।

5. 1. गांधीजी के अनुसार गीता सारे शास्त्रों का दोहन है। इसमें सारे उपनिषदों का निचोड़ सात सौ श्लोकों में निहित है।

2. गांधीजी संकट के समय गीता-माता के पास जाते थे।

3. अपनी शरण में आने वाले को गीता ज्ञानामृत से तृप्त करती है।

4. गद्यांश का शीर्षक है—गीतामाता।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (स), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (स)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. वितृष्णा **2.** स्वजनों
3. परमात्मा **4.** पुरुषार्थी
5. पलायन **6.** नापसन्द

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

विविध प्रश्नावली–3

1. **(क)** (i) बगीचा
   (ख) (iii) महात्मा गांधी
   (ग) (i) धौम्य
   (घ) (iii) परमानन्द माधवम्
   (ङ) (ii) सामाजिक
2. **(क)** महात्मा गांधी **(ख)** कोयल
   (ग) 1977 ई. **(घ)** अन्तर्राष्ट्रीय
   (ङ) सहजता
3. **(क)** केरलवासी नृत्य और संगीत के बड़े शौकीन हैं।

   (ख) सोनू के छत से गिर जाने पर अनेक लोगों को सोनू की सहायता के लिए देखकर शीला दंग रह गई। उसे विश्वास हो गया कि जो समाज की सेवा करता है समाज उसकी सेवा करता है। उस दिन से शीला की रुचि समाज सेवा में उत्पन्न हो गई।

   (ग) आरुणि ने गुरु सेवा को ही शिष्य का परमधर्म कहा है।

   (घ) वर्तमान में अपने स्वार्थ के लिए मानव द्वारा पेड़-पौधों को काटकर हरियाली को समाप्त कर देने से बसन्त का स्वरूप बदल गया है।

   (ङ) बिस्मिल की माताजी ने गृहकार्य की शिक्षा दादीजी की छोटी बहन से प्राप्त की थी।

   (च) 1. अकर्मक क्रिया– रमन हँसता है। 'हँसना' अकर्मक क्रिया है।
   2. सकर्मक क्रिया– गीता पत्र लिखती है। लिखना सकर्मक क्रिया है।
4. **(क)** गांधीजी आश्रम में होने वाले सारे काम स्वयं करते थे। वे सूत कातते थे, कपड़ा बुनते थे, कपास धुनते थे। आश्रम के लोगों के भोजन के लिए अनाज में से कंकड़ चुनकर उसे साफ किया करते थे। अनाज से आटा बनाने के लिए चक्की में अनाज पीसते और पुस्तकों की जिल्दसाजी भी करते थे। वे किसी भी काम को छोटा-बड़ा नहीं समझते थे।

   (ख) 'आत्म-बलिदान' एकांकी का मूल भाव यह है कि गुरु और शिष्य दोनों ही एक-दूसरे के लिए समर्पित रहते हैं। गुरु के शिष्यों के प्रति शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास की चिन्ता रखते हैं। शिष्य भी आश्रम के सारे कार्यों में हाथ बटाने का प्रयास करते हैं। धौम्य ऋषि को अतिवृष्टि से खेत की मिट्टी बह जाने की चिन्ता है। आरुणि भी उन्हें चिन्ता मुक्त करने के प्रयास हेतु मेड़ के कटाव में स्वयं लेट जाता है और मिट्टी के कटाव को रोक देता है। गुरु भी उसे तलाशते हुए विपरीत मौसम में जाते हैं। उन्हें उसके स्वास्थ्य की चिन्ता है। इस तरह गुरु और शिष्य दोनों परस्पर सेवा में समर्पित हैं।

   (ग) हम्मीर रणथम्भौर के राणा थे। उन्होंने जेल से फरार माहमशाह को अपने यहाँ शरण देने का वचन देते हैं। राणा हम्मीर के सामंत और सरदार सभी इसके विरुद्ध थे लेकिन राणा ने क्षत्रिय धर्म और राजपूत होने की श्रेष्ठता बताते हुए उनकी सलाह नहीं मानी। वे शरणागत को सुरक्षा देना राजपूत का कर्तव्य बताते थे। उसकी पूर्ति के लिए अपनी आन, बान, शान की परवाह नहीं की। यहाँ तक कि अपने प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटे।

   (घ) दशमलव प्रणाली में रुपये को सौ पैसों में बाँटा गया है। इस तरह छोटे सिक्कों के रूप में 50 पैसे, 25 पैसे, 20 पैसे, 10 पैसे, 5 पैसे, 3 पैसे, 2 पैसे तथा 1 पैसे के सिक्के भी प्रचलन में आए। उन्हें नए पैसे कहा गया।

   (ङ) सुभाषचन्द्र बोस ने युवकों को आजादी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि आजादी के लिए बलिदान देना होगा। जिन युवकों के खून में स्वतंत्रता हेतु उबाल नहीं, गतिशीलता नहीं, उनका खून खून नहीं पानी के समान है। आजादी की लड़ाई शीश कटाने का सौदा है। आजादी का इतिहास खून की लाल स्याही से लिखा जाता है। इतना सुनते ही युवकों ने आजादी के परवाने पर अपने खून से हस्ताक्षर कर दिए। उस दिन हिन्दुस्तानियों के उत्साह को आकाश के तारों ने भी देखा था।

   (च) एक बार बिस्मिल के पिताजी ने वकील से विश्वास के साथ कह दिया कि जो काम हो वह उनकी अनुपस्थिति में बिस्मिल से करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब

ने बिस्मिल को बुलावाकर उनसे वकालतनामे पर अपने पिताजी के हस्ताक्षर करने को कहा। बिस्मिल ने यह कहते हुए मना कर दिया कि यह तो धर्म के विरुद्ध होगा। सदैव सत्य के मार्ग पर चलने वाले बिस्मिल ने वकील साहब के यह समझाने पर भी हस्ताक्षर नहीं किये कि हस्ताक्षर न करने पर मुकदमा खारिज हो जायेगा।

5. (क) लेखक का तात्पर्य यह है कि धन कमाने के लिए लोग अनेक तरीके अपनाते हैं। कुछ लोग बातों के बल पर धन कमा लेते हैं। यानी उनका कार्य दलाली, बट्टे या कानूनी दाँव पेंच लड़ाकर धन एकत्र कर लेना है। कुछ लोग पैसा लगाकर पैसा कमाते हैं यानी वे व्यापार से धन कमा लेते हैं। कुछ लोग अपने दिमाग चलाकर मानसिक परिश्रम से धन कमा लेते हैं। ऐसे लोग जल्दी ही बूढ़े हो जाते हैं, उन्हें रक्तचाप और हाथ-पैर के जोड़ों का दर्द शुरू हो जाता है। लेकिन वे लोग जो अपने हाथ-पैर से परिश्रम करने के साथ-साथ बुद्धि के बल का भी प्रयोग करते है। ऐसे लोग प्रायः लम्बे समय तक काम करते रहते हैं और किसी के सामने उन्हें लाचार नहीं होना पड़ता।

(ख) धौम्य अपने शिष्य उपमन्यु को बताते हैं कि वह अभी अधखिले फूल के समान है। वह अभी पूरी तरह फूल नहीं बन पाया। यदि ऐसे में उसे पौधे से अलग कर दिया जाए, तो वह अधखिला ही मुरझा जाएगा। इसी तरह उपमन्यु अभी अधखिले फूल के समान है। उसके विकास हेतु अभी अपने गुरुरूपी पौधे के आश्रय की जरूरत है। यदि उसे गुरुरूपी पौधे से अलग कर दिया गया तो पुष्परूपी शिष्य उपमन्यु अपनी अविकसित अवस्था में संकट में पड़ जाएगा। इस पर गुरुरूपी पौधे को अपार कष्ट होगा।

6. (क) भावार्थ— बसन्त के बदलते स्वरूप से चिंतित कवि संसार के लोगों से कहता है कि बसन्त के कष्ट को समझो और उसे बँटाने का प्रयास करो। जंगल से ही जीवन सम्भव है, इसलिए इन जंगलों को मत काटो। अधिक-से-अधिक वन लगाओ और पर्यावरण सुधार में मदद करो।

(ख) भावार्थ— कवि कहता है कि यह बात याद रखो कि यह आजादी की लड़ाई कभी भी पैसों के आधार पर नहीं लड़ी जा सकती। यह तो सिर कटवाने का सौदा है। इस सिर कटाने के सौदे को नंगे सिर ही झेलना पड़ता है अर्थात् देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने की जरूरत है।

7. 1. अमेरिका— डॉलर।
2. जापान— येन।

8. फिर उसी रक्त की स्याही में,
वे अपनी कलम डुबाते थे।
आजादी के परवाने पर
हस्ताक्षर करते जाते थे।

9. 1. अपने ही बल पर काम करने को स्वावलम्बन कहते हैं।
2. कर्त्तव्यपरायणता।
3. स्वावलम्बी पुरुष को समाज, राष्ट्र और जाति से सम्मान मिलता है।
4. उचित शीर्षक होगा— स्वावलम्बन।

10. प्रधानाध्यापक महोदय को अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय उच्च मा. विद्यालय,
इन्दौर (म. प्र.)

महोदय,
विनम्र निवेदन है कि मेरे भाई का विवाह इस माह की 28 तारीख को होना तय हुआ है। इस वैवाहिक कार्यक्रम में मुझे घर के कार्यों में हाथ बँटाना होगा। अतः मैं विद्यालय आने में असमर्थ रहूँगा। मुझे दिनांक 27/07/20-- से 29/07/20-- तक तीन दिनों का अवकाश प्रदान करें। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद! आपका आज्ञाकारी
दिनांक: 26/07/20-- शिष्य
मिथलेश प्रसाद

11. मेरा प्रिय खेल (फुटबाल) या फुटबाल मैच

रूपरेखा— 1. प्रस्तावना, 2. मैच का आरम्भ, 3. मध्यावकाश से पूर्व, 4. मध्यावकाश, 5. उपसंहार ।

प्रस्तावना— हमारे देश में अनेक तरह के खेल

खेले जाते हैं, जिनमें से निम्नलिखित अधिक लोकप्रिय हैं— वॉलीबॉल, क्रिकेट, टेनिस, फुटबॉल, रस्साकशी, ऊँची-लम्बी कूद, दौड़, कबड्डी आदि । मुझे फुटबॉल सबसे अधिक प्रिय लगता है।

मैच का आरम्भ— निश्चित समय पर राजकीय विद्यालय और हमारे विद्यालय की टीमें आ गयीं। रेफरी ने सीटी बजायी । उसको सुनते ही दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने मैदान में प्रवेश किया । टॉस फेंका गया और खिलाड़ियों ने अपना-अपना स्थान लिया । सेन्टर फारवर्ड होने के कारण मैंने मैच आरम्भ किया ।

मध्यावकाश से पूर्व— दोनों टीमें टक्कर की थीं। गेंद इधर-उधर ठोकरें खाने लगी । दर्शकगण दोनों टीमों को प्रोत्साहित कर रहे थे । मैं दो बार फुटबॉल को लेकर लाइन तक पहुँचा किन्तु एक बार ही गोल करने में सफलता प्राप्त हुई। इतने में 15 मिनट का मध्यावकाश हो गया।

मध्यावकाश— मध्यावकाश में सभी को अल्पाहार दिया गया। अनेक लोगों ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया ।

मध्यावकाश के बाद खेल आरम्भ हुआ । विरोधी खिलाड़ियों ने मुझे इस तरह से घेर लिया था कि फुटबॉल को लेकर आगे बढ़ना असम्भव-सा हो गया। समय बीतता गया और अन्त में मैं दूसरा गोल करने में सफल रहा । दूसरी टीम एक भी गोल न कर पायी । अन्त में विजय हमारी हुई। पूरे वातावरण में हर्ष की लहर दौड़ गयी । मेरे साथियों ने मुझे बधाई दी । इस खेल से मेरे अन्दर एक नयी चेतना का जागरण हुआ ।

उपसंहार— फुटबॉल एक दौड़ का खेल है । इससे शरीर का प्रत्येक अंग सक्रिय हो जाता है। स्वास्थ्य के लिए यह खेल बहुत ही उपयोगी है। खेल सदैव खेल की भावना से ही खेलना चाहिए तथा हार-जीत की कुछ भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए ।

अभ्यास प्रश्न-पत्र

1. **(क)** (ii) थलचर। **(ख)** (iv) विक्रमादित्य।
(ग) (iii) दैनिक। **(घ)** (iv) सोमदेव।
(ङ) (iii) शांतनु। **(च)** (iv) भीमबैटका में।

2. **(क)** पद्म-भूषण। **(ख)** जवानी।
(ग) जल। **(घ)** श्वसन।

3. **(क)** बाबा भारती अपने घोड़े को 'सुलतान' नाम से पुकारते थे।

(ख) भौतिक तत्वों की सन्तुलित मात्रा को 'सन्तुलित आहार' कहते हैं।

(ग) मीराबाई ने आँसुओं से सींचकर प्रेम की बेल बोई है।

(घ) वीर शिवाजी की गाथाएँ लक्ष्मीबाई को मौखिक रूप से याद थीं।

(ङ) बिस्मिल ने अन्तिम समय में अपनी माँ से यह वर माँगा कि हे जन्मदात्री ! वर दो कि अंतिम समय भी उनका हृदय विचलित न हो। वह यह भी चाहते थे कि वह अन्तिम समय में अपनी माँ के चरण-कमलों को प्रणाम कर व परमात्मा को स्मरण करते हुए मातृभूमि की रक्षार्थ अपने प्राणों का त्याग कर सके।

(च) कौरवों और पाण्डवों के बीच राज्य-प्राप्ति के लिए युद्ध हुआ। पाण्डव अपना अधिकार चाहते थे, जबकि कौरव सुई की नोक भर भी नहीं देना चाहते थे।

(छ) अपमान का अनुभव करना।

(ज) शिवाजी ने जिस वीर बालक को अपनी सेना में लिया उसका नाम ताना जी मालुसरे था।

4. **(क)** जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन और कारक के आधार पर बदल जाते हैं, उन्हें **विकारी शब्द** कहते हैं। जैसे—लड़का, लड़के लड़को; मैं, मुझे आदि। जबकि जिन शब्दों में लिंग, वचन और कारक के द्वारा कोई परिवर्तन नहीं होता है अर्थात् जिनका रूप एक-सा रहता है, उन्हें **अविकारी शब्द** कहते हैं। जैसे—यहाँ, वहाँ, प्रतिदिन, परन्तु, भी, ही, आज आदि।

(ख) अनुप्रास अलंकार का उदाहरण— 'चारु चन्द की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में'। च वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

(ग) (i) विनम्रता ही बड़प्पन की निशानी है।

(ii) इंग्लैण्ड की यात्रा पर भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् सन् 1963 ई. में गए थे।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'विनम्रता' है।

(iv) उक्त गद्यांश का सारांश है कि कोई भी व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो, किन्तु विनम्रता के अभाव में वह सम्मान नहीं पा सकता। विनम्रता से वह अवश्य सम्मान प्राप्त कर सकता है।

5. बसन्त के दु:खी होने के कारण वृक्षों को काट कर तथा हरे-भरे जंगलों को उजाड़कर लोगों द्वारा वहाँ भूमि और वन-सम्पदा को आपस में बाँट लेना है।

अथवा

गांधीजी के आश्रम में रहने वाले काम लोग स्वयं करते थे। वे सूत कातते थे, कपड़ा बुनते थे। वहाँ जुलाहों जैसी उत्तम प्रकार की कपास की धुनाई की जाती थी। अनाज से कंकड़ बीनकर साफ किया जाता तथा चक्की से अनाज पीसकर आश्रमवासियों के लिए रोटियाँ आदि बनाई जाती थीं। साफ-सफाई का काम लोग आश्रम में करते थे। वे किसी भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझते थे।

6. उक्त पंक्ति का आशय यह है कि कटु वचन और मधुर वचन भी इसी जीभ से बोले जाते हैं। कटु वचन से संसार में शत्रुता बढ़ जाती है। इससे अनेक दुष्परिणाम निकले हैं। वाणी की कटुता से ही महाभारत जैसा युद्ध हुआ। इतिहास इस बात का गवाह है अत: कटु वचन से स्वर्ग भी नर्क में बदल जाता है। अत: वाणी (जीभ) से बड़े-बड़े अनर्थ हो जाते हैं।

अथवा

ईश्वर के द्वारा भेजा गया दूत जब ईश्वर के पास लौटा तो उसने डरते-डरते ईश्वर को एक पुड़िया सौंपी। ईश्वर ने पुड़िया खोली तो उसमें मिट्टी देखकर दंग रह गए। ईश्वर ने पूछा कि तुम तो इस पुड़िया में मिट्टी ले आए हो। दूत ने बताया कि उसने सबसे अच्छी वस्तु लाने के लिए पृथ्वी पर चप्पा-चप्पा खोज निकाला, लेकिन कोई भी ऐसी वस्तु नहीं दिखी जिसे मैं लेकर आपको दे सकूँ। अन्त में मैं ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ लोगों ने मानवता की रक्षा के लिए प्रसन्नता से अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। तब मुझे लगा कि इस स्थान की मिट्टी सबसे महत्वपूर्ण है। अत: मैं वहाँ से इस पुड़िया में मिट्टी लेकर आया हूँ। ईश्वर ने भी उस पुड़िया की मिट्टी को अपने मस्तक से लगाया और कहा कि जब तक ऐसे सन्त और महापुरुष इस पृथ्वी पर बने रहेंगे, तब तक पृथ्वी पर सुख, शान्ति और सम्पन्नता बनी रहेगी।

7. राजा ने गरीबों की जब्त की हुई चीजें वापस लौटाकर उन्हें घर जाने की आज्ञा दे दी और फसल न होने पर उस साल लगान नहीं वसूलने का आदेश भी दे दिया।

अथवा

प्रात:काल जागने से लेकर रात्रि में सोने तक दिनभर के क्रिया-कलापों का एकाग्र स्मरण ही दिनचर्या ध्यान कहलाता है। दिनचर्या ध्यान रात में सोते समय बिस्तर पर लेटकर किया जाता है।

8. व्याकरण खण्ड में 'पत्र-लेखन' देखें और स्वयं करें।

अथवा

10/103, साकेत नगर
घनश्यामपुरा, रीवा (म. प्र.)
दिनांक : 10.03.20 .....
प्रिय मित्र अशोक
नमस्कार।

काफी समय से तुम्हारा कोई भी पत्र नहीं प्राप्त हुआ है, मुझे कुछ चिन्ता हुई तो यह पत्र लिखने बैठ गया। कल ही यहाँ के प्रबुद्ध जनों की समिति की बैठक हुई थी, उसमें शहर की जल उपलब्धता की समस्या पर चर्चा हुई थी। गर्मी प्रारम्भ होते ही शहर भर में पानी के लिए मारा-मारी होने लगी है। इस समस्या के निदान के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो इस प्रकार हैं—

(i) वर्षा जल को तालाबों आदि में संरक्षित करें।
(ii) पानी व्यर्थ न बहने दिया जाए।
(iii) पानी आवश्यकता के अनुरूप प्रयोग करें।
(iv) अधिकाधिक पेड़-पौधों को लगाएँ।
(v) वर्षा जल को हार्वेस्ट किया जाए।

इस तरह के अनेक उपायों पर विचार किया गया।

मैं चाहता हूँ कि तुम भी इस प्रक्रिया को गाँव और अपने नगर के पढ़े-लिखे लोगों को बताओ और जल संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करो।

पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

सुशील कुमार

9. भावार्थ— अपने मित्र से विशुद्ध प्रेम की कामना करता है। बाहरी आडम्बरों से सच्चाई और सहज प्रेम किया जाता है। मित्र लेखक को बिना पलक झपकाए, उस समय तक देखते रहते हैं, जब तक वह उनकी आँखों से ओझल न हो जाए। इस तरह का मित्र का व्यवहार निश्चित ही यह स्पष्ट करता है कि वे हमें अति स्नेह के साथ विदा कर रहे हैं परन्तु इसमें बनावट भरी होती है।

अथवा

भावार्थ— धौम्य अपने शिष्य उपमन्यु को बताते हैं कि वह अभी अधखिले फल के समान है। वह अभी पूरी तरह फूल नहीं बन पाया। यदि ऐसे में उसे पौधे से अलग कर दिया जाए, तो वह अधखिला ही मुरझा जाएगा। इसी तरह उपमन्यु अभी फूल के समान है। उसके विकास हेतु अभी अपने गुरु रूपी पौधे के आश्रय की जरूरत है। यदि उसे गुरु रूपी पौधे से अलग कर दिया गया तो पुष्परूपी शिष्य-उपमन्यु अपनी अविकसित अवस्था में संकट में पड़ जाएगा। इस पर गुरु रूपी पौधे को अपार कष्ट होगा।

10. भावार्थ—कबीरदास जी कहते हैं कि कभी भी कल पर कोई काम मत छोड़ो। जो कल करना है, उसे आज कर लो और जो आज करना है उसे अभी कर लो। पता नहीं अगर कहीं अगले ही पल में प्रलय आ जाये, तो जीवन का अन्त हो जायेगा, फिर जो करना है वह कब करोगे?

अथवा

भावार्थ—हे वीरो! तुम्हें किसी भी प्रकार का मोह अपने जाल में न जकड़ सके, इसके लिए तुम एक तपस्वी का रूप धारण कर लो तथा तुम लोहे के हृदय वाले बन जाओ। इससे काल भी तुमसे भयभीत हो जाये। तुम्हें पक्के इरादों वाला बनना है, जैसे ध्रुव थे। हे वीरो! तुम्हें अगस्त्य ऋषि के समान बन जाना चाहिए जिससे बाधाओं के प्रचंड सागर को भी वश में करना तुम्हारे लिए बिल्कुल भी कठिन नहीं होगा। इसलिए हे श्रेष्ठ वीरो! तुम्हें सम्भल कर तलवार की धार पर चलना है अर्थात् चुनौतीपूर्ण कार्य करना है।

11. हार की जीत

यह कहानी मानवीय मूल्यों की स्थापना करती है। इसमें प्रेम, संवेदना, दया, परोपकार, जनहित, त्याग आदि मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। यदि कोई व्यक्ति स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर लोकहित के भाव से आचरण करने लगता है, तो दुश्मन के हृदय में भी मानवता की भावना को जगा सकता है। प्रस्तुत कहानी में बाबा भारती ने ऐसे ही एक कार्य को अंजाम दिया है। जब बाबा भारती का घोड़ा चोरी होता है, तब उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि यदि लोगों को इस धोखाधड़ी की घटना का पता चल जायेगा, तो वे किसी गरीब की सहायता नहीं करेंगे। बाबा भारती के इस महान मानवतावादी विचारों का गहरा प्रभाव डाकू खड्गसिंह के व्यक्तित्व पर पड़ता है और उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। वह घोड़ा वापस कर देता है। इस प्रकार बाबा भारती अपने प्रिय घोड़े को वापस पाकर हारकर भी जीत जाते हैं।

12. महापुरुषः महात्मा गांधी

रूपरेखा— 1. प्रस्तावना, 2. जन्म एवं शिक्षा, 3. सत्याग्रह का प्रारम्भ, 4. स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व, 5. जीवन का अन्त, 6. उपसंहार ।

प्रस्तावना— हमारे देश में समय-समय पर अनेक महापुरुषों का जन्म होता रहा है । राम, कृष्ण, बुद्ध आदि अनेक महापुरुषों ने संकट के समय जनता को दिशा दिखाई। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने वाले महापुरुषों में महात्मा गाँधी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है ।

जन्म एवं शिक्षा—गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था । उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था । तेरह वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता करमचन्द ने उनका विवाह कस्तूरबा के साथ कर दिया । उन्नीस वर्ष की अवस्था में बैरिस्टरी शिक्षा के लिए विलायत

गए। विलायत जाते समय उनकी माता पुतलीबाई ने उनसे शराब तथा मांस का सेवन न करने की प्रतिज्ञा करा ली थी, जिसका पालन उन्होंने जीवनभर किया । सन् 1891 में वे बैरिस्टरी की परीक्षा पास करके भारत लौट आए ।

सत्याग्रह का प्रारम्भ— विदेश से वापस आकर गाँधीजी पोरबन्दर की एक फर्म के एक मुकदमे की पैरवी के लिए 1893 ई. में दक्षिण अफ्रीका गए । वहाँ गोरे शासकों द्वारा काले लोगों पर किए जा रहे अत्याचारों को देखकर उनका मन दु:खी हो गया । उन्होंने काले–गोरे का भेदभाव मिटाने के लिए सत्याग्रह किया । अन्त में गाँधी जी के सत्याग्रह के सामने गोरी सरकार (ब्रिटिश सरकार) को झुकना पड़ा और गाँधी जी की जीत हुई ।

स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व—भारत आते ही स्वतंत्रता–आन्दोलन की बागडोर गाँधी जी के हाथ में आ गई । उन्होंने भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित किया । उन्होंने अहिंसा और असहयोग का सहारा लिया । वे अनेक बार जेल गए । उन्होंने सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन, सन् 1930 में नमक सत्याग्रह, सन् 1942 में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के माध्यम से संघर्ष जारी रखा और 15 अगस्त, सन् 1947 को देश स्वतंत्र हो गया ।

जीवन का अन्त—देश के स्वतंत्र हो जाने पर गाँधी जी ने कोई पद स्वीकार नहीं किया । गाँधी जी पक्के वैष्णव थे। वे नियमित प्रार्थना–सभा में जाते थे । 30 जनवरी, 1948 ई. की संध्या को प्रार्थना सभा में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी । पूरा देश दु:ख और ग्लानि से भर उठा।

उपसंहार—महात्मा गाँधी को भारतवर्ष ही नहीं, पूरा विश्व आदर के साथ याद करता है। वे मानवता, सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे। गाँधी जैसे व्यक्ति हजारों–लाखों वर्षों में अवतरित होते हैं। सत्य और अहिंसा का पालन करते हुए राष्ट्र–सेवा में लग जाना ही गाँधी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(**नोट—** छात्र–छात्रा इसी प्रकार स्वयं निबंध लेखन का अभ्यास करें)

❍❍❍

Samvid® BOOKS

हिन्दी

व्याकरण व पाठ्यपुस्तक

उत्तर पुस्तिका

कक्षा

7

1 मेरी भावना

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** हमें जीवों के प्रति दया की भावना रखनी चाहिए।
   (ख) 'मेरी भावना' कविता में कवि ने दुष्ट, निर्दयी व गलत रास्ते पर चलने वालों के प्रति साम्यभाव रखने की बात कही है।
   (ग) देशोन्नति से कवि का आशय देश की उन्नति से है। कवि युगवीर बनकर देश की उन्नति और विकास में सम्मिलित होना चाहता है।
2. **सद्गुण—** उपकार, प्रेम।
   दुर्गुण— अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या, क्रूर, मोह।
3. **(अ) ईर्ष्या—**देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।
   (ब) करुणा—दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणास्रोत बहे।
   (स) लालच—अथवा कोई कैसा भय, या लालच देने आए।
   (द) कृतघ्न—होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आए।
4. इस कविता में कवि जुगल किशोर 'युगवीर' अपने अंदर सद्-व्यवहारों को बढ़ाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। अपने हृदय में घमंड, क्रोध और ईर्ष्या जैसे दुर्भावों को नहीं रखना चाहते हैं। वह दूसरों के प्रति सरल व्यवहार, उपकार और दीन-दुखियों के प्रति करुणा की भावना को अपने हृदय में रखना चाहते हैं। गुणीजनों का सम्मान करना और दूसरों के किए उपकार को सदैव याद रखना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि चाहे कैसी भी परिस्थिति हो वह कभी भी न्याय के पथ से नहीं भटकें। वह ईश्वर से संसार में प्रेम की भावना को प्रसारित करने की प्रार्थना करते हैं। कविता के अंत में वह यह प्रार्थना करते हैं कि राष्ट्र में रहने वाले सभी लोग देश की उन्नति में लगे रहें और ईश्वर सबको कष्ट सहने की क्षमता प्रदान करें।

भाषा अध्ययन

1.

अशुद्ध शब्द	**शुद्ध शब्द**
इष्या	ईर्ष्या
स्त्रोत	स्रोत
दुजर्न	दुर्जन
परिणती	परिणति
द्रष्टी	दृष्टि

2.

शब्द अर्थ	**शब्द अर्थ**
भाव — मूल्य	भव — संसार
रात — रात्रि	रत — लगा हुआ
बैर — द्वेष	बेर — एक फल
गृह — निवास स्थान/घर	
ग्रह — विशाल आकाशीय पिण्ड	

3.

शब्द	विलोम शब्द
उपकार	अपकार
कुमार्ग	सुमार्ग
कृतघ्न	कृतज्ञ
जीवन	मृत्यु
अन्याय	न्याय
दु:ख	सुख

4. क्रूर, कुमार्ग — 'क'
   गुण, ग्रहण — 'ग'
   दीन, दुखी — 'द'
   रत, रहा — 'र'

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. दीन-दुखी, करुणास्रोत **2.** हृदय, प्रेम
3. लाखों, मृत्यु **4.** अहंकार, क्रोध
5. कटुक, मुख

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

2 दादी की घड़ी

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** दीपू को दीदी और भैया की तरह अनेक सुविधाएँ नहीं मिल पाती थीं। उसके पास कलाई घड़ी नहीं थी, न ही डेस्क थी और न अलमारी, न मेज। सुबह जल्दी उठने के लिए उसके पास अलार्म घड़ी भी नहीं होती थी।

(ख) दादी रात को सोते समय अपने सिरहाने रखे तकिए से उठने का समय कहकर ठीक समय पर प्रात: उठ जाती थीं।

(ग) पिकनिक पर जाने वाले दिन दीपू अपने तकिए से उसे सुबह पाँच बजे जगा देने की बात कहकर सोया और अगले दिन ठीक समय पर अपने आप जाग गया।

(घ) दादी ने अनोखी घड़ी का राज यह बताया कि भला तकिया भी कहीं बोलता है। असली अलार्म तो हमारे दिल में होता है। जब हमें उठना जरूरी होता है, तो यह हमें जगा देता है।

2. **(ग)** तकिये से कहो, "तकियाराम सुबह चार बजे जगा देना।"

भाषा अध्ययन

1. छात्र स्वयं उच्चारण और लिखने का अभ्यास करें।

2. (क) बेगार ढोना। (ख) गुजारा करना। (ग) परलोक सिधारना। (घ) दम साधना।

3.

हिन्दी	अंग्रेजी	उर्दू
रौब, अन्याय, सुर, परीक्षा, दया, परलोक	चॉक, क्लास, मॉनीटर, अलार्म, डेस्क, इंस्पेक्टर, टर्मिनल	एवज़, मुसीबत, खबर, ख्याल, दखल, बाकायदा, लेम्प, ताज्जुब

4. (i) यूँ तो उसके दोस्त तो उससे ईर्ष्या करते थे कि पूरे घर में वह सबका लाड़ला है, पर उसे इस बात की जरा भी खुशी नहीं होती

(ii) मान लिया कि बड़ी-बड़ी क्लासों में पढ़ते हैं, पर इसका मतलब यह तो नहीं कि लोग निरे बुद्धू हैं।

(iii) दीपू चौथी कक्षा में पढ़ता है और तो और अपनी कक्षा का मॉनीटर भी है।

(iv) कोई उन्हें बैठने तक को नहीं कहता पर दीदी या भैया के पास कोई आता तो उसे बाकायदा नमस्ते करनी पड़ती।

(v) उसे तो खुद चाबी भरने की इच्छा थी, पर दीदी का चेहरा देखकर चुप कर गया।

5. (अ) सोते समय घड़ी टूटने पर सबके सब मुझे डाँटने लगे।

(ब) वह रात समझकर डर के मारे दम साधे चुपचाप पड़ा रहा।

6. (क) न जाने कब हमने मलाई खाई थी।
(ख) न जाने कब आसमान में गुब्बारे उड़े थे।
(ग) न जाने कब तकिया मुझे जगाएगा।
(घ) न जाने कब पापा-मम्मी मुझे समझ पाएँगे।

7. (क) दीपू अपनी कक्षा का मॉनीटर भी है।
(ख) राजा भैया घड़ी परलोक सिधार गई।
(ग) घर में एक ही टाइमपीस अलार्म था।
(घ) असली अलार्म तो हमारे दिल में होता है।

8. (क) (i) ईर्ष्या (ख) (iv) आधी जान
(ग) (iv) विदेशी (घ) (i) साँची।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (अ), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (ब) अनोखी घड़ी का राज पाकर

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अलमारियों **2.** मम्मी, ट्रंक
3. एकाध, मन **4.** रसोई, चिड़चिड़ी
5. आँखें, अँधेरा।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

3 मेरी वसीयत

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** नेहरूजी ने अपने दोस्तों और साथियों के लिए कहा है कि बेशुमार दोस्तों और साथियों के मेरे (नेहरूजी के) ऊपर एहसान रहे हैं। वे बड़े-बड़े कामों में एक-दूसरे के साथ रहे, मिल-जुलकर काम किए तथा कामयाबी के सुख व नाकामयाबी के दु:ख दोनों में शामिल रहे।

(ख) गंगा नदी से नेहरूजी की अनेक भावनाएँ लिपटी हुई हैं। भारत की स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उनके भय, विजयगान, उसकी विजय, पराजय। गंगा के प्राकृतिक सौन्दर्य, उसके पल-पल बदलते स्वरूप व पग-पग परिवर्तित होते मार्ग के मनोरम दृश्य हमेशा उनकी स्मृति पटल पर ताज़ा रहते हैं।

(ग) नेहरूजी ने विभिन्न समय और मौसम में गंगा का मनोहारी चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि उन्होंने **सुबह** की रोशनी में गंगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है और देखा है **शाम** के साये

में उदास काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद-भरी **सर्दी** में सिमटी-सी आहिस्ते-आहिस्ते बहती गंगा अत्यन्त सुन्दर दिखाई पड़ती है।

(घ) नेहरूजी ने अपनी वसीयत में मरने के बाद भस्म को मुट्ठीभर गंगा में डालने तथा शेष हिस्से को भारत के उन खेतों में बिखेर देने की इच्छा व्यक्त की है, जहाँ भारतीय किसान अपनी जी-तोड़ मेहनत से अन्न उपजाते हैं।

भाषा अध्ययन

1. छात्र शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए स्वयं लिखने का अभ्यास करें।

2. **उपसर्ग— 'ना':** समझ — ना — नासमझ
काबिल — ना — नाकाबिल
बालिग — ना — नाबालिग
मुमकिन — ना — नामुमकिन

उपसर्ग— 'वि': योग — वि — वियोग
जय — वि — विजय
राग — वि — विराग
ज्ञान — वि — विज्ञान

3. **अस्थियाँ :** अर्थ— हड्डियाँ।
वाक्य प्रयोग—इन्दिरा गांधी की अस्थियों को गंगा नदी में विसर्जित किया गया।
परम्परा : अर्थ— रीति-रिवाज।
वाक्य प्रयोग—बड़ों का सम्मान करना भारतीय संस्कृति की प्रमुख परम्परा है।
विजयगान : अर्थ— जय-ज्ञान।
वाक्य प्रयोग—राणा प्रताप का विजयगान पूरे भारतवर्ष में होता है।
स्मृतियाँ : अर्थ— यादें।
वाक्य प्रयोग—वीर पुरुषों की स्मृतियाँ सदैव प्रेरणा देती हैं।
प्रेरणा : अर्थ— प्रोत्साहन।
वाक्य प्रयोग—हमें अपने महान पूर्वजों से प्रेरणा लेनी चाहिए।
उत्तराधिकार : अर्थ— वसीयत द्वारा सम्पत्ति का अधिकार।
वाक्य प्रयोग—बच्चे अपने माँ-बाप की सम्पत्ति का उत्तराधिकार रखते हैं।

4. **(क)** नहीं, न, **(ख)** नहीं, न,
(ग) न, नहीं, **(घ)** न, नहीं।

5.

दिए गए वाक्य	परिवर्तित वाक्य
2. मुझे यह भी अच्छी तरह मालूम है कि मैं भी इस जंजीर की एक कड़ी हूँ।	1. मुझे यह भी अच्छी तरह मालूम है। 2. मैं भी इस जंजीर की एक कड़ी हूँ।
3. मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए।	1. मैं यह दरख्वास्त करता हूँ। 2. मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए।
4. मैं चाहता हूँ कि भस्म को हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए।	1. मैं चाहता हूँ। 2. भस्म को हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए।

6. (क) (ii) गंगा। (ख) (iii) इक।
(ग) (ii) बे।

योग्यता विस्तार

नोट:- प्रश्न 1 से 4 तक के उत्तर छात्र स्वयं लिखें।

5. **गंगा** — सुरसरि, भागीरथी, जाह्नवी, त्रिपथगा, मन्दाकिनी।

6. **भगीरथ —** भगीरथ घोर तप से गंगा को पृथ्वी पर लाए।
भागीरथी — भगीरथ द्वारा गंगा लाने के कारण गंगा का एक नाम भागीरथी पड़ा।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (अ), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. दोस्तों, साथियों, **2.** मरने, धार्मिक, **3.** गंगा, यमुना, **4.** गंगा, सभ्यता, **5.** भारत, मेहनत।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

4 दो कविताएँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** 'मेघ बजने' से कवि का आशय बादलों का तीव्र ध्वनि में गरजने से है।
   (ख) बरसात में खेतों की मिट्टी कीचड़ का रूप धारण कर लेती है और तब वह हरिचन्दन के समान दिखाई देती है।
   (ग) वर्षा के आगमन से मेंढक टर्र-टर्र करने लगते हैं, पृथ्वी बारिश से धुल जाती है, मिट्टी-पानी के मिलने से बनी खेतों की गीली मिट्टी चन्दन जैसी लगती है, जिससे किसान अपने हलों के स्वागत में उस पर तिलक लगाते हैं।
   (घ) कदम्ब गेंद के समान झूलता दिखाई दे रहा है।
   (ङ) बारिश होने पर धूल व मिट्टी से अटी पड़ी पृथ्वी की सारी गन्दगी साफ हो जाती है और धरती का हृदय धुला हुआ लगने लगता है।
2. दादुर, हृदय, धिन-धिन-धा धमक-धमक।
3. **(क)** इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहता है कि बारिश होने पर खेतों की मिट्टी गीली हो जाती है। किसान खेत जोतने के लिए तैयार हो जाते हैं और वे हल का स्वागत करते दिखाई देते हैं।
   (ख) इस पंक्ति में कवि का भाव है कि वर्षाऋतु में कदंब भी मदमस्त होकर फलने-फूलने लगते हैं। वृक्ष की शाखाओं के हिलने से ऐसा लगता है मानो कदंब का पेड़ गेंद के समान झूम रहा है।

भाषा अध्ययन

1. चन्दन – वन्दन, चमक – दमक,
   रीता – बीता, बरस – तरस।
2. धमक-धमक, टहनी-टहनी।
3. (क) धिन-धिन-धा धमक-धमक
   (ख) दामिनि यह गयी दमक
   (ग) टहनी-टहनी में कन्दुक सम झूले कदम्ब
   (घ) फूले कदम्ब, फूले कदम्ब।
4. **प्रयुक्त उपसर्ग**— अभि, अभि, वि, प्र, अभि, वि, प्र।
5. (क) (ii) अभिनन्दन।
   (ख) (ii) आई।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (ब), **4.** (द), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. दामिनि, **2.** कंठ,
3. कंदुक, **4.** तरस,
5. कदम्ब।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

5 मध्यप्रदेश का वैभव

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** नर्मदा नदी मध्यप्रदेश के एक बड़े भू-भाग से गुजरती है। यह नदी मध्यप्रदेश की धरती को अपने जीवनदायी जल से सींचती है। इस कारण इसको मध्यप्रदेश की जीवनरेखा कहा गया है।
   (ख) पचमढ़ी में कई दर्शनीय स्थल हैं जिनके नाम हैं—धूपगढ़, महादेव मन्दिर तथा यहाँ की पाँच गुफाएँ।
   (ग) सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य अवन्तिका (उज्जैन) के राजा थे। वे अपनी न्यायप्रियता, बुद्धिमत्ता, विवेकपूर्ण निर्णय और प्रजापालन आदि के कारण इतिहास में अमर हैं। इन्हीं के द्वारा विक्रम संवत् को प्रारंभ किया गया।
   (घ) अवन्तिका का वर्तमान नाम उज्जैन है। यह इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकाल का मन्दिर है जो भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। श्रीकृष्ण की शिक्षा से जुड़ा पौराणिक महत्व का सांदीपनी आश्रम भी यहीं पर है। उज्जैन में प्रत्येक बारह वर्ष के बाद कुम्भ मेले का आयोजन होता है।
   (ङ) राई, सैरी, बधावा, ढिमयाई लोक नृत्य हैं तथा ढोलामारू, माच और स्वांग इत्यादि यहाँ के प्रमुख लोकनाट्य हैं।
   (च) बुन्देली, मालवी, भीली, बघेली, निमाड़ी आदि मध्यप्रदेश की प्रमुख बोलियाँ हैं।
   (छ) विभिन्न धर्मों, रीति-रिवाजों को मानने वाले लोग यहाँ निवास करते हैं। महाराष्ट्र का गणेश उत्सव, बंगाल की दुर्गा पूजा तथा उत्तर भारत की विजयादशमी और दीपावली के साथ-साथ होली, ईद, क्रिसमस जैसे त्योहार यहाँ

बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। अत: सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से सम्पन्न मध्यप्रदेश को लघु भारत कहा गया है।

2. (क) माँ शारदा
(ख) रामचन्द्रिका
(ग) चन्द्रशेखर आजाद
(घ) साँची (ङ) चचाई।

3. (क) (1) लोकमाता अहिल्याबाई का।
(ख) (3) भूषण।
(ग) (4) भोपाल में।
(घ) (2) पीताम्बरा पीठ के लिए।

4. (क) कामदगिरि — चित्रकूट
(ख) उदयगिरि — विदिशा
(ग) माण्डू — माँडवगढ़
(घ) हीरों की खान — पन्ना
(ङ) बौद्ध-स्तूप — साँची

भाषा अध्ययन

1.

(क) पानी	जल	इज्जत
(ख) अंक	गोद	संख्या
(ग) अमृत	गंगाजल	सुधा
(घ) अम्बर	आकाश	वस्त्र
(ङ) कनक	सोना	धतूरा
(च) कर	हाथ	लगान

2. **तोरण-द्वार**—लंका में रावण द्वारा तोरण-द्वार बनाये गये थे।
पाषाण-कालीन—सुरंग की खुदाई से कई पाषाण कालीन तथ्य उजागर हुए हैं।
हृदय-स्थली—मध्यप्रदेश की भूमि भारत की हृदय-स्थली है।
जीवन-रेखा—नदियाँ भारत की जीवन-रेखा हैं।
भरत-मिलाप—कोरोना काल में गाँव आए लोगों ने ग्रामीणों से भरत-मिलाप किया।
प्रस्तर-प्रतिमा—पास के मन्दिर में गणेश की एक भव्य प्रस्तर-प्रतिमा स्थापित की गई है।

3. 'ता' प्रत्यय— लघु + ता = लघुता,
नीच + ता = नीचता,
हीन + ता = हीनता।
'तम' प्रत्यय— सरल + तम = सरलतम,
कठिन + तम = कठिनतम,
विशाल + तम = विशालतम।
'कार' प्रत्यय— उप + कार = उपकार,
सर + कार = सरकार,
नृत्य + कार = नृत्यकार।

4. (क) अहिल्याबाई मालवा की शान है।
(ख) मध्यप्रदेश भारत की हृदयस्थली है।
(ग) क्षिप्रा मध्यप्रदेश की पवित्र नदियों में से एक है।
(घ) खजुराहो के मन्दिर स्थापत्य कला के उदाहरण हैं।

5. (क) जुड़ा हुआ है।
(ख) जाना जाता है।
(ग) सँजोए हैं।
(घ) कहते रहते हैं।
(ङ) कहते प्रतीत होते हैं।

योग्यता विस्तार

1. **(क)** कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, माधव राष्ट्रीय उद्यान, जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान, भेड़ाघाट पर नर्मदा का जल प्रपात आदि।
(ख) भीमबेटका गुफाएँ, कंदराएँ, साँची के बौद्ध स्तूप, झाबुआ का भाभरा ग्राम आदि।
(ग) पचमढ़ी की पाँच गुफाएँ, दतिया का पीताम्बरा पीठ, सतना जिले का माँ शारदा का मंदिर, उज्जैन का सांदीपनी आश्रम, वेतवा के तट पर बसा ओरछा आदि।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (अ), **3.** (स), **4.** (अ), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. नर्मदा, जीवन, **2.** तानसेन, ग्वालियर, **3.** आस्थाओं, विश्वासों, **4.** बिहारी, ओरछा **5.** मध्यप्रदेश, मिठास।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

6 राखी का मूल्य

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** कर्मवती मेवाड़ के महाराणा साँगा की विधवा धर्मपत्नी तथा वहाँ की महारानी थी।
(ख) कर्मवती ने वीरों से प्राण रहते मेवाड़ की पताका झुकने न देने की प्रतिज्ञा करने को कहा।
(ग) रानी कर्मवती ने हुमायूँ से बैरभाव समाप्त करने तथा उसे अपना भाई बनाने के लिए राखी भेजी।

(घ) राखी पाकर हुमायूँ ने अपनी सेना भेजकर मेवाड़ की रक्षा करने का निर्णय लिया।

(ङ) हमारे देश में राखी को भाई-बहन के मधुर बन्धन का प्रतीक माना जाता है। रक्षा सूत्र पहनकर बहन की जीवनभर रक्षा करने का संकल्प लेता है।

2. **(क)** रानी कर्मवती मेवाड़ के वीर सपूतों को मेवाड़ की रक्षा हेतु ललकारते हुए राखियाँ आगे बढ़ाते हुए कहती है कि राखी के धागों का मतलब सर्वस्व बलिदान करना होता है। वे ही लोग राखियों को लें जो देश-रक्षा के यज्ञ में स्वयं को समर्पित करने के लिए तैयार हों।

(ख) राखी का बहुत महत्व है। राखी लोगों के मन में बसे बैर-भाव रूपी जख्मों को शीतल मरहम के समान सहज भर देता है।

(ग) बहन-भाई का रिश्ता संसार में सभी चीजों से बढ़कर है। सारी संपदाएँ, धन-वैभव इसके सामने तुच्छ हैं। सबको सच्चे मन से इस रिश्ते का सम्मान करना चाहिए।

3. **(क)** (i) सांस्कृतिक एवं साम्प्रदायिक सदभावना का विकास करना।

(ख) (iii) मेवाड़।

भाषा अध्ययन

1. पितृ + त्व = पितृत्व
मातृ + त्व = मातृत्व
लघु + त्व = लघुत्व
गुरु + त्व = गुरुत्व
मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व
प्रभु + त्व = प्रभुत्व।

2.

सामासिक पद	विग्रह
रणभूमि	रण की भूमि
राजपुत्र	राजा का पुत्र
देशभक्ति	देश की भक्ति
रसोईघर	रसोई का घर
देशनिकाला	देश से निकाला
सेनापति	सेना का पति

3. (क) खाना-पीना उठना-बैठना
(ख) बड़ी-बड़ी छोटी-छोटी
(ग) प्रेम-सागर जीवन-वर्षा
(घ) किसी-न-किसी छोटी-से-छोटी
(ङ) सावन-सी भोली-सी

4. (i) किन्तु और भी तो बाधाएँ हैं। (विशेषण)
(ii) मेवाड़ की रानी कर्मवती ने कुछ और सोचा। (क्रिया विशेषण)
(iii) हम हँसते-हँसते मरेंगे और बहुतों को मारकर मरेंगे। (उपवाक्य योजक)
(iv) भ्रातृत्व और मनुष्यत्व पर विश्वास करके हुमायूँ की परीक्षा ली जाए। (शब्द योजक)

5. (i) यही तो हमें बल देते आए हैं।
(ii) उसका मुकाबला तलवारों से तो नहीं हो सकता।
(iii) मेवाड़ की सीमा में तो पैर रखने का साहस ही कौन कर सकता था?
(iv) सोचो तो बहन, क्या उनके हृदय नहीं है?

6.

शब्द	बहुवचन	शब्द	बहुवचन
थाली	थालियाँ	जाली	जालियाँ
भाई	भाइयों	दुश्मन	दुश्मनों
गाड़ी	गाड़ियाँ	साड़ी	साड़ियों
धागा	धागे		

7. **हँसते-हँसते प्राण देना**— बलिदान हेतु तत्पर रहना।
वाक्य प्रयोग—आजादी की रक्षा के लिए वीर सैनिकों ने हँसते-हँसते अपने प्राण दे दिये।
आग उगलना— बुराई करना।
वाक्य प्रयोग—चीन अपने पड़ोसी मुल्कों के विरुद्ध आग उगलता रहता है।
प्राण काँपना— भयभीत हो जाना।
वाक्य प्रयोग—तूफान की तीव्रगति को देख नगरवासियों के प्राण काँप गये।
खौफ खाना— डरना।
वाक्य प्रयोग—सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व से अंग्रेज भी खौफ खाते थे।
जादू का पिटारा— करामात की थैली।
वाक्य प्रयोग—अध्यापक के पास जादू का पिटारा तो नहीं है जो बच्चों को बिना पढ़ाए विद्वान बना दें।
आग में कूदना— कठिन रास्ता चुनना।
वाक्य प्रयोग—नैतिकता के विरुद्ध कार्य करना आग में कूदने के बराबर है।
घाव भरना— दु:ख कम होना
वाक्य प्रयोग—रानी लक्ष्मीबाई का दु:ख का घाव भरा भी नहीं था कि अंग्रेजों ने अधिकार करने का प्रयत्न कर लिया।
आँख उठाना— चुनौती देना।

वाक्य प्रयोग—शिवाजी के समक्ष मुगलों ने आँख उठाने का साहस नहीं किया।

कयामत का पैगाम— प्रलय की सूचना।

वाक्य प्रयोग—पाकिस्तान द्वारा आतंकवादियों की सहायता करना एक दिन उसी के लिए कयामत का पैगाम लेकर आएगा।

तिरछी नजर करना— नाराज होना।

वाक्य प्रयोग—मोहन द्वारा सच बोलने पर उसके मित्र ने अपनी नजर तिरछी कर ली।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (द), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. बादशाह हुमायूँ, **2.** भारत, मातृभूमि,
3. मेवाड़, जादू, **4.** खुदा, इंसान,
5. रिश्ते, सल्तनत।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

7 नीति के दोहे

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** कवि के अनुसार, धूप, बारिश, बोलने और चुप रहने में अति वर्जित है।

(ख) कबीर के अनुसार निंदक को निकट रखने से व्यक्ति का स्वभाव स्वच्छ और कोमल बन जाता है।

(ग) 'एकै साधे सब सधै' से कवि का तात्पर्य है कि मूल को साधने पर सब अपने आप ही सध जाते हैं।

(घ) तुलसी ने 'काया' और 'मन' की तुलना खेत और किसान से की है।

(ङ) 'संत हंस गुन गहहिं पय' से कवि का आशय है कि संत उस हंस के समान है जो दूध (गुण) और पानी (अवगुण) को अलग कर देता है।

(च) कवि वृंद ने सज्जन पुरुष की यह विशेषता बताई है कि वह कभी भी विषम परिस्थिति में अपनी सज्जनता नहीं छोड़ता है।

(छ) कवि के अनुसार जब कलश का पानी गर्म हो, चिड़िया धूल में नहाए तथा चींटी अण्डा लेकर चले तब भरपूर वर्षा की सम्भावना होती है।

(ज) चने की अच्छी खेती ढेलेदार मिट्टी में होती है।

2. **(क)** (2) चन्दन, **(ख)** (4) हीरा,
(ग) (2) हंस, **(घ)** (4) निंदक,
(ङ) (1) चिड़िया,
(च) (4) मैदे के सामान बारीक मिट्टी में।

3. **(क)** **भाव**—कबीर दास जी कहते हैं कि मनुष्य को कोई भी काम करने से पहले अच्छी तरह से विचार कर लेना चाहिए। गलत काम करने के बाद पछताना मूर्खता है। कबीर दास कहते हैं यदि कोई व्यक्ति बबूल के पेड़ लगाता है तो उसे कड़वे फल ही मिलते हैं। बबूल का पेड़ लगाकर आम के फल की उम्मीद करना व्यर्थ है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्म के अनुसार फल प्राप्त होता है।

(ख) **भाव**—कवि वृन्द कहते हैं कि जिस प्रकार कुएँ की जगत पर रस्सी के बार-बार रगड़ने से पत्थर पर निशान बन जाते हैं अर्थात् पत्थर घिसने लगता है, ठीक उसी प्रकार निरन्तर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी बन जाता है।

4. **(क)** बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलें बोल।
(ख) अति का भला न बोलना,
अति की भली न चूप।

भाषा अध्ययन

1.

शब्द	तत्सम शब्द	शब्द	तत्सम शब्द
पछताय	पछतावा	सुभाय	स्वभाव
चूप	चुप	काज	कार्य
पोहिये	पिरोना	मोल	मूल्य
आस	आशा	नास	नाश
पौन	पवन	रसरी	रस्सी
निसान	निशान	सजनता	सज्जनता
बरसा	वर्षा	घर	गृह
खेत	क्षेत्र		

2.

शब्द	पर्यायवाची शब्द
पेड़	वृक्ष, विटप
पवन	हवा, वायु
पानी	नीर, जल

सरोवर	तालाब, सर
फूल	पुष्प, सुमन
नदी	तरंगिणी, सरिता
पक्षी	विहग, खग

3. **शब्द** — **अर्थ**
1. कुटी — झोंपड़ी
2. हित — भलाई
3. सकल — समस्त
4. सुरभित — सुगन्धित
5. उद्यम — परिश्रम

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (अ), **3.** (स), **4.** (द), **5.** (अ) तथा (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. तरुवर, सरवर, **2.** काया, किसान, **3.** उद्यम, पावै, **4.** अभ्यास, जड़मति, **5.** पानी, चिड़िया।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** असत्य।

विविध प्रश्नावली-1

1. **(क) संदर्भ-प्रसंग**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' में संकलित पाठ 'मेरी वसीयत' से लिया गया है। यहाँ नेहरू जी आजादी के दिनों में अपने सहयोगियों के साथ किए गए कार्यों का स्मरण करते हुए बता रहे हैं।

व्याख्या—जब बड़े उद्देश्यों को पूर्ण करने की कोशिश की जाती है तो उनमें सफलता अवश्य प्राप्त होती है। परन्तु कभी-कभी नाकामयाबी भी होती है। निराशा की इन घड़ियों में तथा सफलता की स्थिति में खुशी के पलों में हमें हमेशा साथ रहना चाहिए।

(ख) संदर्भ-प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' में संकलित पाठ 'राखी का मूल्य' से लिया गया है। यहाँ सर्वधर्म समभाव को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या—हुमायूँ अपने सेनापति से कहता है कि हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई अन्तर नहीं है। हम सभी उस एक मालिक की सन्तान हैं जिसने उन्हें बनाया है। मैं आज इस पूरे संसार को यह दिखाना चाहता हूँ कि हिन्दुओं के सभी रीति-रिवाज और परम्पराएँ एक मुसलमान के लिए भी समान रूप से प्रिय और पवित्र हैं। हम सबको एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहना चाहिए।

(ग) संदर्भ-प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' में संकलित पाठ 'मध्यप्रदेश का वैभव' से लिया गया है। यहाँ मध्यप्रदेश की अनूठी विशेषताओं का उल्लेख है।

व्याख्या—विभिन्न धर्मों, रीति- रिवाजों व मान्यताओं के लोग मध्यप्रदेश में आपस में भाईचारे और सद्भाव से निवास करते हैं। यहाँ भारत के सभी प्रदेशों के तीज-त्योहार मनाये जाते हैं। इस प्रकार, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध मध्यप्रदेश को लघुभारत का नाम देना उचित ही है। इस प्रदेश के निवासियों के मन में मध्यप्रदेश के गौरवशाली अतीत की मिठास आज भी विद्यमान है।

2. **(क) भावार्थ**—कबीर दास जी कहते हैं मनुष्य को सदैव अपनी निन्दा करने वाले के साथ संगति करनी चाहिए और उसे अपने पास रखना चाहिए। वास्तव में निन्दा करने वाला व्यक्ति बिना पानी और साबुन के तुम्हारे व्यवहार से दोषों को दूर करके स्वभाव को स्वच्छ और कोमल बना सकता है।

(ख) भावार्थ—वृन्द कहते हैं कि जिस प्रकार गर्मी के समय बिना पंखा घुमाये (परिश्रम किए) उसकी हवा का आनन्द नहीं लिया जा सकता, ठीक उसी प्रकार विद्या रूपी धन को बिना परिश्रम के प्राप्त नहीं किया जा सकता है। कवि वृन्द के कहने का तात्पर्य है कि बिना परिश्रम के कुछ भी पाना संभव नहीं है।

3. **(क)** दीपू घर में सबसे छोटा था इसलिए उसका घर में रौब नहीं था।

(ख) नेहरूजी ने उन पुरानी परम्पराओं की रूढ़िवादी जंजीरों को तोड़ने कहा है जो हिन्दुस्तान को आगे बढ़ाने में रुकावट पैदा करती हैं, देशवासियों में फूट डालती हैं, बेशुमार लोगों को दबाये रखती हैं और जो शरीर और आत्मा के विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं।

(ग) वराहमिहिर, वाणभट्ट, कालिदास।

(घ) विक्रमादित्य के चार गुण हैं—न्यायप्रियता बुद्धिमत्ता, विवेकपूर्ण निर्णय और प्रजापालन जिसके लिए वे इतिहास में अमर रहेंगे।

(ङ) भोपाल के दर्शनीय स्थल—बिड़ला मन्दिर, ताज-उल-मस्जिद, वन-विहार, भारत-भवन, मानव संग्रहालय आदि हैं।

(च) रानी कर्मवती ने जवाहर बाई से।

4. **(क)** दादी **(ख)** मध्यप्रदेश
(ग) माधव **(घ)** नर्मदा
(ङ) पन्ना

5. **(क)** (2) खेतों में। **(ख)** (2) चौथी।
(ग) (2) ग्वालियर। **(घ)** (2) मेवाड़।

6. **(क)** हमारे मन में दीन-दुखियों के प्रति दया की भावना होनी चाहिए।
(ख) भरहुत अपनी प्राचीनतम स्थापत्य कला और साँची बौद्ध स्तूपों के लिए प्रसिद्ध है।
(ग) मध्यप्रदेश की तीन बोलियाँ हैं— बुन्देली, मालवी तथा निमाड़ी।
(घ) कर्मवती ने राखी को वरदान की संज्ञा इसलिए दी है क्योंकि राखी सारे बैर-भावों को मिटा देने का काम करती है। इसे बँधवाकर प्रत्येक भाई अपनी बहन की रक्षा हेतु वचनबद्ध हो जाता है।

7. (क) — कर्मवती, (ख) — बाघसिंह,
(ग) — हुमायूँ, (घ) — सेनापति।

8. **वैमनस्य**—लोगों को वैमनस्य भाव त्याग देना चाहिए।
तोपखाना—भारतीय सेना में कई समृद्ध तोपखाने हैं।
पश्चाताप—रामू ने अपनी गलती पर बहुत पश्चाताप किया।
वरदान—शिक्षा ग्रहण करना वरदान के समान है।
आज्ञापालन—सबको अपने पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
पिटारा—कश्मीर की सुषमा देखकर लगता है कि जादूगर ने यहाँ जादू का पिटारा खोल दिया है।

9.

अशुद्ध शब्द	**शुद्ध शब्द**
सस्कृति	संस्कृति
प्रतिविम्व	प्रतिबिम्ब
परयटक	पर्यटक
वेभव	वैभव
स्रजन	सृजन
हसना	हँसना
प्रान	प्राण

10. (क) मामाजी वाराणसी नहीं पहुँचे।
(ख) क्या राम ने गंगा में डुबकी लगाई ?
(ग) लड़का कपड़े लेकर भाग गया।
(घ) अरे! आपने यह क्या कर डाला।

11.

एकवचन	**बहुवचन**
राखी	राखियाँ
धागा	धागे
भाई	भाइयों
पताका	पताकाओं
सपूत	सपूतों
शत्रु	शत्रुओं
लड़की	लड़कियों

12. तत्पुरुष समास—सेनापति, वीरव्रत, रसोईघर।

13.

हिन्दी	**अंग्रेजी**	**उर्दू**
बस्ता, कक्षा, बाहर, पक्ष, कीर्तन, कार्तिक	रेडियो, टॉफी, ट्रिप	दोस्त, तरकीब, बेवकूफ, मजबूत

14. मैं मुन्ना, आपने पहचाना नहीं मुझे ? हाँ, मुन्ना। भूल गये आप मामाजी! खैर, कोई बात नहीं। इतने साल भी तो हो गये। तुम यहाँ कैसे ?

15. प्र + योग = प्रयोग
वि + योग = वियोग
अभि + योग = अभियोग
उप + योग = उपयोग
सह + योग = सहयोग
सु + योग = सुयोग

16. **उर्दू शब्द** **हिन्दी शब्द**
खिदमत — आवभगत
सौगात — उपहार
पैगाम — सन्देश
मुताबिक — अनुसार
हिफाजत — सुरक्षा
कुर्बानी — बलिदान
खौफ — डर

17. इस पाठ में लेखिका 'मालती जोशी' ने बाल मनोविज्ञान और बालकों के नैतिक विकास को बहुत ही बारीकी से अंकित किया है। दीपू घर में सबसे छोटा था और इसी कारण वह हर बार मुसीबत में पड़ जाता था। उसे बड़ों से या तो डाँट पड़ती रहती या उसे बड़ों का हर काम करना पड़ता था। उसे अपने साथ होने वाला व्यवहार अन्याय जान पड़ता था। वह यह सोचा करता था कि काश, वह भी इन लोगों की तरह बड़ा

होता तो कितना अच्छा होता। वह जब भी पढ़ने बैठता था सब शोर करते रहते थे और जब उसके बड़े भाई-बहन पढ़ते तो उसे शांत रहने के लिए कहा जाता था। एक बार वह अलार्म घड़ी अपने सिरहाने लगाकर सोया, लेकिन उसकी ही लात लगने के कारण वह टूट गई। इस वजह से उसे बहुत डाँट पड़ी। पूरे घर में केवल उसकी दादी ही थी जो उसे प्यार से समझाती थी। दादी ने उसे तकिए को अपना अलार्म बनाने की सलाह दी। दादी की बात मानकर उसे आजमाया। अंततः वह एक दिन समय पर जाग गया। उसने जाकर दादी को यह बात बताई तब दादी ने उसे सच बताया कि अलार्म घड़ी की आवाज को तो हम चाहें तो बन्द भी कर सकते हैं, किन्तु दिल की आवाज को बन्द नहीं किया जा सकता है। यह तो हमें उठाकर ही शान्त होती है। दिलरूपी घड़ी का रहस्य जानकर दीपू प्रसन्न हुआ।

8 डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन के प्रेरक प्रसंग

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** अब्दुल कलाम का पूरा नाम है अबुल फकीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम।

(ख) कलाम ने अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का कार्य किया। मद्रास (चेन्नई) से छपने वाले हिन्दू समाचार-पत्र के लिए लेख लिखे। इस तरह उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए निरन्तर संघर्ष किया।

(ग) अब्दुल कलाम ने रामलीला में 'राम-रावण' का युद्ध देखा। इसमें राम अग्निबाण छोड़कर रावण का अन्त कर देते हैं। इस दृश्य से प्रभावित होकर उन्होंने अग्निबाण से सीख लेकर ही अग्नि मिसाइल का सूत्रपात किया।

(घ) डॉ. अब्दुल कलाम बच्चों के साथ बात करने में आनन्द का अनुभव करते थे। उनका मानना था कि बच्चों में ही सम्पूर्ण राष्ट्र का विकास छिपा होता है। बच्चों से वे मित्रवत् बातें करते थे। बच्चे भी उनसे बात करके अपने को गौरवशाली मानते थे।

(ङ) एक बार अब्दुल कलाम ने 'हिन्दू' अंग्रेजी समाचार-पत्र में एक लेख पढ़ा जिसका शीर्षक था—"सॉफ्ट फायर"। इसका हिन्दी में अर्थ है- मन्त्रबाण। यह एक प्राचीन भारतीय अस्त्र का नाम है जिसका प्रयोग द्वितीय विश्व युद्ध में हुआ था। इस मन्त्रबाण ने उन्हें आगे चलकर 'अग्नि' मिसाइल बनाने के लिए प्रेरित किया, इसीलिए उन्हें मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता है।

2. डॉ. कलाम के प्रेरक विचार-बिन्दु निम्नवत् हैं—

(i) मुझे भारतीय होने का गर्व है- यह एक महान देश है।

(ii) विज्ञान वैदिक साहित्य की तरह है-सरस और संवेदनशील।

(iii) जो लोग अपने व्यवसाय में शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं- उनके भीतर पूर्ण वचनबद्धता का मूल गुण होना अत्यन्त आवश्यक है।

(iv) हमारे युवकों को सपने देखने चाहिए। सपनों को विचारों में बदलना चाहिए। विचारों को क्रिया के जरिये वास्तविकता में बदलना चाहिए।

(v) वह काम करो, जिसमें तुम्हारी आस्था हो। यदि ऐसा नहीं करते हो तो तुम अपनी किस्मत दूसरों के हवाले कर रहे हो।

भाषा अध्ययन

1.

मूल शब्द		उपसर्ग	मूल शब्द		उपसर्ग
परि	+	श्रम	परि	+	हास
परि	+	चर्चा	परि	+	भ्रमण
परि	+	धान	परि	+	जन
परि	+	पूर्ण			

2.

मूल शब्द		प्रत्यय	मूल शब्द		प्रत्यय
समाज	+	इक	विज्ञान	+	इक
विमान	+	इक	यन्त्र	+	इक
वेद	+	इक	परिश्रम	+	इक
अर्थ	+	इक			

3.

मूल शब्द		प्रत्यय		नया शब्द
सम्बन्ध	+	इत	=	सम्बन्धित
कल्प	+	इत	=	कल्पित
प्रतिष्ठा	+	इत	=	प्रतिष्ठित
सम्भावना	+	इत	=	सम्भावित
राजपत्र	+	इत	=	राजपत्रित

4.

तत्पुरुष	द्वन्द्व	कर्मधारय
अग्निबाण	गुरु-शिष्य	शान्तचित्त
मन्त्रबाण	माता-पिता	नीलगाय
पुण्यभूमि	सीता-राम	
रामलीला		
रुद्रवीणा		

5. (1) को, से (2) के लिए (3) ने, में (4) का, से (5) के (6) हे (7) की (8) को, से।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (अ), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. समय , **2.** अग्निबाण, अग्नि, **3.** विश्व, मिसाइल, **4.** दो, **5.** रुद्रवीणा।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

9 गौरैया

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** गौरैया की आँखों की तुलना नीलम और परों की तुलना सोने से की गई है।
   (ख) तिनकों को चुन-चुनकर गौरैया अपना घोंसला बनाती है।
   (ग) वह हरे-भरे पौधों और हरी-भरी घास के तिनके इकट्ठे करके अपना घोंसला बनाती है इसलिए उसे हरियाली की रानी कहा गया है।
   (घ) गौरैया कवि के मिट्टी वाले आँगन में फुर्र-फुर्र उड़ती है, फुदकती है। उसका प्रत्येक अंग बिजली की भाँति चमकीला लगता है इसलिए वह इसे अपनी बहन बनाना चाहता है।
2. ● मटमैले आँगन में।
3. ● एक गौरैया ने एक-एक तिनका चुन-चुनकर कड़ी मेहनत करके अपना घोंसला बनाया।
   ● गौरैया, तेरा प्रत्येक अंग उत्साह से भरा हुआ है और तू उछल-उछल कर पानी पीती फिरती है।
   ● हवा के द्वारा ऊपर उठी छोटी-छोटी लहरों पर सरसराती हुई गौरैया गतिशील बनी हुई है।

भाषा अध्ययन

1. सर-सर, मर-मर, कर-कर, तिनके-तिनके, चुन-चुन, अंग-अंग, फर-फर, चिऊँ-चिऊँ, फुला-फुला, हिला-हिला।
2.

विशेषण	**विशेष्य (शब्द)**
मधुर	बलैया
मटमैला	आँगन
सुन्दर	पर
वायवी	लहरें
निर्दय	हलकोरों

3. 1. नीलम-सी नीली आँखें।
   2. सोने-सा सुनहरा रंग।
   3. सोने-से सुन्दर पर।
   4. चन्द्रमा-सा सुन्दर मुख।
   5. कमलकली-सी सुन्दर आँखें।
   6. चाँदी-से सफेद बाल।
4.

शब्द		**पर्यायवाची शब्द**
बिजली	—	विद्युत, तड़ित
आँख	—	नयन, नेत्र।
वायु	—	हवा, समीर
सोना	—	स्वर्ण, कनक।

5.

शब्द	**विलोम शब्द**
मधुर	कटु
सुन्दर	कुरूप
चंचल	स्थिर
सूक्ष्म	विशाल

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (ब), **4.** (द), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. मटमैले, फुदक, **2.** नीलम, सोने
3. बहन, भैया, **4.** गरदन,
5. हलकोरों, नैया।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

10 सुभाषचन्द्र बोस का पत्र

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** बहरामपुर जेल (बंगाल) से माण्डले सेन्ट्रल जेल के लिए स्थानान्तरण का आदेश मिला।
   (ख) वह एक ऐसी जेल थी जहाँ भारत के एक महानतम् सपूत लोकमान्य तिलक को लगातार छ: वर्ष तक रखा गया था। इसलिए सुभाषचन्द्र बोस ने माण्डले जेल को तीर्थस्थल कहा है।
   (ग) माण्डले जेल में लोकमान्य तिलक को शारीरिक और मानसिक यन्त्रणाएँ दी जाती थीं।

उन्हें वहाँ कोई भी बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। किसी अन्य बन्दी से उन्हें मिलने-जुलने नहीं दिया जाता था। पुलिस अधिकारियों की उपस्थिति में ही उन्हें छः वर्षों में दो या तीन भेंट से अधिक का मौका नहीं दिया गया था।

(घ) सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार अपने आपको बन्दी जीवन के अनुकूल बनाने के लिए हमें अपनी पिछली आदतों का खुद ही त्याग करना पड़ता है। स्वयं को पूर्ण स्वस्थ और फुर्तीला बनाना पड़ता है। हर नियम सिर झुकाकर मानना पड़ता है। मन को प्रसन्न बनाकर रखना होता है। मानसिक सन्तुलन बनाकर रखना पड़ता है।

(ङ) लोकमान्य तिलक ने प्रतिकूल और दुर्बल बना देने वाले वातावरण में भी 'गीता-भाष्य' जैसे महान ग्रन्थ की रचना की। उनमें प्रबल इच्छाशक्ति, साधना की गहराई और सहनशीलता थी। उनमें बौद्धिक क्षमता एवं संघर्ष करने की शक्ति थी। इसलिए सुभाषचन्द्र बोस ने सिफारिश की है कि लोकमान्य तिलक को विश्व के महापुरुषों की प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

2. (क) गीता भाष्य (ख) किताबें पढ़कर (ग) तीर्थ स्थल

भाषा अध्ययन

1. **अदम्य**—लोकमान्य तिलक में अदम्य साहस था।

प्रणयन—लोकमान्य तिलक ने माण्डले सेन्ट्रल जेल में गीता भाष्य का प्रणयन किया।

कृतित्व—प्राचीन मनीषियों का कृतित्व सदैव स्मरण किया जाएगा।

सुदीर्घ—स्वतन्त्रता की लड़ाई सुदीर्घ काल तक चली।

यन्त्रणा—तिलक जी को बन्दीगृह में बड़ी यन्त्रणा दी गई।

2. **'दुर' उपसर्ग जोड़कर**—दुर्भाग्य, दुर्गम, दुर्गति, दुर्जन, दुर्गुण।

'तम' उपसर्ग जोड़कर— महानतम, अधिकतम, सरलतम, कठिनतम।

3. शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, राजनैतिक, दार्शनिक।

4.

उपसर्ग	मूल शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
स	पूत	परि	वेश
स	शरीर	आ	देश
अन्	उपस्थित	स्व	देश
प्र	काण्ड	सु	प्रसिद्ध

5. कर्म का योगी, चहार से दीवार, गीता का भाष्य, शीत की ऋतु, धूल से भरी, देश के वासी, तीर्थ का स्थल, मन्द है जो गति, युग का निर्माण, दश हैं आनन जिसके, दिन और रात।

● सेवा में
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
टैगोर पब्लिक स्कूल
जबलपुर
विषय—शुल्क-मुक्ति हेतु प्रार्थना पत्र
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा 7 'ब' का एक विद्यार्थी हूँ। मेरे पिताजी एक अल्प वेतनभोगी कर्मचारी हैं। अतः आर्थिक दृष्टि से मैं इस योग्य नहीं हूँ कि विद्यालय का मासिक शुल्क दे सकूँ।
अस्तु, आपसे प्रार्थना है कि मुझे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपकी इस कृपा के लिए आपका चिर-ऋणी रहूँगा।

कृपाकांक्षी
राजीव सैनी
कक्षा 7 'ब'

दिनांक: 25 जुलाई, 20......

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. विश्व, कृति। **2.** ठुकरानी, मानसिक।
3. सांत्वना, किताबें। **4.** वार्ड, लकड़ी।
5. शरीरान्त, केन्द्रीय।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

11 वात्सल्य के पद

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. (क) कृष्ण, माँ यशोदा से बलराम की शिकायत कर रहे हैं।

(ख) बलराम कृष्ण को मूल्य देकर खरीदा हुआ बताते हैं। वे कहते हैं कि यशोदा ने कृष्ण को जन्म नहीं दिया है। इसके अलावा वे पूछते हैं कि उसके माता-पिता कौन हैं? नन्द और यशोदा दोनों ही गोरे रंग के हैं, उसका शरीर साँवला क्यों है? इस तरह की बातें करके बलराम, कृष्ण को चिढ़ाते हैं।

(ग) बालक कृष्ण के मुख से क्रोध भरी बातें सुनकर यशोदा कृष्ण पर रीझ रही हैं।

(घ) यशोदा ने गोधन की कसम खाकर कहा कि वह ही उसकी माता हैं और कृष्ण उनका पुत्र है।

(ङ) कृष्ण को पकवान और मेवाओं के प्रति अरुचि है।

(च) ब्रज-युवती के मन में इच्छा है कि कृष्ण उसके घर में चोरी-चोरी मक्खन खाने आएँ और जब कृष्ण मक्खन की मटकी से मक्खन खाते हुए बैठे हों, तब वह ब्रज-युवती उन्हें छिपकर देखे।

(छ) गोपी प्रात: नन्द बाबा के भवन गई थी।

(ज) यशोदा कृष्ण के शरीर पर तेल और आँखों में काजल लगा रही हैं। उनके माथे पर काला टीका लगा रही हैं।

2. (क) (4) बलराम।
(ख) (3) मक्खन
(ग) (2) कृष्ण।

3. (क) खेलन (ख) बलवीर
(ग) श्याम (घ) ग्वालिनि
(ङ) भौंह

4. पंक्ति अर्थ
1. → (4) 2. → (5)
3. → (1) 4. → (2)
5. → (3)

भाषा अध्ययन

1. तारी-ताली माखन-मक्खन
ठाढ़ी-खड़ी भौन-भवन
जुग-युग जुवती-युवती
पूत-पुत्र करोर-करोड़।

2. अनुप्रास अलंकार के उदाहरण निम्नलिखित हैं—
कहा कहाँ, कहत कौन, मोही को मारन, मोहन मुख, जसुमति सुन सुन, माता तू पूत, लगाई-लगाई, बनाई-बनाई, निहारत, बारत, चुचकारत।

3. (क) पुनि-पुनि
(ख) दै-दै
(ग) सुन-सुन
(घ) मन-मन

4.

शब्द	समानार्थी शब्द
भैया	भाई
शरीर	तन (देह)
मुख	मुँह
पूत	पुत्र
भोर	सवेरा

- अब बताइए

(1) कृष्ण अपनी माता यशोदा से कह रहे हैं।
(2) इसमें माता और पुत्र के बीच वात्सल्य भाव प्रतीत या जाग्रत हो रहा है।

5. वात्सल्य का उदाहरण— जी करता है तुझे चूम लूँ, ले लूँ मधुर बलैयाँ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (ब), **3.** (अ), **4.** (स), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. यशोदा, श्याम। **2.** बलभद्र, जनमत।
3. पकवान, रुचि। **4.** अन्तरयामी, ग्वालिनि।
5. जुग, करोर।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

12 नींव का पत्थर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** जूही की हँसी से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें कठिन परिस्थितियों में भी हँसना और खुश रहना चाहिए।

(ख) वीरता उस समय कलंकित होती है जब हम अपने कर्त्तव्य के पालन में पीछे रहते हैं। कर्त्तव्यपालन से मिलने वाली सफलता वीरता को सुशोभित करती है। इसलिए व्यक्ति को मातृभूमि की रक्षा के काम में अडिग बना रहना चाहिए। मातृभूमि की सेवा में हमें आगे आना चाहिए।

(ग) (क) **लक्ष्मीबाई**—महारानी लक्ष्मीबाई को मातृभूमि से बहुत प्रेम था। उसकी रक्षा में तलवार उठाकर लगातार लड़ती रही हैं। दृढ़ प्रतिज्ञ लक्ष्मीबाई ने हँसते-हँसते आजादी की बलिवेदी पर स्वयं को न्योछावर कर दिया। वह देशभक्ति और राष्ट्रसेवा के लिए सब कुछ त्यागने को तत्पर रहती थीं।

(ख) **मुन्दर**—मुन्दर महारानी लक्ष्मीबाई की सहेली थी। वह अंग्रेजों के आगमन की सूचना पर व्याकुल हो उठी और उसने चाहा कि उन्हें एकदम वहाँ से खदेड़ देना चाहिए। वह आज्ञापालक और वीरता के गुणों से युक्त एक सच्ची देशभक्त थी।

(ग) **तात्या**—तात्या प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम (1857) के सेनानी और लक्ष्मीबाई के एक सहयोगी थे। वे मातृभूमि की सुरक्षा और स्वराज्य की नींव का आधार बने। उन्होंने निर्भीक होकर शत्रु का मुकाबला किया।

2. **(क)** हम सबके एकतापूर्ण सहयोग से स्वराज्य प्राप्त करने में सफलता सम्भव है। आजादी मिल भी सकती है अन्यथा आजादी के लिए किये गये अपने प्रयासों के द्वारा स्वराज्य की नींव का पत्थर तो बन ही जायेंगे, जो आजादी के भवन को मजबूत और भव्य बनाने में सहायक होगा।

(ख) सेनापति रघुनाथ राव महारानी लक्ष्मीबाई के सर्वस्व त्याग पर कहता है कि लक्ष्मीबाई का सूर्य-सा तेज सूर्य के कभी भी समाप्त न होने वाले तेज में सदा के लिए विलीन हो गया अर्थात् सूर्य सदृश तेज वाली वीरांगना लक्ष्मीबाई अब सूर्य के अन्तहीन तेज में विलीन होकर सदा के लिए अमर हो गयीं।

3. (क) मुन्दर ने लक्ष्मीबाई से कहा।
(ख) रघुनाथ राव ने लक्ष्मीबाई से कहा।
(ग) तात्या ने लक्ष्मीबाई से कहा।
(घ) लक्ष्मीबाई ने जूही से कहा।

भाषा अध्ययन

1. छात्र अध्यापक की सहायता से शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करें।

2. **विलास-प्रियता**—विलास-प्रियता देश की रक्षा में सबसे बड़ी बाधक है।
जनसेवक—जनता की रक्षा करने वाले जनसेवक कहलाते हैं।
स्वामिभक्त—जूही सच्ची स्वामिभक्त थी।
मरहम-पट्टी—डॉक्टर ने घायलों की मरहम-पट्टी करके इलाज किया।

3. (क) दुर्भाग्य (✓)
(ख) लक्ष्मीबाई (✓)
(ग) सुरक्षित (✓)
(घ) समर्पित (✓)
(ङ) युद्धघोष (✓)

4. **(क)** सोचते थे कि इस वर्ष फसल अच्छी होगी, परन्तु ओलावृष्टि के कारण क्या से क्या हो गया?
(ख) गरीब छात्रा अपनी बड़ी मेहनत से कहाँ से कहाँ पहुँच गई?
(ग) मीना ने अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए बाहर भेजा; उसके परिवार वाले नहीं-नहीं करते रहे।
(घ) कौन कहता है कि पीओके भारत का हिस्सा नहीं है?

5.
- कौन कहता है, आप अकेली हैं, महारानी।
  कौन-सी बात की बाई साहब?
- कब हमने सोचा था, ऐसा भी होगा।
  कब क्या हो जाये, कह नहीं सकते।
- किसने ग्वालियर से झाँसी की ओर कूच किया?
  किसने सम्मान पाया है? देशभक्त ने या स्वामिभक्त ने।
- मेरी सहायता की किसे है दरकार।
  उसने किसे सहायता के लिए वचन दिया।

6. अध्यापक महोदय हाव-भाव से वाचन करवाएँ।

7.

शब्द	विपरीतार्थी शब्द
सफलता	असफलता
दुर्भाग्य	सौभाग्य
आकाश	पाताल
चेतन	अचेतन
दुर्बल	सबल
दुश्मन	मित्र

8. **हिमालय अड़ जाना**—जीवन लक्ष्य के मार्ग में कभी-कभी हिमालय अड़ जाता है।

नींद खुलना—आतंकवादियों के आक्रमण ने भारतीयों की नींद खोल दी।

पीठ दिखाना—सच्चे सैनिक समर में कभी पीठ नहीं दिखाते।

कलेजे पर पत्थर रखना—माँ अपने बेटे को कलेजे पर पत्थर रखकर देश-सेवा के लिए भेजती है।

9.

समास पद	समास विग्रह	समास का नाम
देशभक्त	देश का भक्त	तत्पुरुष समास
रणभूमि	रण की भूमि	तत्पुरुष समास
पेड़-पौधे	पेड़ और पौधे	द्वन्द्व समास
वीरबाला	वीर है जो बाला	कर्मधारय समास
फूल-पत्ती	फूल और पत्ती	द्वन्द्व समास
शुभ-अशुभ	शुभ और अशुभ	द्वन्द्व समास
युद्धघोष	युद्ध का घोष	तत्पुरुष समास

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (स), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. क्षण, हिमालय। **2.** पेशवा, भाँग।
3. सरदार, फिरंगे। **4.** दामोदर, पीठ।
5. पैदल, हमला।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

13 अगर नाक न होती

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** नाक को प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है।

(ख) जब आदमी का बुरा वक्त आता है या उसे किसी से कोई काम करवाना होता है, तब वह सारी हेकड़ी भूलकर हजार बार नाक रगड़ने को मजबूर हो जाता है।

(ग) असली हींग और देशी घी की पहचान नाक से ही कर सकते हैं। नाक से सूँघकर हम असली और नकली की पहचान करते हैं।

(घ) बाहर की ठण्डी हवा को नाक गरम करके उसे अन्दर जाने देने के कारण नाक हीटर का काम करती है।

(ङ) सोने की हीरे-मोती जड़ी नथ, नथुनी, लौंग, बुलाक आदि आभूषण नाक में पहने जाते हैं।

(च) नाक के लिए चार उपमाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) घड़े जैसी चपटी।
(ii) पकौड़ा जैसी मोटी।
(iii) सारस जैसी लम्बी।
(iv) चिलगोजे जैसी छोटी।

2. (क) आँख — देखना
(ख) कान — सुनना
(ग) नाक — सूँघना
(घ) मुँह — चखना
(ङ) त्वचा — छूना

भाषा अध्ययन

1. **तत्सम शब्द**— उच्छवास, प्रदूषण, पर्यावरण, मनोवैज्ञानिक, मृत्यु।

तद्भव शब्द— हेकड़ी, शिख, नख, पाँव, ब्याह, रूठ, सहेली।

देशज शब्द— नथुनी, बुलाक, असली, नकसुरा, छन्ना, छोछक, नकटा।

विदेशी शब्द— फ्रिज, प्लास्टिक सर्जरी, कटलेट, कूलर, टी.वी.।

2.
- मेरे विद्यालय के सामने एक दुकान है।
- बालकों के बिना घर सूना दिखता है।
- पेड़ के नीचे बिल है।
- पेड़ के ऊपर पक्षी बैठते हैं।
- मोहन खेत की ओर गया है।
- रामू की अपेक्षा मोहन ताकतवर है।
- बच्चे अपने माँ-बाप के साथ हैं।
- मिठाई के बदले फल खाना अच्छा है।

3.
- नाक रखना
- नाक कटना
- नाक ऊँची रखना
- नाक फुलाना
- नाक रहना
- नाक के नीचे होना
- नाकों चने चबाना।

क्रमशः मुहावरों का अर्थ—इज्जत का बचाव करना। इज्जत चली जाना। सम्मान बनाये रखना। गुस्सा हो जाना। इज्जत बनी रहना। उपस्थिति में होना। किसी को परेशान करना।

4.

अनेक शब्द	शब्द	बना मुहावरा	वाक्य प्रयोग
आँख		आँख दिखाना	कुछ लोग अकारण ही आँखें दिखाते रहते हैं।
अँगूठा		अँगूठा दिखाना	रामू के पैसे माँगने पर मोहन ने अँगूठा दिखा दिया।
दाँत	दिखाना	दाँत दिखाना	उनके दाँत दिखाते ही मैं समझ गई कि खाली हाथ है।
पीठ		पीठ दिखाना	भारतीय सैनिक रण में पीठ नहीं दिखाते।
जीभ		जीभ दिखाना	वह बार-बार जीभ दिखा रहा था।
आईना		आईना दिखाना	फिल्म में आज के समाज का आईना दिखाया गया है।

5.
- 'कितना' अच्छा होता 'अगर' वह घर आ जाता।
- 'कितना' अच्छा होता 'अगर' मेरा भाई आज यहाँ होता।
- 'कितना' अच्छा होता 'अगर' वह मेरे साथ होता।
- 'कितना' अच्छा होता 'अगर' वह मेरे संग दौड़ा होता।
- 'कितना' अच्छा होता 'अगर' विद्यालय खुला होता।

6. **(क)** वे मौके की तलाश में रहते हैं कि कब, कैसे, किसी की नाक रगड़वा दें।
(ख) यह कोशिश रहती है कि उसकी नाक न कटवा दें।
(ग) आज तुम्हें अच्छा गाना सुनवाती हूँ।
(घ) सेठ जी अपने बच्चे के जन्मदिन पर सभी को दावत खिलवाते हैं।

7.

खाना	खाकर	खाया
जाना	जाकर	गया
गाना	गाकर	गाया
पढ़ना	पढ़कर	पढ़ा
हँसना	हँसकर	हँसा
रोना	रोकर	रोया
सोना	सोकर	सोया
धोना	धोकर	धोया

8.

उद्देश्य	हिन्दी शब्द
औकात	क्षमता
आदमी	मनुष्य
खानदान	कुटुम्ब
इलजाम	दोष
वक्त	समय
तलाश	अन्वेषण
जिंदगी	जीवन
मर्द	पुरुष

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. नाक, अंग। **2.** लोग, मक्खी।
3. नजर, फर्क। **4.** चटोरों, मुँह।
5. मतलब, मालिक।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

विविध प्रश्नावली – 2

1. **(क)** खान हींग बेचने का काम करता था।
(ख) मिसाइलमैन के नाम से डॉ. अब्दुल कलाम प्रसिद्ध हैं क्योंकि उन्होंने 'अग्नि' मिसाइल का सूत्रपात किया।
(ग) सुभाषचन्द्र बोस ने माण्डले जेल से एन. सी. केलकर के नाम पत्र लिखा था। उसमें उन्होंने चर्चा की थी कि इसी जेल में लोकमान्य तिलक को छः वर्ष तक रखा गया। यहीं उन्होंने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' लिखा था। यहाँ लोकमान्य तिलक ने अपने बहुमूल्य जीवन की इस अवधि में कितनी पीड़ा सहन की थी। साथ में जेल की दिनचर्या पर भी चर्चा की थी।
(घ) तात्या सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी थे और वे झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई के एक सहयोगी थे।
(ङ) हमारे प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान हैं—
(i) कान्हा राष्ट्रीय उद्यान। (ii) बान्धवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान। (iii) माधव राष्ट्रीय उद्यान, शिवपुरी। (iv) सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, होशंगाबाद। (v) संजय राष्ट्रीय उद्यान (हमारे प्रदेश के सीधी जिले और छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले तक फैला हुआ है।) (vi) इन्दिरा प्रियदर्शिनी पेंच राष्ट्रीय उद्यान, सिवनी। (vii) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, टाइगर रिजर्व क्षेत्र-पन्ना और छतरपुर जिलों

तक फैला हुआ है। (viii) वन विहार राष्ट्रीय उद्यान हमारे प्रदेश की राजधानी भोपाल में है। (ix) 'जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान' जिला मण्डला। इसमें वनस्पति जीवाश्मों को संरक्षित किया गया है।

(च) (i) गौरैया बड़ी फुर्तीली होती है, इधर-उधर फुदकती रहती है। (ii) गौरैया कच्चे घरों में, छप्परों में घास और तिनकों से अपना घोंसला बनाती है। (iii) गौरैया कभी मटके की गरदन पर, कभी अरगनी पर चहचहाती हुई इधर-उधर चहकती फिरती है। (iv) उसकी आँखें अति सुन्दर और नीलम मणि के समान होती हैं। (v) गौरैया सरसराती हवा में तैरती हुई उठती जल की लहरों के पानी से अपनी प्यास बुझाती है।

(छ) नींव का पत्थर महारानी लक्ष्मीबाई और उनके सहयोगीगण हैं, जिन्होंने स्वराज्य की स्थापना की भूमि तैयार करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

2. **(क)** हींगवाला खान ने सावित्री से कहा।

(ख) लक्ष्मीबाई ने तात्या से कहा।

(ग) महारानी लक्ष्मीबाई ने अपने सरदार रामचन्द्र से कहा।

(घ) हरमिन्दर नामक छात्र ने अपनी शिक्षिका श्रीमती संध्या से कहा।

3. **(क)** बान्धवगढ़।

(ख) चीता।

(ग) रुद्रवीणा।

(घ) फुदक रही।

4. **(क)** डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने देशसेवा के लिए अपने आदर्श को स्पष्ट करते हुए कहा था कि वे धन प्राप्त करने की इच्छा से विदेश जाना पसन्द नहीं करेंगे। इस तरह धन का कमाना भविष्य सँवारना नहीं हो सकता, वह तो एक मोह मात्र है। अत: देश की सेवा करने का जो मुझे अवसर मिला है, उसे में अपने हाथ से कभी जाने न दूँगा।

(ख) समय बहुत मूल्यवान होता है। अत: जो भी कुछ करना है, उसे तत्काल कर डालने के लिए संगठित रूप में उठ बैठो और अपने जीवन का कोई भी क्षण व्यर्थ मत जाने दो।

(ग) बालक श्रीकृष्ण के मुख से क्रोध भरी बातें सुन-सुनकर माता यशोदा बहुत प्रसन्न होती हैं।

(घ) कवि कहता है कि मैंने भी अपना आश्रय उसी प्रकार बनाया है जिस प्रकार गौरैया एक-एक तिनका चुन-चुनकर अपना घोंसला बनाती है।

(ङ) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहते हैं कि हमारे देश के युवकों को सपने अवश्य देखने चाहिए। इन सपनों या कल्पनाओं को विचारों का रूप देकर उनके अनुसार कार्य करना चाहिए।

5. **(क)** **नींद खुलना**—लगातार सारे विषयों में फेल होने पर नितिन की नींद अब तो खुल जानी चाहिए।

नाक कटना—मदन के अनैतिक कारनामों से तो वकील साहब की नाक ही कट गयी है।

आँख का तारा—श्रवणकुमार अपने माँ-बाप की आँखों के तारे थे।

नौ दो ग्यारह होना—पुलिस के आते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

श्री गणेश करना—शिवकरण ने नवरात्रि में अपने व्यवसाय का श्रीगणेश किया।

प्राण मुरझा जाना—बारिश की राह देखते-देखते फसल के प्राण मुरझा गये।

(ख) **अन्वेषक**—चन्द्रशेखर वेंकट रमण विज्ञान के क्षेत्र में महान अन्वेषक रहे।

दुश्मन—भारतीय सैनिक देश की सीमाओं पर दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखते हैं।

तलवार—शिवाजी की तलवार सूरज की किरणों की भाँति दमकती थी।

अधिकार—हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ना भी चाहिए।

वीरगति—कुरुक्षेत्र के मैदान में अनेक वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गए।

शहीद—देश की आजादी में लाखों सैनिक शहीद हो गए।

वैज्ञानिक—डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम देश के महान वैज्ञानिक थे।

6. (क) द्वन्द्व

(ख) सामाजिक

(ग) परि

(घ) सरिता

(ङ) कर्मधारय।

(च) मैया, मोहि दाऊ बहुत खिझायो।

(छ) अग्नि।

(ज) दुग्ध।

7. **(क)**

अशुद्ध शब्द		**शुद्ध शब्द**
प्रछेपण	—	प्रक्षेपण
किर्तिमान	—	कीर्तिमान
भास्यकार	—	भाष्यकार
सान्तवना	—	सान्त्वना
विस्रान्ती	—	विश्रान्ति

साम्प्रदयिक – साम्प्रदायिक
विस्वविख्यात – विश्वविख्यात
स्वराज – स्वराज्य

(ख) (i) **पिता** ने पुत्र को पुस्तक दी।
रामू रात को दूध **पीता** है।

(ii) हमने **सुना** है कि आज मेला है।
बच्चों के बिना घर **सूना** है।

(iii) संत जन **हंस** जैसे होते हैं।
बच्चे विदूषक की बातें सुनकर **हँस** रहे थे।

8. **'अनु'** उपसर्ग लगकर बने शब्द–
अनुसरण, अनुशासन, अनुकरण, अनुचर, अनुक्रम, अनुरूप, अनुगमन।
'आ' उपसर्ग लगकर बने शब्द–
आरक्षण, आगमन, आकर्षण, आजन्म, आचरण, आजीवन, आरोहण, आमरण।

9. **(क)** सम्बन्ध कारक।
(ख) सम्प्रदान कारक।
(ग) अधिकरण कारक।
(घ) कर्त्ताकारक व सम्बन्ध कारक।

10. **(क)** मेरे देखते-देखते, क्या से क्या हो गया जूही ? झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ से कहाँ पहुँच गई ?

(ख) जब खान ने हींग तौलकर, पुड़िया बनाकर सावित्री के सामने रख दी, तब सबसे छोटे बच्चे ने पुड़िया उठाकर खान के पास फेंकते हुए कहा, "ले जाओ, हमें नहीं लेना है।" चलो, माँ भीतर चलो।

(ग) बान्धवगढ़ उमरिया जिले में स्थित है। उमरिया के अलावा रीवा, शहडोल, जबलपुर और कटनी नगरों से भी यहाँ के लिए बसें मिलती हैं।

11.
- खून पसीना एक करना
- अन्धे की लाठी
- चल बसना
- आँखें खुलना
- कान भरना
- नाक में दम करना
- आँखें बिछाना
- मुँह की खाना
- जहर उगलना
- मुँह छिपाना
- नाक कट जाना
- भौं चढ़ाना।

12.

जिसके आने की तिथि मालूम न हो।	अतिथि
जिसके दस आनन हैं।	दशानन (रावण)
जो बहुत बोलता है।	वाचाल
जो पढ़ना-लिखना जानता है।	साक्षर
जो संगीत जानता है।	संगीतज्ञ
जिसका उदर लम्बा है।	लम्बोदर (गणेश)

13. **(क)** हाँ, संघर्ष करने से सफलता जरूर मिलती है।

(ख) डॉ. अब्दुल कलाम का जीवन हमें आशावान बनने, संघर्षशीलता का गुण विकसित करने की प्रेरणा देता है।

(ग) **मेरी रोचक यात्रा**

पिछले वर्ष के ग्रीष्मावकाश में मेरे पिताजी ने एलीफेंटा गुफाएँ देखने के लिए मुंबई यात्रा का कार्यक्रम बनाया, तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। पिताजी ने रेल की टिकटें आरक्षित करवा लीं। हम लोग गाड़ी के समय से एक घंटा पूर्व ही स्टेशन पर पहुँच गए। प्लेटफॉर्म पर यात्रियों की भारी भीड़ थी। जैसे ही गाड़ी आई, प्लेटफार्म पर अफरा-तफरी मच गई। लोग डिब्बों में चढ़ने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे हैं। अधिकांश लोगों ने अपनी सीटें आरक्षित करा रखी हैं। हम आराम से चढ़ेंगे। थोड़ी देर में हम अपने डिब्बे में चढ़े। सौभाग्य से हमारी सीटें निचले बर्थ पर थीं और एक सीट खिड़की के पास वाली थी। थोड़ी ही देर में इंजन ने सीटी दी, गाड़ी सरकने लगी और धीरे-धीरे उसने रफ्तार पकड़ ली। डिब्बे के सभी यात्रियों ने कुछ-न-कुछ करना शुरू कर दिया। किसी ने अखबार पढ़ना शुरू कर दिया, तो किसी ने कोई दूसरी पत्रिका। मैं लेट गया और न जाने कब आँख लग गई। तभी रेलवे विभाग के कर्मचारी आ गए और नाश्ते व चाय आदि का आर्डर लेकर चाय ले आए। हमने भी चाय पी और नाश्ता किया। अब दोपहर का समय हो गया था। हमने खाना खाया। अब बैठे-बैठे मन उकता गया था। मैं पिताजी से बार-बार यही पूछता कि गाड़ी मुंबई कब पहुँचेगी ? पिता जी ने हँसकर कहा, "बस केवल तीन-चार घंटे का सफर और है।" तीन-चार घंटे की यात्रा भी पूरी हुई और हम मुंबई पहुँच गए। यह यात्रा मुझे सदैव याद रहेगी।

(घ) मुझे 'मेघ बजे' कविता अच्छी लगती है। इसकी भाषा सरल, सरस और समझ में आने वाली है। प्रकृति का चित्रण सरल भाषा शैली में किया गया है।

14. (क) भारत के राष्ट्रीय वन उद्यानों में सबसे अधिक वन उद्यान मध्यप्रदेश में हैं जिनकी संख्या नौ है। इनमें मंडला और बालाघाट जिले में स्थित कान्हा राष्ट्रीय उद्यान प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध और पुराना राष्ट्रीय उद्यान है। इसके अतिरिक्त बांधवगढ़ (उमरिया जिले में), माधव राष्ट्रीय उद्यान (शिवपुरी जिले में), सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान (होशंगाबाद जिले में), पन्ना राष्ट्रीय उद्यान (पन्ना जिले में), पेंच राष्ट्रीय उद्यान (सिवनी जिले में), वन विहार (भोपाल में) और जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान (मंडला जिले में) स्थित हैं। इन राष्ट्रीय उद्यानों में मुख्यत: बाघ, बारहसिंगा, चीतल, सांभर, कृष्णमृग, तेंदुआ, नीलगाय, भालू, गौर, चौसिंगा चिंकारा, जंगली सुअर, भेड़िया, सोन कुत्ता आदि छोटे-बड़े पशु एवं सोखपर, फाख्ता, मोर, कबूतर, तीतर-बटेर, चील, गरुड़, बगुला, सारस, वनमुर्गी, धनेश, किलकिला, मैना आदि पक्षी पाए जाते हैं।

(ख) विज्ञान और जीवन

प्रस्तावना— आज विज्ञान का युग है। हर दिशा में विज्ञान की विजय का झण्डा फहरा रहा है। विज्ञान हमारे पूरे जीवन को प्रभावित कर रहा है।

(i) ज्ञान एवं शिक्षा—आज विद्या का जो प्रकाश दिखाई दे रहा है वह विज्ञान के ही कारण है । हम जिन पुस्तकों, कापियों, पेन-पेंसिलों आदि का प्रयोग करते हैं वे हमें विज्ञान की कृपा से ही प्राप्त होती हैं । कैलकुलेटर के आविष्कार ने गणित के लम्बे प्रश्नों को भी सरल बना दिया है । कम्प्यूटर इस दिशा में उससे भी चार कदम आगे है ।

(ii) यातायात—विज्ञान के आविष्कारों ने यात्रा को अत्यन्त सरल और आनन्ददायक बना दिया है । अब ऊँचे पर्वत और गहरे समुद्र भी मनुष्य के मार्ग में बाधक नहीं हैं । बड़े-बड़े जलपोत समुद्र की लहरों को चीरते हुए चले जाते हैं । आज हम वायुयान द्वारा हजारों मील की यात्रा कुछ ही घण्टों में तय कर लेते हैं ।

(iiii) समाचार—आज टेलीफोन, मोबाइल, टेलीप्रिन्टर, ई-मेल आदि के द्वारा सारे संसार के समाचार इधर से उधर आते-जाते रहते हैं।

(iv) मनोरंजन— अब टेलीविजन तथा वीडियो द्वारा आवाज के साथ-साथ चित्रों का भी आनन्द लिया जा सकता है ।

(v) चिकित्सा—एक्स-रे आदि यन्त्रों के द्वारा शरीर की भीतरी बीमारी का भी ठीक-ठीक पता लग जाता है । अब बड़े-से-बड़े ऑपरेशन सफलतापूर्वक हो जाते हैं।

(vi) युद्ध—अब युद्ध-कला को भी विज्ञान ने आधुनिक बना दिया है । रडार नामक यन्त्र द्वारा विदेशी आक्रमण का पहले से पता लग जाता है—वैज्ञानिक इस प्रयास में लगे हैं कि आने वाले समय में सैनिकों के स्थान पर रोबोट ही युद्ध में लड़ा करें।

उपसंहार—आज हमारे जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिस पर विज्ञान का प्रभाव न हो । यहाँ तक कि उसने प्रकृति को मनुष्य की दासी बना दिया है । अब तो वैज्ञानिक अन्य ग्रहों पर जाने की तैयारी कर रहे हैं । विज्ञान के कारण ही आज हम अपनी धरती से अन्य देशों के समान चन्द्रलोक आदि की भी सैर कर सकते हैं । इसीलिए तो किसी कवि ने कहा है—

है दिव्य तुम्हारा चमत्कार। विज्ञान-देवता ! नमस्कार।।

15. मामा की शादी में जाने के लिए अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र

सेवा में

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय

आदर्श विद्या मन्दिर

देवास

विषय—शादी हेतु अवकाश के लिए।

मान्य महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मेरे मामा साँवरमल का शुभ विवाह दिनांक 22 जनवरी, 20..... को है। अत: श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि मुझे दिनांक 20 जनवरी, 20..... से 25 जनवरी, 20..... तक छह दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। प्रार्थी आपका चिर-ऋणी रहेगा। धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रामस्वरूप

कक्षा 7 'ब'

14 मत ठहरो, तुमको चलना ही चलना है

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** कवि का ठहरने से तात्पर्य है— गतिहीन हो जाना, किसी भी प्रकार की उन्नति से रहित।
(ख) हमें अपने साथ जमाने को अर्थात् अन्य पिछड़े हुए लोगों को भी लेकर चलना है।
(ग) पक्के इरादों से जीवन की बाधाओं को दूर किया जा सकता है।
(घ) कवि के अनुसार मनुष्य को उचित अवसर के हाथ से निकाल दिये जाने पर पछताना पड़ता है।
(ङ) ठहरना पतन का और मृत्यु का प्रतीक है। अत: कवि निरन्तर चलते रहने को महत्त्व दे रहा है।
(च) कर्म ही ईश्वर की पूजा है। अत: प्रत्येक क्षण का सही उपयोग करते हुए काम पूरा करना चाहिए, नहीं तो उचित अवसर के हाथ से निकल जाने पर हमें पछताना पड़ेगा। इसलिए हमें अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।

2. **(क) भावार्थ**—कवि कहता है कि तुम्हें लगातार चलते रहना है और अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है। जो लोग उन्नति नहीं कर पाए हैं अथवा तरक्की की दौड़ में पीछे रह गए हैं, उन्हें आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। इसी प्रकार संसार की उन्नति में सहयोगी बनकर तुम्हें इस उन्नति का और संसार की प्रगति का चिह्न बनना है। इस संसार के लोगों की भलाई के लिए कार्य करने के साँचे में तुम्हें ढल जाना चाहिए। इसलिए तुम ठहरो मत, तुम्हें तो आगे ही बढ़ते जाना है।
(ख) भावार्थ—कवि कहता है कि जीवनरूपी मार्ग में आने वाली रुकावटें और विफलताएँ मनुष्य के पक्के इरादों को देखकर अपने आप ही दूर हो जाती हैं। पक्के इरादों वाला व्यक्ति इन बाधाओं और विफलताओं को अपने इरादों से ठोकर मारकर दूर कर देता है। वह अपने मार्ग के काँटों को अपने पैरों से कुचल डालता है।

3. (क) छलना। (ख) ढलना।
(ग) दलना। (घ) मलना।
(ङ) टलना।

भाषा अध्ययन

1. • दिए गए मुहावरों का अर्थ—
(क) अनुकूल बन जाना :
तुमको जनहित के साँचे में ढलना है।
(ख) पछताना :
अवसर खोकर तो सदा हाथ मलना है।
(ग) प्रतिज्ञा कर लेना :
जब चलने का व्रत लिया, ठहरना कैसा।
(घ) लग जाना :
जो कुछ करना है, उठो ! करो, जुट जाओ।
(ङ) समय को निकाल देना :
अवसर खोकर तो सदा हाथ मलना है।

2. • चलना, टलना, छलना, ढलना, दलना, मलना।
• पतन, जीवन।
• चलाओ, बढ़ाओ, ठुकराओ, जुट जाओ, गँवाओ।
• आती हैं, जाती हैं।

3. (क) पतन। (ख) चलना।
(ग) अनहित। (घ) सफलता।
(ङ) दु:ख।

4. (क) मत रुको, आगे बढ़ो। रुको, मत आगे बढ़ो।
(ख) पढ़ो, मत बात करो। पढ़ो, बात मत करो।
(ग) मत हँसो, भोजन करो। हँसो, मत भोजन करो।
(घ) मत भागो, धीरे चलो। भागो, मत धीरे चलो।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (द), **3.** (अ), **4.** (स), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. गति, विश्रान्ति। **2.** चलने, ठहरना।
3. जमाना, चलाओ। **4.** जनहित, साँचे।
5. दृढ़निश्चय, स्वयं।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

15 छोटा जादूगर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** लेखक की छोटे जादूगर से पहली मुलाकात कार्निवाल के मैदान में हुई।
(ख) लेखक ने छोटे जादूगर से पहली बार मिलने पर पूछा कि क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?
(ग) छोटे जादूगर का खेल उस दिन इसलिए नहीं जमा क्योंकि उसे अपनी बीमार माँ की दशा सताये जा रही थी। उस दिन माँ ने जल्दी लौट आने के लिए कहा था क्योंकि उनकी अंतिम घड़ी समीप ही थी।
(घ) लेखक ने कॉर्निवाल के मैदान में एक बालक को देखा जिसकी उम्र तेरह-चौदह वर्ष की रही होगी। वह अपनी जीविका के लिए ताश, गुड़िया, बन्दर आदि के खेल दिखाता था और लोगों का मनोरंजन करता था। इसलिए उसका नाम छोटा जादूगर पड़ गया।
(ङ) छोटे जादूगर को परिश्रम करने में विश्वास है। वह अपनी बीमार माँ की दवाई के लिए खेल दिखाता है। वह किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता है। वह चतुर है, साहसी है और अभिवादनशील है। उसके इन्हीं गुणों ने मुझे प्रभावित किया।
2. (क) कार्निवाल। (ख) माँ।
(ग) छोटा जादूगर। (घ) तुरन्त, समीप।

भाषा अध्ययन

1. • शिक्षित बालकों में प्रगल्भता आ जाती है।
• रामू ने अपने तर्क में तथ्यपूर्ण बात कही है।
• मध्यप्रदेश में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान है।
• देश के स्वार्थी लोग अच्छे वातावरण को बिगाड़ रहे हैं।
• ईर्ष्या मनुष्य की बुद्धि का नाश कर देती है।
• मुसीबत में धैर्य से काम लेना चाहिए।
2. उछल पड़ना — अधिक प्रसन्न होना
दंग रह जाना — आश्चर्यचकित होना
पीठ थपथपाना — शाबासी देना
आँसू निकल पड़ना — दु:खी होकर रोना
चैन न पड़ना — परेशान होना
3. "छोटा जादूगर कहिए, यह मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।"
श्रीमती जी ने कहा, "अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?" "पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा फिर एक सूती चादर लूँगा।"
4. छात्र स्वयं पढ़ें और समझें।
5.

विशेषण	**विशेष्य**
छोटा	जादूगर
एक	लड़का
गम्भीर	विषाद
अधिक	प्रसन्नता
लाल	कमलिनी
मस्तानी	चाल
दुर्बल	हाथ
समग्र	संसार

6. क-वर्ग— कङ्गन, अङ्क, शङ्ख, गंगा।
च-वर्ग— पञ्च, गुञ्जन, खञ्जन, रञ्जन।
ट-वर्ग— पण्डा, पण्डित, घण्टा, ठण्डा।
त-वर्ग— पन्त, चन्दन, धन्धा, कन्धा।
प-वर्ग— पम्प, कम्प, मन्दिर, दम्भ।

योग्यता विस्तार

1. छोटा जादूगर जैसा व्यक्ति यदि हमारे जीवन में आए तो हम उसे लेखक की भाँति पहले उसकी सच्चाई जानने का प्रयास करेंगे फिर जितना बन पड़ेगा उतनी उसकी मदद करने का प्रयास करेंगे।
2. गुणवाचक विशेषण— अच्छा, काला, आगामी, नरम, तीखा।
संख्यावाचक विशेषण— एक, दो, पहला, चौगुना, चारों, हर-एक।
परिमाणवाचक विशेषण— दो मीटर, दस बीघा, कई मीटर, थोड़ा, पूरा।
सार्वनामिक विशेषण— यह, वह, वे, ये, ऐसा।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (द), **3.** (अ), **4.** (स), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. तिरस्कार। **2.** कार्निवाल, अभिनय।
3. निशानेबाज। **4.** एक रुपया।
5. दुर्बल।

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

16 नरबदी

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** मैकल पर्वत के घने जंगलों के एक गाँव में दुग्गन रहता था। नरबदी उसकी बेटी थी। वह अपने पिता के साथ रहती थी।

(ख) नरबदी अपने पिता के साथ जंगल में भी चली जाती।

(ग) बरसात आने वाली थी। झोंपड़ी की मरम्मत के लिए बाँस लाने के लिए दुग्गन सुबह-सुबह पहाड़ की दिशा में चल पड़ा।

(घ) नरबदी अपनी प्यास के दुख को भुलाकर अपने परेशान पिता के बारे में सोचने लगी। उसकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह चलीं। वह अपने देवता से मन ही मन प्रार्थना करने लगी कि वे उसके पिता की रक्षा करें। तुम मेरे प्राण ले लो, लेकिन मेरे प्यारे बाबा को बचा लो। इसके साथ ही नरबदी वहाँ से अदृश्य हो गयी और अपने बाबा को बचाने के लिए झरना बन गई।

(ङ) लोक कथा के अनुसार नरबदी के कारण नर्मदा नदी का जन्म हुआ।

2. **(क)** **आशय**—नरबदी प्यास से व्याकुल पिता के बारे में सोचने लगी तो उसके पिता का परेशान चेहरा स्पष्ट दिखाई पड़ गया जो अपनी प्यासी पुत्री के लिए पानी की तलाश कर रहा था।

(ख) **आशय**—नरबदी ने अपने परेशान और प्यास से व्याकुल पिता के लिए जल उपलब्ध कराने वाले झरने का रूप धारण कर लिया। अपने पिता (दुग्गन) से बोली कि बाबा मैं झरना बन गई हूँ, आप अपनी प्यास बुझा लीजिए।

3. (क) मैकल पर्वत।

(ख) माँ।

(ग) प्रार्थना।

(घ) झरना।

(ङ) प्यास।

भाषा अध्ययन

1. 1. नीर, जल

2. सरोवर, ताल

3. पहाड़, गिरि

4. गणपति, लंबोदर

2. वह मन ही मन बड़े देव को मनाने लगी— "हे बड़े देव! मेरे बाबा को बचा लेना। उनका प्यास के मारे बुरा हाल है। पानी नहीं मिला तो वे मर जाएँगे।"

3. (क) नरबदी ने मुस्कुराने की कोशिश की।

(ख) वह बुरी तरह थक चुकी थी।

(ग) बरसात आने वाली थी।

(घ) नरबदी को वहाँ न पाकर वह चिन्तित हो उठा।

(ङ) नरबदी बह रही थी।

4.

संज्ञा	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
1. धन	धनी	यह	ऐसा
2. सुख	सुखी	वह	वैसा
3. ज्ञान	ज्ञानी	कौन	कैसा
4. दान	दानी	जो	जैसा
5. बल	बली		
6. गुण	गुणी		

5.

क्रिया	विशेषण	अव्यय	विशेषण
1. पढ़ना	पढ़ाकू	आगे	अगला
2. लड़ना	लड़ाकू	पीछे	पिछला
3. झगड़ना	झगड़ालू	बाहर	बाहरी
4. बेचना	बिकाऊ	ऊपर	ऊपरी

6.

				नया शब्द		अर्थ
(क)	आत्म	समर्पण	=	आत्मसमर्पण	=	अपने को दूसरों के हाथ सौंप देना
		प्रशंसा	=	आत्मप्रशंसा	=	खुद की प्रशंसा करना
		गौरव	=	आत्मगौरव	=	स्वयं का गौरव

(ख)	शीत	कालीन	=	शीतकालीन	=	सर्दी के समय का
	ग्रीष्म		=	ग्रीष्मकालीन	=	गर्मी के समय का
	वर्षा		=	वर्षाकालीन	=	वर्षा के समय का
(ग)	सर्व	उत्तम	=	सर्वोत्तम	=	सबसे अच्छा
	नर		=	नरोत्तम	=	नरों में अच्छा
	पुरुष		=	पुरुषोत्तम	=	पुरुषों में अच्छा
(घ)	प्रेम	पूर्वक	=	प्रेमपूर्वक	=	प्रेम के साथ
	सम्मान		=	सम्मानपूर्वक	=	सम्मान के साथ
	आग्रह		=	आग्रहपूर्वक	=	आग्रह के साथ
(ङ)	लिख	आवट	=	लिखावट	=	सुलेख
	बन		=	बनावट	=	आकार-प्रकार
	थक		=	थकावट	=	थकान

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (द), **4.** (स), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. प्यारी, नरबदी। **2.** मुस्कराने। **3.** आसमान। **4.** कलकल, संगीत। **5.** जल धाराएँ।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

17 और भी दूँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** कवि मातृभूमि को तन-मन-प्राण अपना सब कुछ समर्पित करना चाहता है। साथ ही वह अपने मन में उठने वाली कल्पनाएँ भी अर्पित करना चाहता है।

(ख) कवि अपनी मातृभूमि की सेवा में सर्वस्व समर्पित कर देने के बाद भी सन्तुष्ट नहीं दिखता है। इसका कारण यह है कि उसे इस सबके बाद भी ऐसा लगता है कि अभी मन में कुछ देने की लालसा बाकी है। उसे लगता है कि इतना कुछ देने के बाद भी वह मातृभूमि का ऋण चुका नहीं पा रहा है। इसलिए वह ऐसा कह रहा है।

(ग) गाँव, द्वार-आँगन आदि सभी का उसके ऊपर ऋण है जिसे वह चाहकर भी चुका नहीं सकता। इसलिए वह इन सभी से क्षमा याचना करता है।

(घ) कविता का मुख्य सन्देश यह है कि हम सभी के ऊपर अपनी मातृभूमि का ऋण है जिसे हम सर्वस्व त्याग कर भी चुका नहीं सकते। अतः हमारा धर्म है कि मोहरहित होकर तन-मन-प्राण से मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार रहें।

2. **(क)** तोड़ता हूँ मोह का बन्धन।

(ख) आयु का क्षण-क्षण समर्पित।

(ग) मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

3. **(क)** (2) मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पण की चाह।

(ख) (2) इनकी अपेक्षा देश के प्रति दायित्व निर्वाह को महत्त्वपूर्ण मानता है।

भाषा अध्ययन

1. छात्र स्वयं उच्चारण करें।

2. छात्र स्वयं करें।

3.
- अपनी मातृभूमि के लिए सदैव समर्पित रहना चाहिए।
- मेरे घर के आँगन में तुलसी का पौधा है।
- राष्ट्रीय ध्वज मातृभूमि की शान है।
- माँ और मातृभूमि का आशीष लेकर सैनिक सरहद पर डटे रहते हैं।

4. • मन समर्पित, तन समर्पित।
• गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण अर्पित।
• शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
• रक्त का कण-कण समर्पित।
• आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
• नीड़ का तृण-तृण समर्पित।

5. माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन।
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन।
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी।
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण

6.

फूल —	प्रसून	पुष्प	सुमन
पृथ्वी —	वसुधा	धरा	धरती
माथा —	मस्तक	भाल	कपाल
खून —	रक्त	रुधिर	लहू
गृह —	घर	आवास	निकेतन

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. जीवन। **2.** ऋण।
3. रक्त। **4.** माँज।
5. आयु।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (ख)।

18 लोकमाता : अहिल्याबाई

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** अहिल्याबाई को लोग लोकमाता कहते हैं क्योंकि उनके शासनकाल में सम्पूर्ण प्रजा सुख और शान्ति से तथा समृद्धि से भरपूर थी।

(ख) अहिल्याबाई को एक अच्छे शासक होने की राह पर आगे बढ़ाते हुए मल्हार राव ने अहिल्याबाई की आन्तरिक शक्तियों और क्षमताओं को पहचाना तथा अपने बेटे के समान ही राजनीति और युद्ध कला की शिक्षा दिलायी, घुड़सवारी सिखलाई।

(ग) युद्ध में अहिल्याबाई के पति खाण्डेराव के वीरगति को प्राप्त हो जाने के कारण अहिल्याबाई के कंधों पर सास-ससुर के साथ-साथ राज्य का भार भी आ गया। उन्होंने जनकल्याण के लिए दृढ़तापूर्वक होल्कर राज्य की बागडोर अपने हाथों में सँभाली।

(घ) राघोवा द्वारा आक्रमण किए जाने पर बिना विचलित हुए सुयोग्य और राजनीतिज्ञ अहिल्याबाई ने तुकोजी को युद्ध करने के लिए भेजा और पेशवा राघोवा के लिए एक पत्र लिखा कि वह उनके पूर्वजों के राज्य को हड़पने का सपना न देखे। वह स्वयं नारी सेना लेकर युद्ध करेंगी। आप हारे तो नारी द्वारा पराजित होने का अपयश मिलेगा। यदि उसने विजय भी प्राप्त की तो एक विधवा के राज्य को हड़पने की कालिख लगेगी। पेशवा राघोवा पर इस बात का इतना प्रभाव पड़ा कि वह बिना युद्ध किये लौट गया। इस प्रकार अपनी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता से राज्य को भयमुक्त किया।

(ङ) सौभाग सिंह रामपुरा का सरदार था जिसने महारानी से विद्रोह कर लिया और उदयपुर के राणा की सहायतार्थ सेना भेजी। मन्दसौर के युद्ध क्षेत्र में भयानक युद्ध हुआ। तिरेसठ वर्षीय अहिल्याबाई ने युद्ध का संचालन किया। विरोधी सेना के छक्के छुड़ा दिये और सौभाग सिंह को पकड़ लिया गया।

(च) अहिल्याबाई ने भीलों द्वारा लूटपाट की समस्या को सुलझाने के लिए भीलों के सरदार को ही यात्रियों की सुरक्षा का दायित्व सौंप दिया। साथ ही, यह नियम भी बना दिया कि जिस इलाके में यात्रियों से लूटपाट होगी, वहाँ के भील को उसकी भरपाई करनी होगी। इस तरह विवेकपूर्ण ढंग से इस समस्या से मुक्ति मिली।

(छ) महारानी अहिल्याबाई के शासनकाल में सम्पूर्ण प्रजा सुखी और सम्पन्न थी। उन्होंने उद्योग-धन्धों को भी बढ़ावा दिया। उन्होंने विद्वानों, लेखकों, साहित्यकारों, ज्योतिषियों तथा कलाकारों को प्रोत्साहित किया। उन्हें राज्य में बसाया और उन्हें पुरस्कृत भी किया। पूरे भारत में मन्दिर बनवाये। जरूरतमन्दों को कभी निराश नहीं होने दिया। इस तरह अहिल्याबाई का जीवन जनहित की मिसाल है।

2. **(क)** निर्भय।
(ख) कुशलता से।
(ग) वास्तु।

भाषा अध्ययन

1. प्र, स, आ, सु, आ, अप, वि, वि, वि।

2. (क) छक्के छूट जाते।
(ख) मन मोह लिया।
(ग) मुँह पर कालिख लग जाती।
(घ) भूरि-भूरि प्रशंसा करते।
(ङ) घुटने नहीं टेके।
(च) दाँतों तले अँगुली दबा लेते।

3. **स्त्रीलिंग**— शीलवती, बुद्धिमती, सुता, घोड़ी, नानी, जेठानी, सेठानी, ठकुराइन।

योग्यता विस्तार

3. अहिल्याबाई के अलावा भारत के लिए महान कार्य करने वाली महिलाएँ— सावित्रीबाई फुले, इन्दिरा गांधी, महारानी लक्ष्मीबाई, रानी चेन्नमाबाई, रानी दुर्गावती आदि हैं जिन्होंने देश के लिए महान कार्य किए।

4. **अहल्या**— वह धरती जिसे जोता न जा सके।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (ब), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. खाण्डेराव। **2.** दो।
3. खाण्डेराव। **4.** क्षीणकाय।
5. यशवंतराव फणसे।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (ग), **3.** (ख), **4.** (क), **5.** (ङ)।

19 ज्ञानदा की डायरी

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** ज्ञानदा का चयन राज्य स्तरीय शालेय हॉकी प्रतियोगिता के लिए हुआ था।

(ख) ढोलक और नगड़िया की थाप पर हाथ में पकड़े डण्डों को लय के साथ आपस में टकराते हुए मौनिया नर्तक अपने कदम बिना ताल चूके थिरका रहे थे।

(ग) ज्ञानदा हाफ बैक की जगह पर खेल रही थी। विपक्षी सेण्टर फारवर्ड खिलाड़ी गेंद लेकर उनके गोल की तरफ बढ़ी तो उसने (ज्ञानदा ने) उसे रोकने के लिए गलत तरीके से 'हॉकी स्टिक' अड़ा दी जिससे वह गिर पड़ी, उसका घुटना छिल गया था। ज्ञानदा को इस बात का दु:ख था।

(घ) खेलों से हम अनुशासन, धैर्य, सहिष्णुता, उदारता और हार-जीत को समान रूप से लेने का गुण सीखते हैं।

(ङ) सूझबूझ और तत्काल निर्णय लेने के गुण के लिए कोच ने ज्ञानदा की तारीफ की।

2. (क) सर्वोपरि।
(ख) हॉकी का गढ़।
(ग) औबेदुल्ला स्वर्णकप।
(घ) ग्यारह।
(ङ) पेनाल्टी कॉर्नर।

3. (1) (ब) मेजर ध्यानचन्द।
(2) (स) मौनिया नृत्य।
(3) (द) भोपाल।
(4) (अ) हाफ बैक।
(5) (अ) 29 अगस्त।

4.

1. क्रिकेट	2. कैरम
3. फुटबाल	4. टेबिल टेनिस
5. भारोत्तोलन	6. कबड्डी
7. गोल्फ	8. खो-खो
9. कुश्ती	10. निशानेबाजी
11. फुटबाल	12. पोलो

भाषा अध्ययन

1.
- प्रसिद्धि प्राप्त करना
- सफलता दिखाना
- सबको मोहित करना
- कड़ी मेहनत करना
- बराबरी का मुकाबला
- पूरी शक्ति लगा देना।

इन मुहावरों के प्रयोग वाले वाक्य—

(क) भोपाल के कई खिलाड़ियों ने इस खेल में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाया है।

(ख) ग्वालियर के शिवाजी पवार, शंकर-लक्ष्मण और क्रिस्टी ने भी हॉकी के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने नाम के झण्डे गाड़े हैं।

(ग) यहाँ के लोकनृत्य 'मौनिया' ने तो जैसे समाँ बाँध दिया।

(घ) विपक्षी दल के खिलाड़ियों ने खूब पसीना

बहाया, पर हमारी गोलकीपर रोजी ने अच्छा बचाव किया।

(ङ) सेमीफाइनल मैच में काँटे की टक्कर रही और अतिरिक्त समय देने के बाद भी मुकाबला एक-एक गोल की बराबरी पर छूटा।

(च) कल हमें जीतने के लिए सारी ताकत झोंकनी पड़ी।

2. **प्रतीक्षा**—किसी को प्रतीक्षा कराना मुझे कष्टदायी लगता है।

संभागीय—मेरे विद्यालय में प्रतिवर्ष संभागीय खेलों का आयोजन किया जाता है।

चयन—बड़ी मुश्किल से क्रिकेट टीम का चयन किया गया।

गौरव—भारतीय टीम द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त करना गौरव की बात है।

चहल-पहल—स्टेशन पर बड़ी चहल-पहल है।

स्वर्णपदक—अभिनव विन्द्रा ने ओलम्पिक प्रतियोगिता में स्वर्णपदक प्राप्त किया।

जन्मदिवस—2 अक्टूबर को गांधीजी का जन्म-दिवस मनाया जाता है।

कौशल—ध्यानचन्द ने बड़े कौशल से हॉकी प्रतियोगिता में जीत हासिल की।

आक्रामक—ज्ञानदा ने आक्रामक रुख अपनाते हुए एक गोल किया।

3. पत्र-पत्ता, चिट्ठी।
पृष्ठ-पीठ, पन्ना।
लक्ष्य-उद्देश्य, निशाना।
जीवन-जिन्दगी, जल।

प्रयोग—

- पेड़ के सारे पत्ते झड़ गए हैं।
  आपका पत्र मुझे पहली बार मिला है।
- तखती के पृष्ठ पर कील ठोक दी गई।
  अपनी पुस्तक का अगला पृष्ठ खोलिए।
- कभी भी लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए।
  अर्जुन ने पक्षी की आँख पर लक्ष्य साधा।
- मानव जीवन बड़ा अनमोल है।
  चन्द्रमा में जीवन नहीं है।

4.

हिन्दी	अंग्रेजी	उर्दू
सम्भागीय	सीनियर	मदद
वर्ग	टीम	मुताबिक
स्पर्धा	ओलंपिक	जादूगर
राष्ट्रीय	टूर्नामेन्ट	खता
दल	जूनियर	तरीका
शपथ	रेलवे स्टेशन	शहीद
	मैनेजर	खूबसूरत
	ट्रेन	शबनम
	कैप्टन	दर्द
	स्टेडियम	मुकाबला
	मार्चपास्ट	

5. • (i) भवसागर, (ii) सुखसागर।
• (i) नियमानुसार, (ii) कथनानुसार।
प्रयोग—
• (i) ईश्वर का नाम भवसागर पार करने का आधार है।
(ii) कबीर ने अमर होकर सुखसागर प्राप्त किया।
• (i) हमें नियमानुसार सारे काम करने चाहिए।
(ii) गुरुदेव के कथनानुसार निर्मल मन में ही ईश्वर वास करते हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (अ), **4.** (द), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. भोपाल। **2.** स्टेशन।
3. मुख्य अतिथि। **4.** रीता।
5. पेनाल्टी।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य, **6.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

20 महान् वैज्ञानिक : डॉक्टर चन्द्रशेखर वेंकट रमण

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** चन्द्रशेखर वेंकटरमण का जन्म दक्षिण भारत में तिरुचिरापल्ली नगर में 7 नवम्बर सन् 1888 ई. में हुआ था।

(ख) उच्च शिक्षा समाप्त करने के बाद रमण

लेखा विभाग की प्रतियोगी परीक्षा में बैठे। परीक्षा में सफलता हेतु उन्होंने विज्ञान का विद्यार्थी होते हुए भी इतिहास, राजनीतिशास्त्र, संस्कृत आदि नए विषयों का अध्ययन किया और इस परीक्षा में भी उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी नियुक्ति भारत सरकार के सहायक महालेखापाल के पद पर कलकत्ता में हो गई।

(ग) 'लेनिन शान्ति पुरस्कार' प्राप्त करते समय डॉ. रमण ने कहा था कि मैंने अपने ज्ञान का उपयोग सैनिक कार्यों के लिए कभी नहीं किया। मैंने हमेशा यही कोशिश की है कि मेरी खोजों का इस्तेमाल रचनात्मक कार्यों में हो और इससे मानव-जाति का कल्याण हो।

(घ) 28 फरवरी को 'राष्ट्रीय विज्ञान-दिवस' के रूप में मनाया जाता है क्योंकि 'रमण-प्रभाव की खोज 28 फरवरी, सन् 1928 ई. में हुई थी।

(ङ) डॉ. रमण की यह अभिलाषा थी कि हमारा देश वैज्ञानिक खोजों के मामले में अपने पैरों पर खड़ा हो ताकि हमें विदेशों का मुँह न ताकना पड़े।

2. (क) (2) सन् 1930 में।
(ख) (3) भारत रत्न।
(ग) (4) कनाड़ा।
(घ) (1) 28 फरवरी, 1928 को।
(ङ) (2) 21 नवम्बर, 1970 ई. को।

भाषा अध्ययन

1.
- शिक्षा
- आविष्कार
- अनुसंधान
- आशुतोष
- पुरस्कार।

2. छात्र अपने घर के सदस्यों से पूछकर इस तालिका को स्वयं तैयार करें।

3.

शब्द	**उपसर्ग से बने शब्द**	**प्रत्यय से बने शब्द**
असाधारण	असाधारण	....
लकड़हारा	....	लकड़हारा
सफलता	....	सफलता
अनुकृति	अनुकृति	....
वैज्ञानिक	....	वैज्ञानिक
अभिमान	अभिमान	....
मिठाईवाला	....	मिठाईवाला
भारतीय	....	भारतीय

4. 1. रमण पहली बार विदेश गए।
2. रमण प्रतिभाशाली थे।
3. रमण नोबल पुरस्कार विजेता थे।
4. रमण खोज में जुट गए।
5. रमण भारत रत्न थे।

योग्यता विस्तार

2. वैज्ञानिक बनने के लिए दसवीं के बाद फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, मैथ्स जैसे विषयों का चयन करना होता है। इसके बाद इन्हीं विषयों के साथ ग्रेजुएशन और पोस्टग्रेजुएशन जैसे— एमएससी, एमफिल, पीएचडी, इंजीनियरिंग आदि करना होता है। यदि आप इन परीक्षाओं में सफल होते हैं तो आगे वैज्ञानिक पद के लिए आवेदन कर सकते हैं।

3. कृषि में होने वाले कार्यों में फसलों, फलों, सब्जियों, फूलों आदि का उत्पादन किया जाता है। विभिन्न फसलें अलग-अलग प्रदेशों में उगाई जाती हैं। फसलों के श्रेष्ठ उत्पादन के लिए वातावरण, मौसम, जलवायु, भूमि का प्रकार इत्यादि महत्वपूर्ण कारक हैं।
पहले किसान बैलों का उपयोग करता था लेकिन अब ट्रैक्टर और मशीनों से कटाई-बुवाई की जाती है। पहले खेती की उर्वरता बढ़ाने के लिए, गोबर, सनई, ढैंचे आदि का उपयोग किया जाता था, अब रासायनिक खाद का सेवन किया जाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (ब), **4.** (ब), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. तिरुचिरापल्ली। **2.** 1911
3. 1921 **4.** नीले रंग।
5. सर।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (ग), **3.** (ख), **4.** (क)।

21 माँ ! कह एक कहानी

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** पुत्र अपनी माँ से किसी राजा या रानी की कहानी सुनाने की हठ कर रहा है।
(ख) बड़े सबेरे उपवन में सिद्धार्थ भ्रमण कर रहे थे।
(ग) शिकारी ने हंस को बाण मारा था जिसके प्रहार से उसका पंख आहत हो गया और वह घायल होकर उपवन में सहसा गिर पड़ा।
(घ) सिद्धार्थ घायल हंस पर अपना अधिकार बता रहे थे और आखेटक कहता कि इस हंस पर मेरा अधिकार है क्योंकि मैंने इसे मारा है। इस प्रकार, सिद्धार्थ और आखेटक के बीच विवाद हुआ।
(ङ) माँ ने राहुल से रक्षक और आखेटक के मध्य घायल हुए हंस पर अधिकार किसका हो सकता है, इस विवाद का निर्णय करने को कहा।
(च) दया, सत्य और दयावान की विजय होती है।

2. **(क)** वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे
झलमलकर हिम-बिन्दु झिले थे।
हलके झोंके हिले-मिले थे।
लहराता था पानी।
(ख) कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य न उसे उबारे,
रक्षक को भक्षक पर वारे,
न्याय दया का दानी।

3. **(क)** आखेटक के तेज बाण के प्रहार से हंस का एक पंख कट गया।
(ख) उस उद्यान में सुगन्धित हवा अपने मनमाने ढंग से बह रही थी।
(ग) आखेटक अचूक निशाना लगाने से मिली सफलता पर घमण्ड कर रहा था।
(घ) राजा ने दयायुक्त न्याय प्रदान किया।

4. (क) राहुल ने अपनी माँ यशोधरा से।
(ख) यशोधरा ने राहुल से।
(ग) राहुल ने यशोधरा से।
(घ) यशोधरा ने राहुल से।

भाषा अध्ययन

1.

दान	— दानी	ठान	— ठानी
डाल	— डाली	पान	— पानी
ज्ञान	— ज्ञानी	भार	— भारी
ध्यान	— ध्यानी	ताल	— ताली

2.

शब्द		**विलोम शब्द**
राजा	—	रानी
न्याय	—	अन्याय
मान	—	अपमान
जन्म	—	मरण
कोमल	—	कठोर।

3.

शब्द		**समानार्थी शब्द**
उपवन	—	उद्यान
पानी	—	जल
खग	—	पक्षी
शर	—	बाण।

4.

शब्द		**तत्सम शब्द**
वानी	—	वाणी
सूरज	—	सूर्य
घी	—	घृत
कान	—	कर्ण
हाथ	—	हस्त
जीभ	—	जिह्वा

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (ब), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. उपवन। **2.** झलमलकर।
3. हंस। **4.** करुणा।
5. चौंक।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

22 महाराजा श्री अग्रसेन

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** महाराजा अग्रसेन का जन्म हरियाणा राज्य के हिसार जिले के प्रताप नगर में आज से 5125 वर्ष पूर्व आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था।
(ख) अग्रवाल समाज के प्रवर्तक महाराजा

श्री अग्रसेन जी थे। इस समाज के 18 गोत्र प्रचलित हैं।

(ग) महाराजा अग्रसेन ने एक परिपाटी बनाई थी कि यदि कोई व्यक्ति अग्रोहा राज्य में आकर बसता है तो प्रत्येक परिवार उसे एक ईंट और एक रुपया देगा।

(घ) महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य में सुव्यवस्था बनाए रखने हेतु 18 गणराज्य बनाए। प्रत्येक गणराज्य से एक-एक निर्वाचित प्रतिनिधि होता था। ये प्रतिनिधि शासन परिषद के सदस्य होते थे। इन्हीं के परामर्श से ही राज्य का शासन संचालित होता था।

(ङ) महाराजा श्री अग्रसेन के समय यज्ञों में पशुबलि की कुप्रथा प्रचलित थी। वे हिंसा को दुष्कर्म और घोर पाप मानते थे। वे कहते थे कि यदि हम किसी को जीवनदान नहीं दे सकते तो हमें किसी के प्राण लेने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने जीवदया के प्रति लोगों में आस्था जगाई और इस प्रकार उन्होंने पशुबलि प्रथा पर रोक लगा दी।

भाषा अध्ययन

1. देख-समझकर, अपना-अपना, अपनी-अपनी, सुख-शांतिपूर्वक, ऊँच-नीच, जाति-पाँति, एक-एक, बड़े-बड़े, जन-जन, सोने-चाँदी इत्यादि।

2. **पाठ पढ़ाना**—महाराजा अग्रसेन ने अपनी मानवता और दयाभावना से लोगों को नैतिकता का अच्छा पाठ पढ़ाया।

आमादा रहना—सिकन्दर की सेना सदैव लड़ने पर आमादा रहती थी।

नींव रखना—मेरठ क्रान्ति ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की नींव रखी।

पेट पालना—महँगाई के इस दौर में गरीब के लिए पेट पालना मुश्किल है।

लकीर के फकीर—आज भी रूढ़िवादी लोग लकीर के फकीर बने हुए हैं।

कूपमण्डूक—जो लोग उन्नति के लिए संघर्ष नहीं करते उनकी स्थिति कूपमण्डूक जैसी ही है।

3. अव्यवस्थित, आदर्श, निर्वाचित, लक्ष्मी, अनुनय, वैश्य, दुष्कर्म, सहानुभूति।

योग्यता विस्तार

1. शूरवीरता, जीवदया, लोककल्याण की भावना, आदर्श व्यवहार आदि गुण महामानव कहलाने में सहायक हैं।

2. महाराजा अग्रसेन के जीवन से शिक्षा मिलती है कि हमें जाति-पाँति, ऊँच-नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। लोककल्याण की भावना से कार्य करना चाहिए। कभी किसी को सताने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. लक्ष्मी। **2.** अवतारों।
3. समाजवाद। **4.** 18
5. अग्रोहा। **6.** बलि।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (ग), **3.** (ख), **4.** (क)।

23 कर्तव्य पालन

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. (क) युद्ध के मैदान में जब अर्जुन युद्ध करने से पीछे हट रहे थे तब श्रीकृष्ण ने उन्हें उपदेश दिया।

(ख) जब अर्जुन कुरुक्षेत्र में युद्ध के मैदान में दोनों सेनाओं की ओर दृष्टि डालते हैं और वहाँ अपने ताऊ, दादा, मामा, भाई, पुत्र, मित्र, गुरु तथा सुहृदयों को देखते हैं तो वे अत्यन्त करुणा से भर उठते हैं।

(ग) युद्ध के मैदान में अपने स्वजनों को सामने देखकर अर्जुन का मुख सूख गया। उसके पूरे शरीर में कम्पन्न और रोमांच होने लगा। उसके हाथ से गाण्डीव गिर गया। उसके मन में भ्रम उत्पन्न हो गया। उसमें युद्ध के मैदान में खड़े रहने तक की सामर्थ्य नहीं रही।

(घ) अर्जुन अपने प्रियजनों को खोना नहीं चाहता था और न ही पृथ्वी के लिए युद्ध जैसा पाप करना चाहता था। इसलिए वह युद्ध नहीं करना चाहता था।

(ङ) हम सुख और दु:ख दोनों स्थितियों में एक समान रहकर सुख-दु:ख के बंधन से मुक्त हो सकते हैं।

(च) पाप-पुण्य के भ्रम से निकलने के लिए गुरुजी ने उपाय बताते हुए कहा कि अतीत में किये गये पापों का अँधेरा पुण्य के एक ही कार्य से दूर हो जाता है।

2. **(क)** श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! तू केवल कर्म करने का अधिकारी है, उसका फल प्राप्त करने का तू अधिकारी नहीं है। अत: मोह-माया को त्यागकर तू केवल अपना कर्तव्य कर, फल की इच्छा त्याग दे।

(ख) जब हमें सुख मिलता है तो हम इस चिन्ता में पड़ जाते हैं कि कहीं यह सुख हमसे छिन न जाये और जब हम दु:ख में नहीं भी होते हैं तब भी इस चिन्ता में रहते हैं कि कहीं दु:ख न आ जाये। इसलिए सुख और दु:ख दोनों ही हमें बंधन में डालते हैं।

3. (क) स्वर्ग।
(ख) श्रेष्ठ।
(ग) प्रकाश।

भाषा अध्ययन

1. कुरुक्षेत्र
पश्चात
निश्चित
सामर्थ्य

2.

शब्द		**विलोम शब्द**
अंधकार	—	प्रकाश
कर्म	—	अकर्म
अनिश्चय	—	निश्चय
लाभ	—	हानि
बंधन	—	मुक्त
ज्ञान	—	अज्ञान
पुण्य	—	पाप

3. बात-चीत, माता-पिता, हाँ-हाँ, कृष्ण-अर्जुन, मेज-कुर्सी, धर्म-अधर्म, निश्चय-अनिश्चय, सुख-दु:ख, कर्म-अकर्म, आमने-सामने, बंधु-बांधवों, पाप-पुण्य, जय-पराजय, लाभ-हानि, मोह-माया, क्या-क्या, अपने-अपने।

4.

पितृभक्त	—	पिता का भक्त
सूत्राधार	—	सूत्र का धारक
सत्यवादी	—	सत्य का वादक
युद्धारंभ	—	युद्ध का आरम्भ
भगवद्गीता	—	भगवान की गीता।

5. **तत्सम शब्द**— वृक्ष, इच्छा, कर्तव्य, अभिनय।
तद्भव शब्द— नमस्ते, सच, माता, मुँह।

6. (i) तेरा यह आचरण किसी श्रेष्ठ पुरुष का आचरण नहीं है और न ही तेरी कीर्ति को बढ़ाने वाला है।
(ii) लेकिन केशव! अपने ही बधु-बांधवों से युद्ध कर न तो मैं विजय चाहता हूँ, न राज्य और न ही सुख।
(iii) इसलिए इस विषय में तू व्यर्थ ही शोक कर रहा है।
(iv) मैं रणभूमि में किस प्रकार भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य के विरुद्ध लड़ूँगा? ये दोनों ही मेरे पूजनीय हैं।
(v) अपने ही गुरुजनों और बंधु-बांधवों का वध कर मेरा किसी भी प्रकार कल्याण नहीं होगा।
(vi) युद्ध में अपने ही स्वजनों का वध कर मुझे क्या फल मिलेगा?
(vii) हाँ बच्चो! सुख-दुख एवं हानि-लाभ को हमें एक समान इसलिए समझना चाहिए क्योंकि सुख और दु:ख दोनों ही हमें बंधन में डालते हैं।
(viii) अतीत में किए गए पापों का अँधेरा पुण्य के एक ही कार्य से दूर हो जाता है।
(ix) गुरुजी! जब फल की इच्छा ही नहीं होगी तो हम कर्म क्यों करेंगे?
(x) तब तो कोई भी व्यक्ति न तो वृक्ष लगाता है और न ही हमें उसके फल खाने को मिलते।
(xi) आज आपने हमें बहुत ही अच्छी बातें बताईं।

7. दयनीय, दर्शनीय, कल्पनीय, माननीय, उल्लेखनीय।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. कुरुक्षेत्र। **2.** अर्जुन।
3. पाप-पुण्य। **4.** मोह।
5. अतीत।

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

24 बुन्देलखण्ड केसरी-महाराजा छत्रसाल

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(क)** महाराजा छत्रसाल 'बुन्देलखण्ड केसरी' के नाम से विख्यात हैं।

(ख) महाराजा छत्रसाल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, सत्रह सौ छह (4 मई सन् 1649 ई.) को टीकमगढ़ जिले के मोर पहाड़ी नामक स्थान पर हुआ था।

(ग) वीर चम्पतराय आजीवन बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के धर्मान्ध शासन और बहुसंख्यक प्रजा के प्रति पक्षपातपूर्ण नीतियों का विरोध करते रहे।

(घ) बालक छत्रसाल में साहस, शौर्य, आत्मविश्वास, वीरता और निर्भयता के गुण विद्यमान थे।

(ङ) देवगढ़ युद्ध के दौरान छत्रसाल बुरी तरह घायल हो गए। उनका प्यारा घोड़ा रात-भर उनकी रक्षा करता रहा। दूसरे दिन छत्रसाल के भाई अंगद राय की पहचान करने के बाद ही घोड़े ने उन्हें छत्रसाल के शिविर में स्वस्थ होने पर छत्रसाल द्वारा अपने घोड़े को 'भले भाई' की उपाधि दी गई।

(च) छत्रपति शिवाजी ने छत्रसाल को स्वाधीनता का मंत्र और अपनी तलवार देकर बुन्देलखण्ड को स्वतंत्र कराने हेतु प्रेरित किया।

(छ) वीर छत्रसाल ने साधनों के अभाव और संगी-साथी की कमी को पूरा करने के लिए अपनी माता के आभूषणों को बेचकर पाँच घोड़ों और पच्चीस सैनिकों की एक छोटी-सी सेना तैयार की। उनकी इस सेना में सभी वर्गों के लोग थे।

(ज) स्वामी प्राणनाथ ने महाराजा छत्रसाल को आशीर्वाद देते हुए कहा-

छत्ता तेरे राज में, धक-धक धरती होय।
जित-जित घोड़ा मुख करे, तित-तित फत्ते होय।।

(झ) महाराजा छत्रसाल ने प्रजा की सुख-शान्ति और समृद्धि के लिए अनेक प्रयत्न किए। उन्होंने न्याय व्यवस्था को सरल बनाने के लिए पंचायती व्यवस्था की। वे अपराधियों को कठोर दण्ड देते थे, जिससे उनके राज्य में अपराध होने कम हो गए। उनके राज्य में बच्चे, बूढ़े और महिलाएँ निर्भीकतापूर्वक कहीं भी आ-जा सकते थे।

2. (क) धुबेला
(ख) वीर प्रसूता
(ग) महाराजा छत्रसाल
(घ) स्वाधीनता
(ङ) छक्के छुड़ा

3. (क) (अ) भूषण का।
(ख) (ब) धुबेला में।
(ग) (अ) मोर पहाड़ी पर।

भाषा अध्ययन

1. **स्वाधीन**—सबसे अच्छा जीवन स्वाधीन जीवन होता है।

सम्मान—अकबर अपने दरबारी कवियों को पूरा सम्मान देता था।

समृद्धि—छत्रसाल ने प्रजा की सुख और समृद्धि का पूरा ख्याल रखा।

शौर्य—बुन्देलखण्ड में आज भी रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य और वीरता के गीत गाए जाते हैं।

ओज—प्रात:काल प्राणायाम से ऊर्जा और ओज का संचार होता है।

निर्भय—सच्ची स्वतन्त्रता वही है जब सभी लोग निर्भय होकर रह सकें।

चुनौती—चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों को पकड़ने की चुनौती दे दी थी।

उत्तरदायी—देशद्रोही ही देश की विफलता के उत्तरदायी हैं।

2. (i) प्रबुद्ध
(ii) प्रहार
(iii) प्रगति

3.

शब्द	—	मूलशब्द		प्रत्यय
वीरता	—	वीर	+	ता
अछूती	—	अछूत	+	ई
जागीरदार	—	जागीर	+	दार
मार्मिक	—	मर्म	+	इक
उत्तरदायी	—	उत्तर	+	दाई

4. • महाराजा छत्रसाल का समाधिस्थल उनके शौर्य का स्मरण दिलाएगा।
• वे भारत के वीर सपूत हैं।
• शत्रु सैनिक जान बचाकर भाग गए।

5. **पूर्ण शब्द** — **सन्धि विच्छेद**

पूर्ण शब्द		सन्धि विच्छेद
अत्याचार	—	अति + आचार
स्वाधीन	—	स्व + आधीन
इच्छानुसार	—	इच्छा + अनुसार
आत्मोत्सर्ग	—	आत्म + उत्सर्ग
सहायतार्थ।	—	सहायता + अर्थ

6. **दो-दो हाथ करना** — मुकाबला करना।
वाक्य प्रयोग—शिवाजी ने मुगलों को दो-दो हाथ करने के लिए युद्धभूमि में ललकारा।
छक्के छुड़ाना— निरुत्साह करना।
वाक्य प्रयोग—युद्ध के मैदान में भारतीय सैनिकों ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए।
नाकों चने चबाना — तंग करना।
वाक्य प्रयोग—सुभाषचन्द्र बोस ने अंग्रेजों को नाकों चने चबाने के लिए विवश कर दिया था।
लोहा लेना — युद्ध करना।
वाक्य प्रयोग—पृथ्वीराज चौहान ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए मुहम्मद गोरी से लोहा ले लिया।

7.

शब्द	अर्थ
प्रसूता	— जन्म देने वाली
धरोहर	— सम्पत्ति
अस्त्र	— फेंककर चलाने वाला हथियार
शस्त्र	— हाथ से पकड़कर चलाने वाला हथियार
क्षति	— हानि
ललकार	— चुनौती
आत्मोत्सर्ग	— स्वार्थ, त्याग, बलिदान
पारावार	— सीमा
स्मारक	— याद दिलाने वाला
सिपहसालार	— सेनापति
आधिपत्य	— अधिकार
प्रजावत्सल	— प्रजापालक
फत्तै (फतह)	— विजय
राजी	— सहमत
रैयत	— प्रजा
ताजी	— सजग, चुस्त-दुरुस्त
बार	— बाल
बाँकौं	— टेढ़ा

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. वीर चम्पत राय **2.** वीर छत्रसाल
3. देवगढ़ **4.** मातृभूमि
5. सन् 1731

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

विविध प्रश्नावली-3

1. **(क)** छोटा जादूगर के पिता जेल में थे। वे देश की आजादी की खातिर जेल में थे।

(ख) 'नरबदी' कहानी लोक मान्यताओं पर आधारित है, जो सामान्य जन-जीवन से जुड़ी होने के कारण अधिक प्रभावित करती है। भाषा सरल, सरस और भाव को समझने में सहायक है। प्रकृति का चित्रण अपने आप ही होता गया है। यह भारतीय संस्कृति के महान अंग आदिवासियों के जीवन की दिव्य झाँकी को दर्शाती है। पात्र केवल दो ही हैं। वाक्य विन्यास छोटा है। यह कहानी घटना प्रधान होने से पाठकों को प्रभावित करती है।

(ग) राघोवा द्वारा आक्रमण किए जाने पर बिना विचलित हुए सुयोग्य और राजनीतिज्ञ अहिल्याबाई ने राघोबा को पत्र लिखकर बताया कि वह नारी सेना लेकर उनसे युद्ध करेंगी। आपकी (राघोवा की) हार होती है, तो उन्हें एक नारी से पराजित होने का अपयश मिलेगा। यदि विजय प्राप्त की तो एक पुत्र के वियोग में व्यथित विधवा के राज्य को अकारण हड़प लेने की कालिख मुख पर लगेगी। इस प्रकार अहिल्याबाई ने अपनी सूझ-बूझ और राजनैतिक चतुराई से राघोवा का षड्यन्त्र विफल किया।

(घ) कवि देश को तन, मन, धन इसलिए समर्पित करना चाहता है, क्योंकि वह अपने ऊपर मातृभूमि के भारी ऋण को इतनी सारी चीजों के समर्पित कर देने पर भी उऋण नहीं हो सकता।

(ङ) ज्ञानदा टीकमगढ़ राज्यस्तरीय शालेय हॉकी प्रतियोगिता में खेलने जा रही थी।

(च) खिलाड़ी-भावना से आशय यह है कि खेल में अनुशासन, धैर्य, सहिष्णुता, उदारता बनाए रखें और हार-जीत को समान भाव से लें। खेल तो मिल-जुलकर खेला जाता है।

(छ) ब्रिटिश सरकार ने रमण को 'सर' की उपाधि से 'रमण प्रभाव' की खोज के लिए सन् 1929 में विभूषित किया।

2. (क) निकम्मा
(ख) ऋण
(ग) प्राण
(घ) वीरगति
(ङ) उपलब्धि
(च) आततायी
(छ) 1921 (उन्नीस सौ इक्कीस)
(ज) रक्षक।

3. **(क)** मातृभूमि की सेवा में मेरा मन, तन तथा यह सारा जीवन समर्पित है।

(ख) मैं अर्थात सफलता उनके साथ ही सदैव खड़ी रहती है जो परिश्रम के लिए तत्पर हैं।

(ग) यदि कोई व्यक्ति किसी निर्दोष को मार रहा हो, तो क्या अन्य व्यक्ति को उसकी रक्षा नहीं करनी चाहिए अर्थात् अवश्य करनी चाहिए।

(घ) खेल में हर खिलाड़ी का मिला-जुला सहयोग होता है। अपनी टीम के हित में ही प्रत्येक खिलाड़ी को खेल खेलना होता है। व्यक्तिगत लाभ को त्यागकर टीम के बारे में सोचना होता है।

4. **(क) नाक में दम करना**—छुट्टी होने के कारण बच्चों ने नाक में दम कर रखा है।

नाकों चने चबाना—अच्छे विद्यालय में प्रवेश के लिए केशव को नाकों चने चबाने पड़े।

आँख दिखाना—अपने कार्य पर समय से न पहुँचने पर अधिकारी लोग आँखें दिखाते हैं।

पीठ दिखाना—भारतीय सैनिक युद्ध क्षेत्र में पीठ कभी नहीं दिखाते।

गाल फुलाना—यदि पापा बाजार से कुछ खाने को नहीं लाते तो बच्चे गाल फुलाए मिलते हैं।

(ख) जीविका—अनेक ग्रामीण युवक जीविका के लिए शहर जा बसे हैं।

प्रतिध्वनि—मन्दिर के घण्टों की ध्वनि पूरे मन्दिर परिसर में प्रतिध्वनित होती है।

समर्पण—कुख्यात आतंकवादी ने पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

दूरदर्शिता—खिलाड़ियों में दूरदर्शिता का गुण होना अनिवार्य है।

न्यायोचित— अपराधी को जेल भेजना न्यायोचित था।

5. (क) द्विगु।
(ख) वाला।
(ग) अभि।
(घ) हानि।

6. (क) स्तब्ध, प्रगल्भता, आततायियों, चुनौती, स्पर्धा, प्रतिबिम्ब, वैज्ञानिक।
(ख) अंक—गोद, संकेत।
कर— हाथ, किरण।
उत्तर— जबाव, दिशा।
पानी— जल, इज्जत।

7. **'ला' उपसर्ग वाले शब्द**— लाजवाब, लावारिश, लापरवाह, लापता।

'गैर' उपसर्ग वाले शब्द— गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरवाजिब।

'सु' उपसर्ग वाले शब्द— सुकर्म, सुदूर, सुयश, सुवास।

'परा' उपसर्ग वाले शब्द— पराजय, पराक्रम, पराभूत, पराभव।

8. **(क) पता**— (1) मोहन के घर का हमारे पास पता नहीं है। (2) मुझे पता नहीं क्यों हिन्दी पढ़ने में आनंद आता है।

डूबना— (1) गंगा नदी में नहाते समय दो लोग डूब गए। (2) प्राइवेट कम्पनियों में लोगों के पैसे डूब गए।

बढ़ना— (1) भारत में जनसंख्या बढ़ना लगातार जारी है। (2) अमरूद के पौधे दिनोंदिन बढ़ रहे हैं।

खराब—(1) पहले दिन ध्यानचन्द का हॉकी में खराब प्रदर्शन रहा। (2) इसका इंजन पूरी तरह खराब हो गया था।

(ख) दिन, दुखद, असफलता, वियोग, निरक्षर।

9. **कमल**— पंकज, अम्बुज, नीरज।
पर्वत— अचल, शैल, गिरि।
सूर्य— सूरज, भानु, दिनकर।

पृथ्वी – धरा, धरती, वसुन्धरा।
हवा– समीर, वायु, पवन।
पानी– नीर, तोय, वारि।

10. हॉकी का गढ़ – भोपाल
अहिल्याबाई – इन्दौर
माँ – राहुल
डॉ. चन्द्रशेखर वेंकट रमण– नोबेल पुरस्कार

11. (क) छोटा जादूगर ने लेखक से।
(ख) यशोधरा ने अपने पुत्र राहुल से।
(ग) राहुल ने अपनी माँ यशोधरा से।
(घ) राघोवा ने महारानी अहिल्याबाई से पत्र के माध्यम से।
(ङ) लेखक ने छोटा जादूगर से।

12. (क) राम (उद्देश्य)
अपनी पुस्तक पढ़ता है। (विधेय)
(ख) मोहन बॉलीबाल खेलने जाता है।
(ग) राधा गाना गायेगी।
(घ) वह कैसा लड़का है?
(ङ) माता-पिता की आज्ञा मानो।
(च) राजू कल दिल्ली गया!
(छ) तुम बहुत खुश थे।

13.

	विशेषण	**विशेष्य**
(क)	सफेद	घोड़ा
(ख)	मीठा	जल
(ग)	सुन्दर	लड़की
(घ)	चार	संतरे
(ङ)	रमणीय	उद्यान

14. दादी की घड़ी – कहानी
मध्यप्रदेश का वैभव – निबंध
राखी का मूल्य – एकांकी
गौरैया – कविता
मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान – वार्तालाप
लोकमाता अहिल्याबाई – जीवनी
अगर नाक न होती – व्यंग्य
ज्ञानदा की डायरी – डायरी

15. (क) अहिल्याबाई के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:
1. अहिल्याबाई ने यात्रियों की सुविधा हेतु धर्मशालाएँ, मन्दिर, कुएँ और बावड़ियों आदि का निर्माण करवाया।
2. उन्होंने प्रजा की सुख, शान्ति और समृद्धि का पूर्ण ख्याल रखा।
3. उन्होंने राजनीति, युद्धकला, घुड़सवारी में कौशल प्राप्त किया।
4. रणकौशल और बुद्धिमत्ता द्वारा दुश्मनों का सामना किया।
5. उन्होंने साहित्यकारों, ज्योतिषियों, कलाकारों, विद्वानों को पुरस्कृत किया।

(ख) दिनांक 9 मार्च, 20.....
मैं प्रात: 5:00 बजे उठ कर मुँह धोकर एक घण्टे व्यायाम करता हूँ, उसके बाद अध्ययन-कार्य में लग जाता हूँ। मैं एक छात्र हूँ। मैं विद्यालय चला जाता हूँ और मन लगाकर पढ़ता हूँ।
मैं प्रात: से सायं तक पढ़ाई से जुड़े कार्यों में लगा रहता हूँ। समय निकालकर खेल खेलता हूँ तथा मनोरंजन भी करता हूँ। योजनाबद्ध कार्य पूरा करने का प्रयास प्रतिदिन ही करता हूँ।
प्रात: से सायं तक किये गये कार्यों का ब्यौरा डायरी के रूप में तैयार करके रात को भोजन करके, अपने शयनकक्ष में चला जाता हूँ। मेरी प्रतिदिन की यही दिनचर्या है।

(ग) त्रिपुरा के एक गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था। उसका एक ही बेटा था। मरने के पहले उसने अपने बेटे को बुलाया और बोला, "बेटे मैं अब कुछ ही देर का मेहमान हूँ। मरने के पहले तुझे एक सलाह देना चाहता हूँ। इसका जीवनभर पालन करना। नहीं करोगे, तो किसी न किसी मुसीबत में फँस जाओगे।"
बूढे आदमी ने कहा, "ध्यान से सुनो बेटा और इस बात को गाँठ बाँध लो। कभी भी कोई गोपनीय बात किसी स्त्री को मत बताना। फिर चाहे वो तुम्हारी पत्नी ही क्यों न हो।"
"ऐसा क्यों पिताजी?" बेटे ने पूछा।
"क्योंकि स्त्री के पेट में कोई बात नहीं पचती। मेरी बात पर अमल करना।" कहकर बूढ़े आदमी ने प्राण त्याग दिये।
कुछ दिनों तक तो बेटे ने पिता की बात मानी। पर समय गुजरने के साथ उसके दिमाग से पिता की सारी बातें उड़ गईं।
अब वह कई बातें अपनी पत्नी को बता दिया करता। उसकी पत्नी बातूनी किस्म की थी। सबसे खूब बातें किया करती थी और बातों-बातों

में कई ऐसी बातें भी कह जाती, जो गोपनीय हों। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा, "सुनती हो, मैं सोच रहा हूँ कि इस झोंपड़ी को तोड़कर एक पक्का मकान बनवा लूँ। इस बार फसल भी अच्छी हुई है और मैंने कुछ पैसे जोड़ लिए हैं।"

सुनकर पत्नी खुश हो गई।

अगले दिन वह आदमी खेत से घर आ रहा था कि रास्ते में उसे पड़ोसी मिल गया। वह बोला, "अच्छा कर रहे हो, जो नया मकान बनवा रहे हो। मैं भी अगले साल नया मकान बनवाऊँगा। उसकी बात सुनकर वह सोचने लगा कि नये मकान की बात इसे कैसे पता चली। उसे अपनी पत्नी पर ही शक हुआ और उस दिन उसे अपने पिता की सलाह याद आई कि कभी औरत को कोई गोपनीय बात मत बताना।

उसने सोचा– "क्यों न अपनी पत्नी की परीक्षा लूँ।"

उसके बाद वह घर न जाकर खेत की ओर चला गया। रास्ते में उसने एक आवारा कुत्ते को मारा और खेत में गड्ढा खोदकर उसे वहाँ गाड़ दिया। घर पहुँचकर वह अपनी पत्नी से बोला, "सुनती हो, एक राज की बात बतानी है तुम्हें। मगर तुम किसी से कहना मत। आज मेरे हाथों एक आदमी का खून हो गया। खेत में गड्ढा खोदकर मैंने उसे वहीं दफना दिया है।"

पत्नी ने पति से कह तो दिया कि वह ये बात अपने तक रखेगी। मगर उससे ऐसा हो न सका। शाम को वह पानी भरने पनघट पर गई, तो वहाँ आई औरतों से गपशप करते हुए उसके मुँह से ये बात निकल गई। उन औरतों में एक औरत का पति पुलिस वाला था। घर जाकर उसने ये बात अपने पति को बताई। उसने जाकर उस आदमी को खून के अपराध में गिरफ्तार कर लिया।

अगले दिन उसकी पेशी हुई। जब जज ने उससे इस खून के बारे में पूछा, तो उसने पिता की सलाह से लेकर अब तक की सारी बातें बताईं और बताया कि वह अपनी पत्नी की परीक्षा ले रहा था इसलिए एक आवारा कुत्ते को मारकर खेत में दफना दिया था।

कोतवाल को भेजकर उस जगह की खुदाई करवाई गई। वहाँ से एक मरा हुआ कुत्ता निकला। उस आदमी को छोड़ दिया गया। वह घर आ गया, लेकिन उस दिन के बाद उसने कभी कोई गोपनीय बात अपनी पत्नी को नहीं बताई।

(घ) मेरा प्रिय खेल या फुटबाल मैच

प्रस्तावना—खेल मनोरंजन के श्रेष्ठ साधन हैं । इनसे मन बहलता है, उत्साह बढ़ता है और शरीर स्वस्थ रहता है ।

खेल का सामान्य परिचय—हमारे देश में अनेक प्रकार के खेल खेले जाते हैं । इनमें से कुछ स्वदेशी हैं जैसे– गुल्ली-डण्डा, कबड्डी, रस्साकशी आदि और कुछ विदेशी जैसे–टेनिस, बैडमिण्टन, क्रिकेट, वॉलीबाल, फुटबाल आदि। मुझे इन खेलों में फुटबाल विशेष पसन्द है। फुटबाल गेंद का खेल है । इसे पैरों से खेला जाता है, इसलिए इसे फुटबाल कहते हैं ।

मैच—फुटबॉल का खेल प्रतियोगिता या मैच के रूप में भी खेला जाता है । इस बार हमें भी अपने विद्यालय में फुटबॉल खेलने का अवसर मिला। हमारा मैच राजकीय माध्यमिक विद्यालय की टीम के साथ होना था । दो दिन पूर्व ही क्रीड़ा-स्थल की साज-सँवार आरम्भ हो गयी थी । निश्चित समय से पूर्व हम लोग मैदान में पहुँच गए । टॉस फेंका गया और खिलाड़ी अपने-अपने स्थान पर जम गये।

मध्यावकाश—हम लोग बड़े उत्साह से खेल रहे थे। हमारी टीम ने एक गोल कर दिया। इतने में ही 15 मिनट का मध्यावकाश हो गया। सभी खिलाड़ियों ने जलपान किया। इस समय अनेक दर्शकों ने हमारे खेल की प्रशंसा की।

परिणाम—मध्यावकाश के बाद खेल फिर आरम्भ हुआ। इस बार मैंने अपने दल को विशेष रूप से सतर्क कर दिया था । दोनों ही टीमें जमकर खेलीं। कड़े संघर्ष के बाद हम एक और गोल करने में सफल हो गए । विरोधी टीम कोई गोल नहीं कर सकी। अन्त में हमारी टीम की विजय हुई।

उपसंहार—इस मैच से मुझे यह अनुभव हुआ कि शिक्षा में खेलों का विशेष महत्व है । खेल से हमारा चहुँमुखी विकास होता है । खेलों से आपसी मेल-मिलाप को भी बल मिलता है।

(ङ) महाराजा अग्रसेन के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि लोककल्याण के लिए हमें सदैव तैयार रहना चाहिए। हमें धार्मिक कुप्रथाओं का विरोध करना चाहिए। हमें जीवों की रक्षा करनी चाहिए।

अभ्यास-प्रश्न पत्र कक्षा-7

1. **(क)** (अ) (3) मेवाड़
(ब) (2) होल्कर
(स) (1) साँची
(द) (3) भूषण
(इ) (4) व्यंग्य

(ख) (अ) चन्दन
(ब) मिसाइल मैन
(स) मक्खन
(द) उन्तीस अगस्त
(इ) रस
(ङ) देवताओं

2. **(अ)** नेहरूजी ने हिस्तुस्तान की इन सब जंजीरों को तोड़ देने के लिए कहा है जिनमें वह जकड़ा है जो आगे बढ़ने से रोकती हैं और देश में रहने वालों में फूट डालती हैं। जो लोगों को दबाए रहती हैं।

(ब) हमें जीवों के प्रति सहानुभूति और दया की भावना व्यक्त करनी चाहिए।

(स) नाक को इज्जत और सम्मान का प्रतीक माना गया है।

(द) नरबदी ने अपने पिता की प्यास के मारे व्याकुल होने के बारे में सोचकर उनकी प्यास बुझाने के लिए झरना बन गई। उसके मन में लोक कल्याण की भावना थी।

(इ) दृढ़ता, स्रोत, दृष्टि।

3. **(अ)** मध्यप्रदेश में भारत के सभी क्षेत्रों के लोग सद्‌भाव के साथ रहते हैं और अपने त्योहारों को उत्साह के साथ मनाते हैं। अतः सांस्कृतिक और ऐतिहासिक टृष्टि से सम्पन्न है। इसलिए इसे लघु भारत कहा गया है।

(ब) खेलों से हम सहिष्णुता, सहयोग, अनुशासन, मिलजुलकर काम करने तथा जीत का श्रेय केवल स्वयं न लेने का गुण सीखते हैं।

(स) जहाँ एक या एक से अधिक वर्णों की एक ही क्रम से अधिक आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण—

चारु चन्द्र की चंचल किरणें,
खेल रही थीं नभ-थल में।

इस पंक्ति में 'च' वर्ण की एक ही क्रम से अधिक, आवृत्ति हो रही है, अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

4. **(अ)** अनुराग, आशय, कठिनाई, भण्डार।

(ब) सुराग, सुहाग, सुवास, सुयश।

(स) (1) हे दयालु हम पर दया करो।
(2) विद्या प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को सुख त्यागना पड़ता है।

(द) जगत् + ईश = व्यंजन संधि,
पुस्तक + आलय = स्वर सन्धि।

(क) अग्नि और रात्रि।

(ख) देश से निकाला = तत्पुरुष समास।
रसोई के लिए घर = तत्पुरुष समास।

(ग) राखियाँ, बहनें, सड़कें, कुत्ते।

(घ) नानी याद आना—मैहर में मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते मुझे नानी याद आ गई।

5. मैकल पर्वत के घने जंगलों में आठ-दस झोंपड़ियों का एक गाँव था। इन्हीं में से एक झोंपड़ी में दुग्गन रहता था। उसकी एक पुत्री थी-नरबदी। उसकी पत्नी नरबदी को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गई थी। नरबदी अब बारह बरस की हो गई थी। दुग्गन अपनी बेटी को हमेशा अपने पास रखना चाहता था। अपनी झोंपड़ी की मरम्मत के लिए वह बाँस लेने के लिए मैकल पर्वत पर गया। उस दिन तेज धूप थी। नरबदी को तेज प्यास लगी। वह पानी की खोज में मैकल के वनों में भटक रहा था। उसने नरबदी को पेड़ों की घनी छाया में बैठा दिया। नरबदी ने वहीं बैठकर बड़े देवताओं से विनती करी कि वे उसके पिता की रक्षा करें। दुग्गन जब लौटकर झुरमुट के पास पहुँचा तो उसे नरबदी कहीं नज़र नहीं आई। उसने व्याकुल होकर नरबदी को पुकारा। तभी उसे झुरमुट के बीच कलकल करते हुए झरने की आवाज सुनाई दी। दुग्गन रोता हुआ अपनी पुत्री नरबदी को पुकार रहा था और नरबदी झरने के रूप में कल-कल कर बहती जा रही थी। नरबदी ने अपने पिता से प्यास बुझाने के लिए कहा और उसे बताया कि वह ही अब झरना बन चुकी है। अब इस जंगल में कोई प्यासा नहीं रहेगा। तब से वह अमरकण्टक से नर्मदा बनकर बह रही है।

6. **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश 'अगर नाक न होती', पाठ से लिया गया है। इसके लेखक गोपालबाबू शर्मा हैं।

प्रसंग—'अगर नाक न होती' पाठ में लेखक ने नाक के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों का व्यंग्यपूर्ण वर्णन किया है।

सरलार्थ—शरीर के अंगों की अपेक्षा नाक अपना महत्व स्थान रखती है। हम चित्त होकर लेट जाते हैं तो नाक दूसरे अंगों-हाथ, पाँव, मुँह, कान, आँख आदि से सबसे ऊँची होती है। आँख के दुखने पर या आँख के फूट जाने पर काले रंग का ऐनक लगाकार काम चलाया जा सकता है और उसे ढका जा सकता है। कनटोपा से कटे-फटे कान को छिपाया जा सकता है, परन्तु दुर्भाग्य से, चोट लगने पर यदि नाक कट जाए तो आदमी का चेहरा बिलकुल सपाट दिखाई पड़ेगा जिस तरह बिना वृक्षों का रेगिस्तान होता है। सम्पूर्ण चेहरा एकदम चौरस दिखाई पड़ेगा, जैसे चक्की का पाट हो।

7. **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' के पाठ 'और भी दूँ' से अवतरित हैं। इनके रचनाकार 'रामावतार त्यागी' हैं।

प्रसंग—कहता है कि सर्वस्व अर्पित करने के बाद भी व्यक्ति अपनी मातृभूमि के ऋण से मुक्त नहीं हो सकता है।

अर्थ—हे मातृभूमि, मुझ पर तेरा ऋण (कर्ज) बहुत है। मैं उस कर्ज के समक्ष बहुत निर्धन हूँ। फिर भी मैं यह निवेदन कर रहा हूँ कि जब भी अपने इस मस्तक को थाल में सजाकर लेकर आऊँ तो मेरी इस भेंट को स्वीकार करने की कृपा करना। भक्ति भरा मेरा गीत भी तुम्हें अर्पित है, मेरे प्राण भी अर्पित हैं। साथ ही मेरे रक्त की (खून की) एक-एक बूँद भी तुम्हारे लिए अर्पित है। अत: हे मेरे देश की धरती! इसके अलावा भी मैं कुछ और समर्पित करना चाहता हूँ।

8. (अ) उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक 'नर्मदा की आत्मकथा' है।

(ब) पौराणिक ग्रंथों में नर्मदा परिक्रमा की महिमा गाई है।

(स) अहिल्याबाई होल्कर ने अपनी राजधानी बनाकर महेश्वर तीर्थ का महत्व बढ़ा दिया है।

9. सेवा में

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय
आदर्श विद्या मन्दिर
इन्दौर

विषय—अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सादर निवेदन है कि प्रार्थी बुखार आ जाने के कारण दिनांक 20-2-20..... से 20-2-20..... तक विद्यालय आने में असमर्थ है। अत: श्रीमान् जी से अनुरोध है कि प्रार्थी को तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

प्रार्थी आपका सदैव आभारी रहेगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
राकेश गर्ग
कक्षा 7 'अ'

10. **प्रदूषण**

प्रस्तावना—प्रकृति और प्राणी का गहरा सम्बन्ध है। मानव अपने विकास की प्रारम्भिक अवस्था में पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर था। प्रकृति और प्राणी, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों के मध्य सन्तुलन रहना अनिवार्य है। यदि दोनों का सन्तुलन बिगड़ता है तो मानवता के अस्तित्व पर खतरा समझ लेना चाहिए। इस सन्तुलन के बिगड़ने को ही 'प्रदूषण' कहा जाता है । पेड़-पौधे कार्बन डाई-ऑक्साइड गैस ग्रहण करते हैं तथा ऑक्सीजन छोड़ते हैं, प्राणियों को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। प्राणियों की ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करने में 'प्रदूषण' बाधा उत्पन्न करता है ।

प्रदूषण से हानियाँ—बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण प्रदूषण फैलता गया और आज यह स्थिति आ गई है जहाँ देखो वहीं प्रदूषण-ही-प्रदूषण दिखायी देता है। कोई क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है जहाँ प्रदूषण न फैला हो। प्रदूषण की अधिकता से आज जीव-जगत् को स्वच्छ वायु, भोजन व जल उपलब्ध नहीं है। इसके कारण अगणित कष्ट एवं बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

प्रदूषण के प्रकार—मुख्य रूप से प्रदूषण के चार प्रकार हैं—(1) स्थल प्रदूषण, (2) वायु प्रदूषण, (3) जल प्रदूषण, (4) ध्वनि प्रदूषण। सड़कों, पार्कों, सार्वजनिक स्थलों पर गन्दगी फैलाने वाले लोग स्थल प्रदूषण को बढ़ावा देते हैं। कारखानों, फैक्ट्रियों तथा वाहनों से निकलने वाला धुआँ तथा रासायनिक गैसें वायुमण्डल को दूषित करती हैं। जहाँ देखो वहीं गन्दगी का साम्राज्य-सा हो गया है।

नगरों–महानगरों के कारखानों एवं फैक्ट्रियों का प्रदूषित पानी नदियों आदि में बहकर जाता है। जिससे जल प्रदूषण फैलता है। सड़कों पर, सार्वजनिक स्थलों पर, पूजाघरों पर लाउडस्पीकर इतने जोर–जोर से बजाए जाते हैं कि सुनने वाले परेशान हो उठते हैं। यह ध्वनि प्रदूषण है ।

प्रदूषण दूर करने के उपाय—प्रदूषण मानव–जीवन पर कलंक है। इसे दूर करना हम सबका कर्त्तव्य है। एक–दो व्यक्ति प्रदूषण से मुक्ति नहीं दिला सकते। इसे दूर करने के लिए प्रत्येक नागरिक को सचेत रहना पड़ेगा। विद्यार्थी भी इस दिशा में अच्छा कार्य कर सकते हैं। अपने पास–पड़ोस के लोगों को प्रदूषण का अर्थ समझाना चाहिए। प्रत्येक नागरिक अपना एवं अपने आस–पास का ध्यान रखे, तो प्रदूषण स्वयं ही दूर हो जाएगा। वृक्षारोपण पर और ध्यान दिया जाना चाहिए। बढ़ते हुए प्रदूषण के प्रति सचेत रहकर प्रदूषण को दूर करना हमारा दायित्व है। प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह प्रदूषण के प्रति जागरूक हो। हमें अपने घर तथा आस–पास की सफाई रखनी चाहिए तथा सफाई का महत्त्व अन्य लोगों को भी समझाना चाहिए।

उपसंहार—मानव यदि प्रदूषण की समस्या के प्रति उदासीन बना रहा तो प्रकृति इसका निदान स्वयं खोज लेगी। प्रकृति के साथ किए जा रहे मानव के क्रूर व्यवहार का दण्ड उसे भुगतना ही पड़ेगा। इसलिए मानव को तुरन्त सचेत हो जाना चाहिए, ताकि प्रकृति का सन्तुलन न बिगड़ने पाए।

Samvid® BOOKS

हिन्दी

व्याकरण व पाठ्यपुस्तक

उत्तर पुस्तिका

कक्षा

8

© Publishers

वैधानिक चेतावनी
इस पुस्तक के किसी भी अंश या भाग की पुन: प्रस्तुति या प्रतिलिपि किसी भी रूप में अन्यत्र नहीं की जा सकती है। प्रकाशक की लिखित पूर्व अनुमति के बिना किये गए ऐसे किसी भी कार्य के लिए संबंधित व्यक्ति वैधानिक कार्यवाही या वाद के भागीदार होंगे। सब तरह के वैधानिक विवादों का निपटारा मथुरा न्यायालय के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत होगा। पुस्तक को लिखते समय यद्यपि पूर्ण सावधानी रखी गयी है, फिर भी मुद्रण में किसी प्रकार की त्रुटि के लिए प्रकाशक व मुद्रक की जिम्मेदारी नहीं है ।

1 वर दे

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. वीणावादिनि—माँ सरस्वती।
नव—नया।
अंध-उर—अज्ञानरूपी अंधकार से युक्त हृदय।
बंधन-स्तर—बंधन का स्वरूप।
विहगवृन्द—पक्षियों का समूह।
कलुष—मन के मलिन भाव।
तम हर—अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करके।
प्रकाश—उजाला।
नवल—नवीन।
मन्द्र रव—धीमा तथा गम्भीर स्वर।
उर—हृदय।
जननि—माता, माँ।
तम—अज्ञान का अंधकार।
पर—पंख।
जगमग जग कर दे—संसार को प्रकाशित कर दे।
कलुष भेद—मन के मलिन भाव को काटकर।
ज्योतिर्मय निर्झर—प्रकाश से युक्त झरना।
नवल—कोमलता से युक्त नवीन।

2. **(क)** 'नव नभ' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि भारत के लोग नए समाज का निर्माण करें और उन्हें नए निर्माण हेतु सभी साधन प्राप्त हो सकें।
(ख) ज्ञान की देवी माँ सरस्वती से।
(ग) कवि भारत में नव अमृत मन्त्र भरने के लिए कह रहा है।

3. **(क)** कवि माँ सरस्वती से यह वरदान चाह रहा है कि स्वतन्त्रता का नव अमृत मंत्र सम्पूर्ण भारतवर्ष में भर जाये तथा हर प्राणी के हृदय से से अज्ञान का अन्धकार हट जाए और ज्ञान की ज्योति का झरना सभी जगह बहने लगे अर्थात् सम्पूर्ण संसार ज्ञान के प्रकाश से चमक उठे।
(ख) कवि चाहते हैं कि प्रकृति की कोई भी वस्तु अपने पुराने अथवा अतीत के स्वरूप में न रहे क्योंकि बिना नवीनता के संसार की उन्नति शीघ्रता से हो पाना संभव नहीं है। इसलिए कवि प्रकृति की हर वस्तु में नया रूप देखना चाह रहा है।

4. **(क)** प्रकाश **(ख)** के बन्धन
(ग) जननि **(घ)** पर, नव।

5. **(क)** हे माँ सरस्वती! लोगों के हृदय में भिन्न-भिन्न प्रकार के अज्ञान के बन्धन हैं, उन्हें काट दीजिए अर्थात् लोगों के मन के विकारों को दूर कर दीजिए और ज्ञान का ज्योतिरूपी झरना बहा दीजिए अर्थात् ज्ञान का प्रकाश फैला दीजिए।
(ख) हे माँ सरस्वती! जो यह आकाश के समान नया समाज फैला हुआ है। इसमें नए-नए कवि नवीन पक्षियों के समान चहकते हुए नवीन कल्पना की उड़ान भरने के लिए उत्साहित हैं। उन्हें नई गति प्रदान करते हुए नवीन लय और ताल से युक्त छन्द प्रदान कीजिए, इन्हें नए पंख देकर कल्पना की ऊँची उड़ान भरने योग्य बना दीजिए। इनके कण्ठ को कोमल और बादलों का सा गम्भीर स्वर प्रदान कीजिए जिससे ये प्रभावशाली नवीन गीत गा सकें।

6. **(क)** (आ) अनुप्रास
(ख) (अ) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(ग) (इ) पक्षियों का समूह

भाषा अध्ययन

1. छात्र शुद्ध उच्चारण करने का स्वयं अभ्यास करें।
2. रव, भर, उर, स्तर, ज्योतिर्मय, निर्झर, अमृत, प्रिय, हर, वृन्द।
3.

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अमृत	सुधा, अमिय
जननि	माँ, माता
रात	रात्रि, निशा
जग	संसार, जगत्
आकाश	नभ, गगन
विहग	पक्षी, खग

4.

शब्द	विलोम शब्द
तम	प्रकाश
स्वतंत्र	परतन्त्र
बंधन	मुक्त
नव	पुरातन
अमृत	गरल
सुरूप	कुरूप

5.

क्र.	उपमेय	उपमान	साधारण धर्म	वाचक शब्द
1.	सीता का मुख	चन्द्रमा	सुन्दर	के समान है
2.	मन	पीपर पात	डोला	सरिस
3.	हरिपद	कमल	कोमल	से
4.	कुटिया	नन्दनवन	फूल उठी	सी

2 आत्मविश्वास

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. दुर्भाग्य – बुरा भाग्य।
आत्महीनता – मन की हीन भावना।
एकाग्रता – तल्लीनता।
क्षमता – सामर्थ्य।
विश्वविख्यात – जग में प्रसिद्ध।
तल्लीनता – किसी काम में एकाग्रचित्त हो जाना।
अभंग – अटूट, अखण्ड।
सुगमता – सरलता।
दुविधा – असमंजस।
यथापूर्व – पहले जैसा।
अविचल – स्थिर, दृढ़।
सूक्ति – अच्छी उक्ति।
अखण्ड – अटूट, बिना खण्डित।
मर्सिया – शोक गीत।

2. **(क)** बाली को यह वरदान प्राप्त था कि जो भी उसके सामने आएगा, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाएगी।

(ख) राम बाली के सामने आकर इसलिए नहीं लड़े क्योंकि बाली को अपने विरोधी के आधे बल को खींच लेने का वरदान प्राप्त था।

(ग) कृष्ण ने महाभारत में न्याय का साथ देकर पाण्डव पक्ष का सहयोग किया और निर्वासित पाण्डवों को उनका अधिकार दिलवाकर अपना सर्वोत्तम काम किया।।

3. **(क)** सामने वाले की आधी ताकत खींच लेने की शक्ति हम सबको प्राप्त है, परन्तु हमको इस आत्मशक्ति की पहचान नहीं है। इस आत्मशक्ति का विकास विश्वास से होता है। हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करना होगा तथा आत्मबल का विकास करना होगा, जिससे हम विरोधी की आधी शक्ति अपने अंदर खींच सकें।

(ख) लेखक ने हेलन केलर का उदाहरण देकर हमें यह समझाना चाहा है कि जब हमें सफलता मिलती है तो उससे सुख मिलता है, परन्तु जब हम लक्ष्य प्राप्ति में विफल हो जाते हैं तो सुख के द्वार बंद हो जाते हैं। इससे हम आत्मशक्ति तथा लक्ष्य प्राप्ति की सामर्थ्य को खो बैठते हैं, जबकि होना यह चाहिए कि लक्ष्य प्राप्ति हेतु अपने अन्दर की शक्ति को विश्वास के साथ विकसित करना चाहिए और सफलता प्राप्त कर लेने तक अपना प्रयास जारी रखना चाहिए।

(ग) आत्मविश्वास द्वारा विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य होती है। इसके द्वारा मनुष्य अवश्य ही सफल हो जाता है। अतः जो उचित दिशा में अपने कर्तव्य का पालन करता है और अपने लक्ष्य की साधना के लिए अपनी सामर्थ्य और क्षमता में पूरा विश्वास रखता है वही भाग्यशाली है। विजयमाला भी उन्हीं को अर्पित की जाती है जो चुनौतियों का सामना करते हैं।

हमारे सामने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का उदाहरण है, जिन्होंने अपने जीवन में सिर्फ चुनौतियों को ही चुना और सफलताओं के शिखर पर पहुँचते रहे। उन्होंने आत्मविश्वास के बल पर अपने विरोधियों की प्रत्येक कुचाल को नष्ट किया। अतः आत्मविश्वास के बूते पर जीवन में सब कुछ सम्भव है।

4. **(क) प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा-भारती' कक्षा-8 के पाठ 'आत्मविश्वास' से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक लोगों को दोहरी मानसिकता को व्यक्त करता है।

व्याख्या— जो लोग किसी उद्देश्य को प्राप्त करने का उत्साह नहीं रखते और सदैव निराशापूर्ण भावनाओं में ही डूबे रहते हैं, वे जीवन में उतार से प्राप्त दुःख की ही बातें करते रहते हैं। वे कभी भी उन्नति के सुख की बात नहीं सोचते। ऐसे लोग कूड़ेघर के पास बैठकर शहर की गंदगी को कोसते हैं, उन्हें शहर की स्वच्छता नहीं दिखाई देती। ये लोग निम्नकोटि की विचारधारा से युक्त होते हैं। वे अपनी दूषित विचारधारा को संस्कारित नहीं कर सकते। जब

गन्दगी को एकत्र करने वाले उसे वहाँ से हटायेंगे तभी कूड़ेघर की गन्दगी वहाँ से हटेगी। ऐसे आलसी और कुसंस्कारित व्यक्ति कभी भी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते।

(ख) प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा-भारती' कक्षा-8 के पाठ 'आत्मविश्वास' से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक स्पष्ट मानसिकता को अपनाने का तथा रूढ़िवादी मानसिकता को छोड़ने पर बल देता है।

व्याख्या—जब कोई विरोधी व्यक्ति हमारे सामने आता है, तो हमारे मन में एक हीनभावना पैदा हो जाती है। इसका कारण होता है कि हमारे अन्दर भरोसे की कमी पैदा हो जाती है जिससे हम कायर बनने लगते हैं। यह सब बुरे संस्कारों के कारण होता है। अपनी क्षमताओं पर विश्वास न होने के कारण और अपने बल की नापतौल किए बिना हम अपने विरोधी को खुद से अधिक शक्तिशाली मान लेते हैं।

5. **(क)** यदि हमारे अन्दर लक्ष्य के प्रति अटूट विश्वास है तो निश्चय ही हम अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अत: अविचल श्रद्धा ही सफलता का, संघर्ष में विजय का, जीवन में उन्नति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है।

(ख) हमारी सफलता और असफलता का कारण हमारी सोच है। सफलता की सोच आशावादी और असफलता की सोच निराशावादी बनाती है। अत: हमें अपने विचारों को संतुलित रखना आवश्यक है।

(ग) मनुष्य आत्मविश्वास होने से अपने लक्ष्य में सफल होता है, जिसके द्वारा वह अपने दुश्मनों को आत्मबल से रहित बना सकता है। अत: सफलता हेतु आत्मविश्वास का होना अनिवार्य है।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र शुद्ध उच्चारण करने का स्वयं अभ्यास करें।

2. (i) लोगों को भला-बुरा समझकर हर निर्णय करना चाहिए।

(ii) दाता-याचक की उपमा ईश्वर और भक्त से उत्तम क्या होगी।

(iii) संस्कारों के आधार पर ही बच्चे सपूत-कपूत होते हैं।

(iv) मनुष्य में निश्चित-अनिश्चित होने की दशा दुविधा पैदा करती है।

(v) अपनी सोच द्वारा मनुष्य भाग्यवान-भाग्यहीन बन बैठता है।

(vi) हर कदम रखने से पूर्व पाप-पुण्य के बारे में जरूर सोचें।

(vii) सुख-दु:ख जीवन के पहलू होते हैं।

3. ताकत = बल। विजिटिंग कार्ड = पहचान पत्र। इशारा = संकेत। मर्सिया = शोक-गीत।

4.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**
तल्लीन	तत्	लीन	
दुर्भाग्य	दु:	भाग्य	
शक्तिशाली		शक्ति	शाली
कायरता		कायर	ता
एकाग्रता		एकाग्र	ता
खण्डित	अ	खण्ड	इत
अभागा	अ	भाग्य	आ

5.

सामासिक पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
आत्मविश्वास	आत्मा में विश्वास	तत्पुरुष
कूड़ाघर	कूड़े का घर	तत्पुरुष
खन्दक-खाइयों	खन्दक और खाइयों	द्वन्द्व
शक्तिहीन	शक्ति से हीन	तत्पुरुष
यथापूर्व	पूर्व की तरह	अव्ययीभाव
विश्वविख्यात	विश्व में विख्यात	तत्पुरुष

6. **(क)** शीर्षक होगा—काँच का महल।

(ख) प्रयुक्त मुहावरे-

(i) भटका हुआ
(ii) टूट पड़ना
(iii) शान दिखाना
(iv) दिल धड़कना
(v) घबरा जाना
(vi) झपट पड़ना।

वाक्य प्रयोग—

(i) रास्ते में भटका हुआ व्यक्ति देर रात तक घूमता रहा।

(ii) पाण्डवों की सेना अपने शत्रुओं पर टूट पड़ी।

(iii) अपनी झूठी शान दिखाना गलत है।

(iv) किसी बुरी घटना को सुनकर मेरा दिल धड़कने लगता है।

(v) अचानक आये समुद्री तूफान से नाविक घबरा जाते हैं।

(vi) सेनानायक के आदेश पर सैनिक शत्रुओं पर झपट पड़े।

(ग) महल काँच का था, उसकी दीवारों पर कुत्ते को अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। इसलिए कुत्ते को चारों ओर कुत्ते दिखाई दे रहे थे।

(घ) कुत्ते ने अपने प्रतिबिम्ब को दूसरा कुत्ता समझा इसलिए उसने भौंकना शुरू कर दिया।

(ङ) साधारण वाक्य—

वह उन कुत्तों पर झपटा।

मिश्रित वाक्य—

अपनी शान दिखाने के लिए जब उसने भौंकना शुरू किया तब उसे चारों ओर कुत्ते भौंकते सुनाई दिये।

संयुक्त वाक्य—

उसका दिल धड़कने लगा और वह बुरी तरह घबरा गया।

3 मध्य प्रदेश की संगीत विरासत

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. ध्रुपद — गायन की एक विशेष शैली।
विरासत — उत्तराधिकार से प्राप्त।
प्रणेता — रचनाकार।
गुरुभाई — एक ही गुरु के शिष्य
जीवन्त — जीवित।

2. **(क)** मध्यप्रदेश में संगीत सम्राट तानसेन, राजा मानसिंह तोमर, सन्तूरवादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, कुमार गन्धर्व एवं स्वर कोकिला लता मंगेशकर आदि प्रमुख संगीतकारों ने संगीत की साधना की।

(ख) मध्यप्रदेश में प्रख्यात सरोदवादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के नाम पर 'अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी' की स्थापना की गई है।

(ग) भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर को दिया गया है।

(घ) कुमार गन्धर्व का वास्तविक नाम सिद्राम कोमकली था।

(ङ) संगीतज्ञ लता मंगेशकर के गले में सरस्वती स्वयं विराजमान मानी जाती हैं।

3. **(क)** संगीत का वास्तविक महत्त्व तब होता है, जब संगीत की शास्त्रीयता साधना को महत्त्व देती है। तब संगीत की मिठास आत्मिक शान्ति पहुँचाती है और जीवन जीने की उमंग पैदा करती है। संगीत सुरों को सुनकर आदमी अपने आप में थिरक उठता है। उसके हृदय में करुणा का भाव उमड़कर आँसुओं के रूप में बह निकलता है। जिसे सुनकर साधारण जन प्रभावित हो उठते हैं।

(ख) कुमार गन्धर्व ने राग-मालवती, लग्न गंधार, सहेली तोड़ी और गांधी मल्हार रागों की रचना की। उन्होंने 'अनूप राग-विलास' नामक पुस्तक लिखकर संगीत प्रेमियों को सीख भी दी।

(ग) बादशाह अकबर ने अपने दरबार में तानसेन से संगीत का प्रभाव दिखाने का हठ किया। इस पर तानसेन संगीत साधना में लीन हो गये और दीपक राग की साधना की। स्वर के आलाप धीरे-धीरे सिद्ध होते गये। इसके प्रभाव से दरबार में रखे सभी दीप जल उठे।

(घ) लता मंगेशकर को समूचे राष्ट्र की गायिका कहा जाता है। ऐसा मानना है कि उनके गले में सरस्वती विराजमान थीं। इसके लिए उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें 'दादा साहब फालके', 'पद्मभूषण' तथा 'पद्मविभूषण' आदि पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

(ङ) संगीत की महिमा अनन्त है। संगीत की शास्त्रीयता जहाँ साधना को महत्त्व देती है, वहीं संगीत में विद्यमान मधुरता से हमें आत्मिक शान्ति भी मिलती है जिससे जीवन को जीने की उमंग व उत्साह प्राप्त होता है। संगीत में पगे गीतों को सुनकर मनुष्य के पैर अपने आप ही थिरक उठते हैं। मनुष्य में करुणा का भाव पैदा हो जाता है जिसके कारण अनायास ही आँसू बह उठते हैं।

(च) पाठ में आए संगीतकारों में से मुझे सबसे अच्छी संगीतकार लता मंगेशकर लगी हैं क्योंकि उन्होंने गीतों में इस तरह स्वर पिरोया है कि हर भाव, धर्म और भाषा अपने स्वरूप में व्यंजित हो उठते हैं। इसीलिए उन्हें समूचे राष्ट्र की गायिका कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि उनके गले में स्वयं सरस्वती विराजमान थीं।

4. **(क)** 2. स्वामी हरिदास
(ख) 1. अलाउद्दीन खाँ

5. **(अ)** कुमार गन्धर्व **(आ)** तानसेन
(इ) तानसेन **(ई)** प्राणहीन।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र शुद्ध उच्चारण करने का स्वयं अभ्यास करें।

2.

	सामासिक शब्द	समास का नाम
(क)	राजपुत्र	तत्पुरुष
	प्रतिदिन	अव्ययीभाव
	माता-पिता	द्वन्द्व
(ख)	पीताम्बर	कर्मधारय
	कमल-नयन	कर्मधारय
	भगवान	तत्पुरुष
(ग)	राजभवन	तत्पुरुष
	रसोईघर	तत्पुरुष
	शयनकक्ष	तत्पुरुष

3. अनूठी—परम्परा, ग्वालियर—घराना,
मन्त्र—मुग्ध, रण—भेरी,
मधुर—तान

4. ज्ञान + हीन = ज्ञानहीन। मान + हीन = मानहीन। जल + हीन = जलहीन। धन + हीन = धनहीन। रक्त + हीन = रक्तहीन।

5.

शब्द	सन्धि-विच्छेद	संधि का प्रकार
दिगम्बर	दिक् + अम्बर	व्यंजन सन्धि
उल्लास	उत् + लास	व्यंजन संधि
सम्मान	सम् + मान	व्यंजन संधि
इत्यादि	इति + आदि	यण सन्धि

6. (अ) दीपक राग
(आ) भारत रत्न
(इ) संगीत सम्राट
(ई) स्वामी हरिदास
(उ) बाल गायक।

4 अपराजिता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. विलक्षण — अनोखा।
उत्फुल्ल — प्रसन्न।
अकस्मात — अचानक।
विषाद — दु:ख, उदासी।
विच्छिन्न — अलग, काटी हुई।
बुद्धिदीप्त — मेधावी, तेज बुद्धि वाला।
जिजीविषा — जीने की इच्छा।
कंठगत — गले में आना।
पटुता — चतुराई।
उत्कट — प्रबल।
ख्याति — प्रसिद्धि।
नियति — भाग्य।
आघात — प्रहार, चोट।
क्षत-विक्षत — घायल।
व्यथा — कष्ट, रोग।
आभामण्डित — तेज से युक्त।
नूरमंजिल — लखनऊ स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल।

2. **(क)** अपराजिता संस्मरण की लेखिका गौरा पन्त 'शिवानी' हैं।

(ख) डॉ. चन्द्रा जी की माताजी का नाम श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम है।

(ग) डॉ. चन्द्रा को सामान्य ज्वर के बाद पक्षाघात की बीमारी हो गई।

(घ) 'वीर जननी' का पुरस्कार डॉ. चन्द्रा की माँ श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम को मिला।

3. **(क)** लेखिका की दृष्टि में डॉ. चन्द्रा सामान्य जनों से अनेक बातों में भिन्न थीं। वे असामान्य रूप से शारीरिक अक्षमता व रोग से पीड़ित थीं। उनके शरीर का निचला धड़ निष्प्राण मांस-पिण्ड मात्र था लेकिन वे सदा प्रफुल्ल रहती थीं। उनमें अदम्य साहस और उत्कट जिजीविषा थी। उनके मुखमण्डल पर ज्ञान का तेज झलकता था। उनका व्यक्तित्व महत्त्वाकांक्षा से परिपूर्ण था।

(ख) लेखिका ने जब चन्द्रा को पहली बार कार से उतरते देखा तो वे अचम्भित रह गईं। क्योंकि उन्होंने देखा कि कार का द्वार खुला और एक

प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से व्हील चेयर निकालकर सामने रख दी और भीतर चली गई। एक युवती ने धीरे-धीरे अपने निर्जीव धड़ को कार में से बड़ी दक्षता से नीचे उतारा और बैसाखियों के सहारे लिया और व्हील चेयर तक पहुँची तथा उसमें बैठ गई और बड़ी सहजता से उसे चलाती हुई कोठी के अन्दर चली गई।

4. **(क) आशय**—लेखिका को अपंगता से ग्रसित बित्ते भर की लड़की (डॉ. चन्द्रा) किसी देवांगना से कम नहीं लगी क्योंकि उसके चेहरे पर अद्‌भुत कान्ति थी। अपने बुद्धिबल और आत्मनिर्भरता के मुताबिक वह शरीर से बहुत छोटी थी।

(ख) आशय—अपंगता से ग्रसित डॉ. चन्द्रा लेखिका से कहती है कि वह नहीं चाहती है कि कोई उसको थोड़ा भी सहारा दे। वह स्वावलम्बी बनकर रहना चाहती है।

(ग) आशय—इस कथन का आशय है कि डॉ. चन्द्रा एक चिकित्सक बनना चाहती थी; लेकिन अपनी अपंगता के कारण वे चिकित्सक नहीं बन सकीं। जबकि विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. चन्द्रा ने अनेक सफलताएँ प्राप्त कीं तथा विज्ञान के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया। इस प्रकार चिकित्सा ने उन्हें खो दिया और विज्ञान ने उन्हें प्राप्त किया।

(घ) आशय—लेखिका के अनुसार, डॉ. चन्द्रा की आँखों में बुद्धि का तेज झलकता था। उनमें कुछ पाने का उत्साह था। प्रत्येक क्षण भरपूर जीवित रहने की प्रबल इच्छा थी। इसके साथ ही उनमें प्रगतिशील बनने की अनेक महत्त्वाकांक्षाएँ थीं।

भाषा-अध्ययन

1. 'ऑ' आगत स्वर है जो अंग्रेजी से जुड़ा है। अतः छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें; फिर उन्हें लिखें।

3. **(क)** (1) अ **(ख)** (2) ता
(ग) (1) अभि **(घ)** (3) पराजिता

4. **साधारण वाक्य—**
1. आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास (चेन्नई) में काम कर रही हैं।
2. उस कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था।

मिश्रित वाक्य—
1. लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी।
2. ईश्वर सब द्वार नहीं बंद करता, यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा खोल भी देता है।

संयुक्त वाक्य—
1. प्राणिशास्त्र में एम.एस-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की।
2. एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं।

5. **(क) उचित शीर्षक** 'आत्मविश्वास की प्रबल प्रतिभा।'

(ख) हम विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के लिए उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए हरसम्भव प्रयास कर सकते हैं। उन्हें साधन सुलभ करा सकते हैं।

(ग) मुहावरे

दंग रह जाना—अचम्भे में पड़ जाना।
वाक्य प्रयोग—पाँच वर्ष की बालिका ने जब गीता श्लोक मौखिक सुनाए, उपस्थित लोग दंग रह गये।

हथियार डालना—हार मान लेना।
वाक्य प्रयोग—राजा के समक्ष शत्रुओं ने अपने हथियार डाल दिये।

धरना देना—एक स्थान पर अपनी माँगें लेकर बैठ जाना।
वाक्य प्रयोग—नेताओं ने अपनी माँगों के समर्थन में विधानसभा के सामने धरना दे दिया।

अपने पैरों पर खड़ा होना—आत्मनिर्भर हो जाना।
वाक्य प्रयोग—युवकों को अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करना चाहिए।

(घ) सरल वाक्य—भगवान की लीला विचित्र है।

मिश्रित वाक्य—हमें चाहिए कि हम उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित करें।

संयुक्त वाक्य—उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें और उन्हें अच्छा जीवन जीने का मार्ग सुझाएँ।

6. ''नहीं, मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा। ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए, आपकी पुत्री की ह्वील चेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा?''
''आप चिंता न करें, मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराऊँगी।''

7.

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
कर्मठ	ता	कर्मठता
शालीन	ता	शालीनता
उदार	ता	उदारता
कृपण	ता	कृपणता
चाय	वाला	चायवाला
मिठाई	वाला	मिठाईवाला
फल	वाला	फलवाला
रिक्शा	वाला	रिक्शावाला
गाड़ी	वाला	गाड़ीवाला

8.

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
प्रति	क्षण	प्रतिक्षण
	दान	प्रतिदान
	ध्वनि	प्रतिध्वनि
	रूप	प्रतिरूप
	वादी	प्रतिवादी

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
परा	जय	पराजय
	क्रम	पराक्रम
	भव	पराभव
	भूत	पराभूत
	वर्तन	परावर्तन

उपसर्ग	शब्द	नया शब्द
अभि	मुख	अभिमुख
	शाप	अभिशाप
	नव	अभिनव

5 श्री मुफ्तानन्दजी से मिलिए

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. निःसंकोच — बिना किसी संकोच के।
कृतकृत्य — धन्य।
जीवन-यापन — जीवन बिताना।
तिकड़म-जुगाड़ — चतुराई।
खुशामद — चापलूसी।
इहलोक — मृत्युलोक।
मुफ्तानंद — मुफ्त की प्राप्त वस्तु का आनन्द।
साष्टांग — आठ अंग (सिर, आँख, हृदय, पैर, हाथ, मन, कर्म और वचन)

2. **(क)** लेखक ने इस पाठ का नाम मुख्य पात्र के नाम पर इसलिए रखा, क्योंकि पूरी कहानी मुफ्त में लेने वाले मुफ्तानंद जी के बारे में है।
(ख) मुफ्तानन्द को 'मुफ्तखोरों का सरताज' कहा गया है।
(ग) लेखक से मुफ्तानंद ने कालिदास ग्रन्थावली माँगी।
(घ) मुफ्तानन्द जी की कमीज मुफ्त में बरफ पाने के लिए लगी लाइन में लगने पर खींचातानी में फट गयी।
(ङ) लेखक मुफ्तानंद जी को साष्टांग प्रणाम करता है क्योंकि लेखक ने उन जैसा मुफ्तखोर नहीं देखा।

3. **(क)** मुफ्तानन्द जी को बिना पैसे के पान खाने का शौक, पतंग को लूटना, दैनिक पत्रों को मुफ्त में पढ़ना, बच्चों को मुफ्त में ही शिक्षा प्राप्त करा लेना, मुफ्त में थियेटर देखना, मुफ्त में बर्फ प्राप्त करना, मुफ्त में औषधि प्राप्त करना आदि घटनाएँ प्रधान हैं परन्तु उनके द्वारा अपनी इस उम्र में कटी पतंग को लूटने के लिए दौड़ लगाने की घटना बहुत ही प्रभावित करती है।

(ख) लेखक के घर प्रतिदिन दो समाचार-पत्र आते थे। उनको सबसे पहले मुफ्तानन्द जी ही पढ़ते थे। उनके पढ़ लेने के बाद ही अखबार को 'प्रसाद' रूप में लेखक प्राप्त करते थे। मुफ्तानन्द जी को मुहल्ले के उन सभी आदमियों के नाम याद थे जिनके घर प्रतिदिन अखबार खरीदा जाता था। कभी-कभी उन सभी के घरों पर समाचार-पत्र पढ़ने के लिए वे चले जाते थे। इस प्रकार वे रोजाना पढ़ने के लिए समाचार-पत्र प्राप्त करते थे।

(ग) मुफ्तानन्द जी दूसरों से माँगी गई पुस्तकों के माध्यम से अपना लाभ प्राप्त करते थे। उन मुफ्तखोर महोदय को पुस्तकें दे दिये जाने के बाद कभी वे पुस्तकें लौटकर नहीं आती थीं। उन्होंने मुफ्त में माँगकर लाई गयी पुस्तकों से अपनी अलमारी को भर रखा था। अपनी अलमारी पर वे किसी भी व्यक्ति की निगाह भी नहीं पड़ने देते थे।

(घ) लेखक ने 'कबीर का रहस्यवाद' इस सन्दर्भ में कहा कि मुफ्तानन्द जी बीमार हुए, उन्होंने अपने इलाज पर कुछ भी खर्च नहीं किया। उन्होंने 'दवा' तो क्या उस शीशी के पैसे भी कभी भी अपने जेब से नहीं दिये। डॉक्टर, वैद्य और हकीम सबके वे दोस्त होते हैं और उन्हें कभी भी फीस नहीं देते। उन्हें औषधि भी सरकारी अस्पताल से प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार मुफ्तानन्द जी को सभी औषधियाँ मुफ्त में ही प्राप्त हो जाती हैं।

(ङ) परलोक के बारे में मुफ्तानंद जी का मानना है कि जब भगवान ने इहलोक में आनन्दपूर्वक निभा दी तो परलोक में भी भगवान मुफ्त में ही उनकी मुक्ति कर देंगे। अर्थात् वहाँ भी वे अपने जुगाड़ व तिकड़मबाजी से भगवान को प्रभावित कर स्वर्ग का आनंद पा लेंगे।

4. (1) मुफ्त, नन्दन   (2) मुफ्त, बेरहम।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

निमन्त्रण—मेरी बहिन के विवाह के शुभ अवसर पर आपका निमन्त्रण है।

सिद्धान्त—भारतीय वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग करके विज्ञान के सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है।

अनुष्ठान—आज मेरे घर में एक विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया जा रहा है।

तिलांजलि—अपने पूर्वजों को तिलांजलि देने से उन्हें मुक्ति मिलती है।

कृतकृत्य—देव-दर्शन करके हम सभी कृतकृत्य हो गये।

कण्ठस्थ—बालकों को अपनी पाठ्यपुस्तक की कविताएँ कण्ठस्थ करनी चाहिए।

साष्टांग—हमारे देश में आज भी महान लोगों को साष्टांग प्रणाम किया जाता है।

कृतार्थ—सत्कर्म करने से प्राणी कृतार्थ हो जाता है।

2. अन्न — अन्य

अन्न = अनाज; अन्य = दूसरा।

वाक्य प्रयोग—

- भारत अन्न उत्पादन में उन्नति कर रहा है।
- अब भारत किसी भी चीज के लिए अन्य देशों पर निर्भर नहीं है।

आदि — आदी

आदि = प्रारम्भ का; आदी = आदत पड़ना।

वाक्य प्रयोग—

- शुक्राचार्य राक्षसों के आदि गुरु थे।
- वह पान खाने का आदी है।

अनल — अनिल

अनल = आग; अनिल = हवा।

वाक्य प्रयोग—

- अनल सबको भस्म कर देती है।
- सर्वत्र अनिल फैली है, दिखती नहीं।

अकथ — अथक

अकथ = न कहने योग्य; अथक = बिना थके हुए।

वाक्य प्रयोग—

- मैंने उसकी अकथ कहानी पढ़ी।
- अथक परिश्रम से सफलता मिलती है।

उपकार — अपकार

उपकार = भलाई; अपकार = बुराई।

वाक्य प्रयोग—

- कभी किसी का उपकार नहीं भूलना चाहिए।
- यदि उपकार नहीं कर सकते तो अपकार मत करो।

3. यथा नाम तथा गुण—मुफ्तानन्द जी ने मुफ्त की खा करके 'यथा नाम तथा गुण' सिद्ध कर दिया।

माले मुफ्त दिले बेरहम—आजकल के लोगों पर यह कहावत कि 'माले मुफ्त दिले बेरहम' चरितार्थ होती है।

मुफ्त का चंदन-घिस मेरे नंदन—मुफ्त में वस्तु प्राप्त करने वाले लोग 'मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन' के अनुसार दिखाई पड़ते हैं।

धरना देना—छात्रों ने अपनी माँगों के समर्थन में डीएम के यहाँ धरना दिया।

नब्ज टटोलना—चुनावों में नेता लोग मतदाताओं की नब्ज टटोलना जानते हैं।

टोह में रहना—शिकारी जंगली जानवरों के शिकार की टोह में रहते हैं।

4. भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव-जंतु छोड़े हैं। कुछ काले, कुछ गोरे, कुछ सुन्दर, कुछ असुन्दर, भोले और जल्लाद। अलग-अलग स्वभाव, अलग-अलग चाल-ढाल। मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं, नाम है मुफ्तानंद जी।

5. खुशामद = चापलूसी। नब्ज = नाड़ी। सलामत = ठीक, स्वस्थ। दावत = भोज। बेरहम = निर्दय। अखबार = समाचार-पत्र। रोजाना = प्रतिदिन। नुकसान = हानि।

6. **(क)** (i) मोहल्ले में कौन-कौन लोग अखबार मँगाते हैं।

(ii) प्रत्येक मनुष्य को अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए समाचार-पत्र पढ़ना चाहिए।

(iii) ईश्वर की कृपा से उनके छह लड़के और चार लड़कियाँ हैं।

(ख) (i) वह रोज नहाता है।

(ii) यह मेरी पुस्तक है।

(iii) यह वही पुस्तक है जो मेरे घर में थी।

(iv) क्या कर रहा है?

(v) बाहर कोई आया है।

7. (i) प्रत्येक पाँच-पाँच पूड़ी खाएगा।

(ii) सब पके-पके आम इकट्ठे करो।

(iii) बच्चो, अपने-अपने चित्र अच्छे बनाओ।

(iv) लाल-लाल टमाटर होते हैं।

6 भक्ति के पद

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. पंछी — पक्षी।

छाँड़ि — छोडकर।

कूप — कुआँ।

छेरी — बकरी।

मधुकर — भौंरा।

अम्बुज — कमल।

तजि — छोड़कर

अधम — नीच।

उधारे — उद्धार किया।

दनुज — राक्षस।

बास — सुगन्ध

घन — बादल

चकोरा — चकोर।

पूँजी — धन।

2. **(क)** सूरदास के मन को सुख भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में प्राप्त होता है।

(ख) अधम के उद्धारक भगवान राम हैं।

(ग) रैदास ईश्वर के नाम के आराधक थे।

(घ) मीराबाई को रामरूपी रत्न प्राप्त हो गया।

3. **(क)** (इ) रैदास

(ख) (आ) दास भाव

(ग) (ई) करील

(घ) (इ) मीरा

4. **(क)** 'जहाज का पक्षी' भगवान कृष्ण के भक्त सूरदास का प्रतीक है। जिस तरह समुद्र की यात्रा में जानकारी लेने के लिए पक्षियों को छोड़ा जाता था, जमीन न दिखने पर पक्षी लौटकर जहाज पर ही आ जाते थे। उसी प्रकार भक्त भी बार-बार सभी ओर से निराश होकर भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिरूपी जहाज पर शरण प्राप्त करते हैं। उन्हें अन्यत्र कहीं सुख की प्राप्ति नहीं होती।

(ख) तुलसी ने खग (जटायु), मृग (मारीच), ब्याध (वाल्मीकि), पाषाण (शाप से पत्थर हुई गौतम की पत्नी अहल्या), बिटप (यमलार्जुन नामक वृक्ष), जड़ (भरत मुनि) आदि का उद्धार प्रभु श्रीराम द्वारा त्रेतायुग में तथा भगवान श्रीकृष्ण द्वारा द्वापर युग में किए जाने का उल्लेख किया है। प्रभु श्रीराम व कृष्ण ने अपने भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होकर उनकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

(ग) रैदास ने भगवान से अपना संबंध स्थापित करते हुए चन्दन, घन (बादल), चन्द्रमा, दीपक, मोती के रूप में माना है और अपने आपको क्रमशः पानी, मोर, चकोर, बत्ती, धागे के रूप

में खुद को जोड़ा है। चन्दन पानी में घिस जाता है और उसकी गंध फैलने लगती है। बादल की गर्जना के साथ ही वन में मोर कूकता है। चन्द्रमा को चकोर एकटक निहारता है। दीपक में बत्ती होती है, वह दीपक की ज्योति रूप में प्रकाश करती है। मोतियों में धागा पिरोकर हार (माला) बनाया जाता है। सोने को सुहागे से चमक प्राप्त होती है। इस तरह प्रभु से भक्त रैदास जी का ऊपर बताई गई चीजों की तरह सम्बन्ध है।

(घ) मीरा ने अपना मन संसार के मायामोह से हटा लिया और वे भगवान कृष्ण की भक्ति में रंग गईं। ईश्वर की भक्ति उनके लिए वह रत्न है जिसे चोर चुरा नहीं सकता, जो खर्च करने पर भी खर्च नहीं होता। उनका यह रत्न तो प्रतिदिन सवाया ही होता जाता है। वे कहती हैं कि जब मनुष्य सतगुरु की कृपा प्राप्त कर लेता है तब सत पर आधारित उसकी जीवन नौका बड़ी सरलता से संसार सागर को पार कर जाती है। इस प्रकार वे संसार की विविध वस्तुओं के प्रति मोह त्याग कर प्रभु श्रीकृष्ण का ही गुणगान करती हैं।

5. (क) तुलसीदास जी कहते हैं कि हे राम! मैं आपके कमल रूपी चरणों की भक्ति को त्यागकर कहाँ जा सकता हूँ? मुझे आपके सिवाय कोई अन्य देवता नहीं दिखाई देता है जिसने हठपूर्वक अपने यश के लिए पापियों का उद्धार किया हो। पक्षी (जटायु), मृग (मारीच), ब्याध (वाल्मीकि), पषान (अहल्या), वृक्ष (यमलार्जुन),जड़ (भरत मुनि) आदि का किस देवता ने संसार-सागर में आकर उद्धार किया है।

(ख) सूरदास जी कहते हैं कि कामधेनु को छोड़कर बकरी दुहने का विचार कौन करता है ? अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण को छोड़कर, हे मेरे मन ! तू किस दूसरे देव की आराधना करने का विचार करता है ? यदि तू ऐसा करता है तो निश्चय ही तू बड़ा मूर्ख है, उचित और अनुचित का भेद तुझे करना नहीं आता अर्थात् प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों की भक्ति में ही सूरदास जी को अथाह आनंद की अनुभूति होती है।

6. (क) संदर्भ—प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी (भाषा भारती) कक्षा 8 में संकलित पाठ 'भक्ति के पद' से अवतरित है। इसके रचनाकार भक्त रैदास जी हैं। रैदास जी भगवान से प्रार्थना करते हैं।

भावार्थ—तुम सुगन्धित चन्दन हो, हम पानी के समान हैं। चन्दन की सुगन्ध जल के साथ मिलकर उसमें समा जाती है। उसी तरह, हे प्रभो! तुम्हारी भक्ति में मेरा अंग-अंग डूबा हुआ है।

(ख) संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी (भाषा भारती) कक्षा 8 में संकलित पाठ 'भक्ति के पद' से ली गई हैं। इसकी रचयित्री मीरा है। यहाँ मीरा अपनी भक्ति का वर्णन कर रही हैं।

भावार्थ—मीराबाई कहती हैं कि मैंने रामरूपी रत्न को धन के रूप में प्राप्त कर लिया है। मेरे श्रेष्ठ गुरु ने मुझे एक बेशकीमती वस्तु प्रदान की है। मेरे गुरु ने बड़ी ही कृपा करते हुए मुझे अपना लिया है। इस तरह मैंने प्रत्येक जन्म की पूँजी प्राप्त कर ली है। संसार सम्बन्धी सब कुछ खो दिया। यह भक्तिरूपी सम्पत्ति बहुत ही अजब है जिसे किसी भी तरह खर्च नहीं किया जा सकता। कोई चोर भी इसे चुरा नहीं सकता। यह भक्तिरूपी धन प्रतिदिन ही सवाया होकर बढ़ता ही जा रहा है।

भाषा-अध्ययन

1. (क) पक्षी
(ख) चरण
(ग) नीरज
(घ) रजनी।

2.

शब्द	पर्यायवाची
रात	रात्रि, रजनी
पानी	तोय, जल
कमल	नीरज, पंकज

3.

तद्भव शब्द	तत्सम शब्द
महातम	माहात्म्य
दुरमति	दुर्मति
मानुस	मनुष्य
सोना	स्वर्ण

4. (क) यह दोहा छंद है। यह मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

(ख) यह सोरठा छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

(ग) यह भी सोरठा छंद है।

7 भेड़ाघाट

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. बंदिनी — महिला कैदी।
   निष्काम — बिना किसी कामना के।
   कृष्णत्व — कालापन, श्याम रंग।
   घर्षण — रगड़, घिसना।
   नगण्य — तुच्छ, किसी गणना में न आने वाला।
   नुस्खा — वैद्य या हकीम द्वारा रोग दूर करने के लिए औषधि का उपाय।
   कूता — संख्या जानना, तौल आदि का अन्दाजा लगाना।
   तृण — तिनका, घास।
2. **(क)** भेड़ाघाट जबलपुर से तेरह मील दूर है।
   (ख) त्रिपुरी राजघराने के महाराज करण देव की महारानी अल्हणा देवी ने संवत् 1155-56 विक्रमी में गौरीशंकर मन्दिर बनवाया था।
   (ग) नर्मदा का संगमरमरी चट्टानों पर से बहता जल जब घर्षण के साथ धुआँधार झरने के रूप में गिरता है, तो वह दूध जैसा दिखाई पड़ता है; इसे ही दूधधारा कहते हैं।
   (घ) भेड़ाघाट घूमने के लिए लेखक गया था।
   (ङ) भेड़ाघाट पर नर्मदा के दोनों ओर की चट्टानें संगमरमर के पत्थर की बनी हैं।
3. **(क)** नर्मदा अमरकंटक से निकलती है। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा मनोरम है। यहाँ का वायुमण्डल खुला है जो लोगों को बार-बार आकर्षित करता है। यहाँ पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु आकर स्नान करते हैं। नर्मदा के किनारे अपने ऊपर कोमल घास धारण किए हुए हैं। वह जाड़ा, गरमी, बरसात के मौसम में बराबर बहती है। उसकी धवल धार चंद्रमा को भी मात देती है। नर्मदा के पवित्र भेड़ाघाट के पास ही एक प्राकृतिक झरना है, जिसे दूध-धारा कहते हैं। यहाँ प्रकृति अपने को क्षण-क्षण बदलती रहती है। इसके किनारों में मंदिर व धर्मशालाएँ हैं। यहाँ चारों ओर प्रकृति का सौंदर्य पसरा हुआ है।
   (ख) जबलपुर में भेड़ाघाट के अलावा कई सुंदर घाट हैं। जैसे— ग्वालीघाट तिलवाड़ा आदि। इन स्थानों की प्रकृति भी कम सौन्दर्यमयी नहीं है। यहाँ की चट्टानें भी सतपुड़ा के शिखरों का गौरव हैं। यहाँ की प्राकृतिक शोभा के महत्व को आँका नहीं जा सकता। दूध-धारा और धुआँधार भी अपने प्राकृतिक सौन्दर्य की आभा को बिखेरते हैं। किन्तु भेड़ाघाट की सुन्दरता का मुग्धकारी प्रभाव अपने आप में चमत्कारिक है।
   (ग) सन् 1914 ई. की बात है जब लेखक को भेड़ाघाट देखने का अवसर मिला। भेड़ाघाट जबलपुर से तेरह मील दूर है। वे आधा घण्टे में मीरगंज स्टेशन पर पहुँचकर उतर गए। उन दिनों रेलगाड़ी की यह गति बहुत तेज समझी जाती थी। दो-तीन अंग्रेज अपने खानसामे के साथ भेड़ाघाट जाने के लिए मीरगंज स्टेशन पर उतरे थे। नर्मदा नदी के भेड़ाघाट तक वहाँ सड़क कच्ची थी। वे अंग्रेज शुक्रतारा की तरह उनके साथी बन गए थे। नर्मदा नदी अमरकंटक से निकली है। नर्मदा का प्रवाह आठ सौ मील तक बहता है, परन्तु भेड़ाघाट इसके उद्गम अमरकण्टक से एक सौ चौवन मील की दूरी पर है। मुर्की और लोकेश्वर के बीचोंबीच भेड़ाघाट स्थित है।
4. **1.** (ग) मध्य प्रदेश
   2. (क) नर्मदा
   3. (ग) गौरी-शंकर
   4. (ख) श्रीधर पाठक
5. **(क)** इस कहावत का आशय यह है कि बैल अपने जिस निश्चित स्थान पर बँधता रहा होता है, उसे वही स्थान अच्छा (प्रिय) लगता है। यह बात लेखक स्वयं के लिए कह रहे हैं क्योंकि वे वहीं पले-बढ़े हैं।
   (ख) इसका आशय यह है कि नर्मदा नदी अपने जल के प्रवाह से मर-मर की ध्वनि उत्पन्न करती है, किन्तु इसके दोनों किनारों की ऊँची चट्टानों की श्वेतता कभी भी मर नहीं सकती है।
   (ग) भेड़ाघाट के दोनों किनारों पर खड़ी संगमरमरी चट्टानें जिस तरह नर्मदा को मानो अपनी भुजाओं में स्थान देती प्रतीत होती हैं, उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति जनसेवार्थ झुककर कोई कार्य सम्पन्न करने हेतु चल पड़ता है, तो उसे समाजरूपी सुन्दर एवं मजबूत हाथ अपना संबल प्रदान कर देते हैं।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें और लिखें।

2. उज्ज्वलता, किनारा, खूँटा, ग्वारी घाट, दर्शन, नर्मदा, नवरत्न, बरसात, भेड़ाघाट, मुलायम, रेती, संन्यासी।

3. 1. ईमानदारी से देखा जाय तो इन संगमरमरी चट्टानों की अपेक्षा चाँदी का मूल्य भी नगण्य लगता है।

   2. लेखक ने जबलपुर के समीप नर्मदा नदी के भेड़ाघाट का प्रकृति चित्रण बहुत ही मनोरम शैली में किया है।

   3. रात को पक्षी अपने-अपने घोंसलों में छिप जाते हैं।

4. पर्वत, नर्मदा, श्रेणी, पूर्वी, प्रपात, पश्चिम

5.

शब्द	अर्थ	नया शब्द
आम	एक फल का नाम	आम फलों का राजा है।
	जन साधारण	नेता जी ने आम लोगों के बीच भाषण दिया।
काल	समय	प्राचीन काल में लोग जंगलों में रहते थे।
	मृत्यु	सुनामी आने पर लोग काल के गाल में समा गये।
गति	चाल	हवा की गति तेज हो गई।
	अवस्था	कुसंगति द्वारा लोगों की बुरी गति हो जाती है।
अर्थ	भाव, आशय	उसके कथन का अर्थ समझ नहीं आया।
	धन	दिनोंदिन भारत की अर्थ व्यवस्था अच्छी हो रही है।
तात	पुत्र	अरे तात! इन सबको जल पिलाओ।
	पिता	दोनों बच्चों ने तात को प्रणाम किया।

6. **(अ)** कृतज्ञ
   (आ) अनुकरणीय
   (इ) मिताहारी
   (ई) चिकित्सक
   (उ) सर्वज्ञ
   (ऊ) हस्तलिखित
   (ए) लोकप्रिय

8 गणितज्ञ-ज्योतिषी आर्यभट

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. कीर्ति — यश।
   संगम — मिलन, दो या अधिक नदियों के मिलने का स्थान।
   शंकु — शंकु के आकार में।
   प्रख्यात — प्रसिद्ध।
   प्रलय — सर्वनाश, बर्बादी।
   हेय — घृणित, घृणा करने योग्य।
   वेधशाला — तारों और नक्षत्रों के अध्ययन के लिए बनी शोधशाला।
   धारणा — मत।
   आसन्न — समीप, पास।
   पद्धति — ढंग।
   सूत्रबद्ध — धागे में बँधा हुआ।

2. **(क)** पटना शहर का पुराना नाम पाटलिपुत्र है।

   (ख) पटना के पास नालन्दा विश्वविद्यालय था जो उस समय का बहुत ही प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था।

   (ग) पटना के पास गंगा, सोन और गंडक नदियों का संगम हुआ है।

   (घ) जहाँ तारामण्डल और नक्षत्रों की गति का अध्ययन किया जाता है उसे वेधशाला कहते हैं।

   (ङ) 'भट' शब्द का आशय 'योद्धा' होता है।

   (च) आर्यभटीय पुस्तक संस्कृत भाषा में रचित है। इसके चार भाग निम्नलिखित हैं—

   1. दशगीतिका 2. गणित
   3. कालक्रिया 4. गोल।

   (छ) 'आर्यभटीय' की ताड़पत्र पोथियों की खोज महाराष्ट्र के विद्वान डॉ. भाऊ दाजी ने सन् 1864 ई. में की थी।

3. **(क)** पाटलिपुत्र नगर से दूर आश्रम में एक वेधशाला थी। इस आश्रम में ज्योतिषी और विद्यार्थी इसलिए एकत्रित होते थे ताकि वहाँ इकट्ठे होकर हिसाब लगाकर भविष्यवाणी की जा सके कि ग्रहण किस समय लगेगा, कहाँ दिखाई देगा तथा इस ग्रहण का समय क्या होगा। वे अपनी गणना के अनुसार की गई भविष्यवाणियों की सत्यता की परख हेतु एकत्र हुआ करते थे।

(ख) आर्यभट ने सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है और इसके साथ हम भी घूमते रहते हैं। इसलिए आकाश का स्थिर तारामण्डल हमें पूर्व से पश्चिम की ओर जाता हुआ जान पड़ता है। दरअसल, तारामण्डल स्थिर है, पृथ्वी ही अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है।

(ग) आर्यभट ने बताया कि पृथ्वी की छाया जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्रग्रहण लगता है। इसी प्रकार चन्द्रमा जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आता है और वह सूर्य को ढक लेता है, तब सूर्यग्रहण होता है। राहु नामक राक्षस सूर्य अथवा चन्द्रमा को निगल जाता है, यह एक किंवदन्ती है।

(घ) ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संसार को प्राचीन भारत की सबसे बड़ी देन है—शून्य सहित केवल दस अंक संकेतों से सभी संख्याओं को व्यक्त करना। इस दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति की खोज आर्यभट से तीन-चार सौ वर्ष पहले हो चुकी थी। आर्यभट इस नई अंक पद्धति से परिचित थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ के आरंभ में वृन्द (1000000000) यानी अरब तक की दस गुणोत्तर संख्या-संज्ञाएँ देकर लिखा है कि इनमें प्रत्येक स्थान अपने पिछले स्थान से दस गुना है। इस तरह हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संसार को बहुत बड़ी उपलब्धि प्रदान की।

(ङ) आर्यभट ने हमारे देश में गणित और ज्योतिष के अध्ययन की एक नई स्वस्थ परम्परा शुरू की। इसलिए आर्यभट को प्राचीन भारतीय विज्ञान का सबसे चमकीला सितारा कहा जाता है। वे गणित और ज्योतिष के अध्ययन में गहरी रुचि लेते थे। वे अपनी विचारधारा को बिना किसी झिझक के प्रस्तुत कर देते थे। वे एक साहसी ज्योतिषी वैज्ञानिक थे। उन्होंने पृथ्वी की गति के बारे में अपने विचार खुलकर सबके सामने प्रस्तुत किए। वे सबसे पहले ज्योतिषी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से अपने शब्दों में कहा कि पृथ्वी स्थिर नहीं है और धुरी पर चक्कर लगाती है। स्थिर तो आकाश का तारामण्डल है।

4. **(क)** पश्चिम, पूर्व
(ख) आर्यभट
(ग) आर्यभटीय।

भाषा-अध्ययन

1.

तालिका 'अ'	स्वतंत्र स्थिर आकाश निर्भय अंधकार अपराह्न
तालिका 'ब'	भय परतंत्र अस्थिर पाताल पूर्वाह्न प्रकाश
सही क्रम	परतन्त्र, अस्थिर, पाताल, भय, प्रकाश, पूर्वाह्न।

2.

उद्देश्य	विधेय
(क) आर्यभट	महान् गणितज्ञ और ज्योतिषी थे।
(ख) आर्यभटीय	दक्षिणापथ में गोदावरी तट क्षेत्र के अश्मक जनपद में पैदा हुए थे।
(ग) उन्होंने	अपने विचार खुलकर व्यक्त किए।
(घ) आर्यभटीय	भारतीय गणित ज्योतिष का पहला ग्रन्थ है।

3. **वि** = विज्ञान, विशिष्ट, विभूति, विशेष।
प्र = प्रस्तुत, प्रमुख, प्रधान, प्रख्यात।
अधि = अधिसंख्य, अधिपत्र, अधिक्रम।
अति = अतिदाह, अतिदीन, अतिदोष।

4. **ता**—सुन्दरता, कुरूपता।
आई—पढ़ाई, लिखाई।
आवट—लिखावट, दिखावट, रँगावट।
वाला—दूधवाला, मिठाईवाला।
त्व—घनत्व, विद्वत्व।

5.

समानार्थी शब्द	विरोधार्थी शब्द	पुनरुक्त शब्द
बाग-बगीचे	लंबे-चौड़े	तरह-तरह
ब्राह्मण-पुरोहित	चहल-पहल	दूर-दूर
दान-पुण्य	इर्द-गिर्द	कहाँ-कहाँ
गणितज्ञ-ज्योतिषी		कभी-कभी

विविध प्रश्नावली-1

1. अमृत — सुधा
विहग — पक्षी
कमल — सरोज

रात – निशा

सरस्वती – वीणावादिनी

2. **1.** (ख) दु:खी होना

2. (ग) मीरा

3. (ग) संयुक्त वाक्य

3. **(क)** सूरदास, **(ख)** बाली, **(ग)** मात्रिक।

4.

उपसर्ग	**शब्द**
प्रति	क्षण
परा	जय
अभि	शाप
अनु	गमन
वि	ज्ञान

5. **1.** विरोधी के और अपने बल को तौले बिना, उसे शक्तिशाली मान लेने पर हमारी शक्ति आधी हो जाती है।

2. उपमा अलंकार में चार अंग निम्नलिखित हैं—(i) उपमेय (प्रस्तुत), (ii) उपमान (अप्रस्तुत), (iii) साधारण धर्म, (iv) वाचक।

3. अपराजिता महिला का नाम डॉ. चन्द्रा है।

6. **1.** कवि वीणावादिनी से ज्ञान के प्रकाश से परिपूर्ण झरना बहाने के लिए आग्रह कर रहा है।

2. कलुष भेद से कवि का आशय मन के विकारों को दूर करने से है।

3. आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए सूत्र यह है—''हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का पाठ पढ़ाने वालों के संपर्क से दूर रहो।''

4. जो शब्दांश या ध्वनि किसी सार्थक शब्द के शुरू में जुड़कर इसके अर्थ में बदलाव कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं जैसे—परा + भव = पराभव आदि। जबकि जो शब्दांश सार्थक शब्दों के अन्त में जुड़कर नयापन या भिन्न अर्थ की उत्पत्ति करता है, वह प्रत्यय कहलाता है जैसे—स्वतंत्र + ता = स्वतंत्रता आदि।

7. **1.** • अनुप्रास अलंकार • उपर्युक्त पंक्तियाँ 'वर दे!' पाठ से ली गई हैं। • इस कविता के कवि का नाम सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' है। • ताल-छन्द का आशय यह है कि 'कविता' करने के लिए किसी भी ताल अथवा छन्द की अनिवार्यता का होना आवश्यक है। यह साहित्य में रस का उद्गार करती हैं।

2. रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—(i) साधारण वाक्य, (ii) मिश्रित वाक्य, (iii) संयुक्त वाक्य।

3. मुफ्तानन्द जी मुफ्त खाकर मस्त रहते हैं। पैसा खर्च करना वे अपने आदर्श के विरुद्ध मानते हैं। वे अखबार पर भी खर्च नहीं करते। अपनी सन्तान की शिक्षा पर भी कोई खर्च नहीं करते। मुफ्त में प्राप्त की गई पुस्तकों में से वे अपने पुस्तकालय की शोभा बढ़ाते हैं। 'फ्री पास' से सिनेमा देखना वे अच्छा मानते हैं। औषधि तक वे मुफ्त ही प्राप्त करते हैं। यहाँ तक कि अपने मोक्ष के लिए भी वे मुफ्त का ही जुगाड़ ढूँढ़ने की बात कहते हैं।

4. तुलसीदास जी ने ''अपनपौ हारे'' इसलिए कहा है क्योंकि तुलसीदास जी भगवान राम के चरणों की भक्ति को त्यागकर किसी अन्य देवता की भक्ति नहीं करना चाहते हैं। जो भी देवता, दानव, मुनि, नाग और मनुष्य हैं, वे सब माया के वशीभूत हैं। अत: उन्हें ईश्वर की भक्ति का अनुभव नहीं हो सकता। इनसे किसी भी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है। उनके जैसा भक्त भगवान राम अलावा अन्य किसी की शरण में नहीं जाना चाहता।

5. यह दोहा छन्द है। इसके चार चरण हैं, जिसने पहले और तीसरे चरण में तेरह-तेरह और दूसरे तथा चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ हैं।

6. **नतमस्तक** – सिर झुकाकर।

वाक्य प्रयोग—मैंने पिता को नतमस्तक होकर प्रणाम किया।

आभामण्डित – कांति से सुशोभित।

वाक्य प्रयोग— लक्ष्मीबाई का आभामण्डित मुखमण्डल तेज बिखेर रहा था।

रंचमात्र – थोड़ा-सा, तनिक-सा।

वाक्य प्रयोग—बनवीर अपने कुकृत्य पर रंचमात्र भी लज्जित नहीं था।

जिजीविषा – जीवित रहने की इच्छा।

वाक्य प्रयोग—डॉ. चन्द्रा में उत्कट जिजीविषा थी।

जिह्वाग्र – जीभ पर।

वाक्य प्रयोग—आचार्य के जिह्वाग्र पर गीता-श्लोक रहते हैं।

पुष्पवेणी – फूलों की माला, जो स्त्रियाँ अपने बालें में गूँथती हैं।

वाक्य प्रयोग—देवाङ्गनाएँ प्राय: पुष्पवेणी करती हैं।

यातनाप्रद — कष्टदायक।

वाक्य प्रयोग—उसे यातनाप्रद परिस्थितियों ने निराश बना दिया।

7. भारत ने आर्यभट के अतिरिक्त अनेक कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में भेजे हैं। इनमें से भास्कर -I व II, रोहिणी, ऐरियन मैसेंजर, 1A; 1B, 1C, 1D, IRS-1A, 1B, इण्सेट 2A, 2B, 2C, 2D, 2E, ओसियन सेट, इण्सेट 3A, 3B, 3C, 3D, 3E, कल्पना-I, ऐड्सेट, इण्सेट -4A, 4B, 4C, 4D इत्यादि प्रमुख हैं।

8. छात्र स्वयं करें।

9. अब कैसे छूटै नाम रट लागी।
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी ज्योति बरे दिन राती॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रैदासा॥

9 बिरसा मुण्डा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. जीवन-वृत्त — जीवनी या जीवन परिचय।
जागृति — चेतना।
उद्धारक — उद्धार करने वाला, तारने वाला।
चौपट होना — बरबाद होना।
कारागार — जेल।
पथ — मार्ग, रास्ता।
मुग्ध — मोहित हो जाना।
प्रारम्भिक — शुरुआत की।
बियावान — निर्जन।
धूमिल — धूल में लिपटा हुआ, धूल-धूसरित हो जाना।
पीड़ादायी — कष्ट देने वाली।
उपासना — पूजा।
तत्कालीन — उस समय की।
शोषण — काम करने पर मजदूरी न दिया जाना।
उपचार — इलाज।
दासता — गुलामी।
नाद — स्वर।
सामान्य — साधारण।
सदी — शताब्दी।
कथन — कहावत, कहना।
बर्बरता — निर्दयता, क्रूरता।

2. **(क)** (1) झारखण्ड
(ख) (3) सूर्य

3. **(क)** क्योंकि उन्होंने वहाँ दासता का अनुभव किया तथा मुण्डा लोगों का शोषण देखकर उन्हें बहुत कष्ट हुआ।

(ख) बिरसा रोगियों का उपचार जड़ी-बूटियों से करते थे।

(ग) बिरसा गाँववासियों और आसपास के लोगों का जड़ी-बूटियों से इलाज किया करते थे तथा उन्हें स्वस्थ रहने के उपाय बताते रहते थे।

(घ) बिरसा की मृत्यु के बाद उपद्रव के भय से अंग्रेजों ने बिरसा का दाह-संस्कार सार्वजनिक रूप से नहीं होने दिया।

(ङ) बिरसा मुण्डा ने मुण्डाओं को अंग्रेजों के अत्याचारों से तथा शोषण से मुक्ति दिलाने तथा भारत को आजादी दिलाने के उद्देश्य से अपना आन्दोलन प्रारम्भ किया।

4. **(क)** बिरसा मुण्डा
(ख) भाले, तीर-कमान
(ग) लालच।

5. **(क)** हमें आज से सौ वर्ष पूर्व के आदिवासियों के जीवन से भारत की आजादी के लिए किए गए त्याग और बलिदान की जानकारी मिलती है। साथ ही यह भी पता चलता है कि मुण्डा भारत की प्रमुख जनजाति है, जो राँची और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में निवास करती है। मुण्डा जाति बहुत ही सरल जीवन बिताने वाली जाति है। वह अपने जीवनयापन के लिए पूर्णत: प्रकृति पर निर्भर करती है।
अन्य जनजातियों की भाँति मुण्डा समाज में भी काफी जागृति आ गई है। विदेशी दासता से मुक्त होने के लिए तत्कालीन उरांव, मुण्डा और

खड़िया जनजातियों ने बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे और जमकर विरोध किया था।

(ख) बिरसा मुण्डा आन्दोलन के निम्नलिखित कारण थे—

(i) मुण्डाओं की जमीन पर जमींदार और दलाल थोप दिये गये। (ii) उनके पंच-पंचायत समाप्त कर दिये गये। (iii) मुण्डा जाति को उनकी जमीन से बेदखल कर दिया गया था। (v) मुण्डा जाति के लोगों के जंगलों पर अंग्रेजी शासन ने अपने दलालों और लोगों को मालिक बना दिया। वे मालिक से नौकर हो गये। (vi) उन्हें बेगार में घसीटा जाता। उनका शोषण होता था। (vii) आर्थिक तंगी का मामला बिरसा मुण्डा के आन्दोलन का सबसे बड़ा कारण था। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी।

(ग) बिरसा मुण्डा का आन्दोलन अन्याय और शोषण के विरुद्ध तथा मानवता की रक्षा के लिए था। उन दिनों प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानियों में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, कुँवर सिंह आदि की वीरता की गाथाएँ लोगों के अंदर जुनून पैदा कर रही थीं।

बिरसा के नेतृत्व में मुण्डा और दूसरी जनजातियाँ भाले और तीर-कमान लेकर चारकाड़ गाँव में एकत्र हो गये। बिरसा को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध दंगा भड़काने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। सजा पूरी होने के बाद उन्होंने सामाजिक जागरण को स्वतन्त्रता-संग्राम का नाम दे दिया गया। बिरसा ने बैठकें शुरू कीं जिसकी सूचना शासन को लग गई और इनके विरुद्ध वारंट कट गया। इन्हें पकड़ने के लिए इनाम घोषित हुए। इनाम के लालच में कुछ देशद्रोहियों ने सोते हुए बिरसा को पकड़वा दिया। ऐसी घटनाओं से पता चलता है कि भारत जब भी विदेशियों से पराजित हुआ, तो देशद्रोहियों के कारण।

(घ) अंग्रेजों ने मुण्डा जनजाति के लोगों को खेतों से बेदखल कर दिया और उनके परम्परागत रहन-सहन तथा ग्रामीण व्यवस्था को अंग्रेजों ने नष्ट करके जमींदार, जागीरदार, जंगल के ठेकेदार और दलाल उन पर लाद दिए। वनवासी अपनी ही जमीन पर मालिक से नौकर हो गये। वे भूख और दमन से स्वयं को असहाय समझने लगे। ऐसी स्थिति में बिरसा मुण्डा ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। यह आन्दोलन अन्याय और शोषण के विरुद्ध था, मानवता की रक्षा के लिए था। मुण्डा समाज की दबी भावनाएँ उभरकर आ गईं। सामाजिक आन्दोलन ने राजनैतिक रूप धारण कर लिया था। बिरसा मुण्डा इन गतिविधियों के केन्द्रबिन्दु थे तथा उन्होंने अंग्रेजी शासन को समूल उखाड़ फेंकने को अपना उद्देश्य बना लिया।

(ङ) बिरसा मुण्डा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) एकता की भावना— बिरसा ने अपने समाज के लोगों को एकत्र किया, उनको संगठित करके अपनी भावना बतायी।

(ii) देशप्रेम की भावना— बिरसा बचपन से ही एक होनहार और देशभक्त बालक था। उसमें अपने समाज और देश के उत्थान के लिए सब कुछ कर गुजरने की तीव्र इच्छा थी। उसने लोगों को स्वतन्त्रता और अपने जीवन-मूल्यों को समझने की बात बतायी। जड़ी-बूटियों के द्वारा बीमारियों का इलाज करना सीखा, इससे उनमें स्वदेशी की भावनाओं की तीव्रता का पता चलता है।

(iii) स्वतन्त्रता की भावना—देश की आजादी के लिए उन्होंने जीवनभर संघर्ष किया। अंग्रेज सरकार के जुल्मों को सहा। उनका देश की आजादी का सपना पूरा तो नहीं हो सका, परन्तु लोगों में आजादी की चेतना जागृत कर दी।

भाषा-अध्ययन

1. आदेश, युवक, दण्ड, पुरस्कार, प्रस्तुत, स्वास्थ्य।

2.

पूर्ण शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
जीवन-वृत्त	जीवन का वृत्त	तत्पुरुष समास
शैशवकाल	शैशव का काल	तत्पुरुष समास
शंखनाद	शंख का नाद	तत्पुरुष समास
टीका-टिप्पणी	टीका और टिप्पणी	द्वन्द्व समास
जड़ी-बूटी	जड़ी और बूटी	द्वन्द्व समास
बहला-फुसला	बहला और फुसला	द्वन्द्व समास
गाँववासी	गाँव के वासी	तत्पुरुष समास

3.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
तत्कालीन	तत् + कालीन	व्यंजन संधि
उद्धारक	उत् + धारक	व्यंजन संधि
तन्मय	तत् + मय	व्यंजन संधि
सत्याग्रह	सत्य + आग्रह	स्वर संधि
युवावस्था	युवा + अवस्था	स्वर संधि

4. (अ) ता, (आ) बे, (इ) नीय, (ई) इक।

5.

शब्द	पर्यायवाची शब्द	गलत शब्द
रास्ता	मार्ग, रथ, पगडंडी, पथ	रथ
बच्चा	बाल, शिशु, काल, बालक	काल
पिता	जनक, पितृ, पितामह, तात	पितामह
सूर्य	रवि, शशि, भानु, दिनकर	शशि
जेल	बंदीगृह, आवास, कारागार, कारागृह	आवास

10 प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. रक्षक – रक्षा करने वाले।
ताम्रपत्र – ताँबे का पत्तर, स्मृति पत्र।
श्रद्धांजलि – मरने के बाद श्रद्धा प्रकट करने हेतु व्यक्त शब्द।
संवर्द्धन – वृद्धि, विकास।
शहीद – बलिदान।
प्रशस्ति – प्रशंसा।
उत्कृष्ट – उच्च कोटि का।

2. **(क)** सैनिकों की कुल्हाड़ी का सबसे पहले विरोध एक महिला अमृता देवी विश्नोई ने किया।

(ख) अमृतादेवी का नारा था–''सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण''।

(ग) विश्नोई समाज की स्थापना आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले सन् 1485 ई. में भगवान जम्भेश्वर ने की थी।

(घ) हिरणों की रक्षा में श्री निहालचन्द विश्नोई शहीद हुआ था।

(ङ) राजा अभयसिंह ने सैनिकों के दुष्कृत्य के लिए क्षमा माँगी तथा ताम्रपत्र पर राजाज्ञा जारी की गई कि विश्नोई गाँवों में कोई भी पेड़ नहीं काटेगा। यदि काटेगा तो राजदण्ड का भागी होगा।

3. **(क)** जोधपुर के राजा अभयसिंह को अपने महल निर्माण के लिए लकड़ी की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए उन्होंने अपनी सेना के कुछ सैनिकों को लकड़ी काटकर लाने का आदेश दिया। राजा के सैनिक जोधपुर के पास खेजड़ली गाँव पहुँचे। यह गाँव विश्नोइयों का था। विश्नोइयों ने कहा, ''हम परम्परा से वनों के रक्षक हैं। हमारे रहते पेड़ नहीं कट सकते।'' सैनिकों ने उनके विरोध की अनदेखी की। सैनिकों ने कुल्हाड़ी चला दी। अमृता देवी विश्नोई नामक महिला पेड़ों से लिपट गई और कहती रही, "सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण।" राजा की आज्ञा का पालन करना अपना धर्म मानते हुए सैनिकों ने अमृता देवी को ही काट डाला। इस बलिदान के देखकर सैकड़ों नर-नारी आगे आ गए और बारी-बारी कटते गए किन्तु एक भी पेड़ नहीं कटने दिया।

(ख) जब राजा के आदेश से सैनिक पेड़ काटने के लिए खेजड़ली गाँव पहुँचे थे तब अमृता देवी वृक्षों की रक्षा हेतु उन्हें काटने से रोकने के लिए, सैनिकों से निवेदन कर सकती थीं तथा अपनी बात को राजा के पास जाकर विरोध के रूप में कह सकती थीं और पेड़ों के न काटने के लिए अपनी परम्परा को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकती थीं।

(ग) पेड़ों की आवश्यकता सभी को है, दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण से अपनी रक्षा के लिए हमें पेड़ लगाने होंगे और उनकी रक्षा करनी होगी। अतः अमृता देवी का नारा, ''सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण'' सार्थक हो गया। अमृता देवी और तीन सौ बासठ शहीदों के बलिदान की स्मृति में भारत सरकार प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार देती है। मध्य प्रदेश का वन विभाग प्रतिवर्ष वन-संवर्द्धन एवं वन रक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली ग्राम पंचायत अथवा संस्था को शहीद अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार और एक लाख रुपया नकद प्रदान करता है। इस प्रकार उनका नारा सार्थक सिद्ध हुआ है।

(घ) जब जोधपुर के राजा अभयसिंह को विश्नोई समाज के बलिदान सम्बन्धी भीषण

घटना का समाचार मिला तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। वे स्वयं खेजड़ली गाँव पहुँचे और सेना के द्वारा किए गये दुष्कृत्य के लिए क्षमा माँगी। उन्होंने ताम्रपत्र जारी किया। उसमें राजाज्ञा जारी की गई कि विश्नोई गाँवों में कोई पेड़ नहीं काटेगा। यदि काटेगा तो राजदण्ड का भागी होगा। इस प्रकार राजा द्वारा पश्चाताप किया गया।

(ङ) अमृता देवी व अन्य शहीदों से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वनों की सुरक्षा करनी चाहिए। उनके संवर्द्धन और विकास में रुचि लेनी चाहिए। वन्य जीवों की सुरक्षा और उनकी प्रजातियों का विकास करना चाहिए। प्रत्येक राज्य सरकार को वृक्षारोपण और वन सम्पदा के विकास और सुरक्षा के लिए अपनी ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार घोषित किये जाने चाहिए तथा वृक्षारोपण करने का अभियान चलाना चाहिए।

4. **(क)** (उ) इन सबके सम्मिलित प्रभाव वाली प्रथा पर

(ख) (आ) अमृता देवी विश्नोई

(ग) (आ) तरु

(घ) (अ) 362

(ङ) (आ) शौर्य चक्र से

भाषा-अध्ययन

1. मूक, रंक, सम्मानित, रक्षक, शोक, अक्षम्य, अहिंसा, अहित, सुखी, समर्थन।

2. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

- महापुरुष के जन्मदिन पर लोगों ने श्रद्धांजलि दी।
- हम देशवासी देश की सेवा करने का संकल्प लेते हैं।
- निहाल चन्द को मरणोपरान्त शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया।
- मध्यप्रदेश में अमृता देवी का वृक्ष संरक्षण कार्यक्रम बड़ा ही प्रासंगिक है।
- भगवान जम्भेश्वर ने प्रकृति के उनतीस नियमों के पालन की शिक्षा दी।

3.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
वृक्षारोपण	वृक्ष + आरोपण	स्वर संधि
एकमेव	एकम् + एव	स्वर संधि
राजाज्ञा	राजा + आज्ञा	स्वर संधि
मरणोपरान्त	मरण + उपरांत	स्वर संधि
वातावरण	वात + आवरण	स्वर संधि

4.

समास पद	समास-विग्रह	समास का नाम
ताम्रपत्र	ताम्र का पत्र	तत्पुरुष
राजदण्ड	राजा का दंड	तत्पुरुष
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष होने वाला	अव्ययी भाव
ग्रामपंचायत	ग्राम की पंचायत	तत्पुरुष
शौर्यचक्र	शौर्य का चक्र	तत्पुरुष

5.

पूर्ण शब्द	उपसर्ग + शब्द
गैरसैनिक	गैर + सैनिक
पर्यावरण	परि + आवरण
सम्मान	सम् + मान
प्रशस्ति	प्र + शस्ति
प्रदूषण	प्र + दूषण
संवर्द्धन	सम् + वर्द्धन

6.

उद्देश्य	विधेय
(क) भगवान जम्भेश्वर	द्वारा हरे-भरे वृक्षों को बनाए रखने की प्रेरणा दी गई थी।
(ख) विश्नोई समाज	ने वनों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
(ग) भारत सरकार	प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार देती है।

11 गिरधर की कुण्डलियाँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. **(1)** दौलत = सम्पत्ति। ठाँऊ = स्थान, स्थिर। पाहुन = अतिथि, मेहमान। निदान = अन्त, उपचार। निस = रात। अभिमान = घमण्ड। जस = यश। जग = संसार, दुनिया। जियत = जीवित रहते हुए, जीते हुए।

(2) गाहक = ग्राहक, ग्रहण करने वाला। कोकिला = कोयल। सहस = हजार। बिनु = बिना। लहै = प्राप्त करते हैं। ठाकुर मन के = मन के मालिक, मन के स्वामी।

(3) ताहि = उसको। खता = चूक, गलती, कमी। परतीती = विश्वास, भरोसा। सुधि लेइ = खोज-खबर लेनी चाहिए, सोच-समझकर आचरण करना चाहिए। बिसारि दे = भुला दे।

2. **(क)** हमें दूसरे व्यक्तियों से मीठे वचन बोलने चाहिए।

(ख) कोयल सबको अच्छी लगती है क्योंकि वह मिठास भरी बोली बोलती है।

(ग) धनी व्यक्ति को अपने धन का घमण्ड न करने को कहा है।

(घ) 'गुन के गाहक' से आशय है कि गुण को ग्रहण करने वाले सभी होते हैं। गुणरहित वस्तु को कोई भी स्वीकार नहीं करता है।

(ङ) कवि ने बीती ताहि.... कहकर लोगों को यह सलाह दी है कि जो बात (घटना) घट चुकी है, उसे भुला देने में ही भलाई है।

3. धन को चंचल बताया गया है, कभी आ जाता है, तो कभी चला जाता है। सम्पत्ति किसी के पास सदा के लिए नहीं रहती। यह तो बहते हुए जल के समान होती है। जल एक स्थान पर कभी स्थिर नहीं रहता उसी तरह धन कभी भी एक व्यक्ति के पास नहीं रहता। यह धन तो चार दिन-रात का मेहमान होता है। अतः मीठा बोलकर, सबके साथ विनयपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। धन पर घमण्ड करना व्यर्थ का सौदा है। अतः धन पाकर हमें अभिमान नहीं करना चाहिए।

(ख) कोयल की वाणी को सभी लोग सुनते हैं उसकी वाणी सभी को अच्छी लगती है, सुहाती है। अपनी कर्कश बोली के कारण कौआ सबके द्वारा अपवित्र और त्याज्य माना गया है। कोयल की वाणी मीठी होने से सब लोगों द्वारा उसकी मिठास की प्रशंसा की जाती है। इस संसार में गुणों की पूजा होती है, अवगुणों की नहीं।

(ग) घटित घटना से हमें निराश और हतोत्साहित नहीं हो जाना चाहिए। आगे के कार्य को सोच-समझकर, मन लगाकर करना चाहिए। फिर जो आसानी से हो सके उसे करना चाहिए। मन लगाकर काम करने से उसमें सफलता मिलती है। दुष्ट व्यक्ति भी फिर हँसी नहीं उड़ा पाते। मन में पक्का विश्वास करके अपने काम में जुट जाना चाहिए। भविष्य में सुख प्राप्ति की आशा होती है। अतः बीती बातों को भुला देने में ही लाभ है।

4 'लोक व्यवहार की बातें' इन कुण्डलियों में हैं। जिनके उदाहरण निम्नवत् हैं—

• दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान।
किसी भी व्यक्ति को अपने धन का घमण्ड स्वप्न में भी नहीं करना चाहिए। यह धन कभी आ जाता है तो कभी चला जाता है।

• मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजै।
हमें मीठे वचन बोलने चाहिए। मधुर व्यवहार से और विनयपूर्वक बोलने से हमें संसार में यश की प्राप्ति होती है। जो लोग मधुर वाणी का व्यवहार नहीं करते, वे निश्चय ही घाटे का सौदा करते हैं।

• पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।
धन का घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि धन सदा किसी के पास नहीं रहता। यह मेहमानों की तरह थोड़े समय के लिए सबके पास आता है।

• बीती ताहि बिसारे दे, आगे की सुधि लेइ।
घटित घटना को भुलाने में ही भलाई है। भविष्य को बेहतर बनाने की भावना से उचित व्यवहार की बात को सोच-समझकर बीती बात भुला देनी चाहिए।

5. **(क)** **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी (भाषा भारती) कक्षा 8 में संकलित पाठ 'गिरधर की कुण्डलियाँ' से ली गई हैं। इसके कवि गिरधर जी हैं।

भावार्थ—महाकवि गिरधर जी कहते हैं कि गुणों के ग्रहण करने वाले तो हजारों लोग होते हैं। बिना गुण की वस्तु को कोई भी नहीं लेता। जिस तरह कौआ और कोयल के शब्द को सुनते तो सभी हैं लेकिन कोयल की वाणी सभी को अच्छी लगती है। इन दोनों का रंग एक-सा होता

है, परन्तु सभी कौए को अपवित्र मानते हैं। कवि गिरधर जी कहते हैं कि हे मन के स्वामी! आप सभी इस एक बात को सुन लीजिए कि कोई भी व्यक्ति बिना गुण वाली वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहता। गुणकारी वस्तु के हजारों लोग ग्राहक होते हैं।

(ख) सन्दर्भ—पूर्ववत्।

भावार्थ—बीती बात को भुला देने में ही भलाई है। जो काम आसानी से हो सके, उसमें ही अपने मन को लगाना चाहिए। जो भी बात (काम) बन सके (हो सके) तो उसे ही मन लगाकर करना चाहिए। कविवर गिरधर कहते हैं कि हरेक काम को मन में विश्वास के साथ कीजिए। भविष्य में होने वाले सुख की बात को समझकर उस बीत चुकी बात को भुला दीजिए।

भाषा-अध्ययन

1. स्वप्न, सहस्र, शब्द, गुण, प्रतीति, जीवित, ग्रहणकर्ता।

2. अनुप्रास अलंकार।

3. लीजै-कीजै
तौलत-दौलत
सुहावन-अपावन
देइ-लेइ
पावै-आवै।

4. अनुस्वार के प्रयोग वाले शब्द—पंच, गंज, पंक, पंत, कंस।
अनुनासिक के प्रयोग वाले शब्द—जाँच, आँच, आँख, नदियाँ, फलियाँ।

5. ।ऽ ।ऽऽ ऽ।ऽ ऽ ऽऽ ।।ऽ।
(24 मात्राएँ)

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगारो आपनों, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै।
खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना विचारे॥
खान-पान सम्मान, राग-रंग मनहि न भावै।
कह गिरधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे।

6.

शब्द	पर्यायवाची शब्द
दौलत	सम्पदा, धन
संसार	लोक, जग
अभिमान	गर्व, दर्प
पाहुन	अतिथि, मेहमान

12 याचक और दाता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. याचक — माँगने वाला।
धरोहर — वह वस्तु या द्रव्य जो दूसरों के पास कुछ समय के लिए दूसरे के पास इस विश्वास से रखी जाए कि माँगने पर उसी रूप में मिल जाएगी।
वात्सल्य — बच्चों के प्रति प्रेम।
हतप्रभ — आश्चर्यचकित।
गुहार = पुकार।
शंका — सन्देह।
जिजीविषा — जीवित रहने की इच्छा।
निस्तब्ध — बिना हिले-डुले।
सहानुभूति — हमदर्दी, संवेदना।

2. **(क)** वृद्धा मन्दिर के पास फूलों की माला बेचा करती थी।

(ख) सेठ बनारसीदास के यहाँ जरूरतमन्दों की भीड़ लगी रहती थी।

(ग) वृद्धा सेठजी के पास जमा अपनी हाँड़ी से कुछ रुपये माँगने के लिए गई थी।

(घ) सेठजी ने अपने बच्चे की पहचान उसकी जाँघ पर बने लाल निशान को देखकर की।

(ङ) बच्चा दवाओं के प्रभाव से होश में आने लगा। किन्तु वृद्धा माँ के बिना वह बच्चा फिर से बीमार पड़ गया।

3. **(क)** निस्तब्ध
(ख) ममत्व
(ग) मकरन्द
(घ) हतप्रभ
(छ) जिजीविषा।

4.

(अ)	(आ)	(इ)
फूल	दाता	फूल-फुलवारी
याचक	ममता	याचक-दाता
माँ	फुलवारी	माँ-ममता
मंदिर	मानवता	मंदिर-पूजा
मानव	पूजा	मानव-मानवता

5. **(ख)** किसी का बिछुड़ा बच्चा पाकर वृद्धा पहले से अधिक मेहनत करने लगी थी। बच्चे की वजह से वह अपने घर शीघ्र लौटने लगी। बच्चा माँ के

प्यार को प्राप्त करके बहुत ही प्रसन्न था। वह उसके भविष्य के सपने बुनने लगी। वह उसे हर तरह खुश रखना चाहती थी। इससे उसे लग रहा था कि मानो उसे उसकी मंजिल मिल गई हो।

(ख) मोहन उसी नगर के सेठ बनारसीदास का इकलौता बेटा था। बचपन में वह अपने माँ-बाप से बिछुड़ गया था। उस वृद्धा ने अपने पास रखकर उसका पालन-पोषण किया था। माँ की ममता पाकर वह अपने माता-पिता को भूल गया। उस वृद्धा ने बड़े वात्सल्य से उसका पालन-पोषण और परवरिश की। वृद्धा भी अब बच्चे के बिना एक क्षण नहीं रह पाती थी। इस तरह वह बच्चा वृद्धा के पास आया।

(ग) वृद्धा से जब सेठजी ने बच्चे को प्राप्त कर लिया और वृद्धा रोती हुई वहाँ से चली गई तब सेठ ने उसका अच्छे डॉक्टर से इलाज कराया। दवा के प्रभाव से कुछ होश आने पर बच्चे ने 'माँ' को पुकारा। माँ को न पाकर बच्चे की हालत फिर से खराब हो गई। सेठजी वृद्धा के घर पहुँचे, वृद्धा से अनुनय-विनय किया और पैर पकड़कर बोले—''ममता की लाज रख लो।'' माँ का ममत्व जाग उठने पर वृद्धा सब बीती बातें भूल गई। वह सेठ के साथ चलकर बच्चे के पास पहुँची तथा बच्चे के ऊपर हाथ फेरा। माँ के ममता भरे हाथ का स्पर्श पाकर बालक सचेत हुआ और इस प्रकार उस बालक को ज्वर से मुक्ति मिली।

(घ) सेठ के अनुनय-विनय तथा याचना करने पर वृद्धा सेठ की कोठी पर गई। वृद्धा ने सेठजी के घर जाकर मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन ने हाथ को पहचान कर तुरन्त आँखें खोल दीं। उसने मोहन का सिर गोद में रखा, थपथपाया। इससे मोहन को नींद आ गई। कुछ दिन बाद मोहन स्वस्थ हो गया। जब वह वृद्धा माँ वापस लौटने लगी तो सेठजी ने उससे मोहन के पास ही रुक जाने की याचना की, लेकिन वह नहीं मानी तथा जब सेठजी ने हाँडी के रुपये लौटाना चाहा तो वृद्धा ने कहा कि यह तो मैंने मोहन के लिए जमा किये थे। उसी को दे देना।

यहाँ वृद्धा माँ का ममत्व सेठ बनारसीदास के धन से अधिक गरिमावान सिद्ध हुआ। इस तरह सेठजी याचक थे और वृद्धा माँ दाता सिद्ध हुई।

(ङ) सेठजी और वृद्धा के चरित्र में से मुझे वृद्धा का चरित्र अच्छा और सराहनीय लगा। वृद्धा के चरित्र की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) वात्सल्यपूर्ण माँ की ममता-वृद्धा में बच्चे के प्रति प्रेम और उसकी ममता भरी हुई है। उसका खुद का बच्चा न होने के उपरांत भी वह उससे दूर नहीं रहना चाहती।

(2) कर्तव्यपरायणता-वृद्धा बच्चे की हर तरह से परवरिश करती है। विपरीत परिस्थिति में भी अपने ध्येय में लीन होकर उत्तरदायित्व को निभाती है। अंततः अपनी गाढ़ी कमाई को भी वह उसे ही सौंप देती है।

(3) त्याग और उदारता की प्रतिमा-वृद्धा त्याग की साक्षात् मूर्ति है। इकट्ठे किये गये हाँड़ी के धन को सेठ को ही सौंपकर धन्य होती है। सेठजी के बच्चे का पालन-पोषण अपने-तेरे की भावना से ऊपर उठकर करती है।

भाषा-अध्ययन

1. (i) वृद्धा दर्शन करने वालों को पुकारती कहती-"ये फूल चढ़ावा तो लेते जाओ।"

(ii) वृद्धा ने हाँडी सेठजी को सरकाते हुए कहा-"सेठजी, इसे जमा कर लें। मैं इसे कहाँ रखती फिरूँगी।"

(iii) सेठजी ने मुनीम से कहा-"इसे बहीखाते में इसके नाम में जमा कर लो।"

(iv) वृद्धा ने विनम्र भाव से कहा-"मेरा बच्चा बहुत बीमार है। मेरी जमा हाँडी से मुझे कुछ रुपये मिल जाएँ तो मैं डॉक्टर को दिखाकर उसका इलाज करा लूँ।"

(v) वृद्धा ने कहा-"हाँ बेटा तुम्हें छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ?"

2. **टस-से-मस न होना**—एक स्थान से न हटना।
वाक्य-प्रयोग—धरने के लिए बैठे किसान, धरना स्थल से टस से मस नहीं हुए। .

हाथ-पाँव फूल जाना—घबरा जाना।
वाक्य-प्रयोग—बच्चे के बीमार हो जाने पर, माता-पिता के हाथ-पाँव फूल गये।

चंगुल में दबाना—कब्जे में कर लेना।
वाक्य-प्रयोग—भेड़िए ने बकरी को पूरी तरह चंगुल में दबा रखा था।

ताँता बाँधना—लगातार बढ़ते जाना।
वाक्य-प्रयोग—मिठाई की महक पाकर चींटियाँ ताँता बाँधकर आगे-ही-आगे बढ़ने लगीं।

जान में जान आना—चैन पड़ना।
वाक्य-प्रयोग—कुत्ता जब शिकारी कुत्तों से जान

बचाकर अपने इलाके में पहुँच गया तब उसकी जान में जान आई।

3. संज्ञा तथा क्रिया रूप में वाक्य प्रयोग—

(i) मेले में याचक हाथ फैलाए खड़े हुए थे।

(ii) याचक बार-बार लोगों से याचना करते हैं।

(iii) दाता के लिए तो सभी याचक समान हैं।

(iv) सच्चा दाता वही है जो दान देना जानता है।

4. **इया** ⇒ दुख + इया = दुखिया। सुख + इया = सुखिया। बन + इया = बनिया। लख + इया = लखिया। लिख + इया = लिखिया। धन + इया = धनिया।

वाला ⇒ दूध + वाला = दूधवाला, फल + वाला = फलवाला, पान + वाला = पानवाला, दुकान + वाला = दुकानवाला, घर + वाला-घरवाला।

5. **अ** ⇒ अ + शुभ = अशुभ। अ + शुद्ध-अशुद्ध। अ + पवित्र = अपवित्र। अ + पावन = अपावन। अ + चल-अचल।

वि ⇒ वि + कार = विकार। वि + नाश = विनाश। वि + लीन = विलीन। वि + लाप = विलाप। वि + लोप = विलोप।

6. **(अ)** उपयुक्त शीर्षक-'सिद्धार्थ और देवदत्त'।

(आ) घायल हंस को सिद्धार्थ ने उठा लिया था।

(इ) देवदत्त हंस को इसलिए माँग रहा था क्योंकि उसने हंस को तीर से घायल कर दिया था। उसका कहना था कि घायल किये जाने से हंस पर उसका अधिकार है।

(ई) राजा ने यह कहते हुए हंस सिद्धार्थ को सौंप दिया कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

(उ) राजा — नृप, भूप।
दिन — दिवस, वासर।
तीर — बाण, सायक।
प्यार — प्रेम, स्नेह।

13 न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. दहलती — डर से काँपती।
विसर्जन — त्याग करके, छोड़ करके।
संवत्सर — वर्ष, सम्वत्।
कर — हाथ।
लहू — खून।
नारीत्व — स्त्री की शक्ति, नारीपन।
लोलुप — लालची।
तेग — बड़ी तलवार।
सिहरती — रोमांचित।
रण — युद्ध।
मुक्ति — आजादी।
हुंकार — गर्जना।
पुरुषत्व — पुरुष की शक्ति।
चरणाघात — पैरों की चोट।
क्षार — राख।
रण बाँकुरी — युद्ध करने में कुशल।

2. **(क)** भारतीय राजा पुरु की वीरता को सुनकर सिकन्दर की छाती दहलती थी।

(ख) नव संवत्सर महाराज विक्रमादित्य ने प्रारम्भ किया था।

(ग) शिवाजी ने मुगल शासक औरंगजेब के विरुद्ध तलवार उठाई थी।

(घ) विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले दो महापुरुष स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी थे।

(ङ) सिकन्दर यूनान के मकदूनियाँ का रहने वाला एक लुटेरा शासक था।

3. (क) **'तलवार सोई है'** से यह आशय है कि देश के वीर सैनिकों ने अपनी तलवारें रख दी हैं। हिन्दुस्तानी सैनिक अपनी आन, बान और शान की रक्षा के लिए इसे किसी समय उठाये रहते थे। ऐसा नहीं है कि यह तलवार हमेशा सोती रहेगी। भारत के वीर सपूतों की तलवार ने सदा ही शत्रु आक्रमणकर्ताओं का मुकाबला किया है और उन्हें भयभीत करके देश की सीमाओं से बाहर खदेड़ दिया है। इस प्रकार उन भारतीय वीरों की तलवारें सदा सोने वाली नहीं हैं।

(ख) हर्षवर्द्धन की राजधानी कन्नौज थी। वे हिन्दुस्तान के महान राजा हुए। उन्होंने हिन्दुस्तान की सीमाओं को सुरक्षित किया। विदेशी आक्रमणकर्ताओं-हूण, शक आदि आक्रान्ताओं को वहाँ से खदेड़ दिया। प्रजा पर विश्वास जमाया तथा देश के अन्दर शिक्षा, उद्योगों और कृषि को उन्नत बनाया। इस प्रकार वे महान्

कार्यों के लिए भातीय इतिहास में सदैव प्रसिद्ध रहेंगे।

(ग) हम दूसरे देश की मान-मर्यादा पर आक्रमण करने वाले नहीं रहे हैं, परन्तु यदि किसी लालचभरी दृष्टि वाले देश ने हमारी आजादी को ललकारा अथवा हमारे राष्ट्र की सीमाओं को तोड़ा अथवा अपनी कुदृष्टि से देश को आघात पहुँचाया तो हमारे रणबाँकुरे वीर सैनिक हुँकार भर उठेंगे। उस आक्रमणकारी शत्रु को सब प्रकार से नष्ट करके खदेड़ देंगे, देश के सम्मान की रक्षा के लिए युद्ध करेंगे।

(घ) दिल्ली के सम्राट अलाउद्दीन खिलजी ने एक विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर हमला किया। उस समय युद्ध में वीर भारतीय रणबाँकुरों ने देश की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। उनके इस महान् बलिदान की खबर पाकर राजपूत स्त्रियों ने अपने सम्मान और सतीत्व की रक्षा के लिए रानी पद्मिनी के साथ सोलह हजार वीरांगनाओं ने जलती हुई आग में सामूहिक रूप से कूदकर स्वयं को जला दिया। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है। उन राजपूत वीर क्षत्राणियों का यह महाबलिदान जौहर के नाम से जाना जाता है।

(ङ) इस कविता से हमें यह सन्देश मिलता है कि भारतीय सैनिक देश की सीमाओं के सम्मान की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहते हैं। हर्षवर्धन का त्याग और वीरता, विक्रमादित्य का शिक्षा-प्रेम और भारतीय संस्कृति के विकास की स्मृति हमें सन्देश देती है कि हमें सदैव ही अपनी सांस्कृतिक विरासत को सम्पन्न बनाकर उसकी रक्षा करनी है। देश के ऊपर विदेशी आक्रान्ताओं से अन्तिम श्वास तक लड़ते हुए अपनी आजादी की रक्षा करनी चाहिए। देश की आन, बान और शान की रक्षा के लिए भारतीय पुरुषों ने ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी अपने कदम कभी पीछे नहीं रखे।

4. **(क) सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक भाषा भारती-8 में संकलित पाठ 'न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है' से अवतरित है। इसके कवि रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल' जी हैं।

भावार्थ—कवि कहता है कि हम नागरिकों ने अपने देश की सीमा को विस्तृत करना कभी नहीं चाहा है। साथ ही, हम भारतवासियों ने किसी अन्य देश की धन-सम्पत्ति पर भी हक जमाने की इच्छा नहीं की है। किन्तु यह बात कहने से हम भारतीय कभी नहीं चूके और न ही चूकेंगे कि हम खून दे सकते हैं, लेकिन अपने प्रिय देश भारत की भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं देंगे। यदि किसी लालच भरी दृष्टि वाले देश ने हम पर आक्रमण करने की अथवा हमारे देश की आजादी को कुचलने की कोशिश की तो तत्काल ही विनाश की वह आग फूट पड़ेगी जो राख के अन्दर छिपी है अर्थात् हम समय आने पर अपनी वीरता का परिचय देते हैं।

(ख) सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक भाषा भारती-8 में संकलित पाठ 'न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है' से अवतरित है। इसके कवि रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल' जी हैं।

भावार्थ—यह हिन्दुस्तान वह देश है जहाँ आज तक बीते हुए वर्षों से इसकी प्रशंसा के गीत गाये जाते रहे हैं। हिन्दुस्तान के नाम पर ही अर्थात् हिन्दुस्तान के गौरव के लिए ही मेवाड़ के राणा प्रताप ने अपनी अन्तिम श्वास तक (मृत्यु पर्यन्त) भीषण युद्ध किया था तथा चित्तौड़ ने भी हिन्दुस्तान के नाम पर जौहर की परम्परा चलाई थी। अरे शत्रुओ ! तुम्हें भी यह नहीं समझ लेना चाहिए कि भारतवर्ष के वीरों की धमनियों के अन्दर बहने वाली रक्त (लहू) की धारा सो गई है।

5. **(अ)** भारतीय योद्धाओं की तलवार के कठोर प्रहारों के विषय में सुनकर शत्रुओं की सेना भय से काँपते हुए तितर-बितर हो जाती थी। हिन्दुस्तानी वीर रण-बाँकुरों की तेज तलवार की चोटों से आकाश की छाती आज भी नीली पड़ी हुई है। किसी को भी यह न समझ लेना चाहिए कि युद्ध में हिन्दुस्तानी वीर सैनिकों की हुँकार (गर्जना) सो चुकी है।

(ब) हम हिन्दुस्तानियों ने ही सदैव संसार को शान्ति का सन्देश दिया है। इसका यह अर्थ नहीं लगा लेना चाहिए कि हम अपमान को सह लेंगे। जब धरती पर पैरों के नीचे दबी धूल भी पैरों की ठोकर खाने पर आकाश में उमड़कर चारों ओर छा जाती है तो हम महापुरुषों की वीर संतानें अपमानित होकर कैसे चुप बैठ सकती हैं अर्थात् हमारे देश का कण-कण पौरुष से भरा पड़ा है।

(इ) भारत देश ने कभी भी अपनी सीमा को विस्तृत करना नहीं चाहा है। साथ ही, हमने किसी अन्य देश की धन-सम्पत्ति पर भी अपना कब्जा जमाने की इच्छा नहीं रखी है, परन्तु हम अपने प्रिय देश की जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं देंगे।

(ई) कवि कहता है कि तलवार से युद्ध करने में चतुर योद्धाओं की कहानी सुनकर सिकन्दर की छाती भी डर से काँप उठती थी। भारतीय वीरों की तलवार से किए जाने वाले युद्ध की भयंकरता के विषय में सुनते ही बाबर के हाथों से उसकी तलवार छूटकर गिर पड़ती थी। हिन्दुस्तानी वीर रण-बाँकुरों की तेज तलवार की चोटों से आकाश की छाती भी नीली पड़ी हुई है। किसी को भी यह न समझ लेना चाहिए कि युद्ध में हिन्दुस्तानी वीर सैनिकों की हुंकार सो चुकी है।

भाषा-अध्ययन

1. **आगत शब्द**—फौजें, लहू, इंसान, लाचार, मगर।
   हिन्दी शब्द—मनुष्य, असहाय, यद्यपि, सेनाएँ, रुधिर।
2. आकाश — नभ, व्योम।
   रण — संग्राम, युद्ध।
   लहू — रुधिर, रक्त।
3. • अहिंसा का जवाब हिंसा नहीं हो सकता।
   • राहुल ने पूरी कविता के अर्थ का अनर्थ कर दिया।
   • शान्ति की स्थापना अशान्ति के बाद होती रही है।
   • जलती आग को पानी बुझा देता है।
4. (i) सती + त्व = सतीत्व
   (ii) मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व
   (iii) देव + त्व = देवत्व।
5. (i) कभी छाती सिकन्दर की, तेग बाबर की।
   (ii) सिहरती थीं, उभरती थीं।
   (iii) हर्ष और विक्रम, संवत्सरों का क्रम।
   (iv) शिवाजी ने, राणा प्रताप ने।
   (v) हमारे देश ने विस्तार चाहा है, अधिकार चाहा है।
   (vi) न चूके हैं, न चूकेंगे, माटी नहीं देंगे।
6. "न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है", प्रस्तुत कविता वीर रस से युक्त है। वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' होता है।

14 नव संवत्सर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. नव संवत्सर — एक वर्ष की अवधि का समय।
   मत्स्य — मछली।
   उत्सव — पर्व, त्योहार।
   कार्तिकादि — कार्तिक माह से प्रारम्भ होने वाला।
   अमान्त — अमावस्या को समाप्त होने वाला पक्ष।
   शृंगार — सजावट, सजाना।
   जयन्ती — जन्मदिन।
   पीर — संत, महात्मा।
   सृष्टि — रचना, बनाना।
   वध — मार देना, नष्ट कर देना।
   चैत्रादि — चैत्र माह से शुरू होने वाला।
   पूर्णिमान्त — पूर्णमासी को समाप्त होने वाला पक्ष।
   ऋतु — मौसम।
   सम्वर्द्धन — विकास, वृद्धि, बढ़ोत्तरी।
   आततायी — अत्याचारी।
2. **(क)** नव संवत्सर से तात्पर्य है-नये वर्ष का प्रारम्भ। यह नव संवत्सर चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होता है।
   (ख) गुड़ी का अर्थ है 'ध्वज या झण्डी' और पड़वा का अर्थ है 'प्रतिपदा'। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा कहा जाता है।
   (ग) उज्जयिनी के महान् सम्राट् विक्रमादित्य ने विक्रम संवत् आरम्भ किया। विक्रम संवत् ईसा के ईसवी सन् से 57 वर्ष पहले शुरू होता है।
   (घ) बसन्त ऋतु का आगमन चैत्र माह में होता है।
   (ङ) दक्षिण भारत में विक्रम संवत् का प्रारम्भ कार्तिक मास से होता है।
3. **(क)** झूलेलाल।
   (ख) अधिक।
   (ग) चैत्र, कार्तिक।

4. **(क)** संवत्सर का उपयोग समय की गणना के लिए एक वर्ष की अवधि के अर्थ में किया जाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद आदि प्राचीन ग्रन्थों में भी संवत्सर का एक काल-चक्र के रूप में उल्लेख है। जिस प्रकार हमारे यहाँ दिनों और महीनों के नाम दिए गए हैं, उसी प्रकार संवत्सरों का भी नामकरण किया गया है। ये साठ वर्ष बाद पुनः एक चक्र के रूप में आते रहते हैं। विक्रम संवत 2063 का नाम विकारी नामक संवत्सर है। इसके पहले के दो संवत्सरों के नाम 'हेमलम्ब नाम' और 'विलम्ब नाम संवत्सर थे।

(ख) भगवान झूलेलाल साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता के प्रतीक हैं। उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए समानता के आधार पर स्थापित धर्म की सराहना की और धर्म के सच्चे स्वरूप का विवेचन कर लोगों को सही आचरण करने की सलाह दी। उन्होंने तत्कालीन मुस्लिम शासकों को कट्टरपंथी रुख न अपनाने हेतु निवेदन किया। उन्होंने बताया कि सत्य एक है, ईश्वर एक है, अल्लाह एक है किन्तु नाम व रूप अनेक हैं। भगवान झूलेलाल ने सभी लोगों को विनम्रता और अपने कर्त्तव्य धर्म का पालन करने का उपदेश दिया। ऐसा माना जाता है कि भगवान झूलेलाल की पूजा-अर्चना करने से मन की अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

(ग) धरती सूर्य की परिक्रमा 365¼ दिन में पूरा करती है। यह अवधि एक नक्षत्र सौरवर्ष कहलाती है जबकि चन्द्रवर्ष लगभग 354 दिन का होता है। इसे 360 तिथियों में बाँटते हैं। सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष में सामंजस्य बनाने के लिए प्रत्येक 32 या 33 चन्द्रमासों के बाद एक अतिरिक्त चन्द्रमास जोड़ दिया जाता है। इस अतिरिक्त मास को अधिक मास या मलमास या लौंद का महीना कहते हैं। जिस वर्ष लौंद का महीना होता है, उस वर्ष चन्द्र वर्ष 13 महीने का होता है।

(घ) चन्द्रवर्ष में लगभग 354 दिन होते हैं। इसे 360 तिथियों में बाँटते हैं। सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष में सामंजस्य बनाने के लिए प्रत्येक 32 या 33 चन्द्रमासों के बाद एक अतिरिक्त चन्द्रमास जोड़ दिया जाता है। इस सौर वर्ष के ही कारण ऋतुओं में परिवर्तन होता है। सौरवर्ष में बारह महीने होते हैं जबकि चन्द्रवर्ष में तेरह महीने होते हैं।

(ङ) विक्रम संवत् के अनुसार वर्ष के महीनों के नाम निम्न प्रकार हैं—चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (क्वार), कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

(च) विक्रम संवत् की प्रथम तिथि को गुड़ी पड़वा के नाम से जाना जाता है। इस दिन से भारतीय नववर्ष या संवत्सर शुरू होता है। इसे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भी कहा जाता है। कहते हैं प्रजापति ब्रह्मा ने इसी तिथि को सृष्टि का सृजन किया। भगवान विष्णु ने भी इसी तिथि को मत्स्यावतार धारण किया था। साथ ही यह भी कहा जाता है कि सतयुग का भी प्रारम्भ इसी तिथि को हुआ था। इसी प्रतिपदा के दिन भगवान श्री रामचन्द्रजी ने किष्किन्धा के राजा बाली का वध कर स्वेच्छाचारी राज्य का अन्त किया था। इस प्रकार इस तिथि से अनेक प्रसंग जुड़े हुए हैं।

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

- **चैत्र**—भारतीय महीनों का प्रारम्भ चैत्र मास से होता है।
- **पौराणिक**—भारतवर्ष में अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं।
- **किष्किंधा**—किष्किंधा में बाली का शासन था।
- **ऋग्वेद**—ऋग्वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।
- **अथर्ववेद**—अथर्ववेद की रचना अंगिरा ऋषि ने की थी।
- **पूर्णिमा**—पूर्णिमा के दिन चाँद अपने पूरे आकार में होता है।
- **विक्रमादित्य**—विक्रमादित्य उज्जैन के शासक थे।
- **स्वेच्छाचारी**—लंका का राजा रावण स्वेच्छाचारी शासन चलाता था।

2. प्रसंग + इक = प्रासंगिक
समाज + इक = सामाजिक
परिवार + इक = पारिवारिक
नीति + इक = नैतिक
साहित्य + इक = साहित्यिक
मूल + इक = मौलिक।

3.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
स्वेच्छाचारी	स्व + इच्छा + आचारी	स्वर संधि
विक्रमादित्य	विक्रम + आदित्य	स्वर संधि
सूर्योदय	सूर्य + उदय	स्वर संधि
पुस्तकालय	पुस्तक + आलय	स्वर संधि
नरेन्द्र	नर + इन्द्र	स्वर संधि
नीरोग	निः + रोग	विसर्ग संधि
निष्कपट	निः + कपट	विसर्ग संधि
प्रात:काल	प्रातः + काल	विसर्ग संधि

4.

शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
पर्व	त्योहार	दीपावली पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।
गणना	गिनती	भारत की गणना महान देशों में की जाती है।
मलमास	लौंद का महीना	मलमास वाले साल के महीने में एक माह बढ़ जाता है।
उपलक्ष्य	सन्दर्भ	दशहरा पर्व अधर्म पर धर्म की विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
प्रस्थान	जाना	शाम होते-होते सारे पक्षी प्रस्थान कर गए।
संवर्धन	विकास	लगातार पढ़ते रहने पर ज्ञान का संवर्धन होता है।

5. अखिल, आगमन, उपयोग, और, ऋग्वेद, कहा, ग्रन्थों, चैत्र, तेरह, दक्षिण, नव, पता, बाद, माह, रोचक, विक्रम, शेखर, संवत्।

6.

विशेषण	विशेष्य
(क) नव, कितने	वर्ष, दिन
(ख) प्राचीन, एक	ग्रंथों, संवत्सर, काल चक्र
(ग) प्रत्येक, दो	माह, पक्ष
(घ) यह, बड़ी, रोचक	बात

विविध प्रश्नावली-2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपकार को मानने वाला – कृतज्ञ
कम खाने वाला –मिताहारी
जो ईश्वर में विश्वास करता है – आस्तिक
जो सब कुछ जानता हो – सर्वज्ञ
जो अनुकरण करने योग्य हो – अनुकरणीय

2. (क) ज्योतिष (ख) सूर्य
(ग) भृगु (घ) कोकिला
(ङ) कुसुमपुर

3. (क) – (2) सत्य + आग्रह।
(ख) – (1) युवा + अवस्था।
(ग) – (3) घबरा जाना

4. शंख से नाद – शंखनाद
गाँव के वासी – गाँववासी
राजा का दण्ड – राजदण्ड
हर एक वर्ष – प्रतिवर्ष
शौर्य के लिए चक्र – शौर्यचक्र
सेना का पति – सेनापति
नीला कमल – नीलकमल।

5. **अनुस्वार (ं) शब्द–** पंचम, दंड, मंगल, बंधन, हंस, संबंध।
अनुनासिक (ँ) शब्द– गाँव, काँच, हँस, बाँधना।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पाटलिपुत्र नगर नंद, मौर्य और गुप्त सम्राटों की राजधानी रहा है।

2. ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत की सबसे बड़ी देन थी–शून्य सहित केवल दस अंक संकेतों से भी संख्याओं को व्यक्त करना था। इस दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति की खोज आर्यभट द्वारा की गई थी।

3. राजा अभयसिंह ने खेजड़ली ग्राम जाकर अपने सैनिकों के दुष्कृत्य के लिए क्षमा माँगी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक ने अपनी शिक्षा और अपना शारीरिक विकास भी नर्मदा के ही किनारे प्राप्त किया। नर्मदा के किनारे ऊँचे संगमरमर के बने हुए हैं। यहाँ का वातावरण और वायुमण्डल खुला है। इसके आसपास के बीहड़, उसके झरने और उनकी घर्षण की ध्वनि बहुत सुहावनी लगती है। नर्मदा संघर्षमयी है। उसका संघर्ष लेखक को भी संघर्षशील बनने की प्रेरणा देता है।

2. लेखक कहता है कि हे विधाता! तू इस सतपुड़ा के ऊँचे-ऊँचे गौरवशाली शिखरों को एक-सा

बनाकर दिखाओ तो। ये धवल शिखर इतने ऊँचे हैं कि उनकी ऊँचाई में और श्वेतता में आसमान का नीलापन मालूम ही नहीं पड़ता, वह कहीं खो सा गया है। संगमरमरी श्वेत शिखरों का क्रम अटल है। उन्हें विधाता भी नीचे नहीं झुका सकता है।

3. बिरसा मुंडा को चाईबासा के लूथरन मिशन स्कूल में पढ़ते समय दासता का अनुभव हुआ। बिरसा ने शोषण किए जाते अपनी समाज के लोगों की व्यथा को देखा। वे अंग्रेजों के व्यवहार के विरुद्ध टीका-टिप्पणी करने लगे। इन पर उन्हें विद्यालय से निकालने की घटना ने उनके जीवन की दिशा बदल दी।

4. बिरसा मुंडा के आन्दोलन के समय महान् सेनानियों में- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्याँ टोपे, नाना साहब, कुँवर सिंह आदि उस समय की महान हस्तियों के नामों की चर्चा की गई है, जिन्होंने अपने देश की आजादी के लिए प्राणों को दाँव पर लगा दिया और इतिहास में सदा-सदा के लिए अमर हो गए।

5. अर्जुन अपने लक्ष्य में सफल उस समय हुआ, जब उसने तन्मय होकर अपना ध्यान लक्ष्य पर ही केन्द्रित किया। अतः सफलता प्राप्त करने के लिए अपने लक्ष्य को ही जीवन का उद्देश्य बनाने वाला व्यक्ति सफलता अवश्य हासिल करता है।

6. वृद्धा अपने बीमार बच्चे को किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाकर उसका इलाज कराना चाहती थी। उसने सेठ के पास अपनी हाँड़ी पहले से जमा कर रखी थी। अतः वह सेठजी के पास अपनी अमानत वापस माँगने गई थी।

7. वाक्य रचना की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(i) वाक्य में निरर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

(ii) वाक्य में शब्दों एक विशेष क्रम होना चाहिए।

(iii) वाक्य जब बोला व लिखा जाये तो तारतम्यता होनी चाहिए।

(iv) व्याकरण की दृष्टि से वचन, लिंग, कारक होना चाहिए और क्रिया आदि का मेल होना चाहिए।

(v) वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में अर्थ प्रकट करने की योग्यता होनी चाहिए।

(vi) वाक्य में एक पद सुनते ही, उसके विषय में जानने की इच्छा होनी चाहिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. **भावार्थ—**वर्षा ऋतु में पीपल के चंचल पत्ते ताली दे-देकर खुशी से पागल होकर नाच रहे हैं अर्थात् जब वर्षा ऋतु आती है तब मानो ऐसा प्रतीत होता है कि पीपल के पत्तों में पड़ती बूँदें छोटे बच्चों की तरह ताली दे-देकर नाचने की सी ध्वनि उत्पन्न करती हैं।

2. **भावार्थ—**उक्त पंक्ति के माध्यम से कवि कहता है कि मेरा मन जल की धार को पकड़कर कल्पनाओं के झूले में झूलने लगता है अर्थात् जब वर्षा ऋतु में झमाझम बारिश होती है तो लगातार वर्षा की आती बूँदें ऐसी मालूम पड़ती हैं मानो प्रकृति ने झूले की रस्सियाँ डाल दी हों, जिस पर कवि झूलकर अपनी खुशी व्यक्त करना चाहता है।

3. सावन मन भावन इसलिए लगने लगता है कि सावन के महीने में होने वाली वर्षा सभी ओर के वातावरण को मनभावन बना देती है। सर्वत्र हरियाली छा जाती है। हवा शीतल होकर बहती है। पर्यावरणीय सुन्दरता मनुष्य को कल्पनाशील बना देती है। उनके जागरण के साथ ही मनुष्य क्रियाशील हो जाता है। मन में अच्छे-अच्छे विचार उठते हैं और चारों ओर सृष्टि का सृजन होने लगता है।

4. अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों से ऊबकर बिरसा मुंडा ने अंग्रेज शासकों के विरुद्ध आन्दोलन चलाने का संकल्प लिया। उन्होंने गाँव-गाँव जाकर सभाएँ कीं। देश की आजादी के लिए लड़ने हेतु मुंडा व अन्य जन-जातियाँ भाले और तीर-कमान लेकर चारकाड़ गाँव में एकत्र हुईं और अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करने का बिगुल फूँक दिया। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें दो वर्ष की सजा हुई। सजा काटने के बाद मुंडा समाज ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई तेज कर दी। बिरसा को देशद्रोहियों ने फिर पकड़वा दिया। बीमार हो जाने से सुनवाई के दिन खून की उल्टी हो जाने पर उनकी मृत्यु

हो गई। इस तरह बिरसा का सपना अधूरा रह गया।

5. "प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए" पाठ का मुख्य सन्देश पर्यावरण की रक्षा करना है। आज वृक्षों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। इसके कारण समूचे विश्व में पर्यावरण की रक्षा की चिन्ता की जा रही है। वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई पर रोक लगाई जा रही है तथा नये वृक्ष उगाने और उनको रोपने तथा उनकी रक्षा किए जाने पर जोर दिया जा रहा है। अत: वातावरण में प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी ही होगी और नये पेड़ लगाने ही होंगे।

6. 'याचक और दाता' कहानी में सही मायने में देखा जाए तो याचक सेठ बनारसी दास हैं। कहानी में एक वृद्धा एक खोए हुए बच्चे का पालन-पोषण करती है। यह बच्चा, वास्तव में उसका नहीं है। बच्चे के पढ़ने-लिखने और उसका पूर्ण विकास करने के उद्देश्य से वह वृद्धा फूल बेचने के काम से जो भी धन उसे मिलता है, उसको गाँव के सेठ बनारसीदास के पास जमा कर देती है। सेठजी के पास जमा रहने पर वह धन सुरक्षित बना रहेगा लेकिन सेठ बनारसीदास आवश्यकता की घड़ी में धन लौटाने से मुकर जाता है। किन्तु जब उसे यह पता चलता है कि बच्चा उसी (सेठ) का है तब वह अपने बच्चे को प्राप्त कर लेता है। वृद्धा के धन को वह लौटाना चाहता है, परन्तु वृद्धा कहती है कि वह धन भी तो उसी बच्चे के लिए उसने जमा किया है और इस प्रकार बच्चा और धन दोनों को वृद्धा उस सेठ को सौंप देती है। इस प्रकार सेठजी स्वयं याचक हैं और वृद्धा दाता है।

7. मेरे शहर के समीप नर्मदा नदी बहती है। यह नदी अपने जल की शुद्धता और अपने आसपास के सौन्दर्य के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इस नदी के दोनों किनारे ऊँचे-ऊँचे हैं। वे पत्थरों से बने हैं। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता मुझे आकर्षित करती रहती है। हरे-भरे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष इसके आस-पास की सुन्दरता को चार चाँद लगा देते हैं। भक्तजन प्राय: शाम को इसके जल में डुबकी लगाते हैं तथा किनारे के मन्दिर और पूजा स्थल पर जाकर देव दर्शन का लाभ प्राप्त करते हैं। बरसात में तो वहाँ की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है।

8. **सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' के पाठ 'लक्ष्य वेध' से अवतरित हैं। इसके लेखक श्री रामनाथ सुमन हैं।

प्रसंग—मन की इच्छाशक्ति को जब किसी एक कार्य में केन्द्रित करके प्रयुक्त किया जाता है तो यह स्थिति तन्मयता की होती है जो उन्नति के लिए महत्वपूर्ण होती है।

व्याख्या—लेखक कहना चाहता है यदि किसी कार्य की एक दिशा में अथवा किसी एक लक्ष्य को प्राप्त करने में एकाग्र भाव से अपनी इच्छा शक्ति जगाई जाती है तो यह स्थिति एकाग्रता की कही जाती है। आतिशी शीशे से गुजारी गईं सूर्य की किरणें उस कागज को जला देती हैं जिस पर वे केन्द्रित की गई हैं। सूर्य की किरणों का केन्द्रीकरण उन्हें ऊर्जावान बना देता है। इसी तरह जल में भी छिपी शक्ति को कुछ यन्त्रों रूपी साधनों में केन्द्रित किया जा सकता है और बड़े-बड़े कल-कारखाने चलाये जा सकते हैं। ठीक उसी प्रकार अपनी ऊर्जा को एक ही स्थान पर लगा दिया जाये तो सम्पूर्ण संसार को हिलाया जा सकता है।

9. (क) इन पंक्तियों में कुंडलिया छन्द है। कुंडलिया छन्द के छ: चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इस छन्द के प्रारम्भ में दोहा तथा अन्त में रोला छन्द होता है। इस छन्द की एक विशेषता यह भी है कि जो शब्द इसके आरम्भ में आता है, वही इसके अन्त में भी आता है।

(ख) इन पंक्तियों में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(ग) इस छन्द के रचयिता कवि गिरधर जी हैं।

(घ) कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह कहना चाहता है कि हमें विनयशील और मीठी वाणी बोलने वाला बनना चाहिए। इस तरह हम अपने जीवन को सहज और बेहतर बना सकते हैं।

10. यह कथन नर्मदा तट की संगमरमरी चट्टानों के बारे में कहा गया है।

आशय—चन्द्रमा के उदय होने पर संगमरमर की धवल चट्टानों में से चाँदी की सी चमक उठती है। सूर्य के उदित होने पर सूरज की किरणों का ताप उन्हें गर्मी प्रदान करता है जिससे वे तपने लगती हैं अर्थात् रात्रि और दिन के तापमान का उन चट्टानों पर प्रभाव पड़ता है।

11. ईसवी संवत् या सन्, हिजरी संवत्, शालिवाहन संवत्, कलिसंवत, बंगला संवत्, विक्रम संवत् आदि।

12. एक बार गुरु द्रोणाचार्य अन्तिम परीक्षा के लिए पाण्डवों और कौरवों को एक वन में ले गये। उन्होंने एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली के लक्ष्यवेध का निश्चय किया। आचार्य ने सबको निशाना साधने को कहा और एक छोटा-सा प्रश्न किया 'तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?' किसी ने कहा- वृक्ष की टहनी, उस पर बैठी लाल रंग की चिड़िया दिखाई दे रही है। किसी ने कहा, 'मुझे चिड़िया की चोंच दिखाई दे रही है।' जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उससे वही प्रश्न दोहराया तो उन्होंने कहा-'गुरुदेव मुझे सिवाय चिड़िया की आँखों की पुतली के और कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।' आचार्य ने अर्जुन की पीठ थपथपायी और आशीर्वाद दिया।

13. गिरधर की कुण्डलियाँ मन में यह विचार उत्पन्न करती हैं कि व्यक्ति को समाज में किस प्रकार जीवन जीना चाहिए। हमारे महान संतों ने अपनी वाणी द्वारा लोक व्यवहार की बातों के जिन ग्रंथों को रचा है, वे सदैव लोगों का मार्गदर्शन करेंगे। हम इनके विचारों को अपनाकर जीवन को सुगम बना सकते हैं।

14. विद्यार्थी अध्यापक की मदद से स्वयं करें।

15 महेश्वर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. संस्कृति — आचरणगत परम्परा, प्राचीन सभ्यता।
पुरातात्विक — पुरातत्व सम्बन्धी।
पुराविद् — प्राचीन इतिहास आदि विषयों की जानकारी रखने वाला।
उत्तरदायित्व — जिम्मेदारी।
सर्वतोन्मुखी — सभी तरह का।
पाषाण — पत्थर।
प्रागैतिहासिक — इतिहास लिखे जाने से भी पहले के इतिहास से सम्बन्धित
उत्खनन — खुदाई।
फलक — पटल, तख्ता।
अवशेष — शेष भाग, वह जो बचा रहे।
अलंकरण — सजावट।

2. **(क)** महेश्वर का प्राचीन नाम माहेश्वरी अथवा माहिष्मती है।

(ख) महेश्वर मध्य प्रदेश के इन्दौर जिले में स्थित है, जो इन्दौर से लगभग 105 किलोमीटर की दूर पर है।

(ग) महेश्वर की खुदाई में पुरातात्विक महत्त्व की अनेक वस्तुएँ और अवशेष प्राप्त हुए हैं।

(घ) हैहय साम्राज्य की स्थापना कार्तवीर्य सहस्रार्जुन ने की थी।

(ङ) नर्मदा के तट पर किला और शिव का मन्दिर महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था।

3. **(क)** सहस्रार्जुन ने परशुराम जी के पिता ऋषि जमदग्नि का वध कर दिया तो इसका बदला लेने के लिए भगवान परशुराम ने सहस्रार्जुन का वध करने का संकल्प लिया। वे माहिष्मती पहुँच गए और भीषण युद्ध किया तथा सहस्रार्जुन का वध कर दिया।

(ख) इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने महेश्वर को प्रसिद्धि प्रदान की। उन्हें यह स्थान अत्यन्त ही प्रिय था। उन्होंने इस स्थान पर नर्मदा के तट पर एक किला और भगवान शिव का विशाल मन्दिर बनवाया। यहाँ स्थित पवित्र शिवलिंग महेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। महेश्वर धार्मिक, पौराणिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्पदा से सम्पन्न है। महारानी अहिल्याबाई ने मराठों के शासनकाल में यहाँ सुन्दर घाटों, मन्दिरों, धर्मशालाओं तथा भवनों का निर्माण कराया।

(ग) महारानी अहिल्याबाई को 'लोकमाता' के रूप में इसलिए याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने अपनी प्रजा का पालन-पोषण और सुरक्षा का दायित्व एक माँ की तरह निभाया महेश्वर नगर का सम्पूर्ण विकास कराया और नर्मदा के तटों पर सुन्दर घाटों और मन्दिरों का निर्माण कराया। देश के विभिन्न तीर्थस्थलों में देवालयों धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। इसलिए अहिल्याबाई को लोकमाता कहा जाता है। इसके अतिरिक्त महारानी ने लोक कल्याण हेतु अनेक कार्य किए।

(घ) नर्मदा घाटी में पाषाणकालीन सभ्यता के पत्थर के अनेक औजार मिले हैं। प्रागैतिहासिक काल के पुरा-अवशेषों से पता चलता है कि उस समय यहाँ के लोग घास-फूस के झोंपड़ों में या पेड़ों पर बने घरों में रहते थे। उस समय की पाई गई वस्तुओं में लाल और काले रंग के मिट्टी के बर्तन और घड़ों के टुकड़े प्रमुख हैं। उस समय यहाँ भवनों हेतु ईंटों का प्रयोग किया जाता था। उस समय मिट्टी के कलात्मक घड़े बनाए जाते थे। सम्भवत: वे अपनी सुरक्षा की दृष्टि से पेड़ों पर या ऊँची जमीन पर अपने घर बनाते थे। यह भी सत्य है कि पाषाणकाल के लोग नदियों, तालाबों आदि के किनारे ही बसते रहे हैं, क्योंकि इन स्थानों पर उन्हें आवश्यकता की सारी वस्तुएँ आसानी से प्राप्त हो जाती थीं।

4. (क) पुरातात्विक

(ख) महेश्वर

(ग) रेशमी

(घ) नर्मदा

भाषा-अध्ययन

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

वाक्य प्रयोग—

- **आशीर्वाद**—देवदर्शन करके लोग आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।
- **सहस्रार्जुन**—सहस्रार्जुन ने ऋषि जमदग्नि का वध कर आश्रम को तहस-नहस कर दिया था।
- **संस्कृति**—भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में विख्यात है।
- **ऋषि**—ऋषि परम्परा भारत में प्राचीनकाल से है।
- **जमदग्नि**—जमदग्नि भगवान परशुराम के पिता थे।
- **दर्शनार्थी**—कृष्ण मन्दिर में दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती है।
- **प्रज्ज्वलित**—दीपावली पर घर-घर में दीप प्रज्ज्वलित किए जाते हैं।
- **पुरातात्विक**—अभी खजुहागढ़ में पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं।

2.

सामासिक शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
लोकमाता	लोक की माता	कर्मधारय
मधुर-ध्वनि	मधुर है जो ध्वनि	कर्मधारय
नर-नारी	नर और नारी	द्वन्द्व
विशाल मन्दिर	विशाल है जो मन्दिर	कर्मधारय
अखंडदीप	अखण्ड है जो दीप	कर्मधारय
महारानी	महान् है जो रानी	कर्मधारय

3.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अखण्ड	अ	खण्ड
विशेष	वि	शेष
प्रसिद्ध	प्र	सिद्ध
अनुशासन	अनु	शासन
विज्ञान	वि	ज्ञान

4.

पूर्ण शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
महेश्वर	महा + ईश्वर	स्वर संधि
मनोहर	मन: + हर	विसर्ग संधि
आशीर्वाद	आशी: + वाद	विसर्ग संधि
दर्शनार्थी	दर्शन + अर्थी	स्वर संधि

5.

उद्देश्य	विधेय
(क) इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने	सुन्दर घाटों, मन्दिरों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया था।
(ख) पाषाण कालीन सभ्यता के औजार	नर्मदा के घाटों की खुदाई में मिले हैं।
(ग) महेश्वर की	सिल्क साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

6.

वाक्यांश	शब्द
प्राचीन काल से सम्बन्धित	पुरातात्विक
धर्म से सम्बन्धित	धार्मिक
संस्कृति से सम्बन्धित	सांस्कृतिक
इतिहास से सम्बन्धित	ऐतिहासिक
पुराणों से सम्बन्धित	पौराणिक

7. विद्यार्थी स्वयं लिखें।

16 पथिक से

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. पथिक – राहगीर।
वापी – बावड़ी।
जलकण – जल की बूँदें।
एकाकीपन – अकेलापन।
असमंजस – दुविधा।
हवन सामग्री – यज्ञ में आहुति देने की वस्तुएँ।
दूर्वादल – दूब घास के कोमल पत्ते।
निर्झर – झरने।
उन्मन – उदास।
कुमकुम थाल – रोली की थाली।
आहुति –यज्ञ में डालने की हवन सामग्री।

2. **(क)** काँटे शब्द का अर्थ बाधाओं से है। लक्ष्य का पथ अनेक कठिनाइयों से भरा होता है।
(ख) (अ)→(इ), (आ)→(ई), (इ)→(अ), (ई)→(आ)
(ग) 'माँ' शब्द के प्रयोग से यहाँ 'भारत माँ' की ओर संकेत किया गया है।

3. **(क)** जीवन रूपी मार्ग पर पथिक को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सफलताएँ ही प्राप्त करता जाएगा, विफलता उसके समक्ष आएगी ही नहीं, ऐसा सोचना उसकी मूर्खता है। सफलता पाने के लिए अनेक विफलता भी आ सकती हैं। ऐसे समय में अपने भी पराये जैसा व्यवहार करते हैं। मन में आने वाली दुविधाएँ निराशा को जन्म देती हैं। मन खिन्न होता है। कविता में कवि ने तीन बाधाओं को दर्शाया है—
1. निराशा में डूबे हुए पथिक का अकेलापन।
2. उद्देश्य प्राप्ति में सफलता अथवा असफलता की दुविधा।
3. लक्ष्य मार्ग से विचलित करने वाले सम्भावित दृश्य।

(ख) जब मनुष्य अपने प्रयास करने पर सब प्रकार से विफल होने लगता है, तो उस स्थिति में हर एक आदमी पराया-सा लगता है और उसके सामने पूरी तरह से विरोधी बनकर खड़े हो जाते हैं। भारी निराशा और हताशा दोनों स्थितियाँ उसको कष्ट पहुँचाती हैं।

(ग) व्यक्ति को किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम के माध्यम से अपने लक्ष्य तक पहुँचना होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसके मार्ग पर काँटों रूपी रुकावटों के साथ कभी-कभी कोमल घास के दलों से युक्त सुखदायी मार्ग भी प्रतीत होता है। नदियाँ और तालाब तथा झरने भी उसे सम्मोहित करते हैं। उस सौन्दर्य की मृगतृष्णा उस पथिक को भ्रम में डाल देने वाली होती है। सौन्दर्य की मृगतृष्णा में आनन्द और जीवन की सफलता महसूस करना उसे भ्रमित कर सकता है। इसी भ्रम में फँसकर पथिक कर्तव्य पथ से विमुख हो जाता है।

(घ) कवि के अनुसार, जब मातृभूमि की आजादी के लिए अनेक देशभक्तों ने स्वयं का बलिदान फाँसी के तख्ते पर झूलकर दे दिया हो लेकिन आजादी के युद्ध में वीरों की संख्या कम पड़ रही होगी और मातृभूमि अपने राष्ट्रभक्तों की आहुति माँग रही हो। उस समय पथिक के सामने असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है कि वह मातृभूमि के लिए युद्ध में अपने प्राण न्योछावर करें अथवा युद्ध भूमि से भाग जाए।

(ङ) कवि ने इस कविता में विविध प्राकृतिक अंगों-उपांगों का चित्रण प्रस्तुत किया है, जो पथिक को कदम-कदम पर मिलते हैं। पथिक को कभी तो दूब-घास के कोमल दल, अपने निर्मल जल से भरकर इठलाती चलती नदियाँ व तालाब दिखते हैं। इनके अतिरिक्त सुन्दर पर्वत, वन-वाटिकाएँ तथा जल की बावड़ियाँ तथा सुन्दर-सुन्दर झरने जो अपनी कल-कल की मधुर ध्वनि से आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं, दिखाई पड़ते हैं। कर्तव्य पथ के पथिक को प्राकृतिक उपादानों की सुन्दरता मृगतृष्णा के विमोह में फँसा लेने वाली प्रतीत होती है।

भाषा-अध्ययन

1. (क) पाषाण
(ख) जम्बुक
(ग) तटिनी

2.

शब्द	विलोम शब्द
प्रथम	अन्तिम
सम्मुख	विमुख
विफलता	सफलता
माँग	पूर्ति

कठिन	सरल
अनुराग	विराग
प्रलय	सृष्टि
पुष्ट	जर्जर

3. सुन्दर-सुन्दर, पग-पग, सुन-सुन, विदा-विदा।

4. (i) लड़कपन (ii) बचपन
(iii) अकेलापन (iv) बालपन

5. वन-वापी, कठिन-कर्म, सैनिक-पुलक।

6. (क) अनुप्रास अलंकार
(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार।

17 वसीयतनामे का रहस्य

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. दूरदर्शी — दूर तक की सोचने वाला।
न्यायप्रिय — न्याय चाहने वाला।
निष्पक्ष — बिना भेदभाव के।
वसीयत — जमीन-जायदाद सम्बन्धी लिखित आदेश।
जटिल — कठिन।
जायदाद — सम्पत्ति।
विवाद — झगड़ा।

2. **(क)** सम्पत्ति के बँटवारे का लिखित आदेश वसीयतनामा कहलाता है।

(ख) गाँव का वयोवृद्ध व्यक्ति अपनी बुद्धिमानी, दूरदर्शिता व न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था।

(ग) वसीयतनामे में जायदाद को तीनों पुत्रों में बाँटने का संकेत था।

(घ) बँटवारे का अन्तिम निर्णय राजा ने किया।

(ङ) राजा के प्रथम दो महलों में जो दो लोग मिले, वे राजा के भाई-बहन थे।

(च) पंचों को इस बात की शंका थी कि वृद्ध किसान के तीन-बेटे असली हैं तथा कोई एक बेटा उसका नहीं है।

(छ) वसीयतनामे में दो बातें लिखी थीं। पहली— सम्पूर्ण जायदाद के तीन हिस्से कर उसे तीन भाइयों में बाँट दिया जाए, लेकिन यह नहीं लिखा था कि किस भाई को हिस्सा न दिया जाए। दूसरी—जो पंच इस बात का फैसला करे उसके साथ वृद्ध किसान की बेटी का विवाह कर दिया जाए।

3. **(क)** झगड़े का कारण भाइयों में सम्पत्ति बँटवारा था। पिता के वसीयतनामे पर जायदाद के तीन हिस्से थे और हिस्सेदार चार थे। तीन हिस्से को चार भाइयों में किस प्रकार विभाजित किया जाए? चार भाइयों में से यदि कोई एक भाई अपना हिस्सा छोड़ने को तैयार हो जाता तो न्याय हो जाता परन्तु कोई भी अपना हक छोड़ने के लिए तैयार नहीं था।

(ख) गाँव वालों को वसीयत के बारे में जानकर आश्चर्य इसलिए हुआ क्योंकि वसीयतनामे में जायदाद का बँटवारा तीन हिस्सों में किया था, जबकि उस वृद्ध किसान के चार पुत्र थे। इस हिसाब से जायदाद का बँटवारा चार हिस्सों में बराबर ही होना चाहिए था। गाँववाले सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने इस तरह की वसीयत क्यों लिखी। अवश्य ही इसमें कोई रहस्य छुपा है। इसलिए ग्रामीणों ने विवाद को जटिल समझकर उन्हें गाँव में पंचायत बैठाने की सलाह दी।

(ग) गाँव के वृद्ध व्यक्ति ने राजा से जो दो बातें पूछीं, वे निम्नवत् हैं—
पहली बात यह कि जब हम महल के पास से गुजर रहे थे तो एक युवक मिला था। उस युवक से जब आपके बारे में पूछा तो उसने हमें बताया कि राजा को मरे हुए तीन साल हो गए हैं। इस बात का क्या राज है?
दूसरी बात यह कि जब हम लोग दूसरे महल के पास से गुजर रहे थे तो वहाँ उन्हें एक रूपवती कन्या मिली। उसने उन्हें बताया कि आप अन्धे हो गए हैं। इस बात का राज भी बता दीजिए।

(घ) राजा ने तीनों भाइयों को अलग-अलग ले जाकर खूब प्रलोभन दिया और हर एक को अपनी तलवार देकर कहा कि वह शेष तीनों की हत्या कर दे तो उसे सारा धन दे दिया जाएगा और उसके साथ अपनी बहन की शादी कर देगा। परन्तु इन तीनों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और अपने-अपने हिस्से की जायदाद छोड़ने के लिए तैयार हो गये।

(ङ) राजा के प्रस्ताव से तीनों भाई सहमत नहीं थे। वे इस जमीन-जायदाद के लालच में अपने भाइयों की हत्या करना नहीं चाहते थे। वे अपने इस फैसले पर अडिग थे। वे सभी अपने हिस्से की जायदाद को अपने अन्य भाइयों के लिए छोड़ने को तैयार हो गए थे। उनके अन्दर त्याग

की भावना थी और वे अपने भाइयों को आपस में फलता-फूलता देखना चाहते थे। उन्हें राजा का प्रस्ताव उचित नहीं लगा।

(च) चौथे भाई को जब राजा द्वारा एकान्त कमरे में ले जाया गया और राजा ने उसे अपनी तलवार देते हुए सलाह दी कि वह अपने शेष तीन भाइयों को उनकी तलवार से कत्ल कर दे। इस बात पर चौथा भाई अपने तीन भाइयों को कत्ल करने के लिए तैयार हो गया क्योंकि उसने सोच लिया था ऐसा अवसर बहुत ही शुभ है। वह शीघ्र ही धनवान हो जाएगा और पूरी जायदाद का मालिक बन जाएगा। इसके अतिरिक्त उसका विवाह भी महाराजा की सुन्दर बहन से हो जाएगा। ऐसे विचारों को सोचकर चौथा भाई राजा के प्रस्ताव से सहमत हो गया।

(छ) राजा ने चौथे भाई की गलत नीयत को समझकर उसे जेल में डाल दिया। जब अन्य लोगों ने राजा की यह बात सुनी तो वे सभी सोचने लगे कि छोटा भाई अपने पिता को इसी तरह कष्ट देता होगा, इसलिए ही पिता ने अपनी जायदाद के तीन हिस्से किए होंगे। तीनों भाइयों को अपने-अपने हिस्से की जायदाद प्राप्त हो गई और बड़े भाई ने राजा के साथ अपनी बहन की शादी कर दी। इस तरह महाराजा की चतुराई से समस्या का समाधान हो गया।

4. (3) तीन बेटे असली हैं और एक बेटा उसका नहीं है।

भाषा-अध्ययन

1. वसीयतनामे — सम्पत्ति का लिखित आदेश-पत्र।
हिस्सा — भाग।
हिस्सेदार — भागीदार।
हक — अधिकार।
राहगीर — पथिक।
शानदार — भव्य, तेज।
फैसला — न्याय।
मामला — विषय
गुजर — व्यतीत।
राज — रहस्य
होशियार — चतुर, सावधान

2.

दो लोगों ने आगे बढ़कर झगड़े का कारण पूछा।	कर्म कारक
राहगीर को भी आश्चर्य हुआ।	कर्म कारक
बुद्धिमानी से करता था।	करण कारक
चारों भाई पंचायत के लिए तैयार हो गए।	संप्रदान
अरे, यह तो बड़ी आसान बात है।	संबोधन

3. (क) साधारण वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
(ग) मिश्रित वाक्य (घ) मिश्रित वाक्य
(ङ) साधारण वाक्य (च) संयुक्त वाक्य।

4.

दूर-दूर	पुनरुक्त
तरह-तरह	पुनरुक्त
राम-राम	पुनरुक्त
सत्रह-अठारह	शब्द युग्म
युवक-युवती	शब्द युग्म
उन्नीस-बीस	शब्द युग्म
अपना-अपना	पुनरुक्त
एक-दो	शब्द युग्म

5.

वर्ग (क)	**वर्ग (ख**
दूसरा	महल
अद्‌वितीय	सुन्दरी
शान्त	स्वर
पूरा	मामला
रंगीन	सपने
रूपवती	कन्या

6. बहनें, भाइयों, युवकों, युवतियाँ, महलों, सपने, मामले, राहगीरों।

7. छात्र अध्यापक की मदद से स्वयं अभ्यास करें।

18 युद्ध-गीता

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1.

निशाचर—राक्षस	कटक— सेना
पताका— ध्वजा	गज— हाथी
जलद— बादल	प्रेरे— प्रेरित
समर— युद्ध	बहु— बहुत

पयोधि— सागर	रेनु—धूल
घोर— भयानक	प्रलय— विनाश
नफीरि— एक बाद्य	पौरुष— पुरुषार्थ
दशानन— रावण	मर्दहु— मसल दो
हौं— मैं	कपिन्ह— वानरों को
कराल—भयंकर	सपच्छ— पंखयुक्त
बृंद— समूह	
चतुरंगिनी— चार प्रकार की सेना	
बरन— प्रकट वर्ण	मत्त— मतवाले
जूथ— समूह	मरुत— हवा
सूर— योद्धा	निकाया— समूह
छुभित— क्षुब्ध	कुधर— कंधा
वसुधा— पृथ्वी	निसान— झण्डा
रव— ध्वनि	घन— बादल
गाजहि— गरजते हैं	सहनाई— शहनाई
केहरिनाद— सिंहनाद	
उच्चरहि— उच्चारण करते हैं	
सुभट्टा—उत्तम वीर	ठट्टा— समूह
भूप— राजा	दुहाई— पुकार
मर्कट— बंदर	भूधर— पर्वत
नाना-बान— अनेक बाण	
महाद्रुम— बड़े-बड़े पेड़	
संक— संदेह	
निज-निज— अपने-अपने	
जान— समझ	अधीरा— व्याकुल
सनेह— प्रेम	स्यंदन— रथ
सौरज— शौर्य	दृढ़— मजबूत
परहित— दूसरों का भाग	
घोरे—घोड़े	
कृपाना— तलवार	त्रोन— तरकस
कवच— आवरण	रिपु— शत्रु
संसार रिपु—संसार का दुश्मन	
पद कंज—चरण कमल	
पुंज— समूह	आयुध— हथियार
मृगराज— सिंह	जोरी— जोड़ी
विरथ— व्यर्थ	वंदि— वंदना
पदत्राना—पैदल, बिना रक्षक कवच के	
आना—आकर	धीरज— धैर्य
दम— जोर, ताकत	चाका— पहिया
रजु— रस्सी	परसु— फरसा
कोदण्डा— धनुष	अभेद— अभेद्य
जाके— जिसके	ताके— उसके
मिस— बहने से	अमन— शान्ति

2. **(क)** राक्षस सेना के चलने पर धरती व्याकुल होने लगी।

(ब) कवि ने दौड़ते वानर भालुओं की तुलना पंख धारण करके उड़ने वाले पर्वतों के समूह से की है।

(ग) श्रीराम के पराक्रम का मुख्य आधार शौर्य, धैर्य, सत्य-शील, साहस, यम-नियम, दम, दया, परोपकार आदि धर्म के तत्व हैं।

(घ) धर्मरथ के दो पहिए हैं— शौर्य और धैर्य।

3.

श्रीमदभगवद् गीता	—	महाभारत
धर्मरथ (युद्ध गीता)	—	रामचरितमानस
ऋचाएँ	—	वेद
दर्शन	—	उपनिषद्

4. **(क)** युद्धभूमि में विभीषण ने अधीर होकर श्रीराम से पूछा कि हे स्वामी आपके पास युद्ध करने के लिए रथ नहीं है, उधर आपका शत्रु रावण युद्ध की सभी सामग्री (साधन रथ आदि) से युक्त है। उस धीर और बलवान रावण पर आप किस तरह विजय प्राप्त कर सकेंगे?

(ख) श्रीराम ने विभीषण की शंका का समाधान करते हुए कहा कि जिस रथ में शौर्य और धैर्य रूपी पहिए, सत्य-शील की मजबूत ध्वजा होती है। विवेक का बल होता है। इन्द्रिय दमन और परोपकार के घोड़ों को क्षमा और कृपा की रस्सी से जोता गया होता है, उस सद्गुणों के रथ पर सवार होकर बाहरी और आन्तरिक शत्रुओं से विजय अवश्य प्राप्त होती है।

(ग) आत्मशक्ति में धर्म के आधारभूत तत्व सम्मिलित हैं। इनमें शौर्य, धैर्य, सत्य-शील, साहस, यम-नियम, दम, दया, परोपकार आदि गुण सम्मिलित होते हैं। इसे ही सद्गुणों से युक्त धर्मरथ कहते हैं। बाह्य शक्ति में विविध प्रकार के भौतिक साधन आते हैं जिनमें रथ, कवच व अनेक प्रकार की युद्ध सामग्रियों से युक्त अति बलवान सैनिक होते हैं। बाह्यशक्ति सद्गुणों से रहित होती है।

(घ) श्रीराम के कथनानुसार धर्मरथ में जोते हुए चार घोड़े हैं— विवेक, दम, परहित तथा क्षमा। इनके द्वारा खींचा गया रथ सर्वत्र गतिमान रहता है। मनुष्य अपने विवेक, दम, परहित और क्षमा के बल से किसी भी आने वाले संकट पर विजय प्राप्त करता है।

(ङ) संसाररूपी शत्रु को धर्मरथ पर सवार होकर ही जीता जा सकता है। धर्मरथ में शौर्य और

धैर्य के पहिए लगे होते हैं। सत्य और शील का मजबूत ध्वज फहरा रहा होता है। क्षमा, कृपा और समता की रस्सी से बल, विवेक, दम और परोपकार के चार घोड़े जुते रहते हैं। इस विशेष प्रकार के रथ पर सवार व्यक्ति संसाररूपी शत्रु को जीतकर अपने वश में कर लेता है। इस प्रकार वह सभी जगह विजय प्राप्त करता है।

भाषा-अध्ययन

1. लोभ सभी पापों का कारण होता है।
राहुल और विनय समकक्ष ही हैं।
वीर शिवाजी ने अपने पराक्रम से देश की आजादी का दीपक बुझने नहीं दिया।
पाण्डवों ने धर्मनीति के पक्ष में युद्ध किया।
आत्मशक्ति शम और दम से बढ़ सकती है।
रावण की सेना वानर-सेना के लिए दुर्जय लग रही थी।
श्रीराम ने लोगों को मर्यादा का पाठ पढ़ाया।

2.

शब्द	**उपसर्ग**	+	**शब्द**
विशेष	वि	+	शेष
विरथ	वि	+	रथ
अधीर	अ	+	धीर
दुर्जय	दुः	+	जय

3.

उचित	अनुचित		
अपेक्षा	उपेक्षा	विजय	पराजय
लाभ	हानि	जीवन	मृत्यु
सुरक्षा	असुरक्षा	धर्म	अधर्म।

4. रण — नीति
युद्ध — कला
मार्ग — दर्शन
धर्म — रथ
दस — सिर

5.

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
धर्मनीति	धर्म की नीति	तत्पुरुष समास
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन	अव्ययीभाव समास
आत्मशक्ति	आत्मा की भक्ति	तत्पुरुष समास
राम-रावण	राम और रावण	द्वन्द्व समास

6. चरित्र का अर्थ है— आचरण या चाल-चलन। यहाँ आचरण का अर्थ है— सद्गुणों का भण्डार। जिस व्यक्ति के व्यवहार में सत्य, न्याय, प्रेम, मानवता, करुणा, दया, अहिंसा, त्याग आदि गुण एकत्र हो जाते हैं, वह चरित्रवान कहलाता है। यहाँ चरित्र की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। किस बल पर पाण्डव कौरवों पर भारी पड़े? किस बल पर वनवासी राम ने लंकापति रावण को परास्त किया?

7. (अ) (क) तथा (ख) चौपाई छन्द हैं। चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।
(ब) अनुप्रास अलंकार के उदाहरण निम्नवत् हैं—
विविध भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना।।
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया।।
अति विचित्र वाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेनु जनु साजी।।
अमन अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।

8.

शब्द	**तत्सम**	**शब्द**	**तत्सम**
धीरज	धैर्य	ईस	ईश
सौरज	शौर्य	बुधि	बुद्धि
सील	शील	ताकत	शक्ति
छमा	क्षमा	जम	यम

9. **उपमा अलंकार—** अमन अचल मन त्रोन समाना
रूपक अलंकार— महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।
उत्प्रेक्षा अलंकार— प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे।

19 बहादुर बेटा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. हाहाकार — घबराहट की चिल्लाहट।
वालंटियर — अपनी ही इच्छा से सेवा के कार्य के लिए समर्पित।

फर्स्ट एड – प्राथमिक चिकित्सा, सहायता।

ध्यानस्थ – ध्यान करना।

रेडक्रॉस – मानवता की सेवा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन।

बैज – पहचान-पत्र।

2. **(क)** संदीप और कुलदीप दोनों बाढ़ में फँसे लोगों की सहायता में जुटे हुए थे इसलिए उन्हें देर हो गई।

(ख) नदियों में बाढ़ आ जाने से गाँव के गाँव तहस-नहस होकर बह जाते हैं। अगणित पशु-प्राणी मर जाते हैं। फसलें नष्ट हो जाती हैं। कई प्रकार के रोग फैल जाते हैं।

(ग) रेडक्रास के सदस्य बाढ़ में फँसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाते हैं। बाढ़-पीड़ित लोगों के लिए भोजन, कपड़े एवं दवाइयाँ आदि का प्रबन्ध करते हैं। वे अपनी जान जोखिम में डालकर पीड़ित लोगों की देखरेख तथा सहायता करते हैं।

(घ) जब संदीप बाढ़ में फँसे लोगों को नाव से सुरक्षित स्थान पर ले जा रहा था तभी संदीप की नाव एकदम उलट गई और पानी के बहाव का तेज रेला संदीप को बहा ले गया।

3. **(क)** संदीप और कुलदीप को सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के आदेश पर बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा के लिए अन्न, वस्त्र, दवाएँ आदि पहुँचाने का कार्य सौंपा गया था। साथ ही उनके पिता और चाचा ने आजादी की जंग में भाग लिया था। देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण बलिदान कर दिए थे। इस तरह उन्हें भी देश की सेवा करने, मानवता की रक्षा करने की सीख अपने अभिभावकों और बड़ों से मिली थी।

(ख) संदीप द्वारा किए गए बचाव कार्य को रेडक्रॉस की सदस्या ने बताया कि वे सभी बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने के लिए गए हुए थे। संदीप ने वहाँ सबसे बढ़-चढ़कर काम किया। अपने प्राणों की चिन्ता किए बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनके साहस को देखकर हम सब लोग दंग रह गए। बिना आराम किए ही लगातार उन्होंने लोगों को बाढ़ के पानी से सुरक्षित बचाया परन्तु अचानक ही उनकी नाव उलट गई। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की सहायता की।

(ग) बाढ़ पीड़ितों की विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं—उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने की। उनसे सम्बन्धित वस्तुओं को उनके पास पहुँचाने की। उन्हें भोजन, पानी व कपड़े आदि उपलब्ध कराने की। इसके अलावा उन्हें दवाइयों की भी जरूरत होती है क्योंकि बाढ़ आ जाने से पानी से फैलने वाले अनेक रोग हो जाते हैं। उन रोगों के इलाज की तुरन्त आवश्यकता होती है। इन बाढ़ पीड़ितों को रेडक्रॉस और वॉलन्टीयर्स सहायता पहुँचाते हैं। कुछ स्थानीय संस्थाएँ व देश की सेना और स्वयंसेवी संस्थाएँ भी इस कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। बाढ़पीड़ितों को अन्न, वस्त्र, औषधि आदि एकत्र करके उनका सहयोग किया जाता है।

(घ) हमें संकट के समय लोगों का सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। इस एकांकी में कुलदीप और संदीप नाम के दो भाई हैं। उनकी बहन मधुर और माँ भी उनके साथ रहती हैं। कुलदीप को विद्यालय में सूचना मिलती है कि बाढ़ से जन-धन की हानि हुई है। वह अपने साथियों के साथ उन बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए धन संग्रह करने चला जाता है। उधर संदीप नदी की बाढ़ में फँसे लोगों को बचाने के लिए बिना बताए ही चला जाता है। वह अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाता है। ऐसे में वह स्वयं भी डूबते-डूबते बचता है। इस प्रकार इस एकांकी से हमें निस्वार्थ सेवा भावना, अतुलनीय देशप्रेम व आपसी भाईचारे की शिक्षा मिलती है।

(ङ) एकांकी में बहादुर बेटा संदीप को कहा गया है क्योंकि वह मानवता और परोपकार के लिए अपने पिता और चाचा की भाँति सेवाभाव रखता है। वह संस्कारित बालक है। वह ऐसे कार्यों में आगे आना अपना धर्म समझता है।

4. * मधुर अपनी माँ से कहती है।
   * कुलदीप अपनी बहन मधु और माँ से कहता है।
   * संदीप की माँ रेडक्रॉस की सदस्या युवती से कहती है।

भाषा-अध्ययन

1. एक-साथ बीच-बीच
घर-घर एक-दो
कभी-कभी फर्स्ट-एड

2. **अनुस्वार (ं) वाले शब्द**—गंगा, वंचित, पांडव, शांत, संहारक, संसार।

अनुस्वार (ँ) वाले शब्द—माँ, पाँच, हूँ, बाँध, जाऊँगा।

3.

हृदय	लगाना	हृदय लगाना	प्रेम करना
	टूक-टूक होना	हृदय टूक-टूक होना	निराश हो जाना
	भर आना	हृदय भर आना	दया आना
आँख	तारा	आँखों का तारा	बहुत प्यारा
	गिरना	आँख से गिरना	इज्जत खोना
	अंधा	आँख से अंधा	मूर्ख
	धूल झोंकना	आँखों में धूल झोंकना	बेवकूफ बनाना
	खुलना	आँखें खुलना	सावधान होना
कान	खाना	कान खाना	शोर मचाना
	कच्चा होना	कान का कच्चा होना	बिना समझे दूसरों की बात पर विश्वास करना
	पकड़ना	कान पकड़ना	गलती स्वीकार करना
	भरना	कान भरना	चुगली करना

4.

शब्द	पर्यायवाची शब्द
जाह्नवी	गंगा, भागीरथी, सुरसरि।
जननी	माता, माँ, अम्बा।
रात्रि	रजनी, यामिनी, निशा।
सूर्य	भानु, सविता, रवि।

5.

शब्द	तत्सम शब्द	शब्द	तत्सम शब्द
लाज	लज्जा	तज	त्यागना
धीर	धैर्य	सूरज	सूर्य
भीख	भिक्षा	माता	मातृ

6.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
गाड़ीवान	—	गाड़ी	वान
अपरिचित	अ	परिचय	इत्
प्रकाशित	—	प्रकाश	इत्
प्रशंसनीय	—	प्रशंसा	अनीय
रथवान	—	रथ	वान
संहारक	सम्	संहार	अक्
बेकरार	बे	करार	—
मातृहीन	—	मातृ	हीन
दयालु	—	दया	आलु
सुशोभित	सु	शोभा	इत्

7. **(क)** काश! मैं उसे समझ पाता, तो मैं उसके पास इस काम के लिए कभी नहीं जाता।

(ख) रेखा, पूनम, सुनीता और राधा बगीचे में घूम रही हैं।

(ग) जीवन में सुख-दुख, लाभ-हानि तो लगे ही रहते हैं। हमें इनकी कभी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

(घ) गीता में कहा है— "कर्म करो, परन्तु फल की इच्छा मत करो।"

20 नन्हा सत्याग्रही

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. सलूक — व्यवहार।
दफा हो जाना — तेजी से भाग जाना।
नाचीज — तुच्छ।
बदतमीजी — बुरा व्यवहार।
सकपकाए — घबराए।
हलकान — परेशान।

2. (क) वह बात जरा-सी थी, वह यह थी कि थानेदार के दर्जे के पुलिस अधिकारी ने बेकसूर मोहन को चपत लगा दी थी। इस छोटी-सी बात पर मोहन रोये जा रहा था।

(ख) (क) घमण्ड।

(ग) मोहन के मित्र हाथों में तख्तियाँ लेकर नारेबाजी करने लगे तथा मोहन को न्याय दिलाने की अपील करने लगे।

3. (क) बालकों की बात पर ध्यान न देने के भाव वाले चार वाक्य निम्नवत् हैं—

(i) "अरे भाई, बड़े हैं, जरा जल्दी होगी, किसी ने उन्हें नहीं टोका। एक तुम्हीं उनके आड़े आ गए।"

(ii) "लड़का जिरह किया जाता है, इसे कौन समझाए?"

(iii) "रोता है, रोने दो-कब तक रोएगा?"

(iv) "अभी थककर आप चुप हो जाएगा।"

(ख) उक्त बात लोग इस आधार पर कह रहे थे क्योंकि मोहन पुलिस अधिकारी के द्वारा एक चपत लगाए जाने पर रोए ही जा रहा था। वह कह रहा था कि उसका अपराध क्या है? केवल इसलिए कि मैं छोटा हूँ और कमजोर हूँ, साथ ही बड़ों ने कभी नहीं टोका उन्हें; मोहन ने टोक दिया तो उसे पीट दिया। कोई बड़ा उन्हें रोकता-टोकता तो क्या वह उसके चाँटा जड़ देते? नहीं तो, परन्तु मोहन को इसलिए पीट दिया कि वह बच्चा है, छोटा है, कमजोर है। लोगों का मानना था कि इन छोटी-छोटी बातों का बतंगड़ बनाना बच्चों के लिए अच्छी बात नहीं है।

(ग) आस-पास की मुँडेरों से उभर आए चार-पाँच चेहरों ने जो देखा, उससे सम्बन्धित पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) "अजीब उजड्ड-ढीठ लड़का है।" एक पड़ोसी ने कहा।

(ii) "देखिए, आप इसे समझाएँ अगर यहाँ से दफा नहीं हुआ तो मैं इसे कोतवाली में बन्द करवा दूँगा।"

(iii) "यार, इस लड़के पर कौन-सा भूत सवार है? किसी भी तरह नहीं मानता।" इतना कहकर शर्माजी नीचे उतरे।

(iv) "कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी। कहा न भाई बड़े हैं।"

(घ) जब फरीद बाबा फाटक खोलकर भीतर गये होंगे तो उन्होंने शेरसिंह से कहा होगा कि अरे, इंस्पेक्टर साहब! सभी बच्चे मोहन के मित्र हैं। वे सब घर के फाटक पर नारेबाजी कर रहे हैं। आज गाँधी जयन्ती है। शहर में सभी लोग इधर से उधर आ-जा रहे हैं। आपके खिलाफ नारेबाजी हो रही है, अच्छी बात नहीं है। अखबार वाले छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर छापेंगे। बात का बतंगड़ हो जाएगा। अभी-अभी तो आपको तरक्की मिली है। ऐसा न हो कि तुम्हारे खिलाफ तुम्हारे अधिकारी कोई कदम उठा लें। सम्भवतः इन्हीं बातों को सुनकर शेरसिंह माफी माँगने आ गए।

भाषा अध्ययन

1. (i) खाट + इया = खटिया।

(ii) साठ + इया = सठिया।

(iii) लोटा + इया = लुटिया।

(iv) लखटका + इया = लखटकिया।

(v) लकुटी + इया = लकुटिया।

2.

ईमानदार	ईमानदारी
बेईमान	बेईमानी
कमजोर	कमजोरी
खराब	खराबी
सफेद	सफेदी
चालाक	चालाकी

3.

महात्मा	महा	+	आत्मा
धर्मात्मा	धर्म	+	आत्मा
पुण्यात्मा	पुण्य	+	आत्मा
परमात्मा	परम	+	आत्मा
पापात्मा	पाप	+	आत्मा

4. 1. स्कूल की घंटी बजी। मंदिर में घंटा बजा।

2. हम गांधी जयंती मनाते हैं। बच्चे बाल दिवस मनाते हैं।

3. प्रधान जी ने झंडा फहराया। अध्यापक ने झंडियाँ फहराईं।

4. घर में भाई आया। घर में बहन आई।

5.

पाच	पाँच	आख	आँख
डका	डंका	तख्तिया	तख्तियाँ
मुह	मुँह	गाधी	गाँधी
हसना	हँसना	मच	मंच

6. वाक्य प्रयोग—

अर्थ **वाक्य प्रयोग**

उम्र में बड़ा — राम श्याम से **बड़ा** है।

आकार में बड़ा — यह डिब्बा उस डिब्बे से **बड़ा** है।

पद में बड़ा — प्रधानाध्यापक अन्य अध्यापकों से **बड़े** हैं।

खाने की वस्तु — आज खाने में दही-**बड़े** हैं।

7. टस से मस न होना— न हिलना

वाक्य प्रयोग— धरने पर बैठे लोग **टस से मस** नहीं हुए।

पहाड़ टूट पड़ना-बड़ी मुसीबत आ जाना।

वाक्य प्रयोग— मोहन के बीमार हो जाने पर वृद्धा के ऊपर मुसीबतों का **पहाड़ टूट पड़ा**।

8. 'खाना' सहायक क्रिया वाले चार वाक्य निम्न हैं—

1. मोहन खाना खा रहा है। (भोजन-संज्ञा)
2. संदीप कुछ खा रहा है। (क्रिया)
3. विशाल खानेदार कमीज पहने हुए है। (कमीज का रंग)
4. उसने चारों खाने चित्त कर दिया। (स्थिति)

9. **बनवाया**— आज हलवाई से खोवा बनवाया।

करवाना— नेताओं ने किसानों से आन्दोलन करवाया।

सुनवाया— सुधा ने गरिमा से सुन्दर भजन सुनवाया।

धुलवाना— मालिक ने नौकर से गिलास धुलवाया।

21 सालिम अली

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. खूंखार — हिंसक, निर्दयी।

प्रेक्षण — देखने की प्रक्रिया।

पर्यवेक्षण— निगरानी।

वरिष्ठ — अपने से अधिक अनुभवी।

विलुप्त —गायब हुआ।

बुलफ्रेम— बुलफ्रेम नामक कच्ची धातु की खान।

2. **(क)** सालिम अली का पूरा नाम सालिम मुईजुद्दीन अब्दुल अली था।

(ख) चाचा ने सालिम अली का परिचय डब्लू. एस. मिलार्ड से कराया। ये "बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी" के अवैतनिक सचिव थे।

(ग) अपोलो स्ट्रीट पर "बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री" का कार्यालय था।

(घ) सालिम अली ने 'फिन बया' नामक पक्षी को खोज निकाला।

(ङ) सालिम अली को पक्षी संरक्षण के लिए 'जे. पॉल वाइल्ड लाइफ कंजर्वेशन' पुरस्कार मिला था।

(च) पाठ में उल्लिखित पुस्तकें हैं—(1) बुक ऑफ इण्डियन बर्ड्स तथा (2) हैंडबुक ऑफ द बर्ड्स ऑफ इण्डिया तथा पाकिस्तान।

3. **(क)** सालिम अली ने जिस घायल पक्षी को उठाया वह पक्षी गौरैया की तरह लगता था परन्तु उस पक्षी के गले पर पीला धब्बा था। यह देखकर सालिम अली उस पक्षी को अपने चाचा अमीरुद्दीन तैयबजी के पास ले गया और पूछा कि यह किस किस्म का पक्षी है? चाचा इस विषय में कुछ भी नहीं जानते थे। इसके लिए चाचा उस बालक को 'बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' के ऑफिस में ले गए। वहाँ डब्लू. एस. मिलार्ड ने अपनी एक दराज से मरे हुए पक्षी को उठाया। वह पक्षी बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि बालक अपने साथ लाया था। वह एक नर पक्षी था जिसको केवल वर्षा ऋतु में ही पहचाना जा सकता है। वर्षा ऋतु में उस पक्षी के गले पर पीला धब्बा उभर आता है, इसलिए उस पक्षी की पहचान करना मुश्किल था।

(ख) सालिम अली ने 'बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' में तरह-तरह के पक्षियों को देखा जिनके शरीरों में भूसा भरा था। वह यह देखकर अचम्भे में रह गया। श्री मिलार्ड ने किसी भी भारतीय वयस्क को इतने उत्साह से भरा नहीं देखा था जो पक्षियों के बारे में जानने की इच्छा रखता हो। उसने सीखना शुरू कर दिया कि पक्षियों को किस तरह पहचाना जाता है। साथ

ही उसने यह भी सीख लिया कि मरे हुए पक्षियों के शरीर में भूसा भरकर उन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है।

(ग) एक भारतीय बालक द्वारा किसी पक्षी के बारे में इस प्रकार सवाल किए जाने पर मिस्टर मिलार्ड को इसलिए आश्चर्य हुआ क्योंकि वह पहला भारतीय लड़का था जो उस घायल हुई बया पक्षी के बारे में जानने की इच्छा रखता था। मिलार्ड उसे उस कमरे में ले गए जहाँ तरह-तरह के पक्षियों को उनके शरीरों में भूसा भरकर रखा गया था। उस वयस्क सालिम अली ने इस तरह की कल्पना भी नहीं की थी कि पक्षी इतने प्रकार के होते हैं। उस लड़के ने असाधारण रूप से पक्षियों को पहचानने की कोशिश की। इन सब बातों से मिलार्ड को आश्चर्य हुआ।

(घ) सालिम अली एक पक्षी-प्रेमी थे। उनको बचपन से ही पक्षियों से लगाव था। उन्होंने कई महीनों तक बया पक्षियों का अध्ययन किया। उन्होंने स्वयं ही अनेक परीक्षण किए। उनकी एक विशेषता थी कि वे किसी भी बात को आँखें बन्द करके स्वीकार नहीं करते थे, चाहे वह बात कितने ही प्रसिद्ध व्यक्ति ने क्यों न कही हो? वे अपने पर्यवेक्षण के परिणामों को बार-बार जाँचते थे और बहुत जल्दी ही किसी परिणाम पर नहीं पहुँचते थे। अत: उनके विचारों और उनकी राय को आधिकारिक माना जाने लगा और यही उनके अन्य पक्षी-प्रेमियों से टकराव का कारण था।

(ङ) सालिम अली की पढ़ाई-लिखाई में अधिक रुचि नहीं थी। वे बीजगणित से बहुत डरते थे। उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और बर्मा (म्यांमार) चले गए। बर्मा में इनके बड़े भाई रहते थे। वे वहाँ बुलफ्रेम की माइनिंग का काम करते थे। सालिम को माइनिंग के काम में भी सफलता नहीं मिली। वे वहाँ पक्षियों की खोज करने लगे। वहाँ से लौटकर प्राणिशास्त्र में एक कोर्स कर लिया और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अजायबघर में गार्ड नियुक्त हो गए। वे अब इसका उच्च प्रशिक्षण लेने के लिए जर्मनी चले गए। लौटकर उन्होंने वर्डवाचिंग के अध्ययन के परिणाम को प्रकाशित किया, जिससे उन्हें पक्षी विज्ञान में प्रसिद्धि मिली। उन्होंने विलुप्त पक्षियों की खोज की और इस प्रकार उनकी इस प्रतिभा ने उन्हें असाधारण बनाया।

4.

(अ)	(आ)
वर्षा	ऋतु
अजायब	घर
विश्व	विद्यालय
घायल	चिड़िया
पक्षी	विज्ञानी

भाषा-अध्ययन

1. **ऑफिस**—रविवार को ऑफिस बंद हो जाता है।

   अवैतनिक—जयभगवान ने दो माह तक विद्यालय में अवैतनिक सेवा की।

   विस्मित—वह अपने पुराने मित्र को सामने देखकर विस्मित रह गया।

   वयस्क—कोई भी वयस्क मत देने का अधिकार रखता है।

   प्राणिशास्त्र—गरिमा प्राणिशास्त्र की प्रवक्ता है।

   कॉलेज—आज कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता है।

2.

शब्द		उपसर्ग		शब्द
विलुप्त	=	वि	+	लुप्त
असाधारण	=	अ	+	साधारण
सम्मान	=	सम्	+	मान
प्रशिक्षण	=	प्र	+	शिक्षण
अनुपस्थिति	=	अनु	+	उपस्थिति
उपयोग	=	उप	+	योग
सौभाग्य	=	सौ	+	भाग्य

3.

पूर्ण शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
नारीत्व	=	नारी	+	तत्व
राष्ट्रीय	=	राष्ट्र	+	ईय
भारतीय	=	भारत	+	ईय
विवाहित	=	विवाह	+	इत
पक्षीवाला	=	पक्षी	+	वाला

4.

अजायबघर	अजायब	+	घर
पक्षिविज्ञानी	पक्षी	+	विज्ञानी
महत्वपूर्ण	महत्व	+	पूर्ण
महाद्वीप	महा	+	द्वीप
महत्वाकांक्षी	महत्व	+	आकांक्षी
प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुति	+	करण
प्राणिशास्त्र	प्राणी	+	शास्त्र

5.

जो बिना वेतन लिए काम करता है।	अवैतनिक
जो मार्गदर्शन करता है।	मार्गदर्शक
जहाँ पानी के जहाज आकर खड़े होते हैं।	बन्दरगाह
जो पक्षियों से प्रेम करता है।	पक्षी-प्रेमी
पक्षियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखने वाला।	पक्षी-विज्ञानी
जो बात मुख से कही गई है।	मौखिक

22 गीता का मर्म

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. विशाल—बड़ा | वाचालता—बातूनीपन
प्रकांड—महान | पार्थ—अर्जुन
शास्त्र—पुस्तक, ग्रंथ | मर्मज्ञ—ज्ञाता
प्रयास—कोशिश | मर्म—रहस्य
मध्यस्थता—बीच-बचाव | धर्मक्षेत्र—धर्म का क्षेत्र
माहात्म्य—महत्व | प्रपंच—पाखण्ड
तारतम्य—क्रम | चित्त—मन
प्रवचन—उपदेश | युक्तियुक्त—तर्कपूर्ण
लिप्सा—लालसा
व्यापक—विस्तार, बहुत बड़ा
कुटिलता—चालाकी | धृष्टता—अशिष्टता
मन्तव्य—विचार | शमन—नाश।

2. **(क)** राजा ने मंत्रियों के समक्ष गीता का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की।
(ख) राजा की घोषणा सुनकर बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित, ज्ञानीजन उनके पास आने लगे।
(ग) गौवर्ण राजा के पास गीता का मर्म समझाने हेतु आया था।
(घ) गीता में कुल सात सौ श्लोक हैं।
(ङ) राजा के मन में आधा राज्य न देने की कुटिलता समाई हुई थी।
(च) जो स्वयं उस पर आचरण करता हो वही दूसरों को उपदेश देने का अधिकारी है।
(छ) विद्या से हममें विनम्रता आती है, मन शान्त हो जाता है, चित्त एकाग्र हो जाता है और तृष्णाओं का नाश हो जाता है।

3. **(क)** राजा आनन्द पाल ने अपने मंत्रियों से कहा कि वे 'श्रीमद्भगवद्गीता' का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। अत: पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दें कि जो भी विद्वान राजा को पूर्णरूप से गीता को समझा देगा, उसे वह (राजा) अपने राज्य का आधा हिस्सा प्रदान करेगा। मंत्रियों ने भी राजा के आदेशानुसार पूरे राज्य के समस्त नगरों तथा गाँवों में तथा राज्य के बाहर भी ढिंढोरा पिटवाकर यह घोषणा करवा दी।
(ख) गौवर्ण नाम के एक प्रकाण्ड विद्वान ने जब राजा की घोषणा सुनी तो वह गीता का मर्म समझाने हेतु राजा के पास आया और बोला कि राजन् मैं तुम्हें गीता समझाऊँगा। राजा द्वारा अनुमति प्रदान करने के उपरांत गौवर्ण ने राजा को गीता के एक-एक शब्द, पद, अक्षर व श्लोक का अर्थ व्याख्या सहित समझाया। ''धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे...'' से प्रारम्भ कर यत्र योगेश्वर: कृष्णो ''यत्र पार्थो धनुर्धर:'' तक उसने पूरे सात सौ श्लोक राजा को लगभग कण्ठस्थ करा दिए।
(ग) महायोगी ने गौवर्ण और राजा से कहा कि क्या तुम दोनों ने अपना-अपना कार्य ईमानदारी से किया। राजा ने मना किया व गौवर्ण ने हामी भरी। महायोगी विशाख गौवर्ण से बोले-"सच तो यह है कि आपने स्वयं ही गीता का मर्म नहीं समझा अन्यथा आप आधे राज्य के लोभ के कारण इस प्रपंच में नहीं पड़ते क्योंकि गीता तो निष्काम कर्म करने की शिक्षा देती है, फल प्राप्ति की आशा से कर्म करने की नहीं। राजन् ने भी अर्थ नहीं समझा है अन्यथा विद्वानों का मान-सम्मान करने वाले राजा का व्यवहार इस प्रकार का नहीं होता। वास्तव में दूसरे को उपदेश

देने का अधिकार वही रखता है जो स्वयं उसका आचरण करता हो।

(घ) अर्जुन ने इन्द्र से अपनी विद्या का उपयोग सत्य व न्याय की रक्षा करने, दुष्टों का दमन करने, असहायों की सहायता करने, नारी की रक्षा करने, निर्बल को सबल बनाने तथा धर्म की रक्षा करने के लिए कहा था। उन्होंने बताया मैंने ज्ञान कल्याण हेतु प्राप्त किया है, न कि सुख भोगने हेतु।

(ङ) अर्जुन व इंद्र के प्रसंग को सुनकर राजा आनन्दपाल के मन में हलचल मची क्योंकि उन्हें लगा कि राजा के रूप में उनका कार्य जन कल्याण होना चाहिए, राज भोग की लिप्सा नहीं। उनके मन में वैराग्य भाव जाग्रत हो गया तथा उन्होंने अपना सम्पूर्ण राजपाट गीता का मर्म सुनाने वाले पंडित गौवर्ण को देने की इच्छा व्यक्त की। अब उन्हें गीता के सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो चुकी थी और वे राज-पाट के मोह से मुक्त हो गए।

(च) इस कहानी से आज का विद्यार्थी यह सीख ग्रहण कर सकता है कि सच्ची, अर्थपूर्ण एवं आदर्श शिक्षा वही विद्यार्थी प्राप्त करता है जो शिक्षा को मात्र धनोपार्जन तथा यश प्राप्ति का साधन न मानकर उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए करता है। यदि विद्यार्थी अपने द्वारा अर्जित ज्ञान (शिक्षा) को अपने चरित्र में भी ढाल लेता है तो वह और अधिक सार्थक हो सकता है। साथ ही इस कहानी के द्वारा विद्यार्थियों को यह भी संदेश दिया गया है कि उन्हें लोभ और लालच से दूर रहना चाहिए।

4. **(क)** राजा आनन्दपाल ने अपने मंत्रियों से।

(ख) गौवर्ण ने राजा आनन्दपाल से।

(ग) गौवर्ण ने राजा आनन्दपाल से।

(घ) अर्जुन ने इन्द्र से।

(ङ) महायोगी विशाख ने राजा आनन्दपाल एवं गौवर्ण से।

भाषा अध्ययन

1. आचार्य विशाख गीता ज्ञान के <u>मर्मज्ञ</u> थे।

गाँव के मुखिया ने <u>ढिंढोरा</u> पिटवा दिया कि गाँव में एक विशाल दंगल का आयोजन होगा।

हिन्दू धर्म में अन्न दान का बहुत <u>माहात्म्य</u> बताया गया है।

पाणिनी संस्कृत के <u>प्रकाण्ड</u> विद्वान थे।

कर्ण <u>धनुर्विद्या</u> में सर्वाधिक निपुण थे।

सच्चे ज्ञान हेतु <u>स्वाध्याय</u> जरूरी है।

मनुष्य की वैभव की <u>तृष्णा</u> कभी नहीं मरती।

2. **'ता' प्रत्यय से बने शब्द—**

(i) आतुर + ता = आतुरता।

(ii) कामुक + ता = कामुकता।

(iii) दृढ़ + ता = दृढ़ता।

(iv) महान + ता = महानता।

'अ' उपसर्ग से बने शब्द—

(i) अ + नाथ = अनाथ।

(ii) अ + धर्म = अधर्म।

(iii) अ + ज्ञात = अज्ञात।

(iv) अ + ज्ञानी = अज्ञानी।

3.

समास पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
महापण्डित	महान है जो पण्डित	कर्मधारय समास
मान-सम्मान	मान और सम्मान	द्वन्द्व समास
यथोचित	यथा उचित	अव्ययीभाव समास
लोभवश	लोभ के वश	तत्पुरुष समास
महाराज	महान् है जो राजा	कर्मधारय समास
देवलोक	देवों का लोक	तत्पुरुष समास
तपोनिधि	तप की निधि	तत्पुरुष समास

4.

शब्द	**सन्धि विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
सम्मान	सम् + मान	व्यंजन सन्धि
स्वागत	सु + आगत	स्वर सन्धि
उत्थान	उत् + थान	व्यंजन सन्धि
निराशा	निः + आशा	विसर्ग सन्धि
परोपकार	पर + उपकार	स्वर सन्धि

5.

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
राजा	भूपाल, नृप, भूपति
इन्द्र	देवराज, सुरेन्द्र, सुरपति
नारी	औरत, महिला, वनिता
धनुष	धनु, शरासन, चाप

6. (क) 1. उसने मुझे कुछ नहीं बताया।
2. वह मेरे लिए कुछ नहीं लाता।
(ख) 1. व्यर्थ मत बैठो।
2. गलत राह मत चलो।
(ग) 1. जानबूझकर गलती न करें।
2. गलत लोगों की संगति न करें।

7. (क) विस्मयादिबोधक वाक्य
(ख) प्रश्नवाचक वाक्य
(ग) इच्छाबोधक वाक्य
(घ) आज्ञार्थक वाक्य
(ङ) संदेहसूचक वाक्य

22 महान विभूति : दानवीर डॉ. सर हरिसिंह गौर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. अभाव—कमी।
अक्षय—अनश्वर।
अद्वितीय—अतुल्य, अकेला।
अर्जित—कमाया हुआ।
विभूति—शक्ति, सम्पन्नता।
विधिवेत्ता—विधि विशेषज्ञ, कानून का जानकार।
रूढ़िग्रस्त—परम्परा से बँधी हुई।

2.

डॉ. हरिसिंह की गौरव गाथा	प्रेरणादायिनी
विश्वविद्यालय की स्थापना	डॉ. हरिसिंह गौर
डॉ. हरिसिंह गौर की पत्नी	ओलरिया
भामाशाह ने संचित धन दिया	राणा प्रताप को

3. **(क)** डॉ. हरिसिंह गौर का जन्म 26 जनवरी, सन् 1870 ई. में शनीचरी टौरी, सागर (म.प्र.) में हुआ।

(ख) डॉ. गौर सन् 1921 ई. से सन् 1936 ई. तक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति रहे। इसके बाद दो वर्ष तक वे नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे।

(ग) डॉ. गौर को शिक्षा के क्षेत्र में 'सर' की उपाधि से जनवरी, सन् 1925 में अंग्रेज सरकार ने विभूषित किया।

(घ) उन्होंने सेण्ट्रल प्रॉविंस कमीशन में अतिरिक्त सहायक आयुक्त के पद से त्यागपत्र दिया था।

(ङ) सागर विश्वविद्यालय की स्थापना 18 जुलाई, सन् 1946 को सागर नगर के निकट मकरोनिया की पथरिया पहाड़ी पर डॉ. हरिसिंह गौर ने हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में शिक्षा से वंचित लोगों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की।

4. **(क)** डॉ. गौर का प्रारंभिक जीवन अभावों में बीता। माँ ने बड़े संघर्ष के साथ उनका पालन-पोषण किया था। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा सागर में और इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा पहले जबलपुर, बाद में नागपुर में पूरी की। आगे की शिक्षा के लिए उन्होंने नागपुर के हिसलप कॉलेज में प्रवेश लिया। उस समय वे अंग्रेजी और अर्थशास्त्र में ऑनर्स करने वाले प्रथम छात्र थे। अठारह वर्ष की आयु में वे इंग्लैण्ड चले गए, जहाँ उन्होंने डाउनिंग कॉलेज और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में एम.ए. और कानून की उपाधि प्राप्त की।

(ख) डॉ. गौर विधिवेत्ता, प्रसिद्ध अधिवक्ता और दानवीर के रूप में अविस्मरणीय विभूति थे। वे अपूर्व बुद्धि और अद्भुत वाक् चातुर्य वाले अधिवेत्ता थे। उनकी अद्वितीय प्रतिभा, मौलिक सूझबूझ, तीव्र स्मरण शक्ति उनके प्रत्येक शब्द में आत्मविश्वास के साथ झलकती थी। न्यायालय में उनका परिवाद प्रस्तुत करने का ढंग ओजस्वी और रोचक था। इसीलिए उनको सफल अधिवक्ता के रूप में जाना जाता है।

(ग) जिस प्रकार राष्ट्रहित के लिए भामाशाह ने अपना संचित धन महाराणा प्रताप को सहर्ष सौंप दिया था, उसी प्रकार डॉ. हरिसिंह गौर ने परिश्रमपूर्वक अर्जित धन विश्वविद्यालय स्थापना के लिए दान कर दिया। इस कार्य हेतु उन्होंने आरम्भ में बीस लाख रुपये दान किए। 18 जुलाई, सन् 1946 ई. को सागर नगर के निकट मकरोनिया की पथरिया पहाड़ी पर हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में सागर विश्वविद्यालय की विधिवत स्थापना करवाई। डॉ. गौर ने इस विश्वविद्यालय में प्रथम कुलपति का पद भी सुशोभित किया। उन्होंने अपनी अन्तिम साँस लेने से पूर्व अपनी जीवन भर की गाढ़ी कमाई में से लगभग दो करोड़ रुपये की धन-सम्पत्ति सागर विश्वविद्यालय को समर्पित कर दी। अत: राष्ट्रहित में किये गये अपने कार्य हेतु डॉ. गौर भामाशाह कहलाए।

(घ) डॉ. गौर सन् 1921 ई. से सन् 1936 ई. तक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति रहे। इसके बाद दो वर्ष तक उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति का पद सँभाला। उन्हें दिल्ली एवं नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट. की मानद् उपाधि से सम्मानित किया गया। डॉ. गौर ने 18 जुलाई, सन् 1946 ई. को सागर विश्वविद्यालय की विधिवत् स्थापना की। डॉ. गौर ने इस विश्वविद्यालय में प्रथम कुलपति के रूप में पदभार सँभाला।

उनका अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार था। उन्होंने 'भारतीय दण्ड संहिता की तुलनात्मक विवेचना' और 'हिन्दू लॉ' पर पुस्तकें लिखीं जो आज भी विधि की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों में गिनी जाती हैं। उनके विधि क्षेत्र में अर्जित व्यापक अनुभव को देखते हुए उन्हें भारतीय संविधान सभा का उप सभापति भी चुना गया था।

5. डॉ. गौर का बचपन बड़े अभावों से गुजरा किन्तु अपने कठिन तप से उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल स्थान प्राप्त किया। अठारह वर्ष की आयु में वे इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ उन्होंने डाउनिंग कॉलेज और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.एम. और कानून की उपाधि प्राप्त की। इस प्रकार माँ सरस्वती की महान अनुकम्पा से शिक्षा जगत में महान ख्याति अर्जित की। उन्हेंने परिश्रमपूर्वक धन अर्जित किया जिसको उन्होंने राष्ट्रहित में सागर विश्वविद्यालय की स्थापना में लगाया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने उनकी दानवृत्ति को देखकर बहुत ही सटीक कहा—

"सरस्वती लक्ष्मी दोनों ने दिया,
तुम्हें सादर जय पत्र।
साक्षी है हरिसिंह तुम्हारा,
ज्ञान-दान का अक्षय सत्र।

भाषा अध्ययन

1. **शिक्षाविद्**— डॉ. हरिसिंह गौर देश के महान शिक्षाविद् रहे।

विभूति— डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भारत की महान विभूति हैं।

अधिवक्ता— हरिसिंह गौर भारत के कुशल अधिवक्ता थे।

औपचारिक— आज हमारे कक्षाकार्य में हमें औपचारिक पत्र लिखाया गया।

2.

समस्तपद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
लालन-पालन	लालन और पालन	द्वन्द्व समास
कानून-शिक्षा	कानून की शिक्षा	तत्पुरुष समास
सरस्वती-लक्ष्मी	सरस्वती और लक्ष्मी	द्वन्द्व समास
सांध्य-वेला	सांध्य की वेला	तत्पुरुष समास
देश-विदेश	देश और विदेश	द्वन्द्व समास

3.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
अक्षय	अ	क्षय	—
उपकुलपति	उप	कुलपति	—
सपूत	स	पूत	—
सहर्ष	स	हर्ष	—
सफलता	—	सफल	ता
दूरदर्शिता	—	दूरदर्शी	ता
ऐतिहासिक	—	इतिहास	इक
कार्यक्षमता	—	कार्य	क्षमता

4.

वाक्य	**शब्द**
वकालत करने वाला	वकील
जो थोड़ा जानता है	अल्पज्ञ
जो कभी न हो सके	असम्भव
जिसके आर-पार देखा जा सके	पारदर्शी
विद्या अध्ययन करने वाला	विद्यार्थी

5. **झण्डा गाड़ देना**— अधिकार जमा लेना।

वाक्य प्रयोग—भारत ने ओलंपिक विश्वकप में जीत का झण्डा गाड़ दिया।

लोहा मानना— प्रभुत्व स्वीकार करना।

वाक्य प्रयोग—भारतीय सैनिकों की वीरता का शत्रु लोहा मानते हैं।

घी के दिए जलाना— खुशियाँ मनाना।

वाक्य प्रयोग—राम के अयोध्या आगमन पर लोगों ने घर में घी के दीये जलाए।

आँख का तारा होना— बहुत प्रिय होना

वाक्य प्रयोग—राघव अपने माता-पिता की आँख का तारा है।

6. **(क)** उपयुक्त शीर्षक है—'समय का महत्व'।
   (ख) आलस्य।
   (ग) समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति।
   (घ) समय का सदुपयोग उद्यमी और कर्मठ व्यक्ति कर सकता है।

24 महर्षि परशुराम

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न

1. पौराणिक — पुराण संबंधी।
   प्रपितामह — परदादा।
   अस्त्र — फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।
   संस्थापक — स्थापना करने वाला।
   सनातन — शाश्वत।
   चिरंजीवी — अमर।
   चिरस्मरणीय — लंबे समय तक याद रखा जाने वाला।
   अक्षय — अविनाशी।
   पितामह — दादा।
   शस्त्र — हाथ में लेकर चलाए जाने वाला हथियार।
   बलिष्ठ — बलवान।
   भार्गव — भृगु।
   अपराजेय — अपराजित।
   दिव्यास्त्र — दैवीय अस्त्र।
2. **(क)** महर्षि परशुराम का जन्म त्रेतायुग में बैशाख शुक्ल तृतीया को मध्यप्रदेश के इन्दौर के निकट 'जनापाव' पर्वत पर हुआ।
   (ख) महर्षि परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका थी।
   (ग) बालक परशुराम ने भगवान शिव से शिक्षा प्राप्त की थी।
   (घ) महर्षि परशुराम ने द्वापर युग में देवव्रत (भीष्म), द्रोण (द्रोणाचार्य), कर्ण आदि को शस्त्र विद्या सिखाई थी।
   (ङ) महर्षि परशुराम में शस्त्र और शास्त्र दोनों के ही गुण विद्यमान थे।
   (च) आत्मरक्षा और सामाजिक सुख-संरक्षण के लिए शस्त्र और शास्त्र का समन्वय आवश्यक है।
   (छ) महर्षि परशुराम धरती पर वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। वे समाज में दुष्ट प्रवृत्तियों का शमन कर विश्व में 'अमन-शान्ति' लाना चाहते थे। उन्होंने सामाजिक उत्थान के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों को धारण किया।
   (ज) केरल भगवान परशुराम की कर्मभूमि मानी जाती है। यहाँ पर उन्होंने समुद्र में अपना परशु फेंककर जो भूमि ग्रहण की उसे वर्तमान में केरल के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश में भी उन्होंने परशुराम कुण्ड निर्मित किया, जिसे 'प्रभु कुठार' के नाम से जाना जाता है।
3. (क) ऋचीक (ख) भार्गव
   (ग) विद्युद्भि (घ) प्रभु कुठार
4. 1. (अ) नर्मदा नदी के तट पर।
   2. (ब) त्रेता।

भाषा-अध्ययन

1. **कथा**— पंडित जी ने सत्यनारायण की सुन्दर कथा कही।
   अस्त्र-शस्त्र— श्रीकृष्ण ने भीष्म पितामह से अस्त्र-शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की।
   आचार्य— गुरु द्रोण कौरव-पाण्डवों के आचार्य थे।
   आराध्य— भगवान शिव परशुराम के आराध्य थे।
   प्रकृति— परिवर्तन प्रकृति का नियम है।
2. **विशेषण शब्द**— आदर्श, बलिष्ठ, वीर, महान।
3.

तत्सम	तद्भव
परशु	फरसा
गौ	गाय
मातृ	माता
पितृ	पिता
मनुष्य	मानुष

4.

शब्द	सन्धि विच्छेद
द्रोणाचार्य	द्रोण + आचार्य
दिव्यास्त्र	दिव्य + अस्त्र
महर्षि	महा + ऋषि

5. योजक चिह्न वाले शब्द—

ताना-बाना	युग-युग
शास्त्र-ज्ञान	शस्त्र-सिद्धि
शस्त्र-शास्त्र	साथ-साथ
माता-पिता	पशु-पक्षियों
शस्त्र-शक्ति	शस्त्र-प्रयोग
धर्म-ग्रन्थों	चिरंजीवी-चिरस्मरणीय

विविध प्रश्नावली-3

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. महेश्वर — नर्मदा
धर्मरथ — भगवान राम
नव संवत्सर — विक्रम संवत
वसीयतनामा — जायदाद
पथिक — पथ

2. 1. (ख) हास्य
2. (ख) अरण्य
3. (ग) 365 1/4 दिन
4. (ख) ऐतिहासिक

3. 1. विक्रम   2. मान्धाता
3. धर्मरथ   4. क्रोध
5. पक्का।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. धर्मरथ के चार घोड़े हैं— विवेक, दम, परहित तथा क्षमा।

2. महेश्वर पर मौर्य, सातवाहन और गुप्तकालीन सभ्यताओं का प्रभाव पड़ा है।

3. 'बुक ऑफ इण्डियन बर्ड्स' पुस्तक के लेखक सालिम अली हैं।

4. मोहन ने गाँधीजी के कथन—"अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है।" पर चलने का प्रयास किया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रावण लंका का शक्तिशाली राजा था। उसकी सेना विशाल और सभी प्रकार के हथियार आदि से सुसज्जित थी। स्वयं रावण भी विद्वान एवं ज्ञानी था, परन्तु उसने सीताजी का हरण किया तथा राम से बैर करने के कारण युद्ध में मारा गया। इसका एकमात्र कारण था—उसमें घमण्ड और अभिमान की अधिकता। रावण में सत्य-शील, यम-नियम, दम, दया आदि का सर्वथा अभाव था।

2. भारतवर्ष में तलवार के अनेक पराक्रमी वीर हुए हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने पराक्रम को तलवार के द्वारा प्रदर्शित किया। इनमें महाराज शिवाजी और महाराणा प्रताप आदि के नाम प्रसिद्ध हैं।

3. उत्तर भारतीय माह का आरम्भ कृष्ण-पक्ष प्रतिपदा से होता है और पूर्णिमा से अन्त होता है, अत: इसे पूर्णिमान्त कहते हैं; परन्तु दक्षिण भारत में माह का आरम्भ शुक्ल-पक्ष प्रतिपदा से होता है और अमावस्या को अन्त होता है, अत: इसे अमान्त कहते हैं।

4. शरद ऋतु में आश्विन महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक का समय शारदीय नवरात्रि का होता है जबकि बासन्तीय नवरात्रि का समय चैत्र मास की शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक का माना गया है।

5. सुन्दरता की मृगतृष्णा का पता दूर्वादल, सरिता और सरोवरों, पर्वतों, वनों तथा बावड़ियों एवं सुन्दर झरनों के मनोहारी दृश्यों को देखने से चलता है।

6. वसीयतनामे के न्याय को जाते समय मिली युवती ने राजा को अन्धा इसलिए कहा क्योंकि वह लड़की कोई साधारण लड़की नहीं थी बल्कि राजा की बहन थी जो जवान हो गयी थी। वह विवाह करना चाहती थी, परन्तु उसके विवाह के लिए राजा किसी 'वर' की खोज नहीं कर पा रहा था।

7. शेरसिंह ने मोहन पर अकारण ही हाथ उठाकर उस पर अत्याचार किया था। अपने इसी व्यवहार के लिए उसने मोहन और बच्चों से शर्मिंदगी व्यक्त की।

8.

शब्द	विलोम
प्रथम	अन्तिम
सफलता	असफलता
अनुराग	विराग
माँग	पूर्ति
सम्मुख	विमुख

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. रचनाकार हमें धर्मरथ के माध्यम से यह शिक्षा देना चाहता है कि बाह्य और आन्तरिक शत्रु को सद्गुणों रूपी धर्मरथ पर आरूढ़ होकर जीता जाता है। हमारे अन्दर शौर्य, धैर्य, सत्य और शील के क्रमश: दो पहिए एवं ध्वजा-पताकाएँ हैं। रथ को खींचने वाले चार घोड़े-बल, विवेक, यम और परोपकार होते हैं। इनको क्षमा, दया, समता की रस्सी से जोता जाता है जहाँ ईश्वर का भजन ही श्रेष्ठ ज्ञान व सम्पन्न सारथी है। संसार युद्ध में प्रयुक्त हथियार (ढाल, तलवार, फरसा, शक्ति, धनुष) के रूप में हमें वैराग्य, सन्तोष, दान, बुद्धि तथा श्रेष्ठ विज्ञान का प्रयोग करना होता है। तरकशरूपी निर्मल और अडिग मन तथा यम-नियम और संयम के बाण; ब्राह्मणों तथा गुरु की पूजा कवच होते हैं, तभी हमें अपने बाहरी और आन्तरिक शत्रुओं पर विजय मिलती है।
2. गुड़ी पड़वा के दिन श्रीरामचन्द्रजी ने किष्किंधा के राजा बाली का वध करके उसके स्वेच्छाचारी राज का अन्त किया था। बाली वध के पश्चात् वहाँ की प्रजा ने पताकाएँ फहराकर उत्सव मनाया था। इन पताकाओं को महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा कहते हैं। आजकल वहाँ आँगन में बाँस के सहारे गुड़ी खड़ी की जाती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा कहते हैं।
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' पथिक से कहना चाहते हैं कि उसे अपने लक्ष्य-मार्ग से कहीं भी भटकना नहीं चाहिए। वे उसे समझते हैं कि मार्ग में कठिनाइयों-बाधाओं के काँटे आ सकते हैं; अनेक सौन्दर्यपूर्ण दृश्य उसे प्रलोभित कर सकते हैं, लेकिन वे वास्तविक रूप से वैसे नहीं हैं जो दिखते हैं। उनकी सुन्दरता मृगतृष्णा के समान है जो भ्रम उत्पन्न करके लक्ष्य मार्ग से विमुख करने वाली है किन्तु अपने कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ना ही तुम्हारा उद्‌देश्य होना चाहिए।
4. **रूपक अलंकार**—जहाँ उपमेय और उपमान का अभेद वर्ण हो वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात् जब उपमेय को उपमान का रूप दे दिया जाता है, तो वहाँ रूपक अलंकार होता है।
उदाहरण- मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
इन पंक्तियों में 'चन्द्र खिलौना' उपमेय और उपमान हैं। इनमें अभेद आरोप प्रस्तुत किया गया है, अत: यहाँ रूपक अलंकार है।
5. हम भारतीयों ने कभी भी अपने देश की सीमा को विस्तृत करना नहीं चाहा है। हमने किसी अन्य देश की धन-सम्पत्ति पर अपना कब्जा जमाने की इच्छा भी नहीं रखी है। परन्तु हम अपने प्रिय राष्ट्र (भारत) की जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं देंगे। यदि किसी लालच भरी दृष्टि वाले देश ने इस पर आक्रमण करने की अथवा हमारे देश की आजादी को कुचलने की कोशिश भी की तो तत्काल ही विनाश की आग फूट पड़ेगी। यद्यपि हम तो सदैव से शान्ति दूत रहे हैं।
6. पंक्ति में 'राधा का मुख' उपमेय है।
पंक्ति में 'कमल' उपमान है।
मानो, समान, अति सुन्दर वाचक शब्द हैं।
पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार 'उत्प्रेक्षा' है।
7. **उक्त पाठ वर्तमान में पाठ्य-पुस्तक से हटा दिया गया है।**
8. 'नन्हा सत्याग्रही' पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमको कभी भी अन्याय और अत्याचार चुपचाप सहन नहीं करना चाहिए बल्कि उसके विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए। यदि उसके लिए संघर्ष भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए क्योंकि जुल्म को सहन करना उसे बढ़ावा देना है।
9. (क) जब कठिन कर्म पगडंडी पर,
राही का मन उन्मन होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्त्तव्य मार्ग सम्मुख होगा।
तब अपनी प्रथम विफलता में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
(ख) अपने भी विमुख पराये बन,
आँखों के सम्मुख आएँगे।
पग-पग पर घोर निराशा के,
काले बादल छा जाएँगे।
तब अपने एकाकीपन में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
10. 'वसीयतनामे का रहस्य' कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मन में लालच का विचार लाने वाला व्यक्ति भी अपराध का भागी होता है।
11. रेडक्रॉस संस्था के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं—
(i) युद्धकाल में घायल एवं बीमार सैनिकों को चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराना।
(ii) जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा करना।
(iii) मातृत्व एवं शिशु की देखभाल करना।

(iv) विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण विस्थापित लोगों की सहायता करना।

(v) विभिन्न देशों के मध्य शान्ति की स्थापना करना एवं उसे बनाये रखना।

12. 1. गुरु की आज्ञा मानने का सन्देश विद्यालय में मिलता है।

2. विद्यालय — विद्या + आलय।
निष्कपट — निः + कपट।
निस्वार्थ — निः + स्वार्थ।

3. यथाशक्ति, कार्यशाला, राष्ट्रधर्म।

4. विद्यालय में छात्र संस्कारित शिक्षा, निस्वार्थ सेवाभाव एवं राष्ट्रप्रेम सीखते हैं।

अभ्यास प्रश्न-पत्र (हिन्दी कक्षा-8)

1. (अ) (क) नर्मदा।

(आ) (ग) हिन्दुस्तान की तलवार से

(इ) (ग) ब्रह्मचर्य

(ई) (ख) सत्य + आग्रह

2. (अ) कुसुमपुर

(आ) सूर्य

(इ) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(ई) स्वर्णयुग

(उ) आस्तिक

3. (अ) ग्रामीण

(आ) विचार-खयाल, हस्तक्षेप-दखल।

(इ) नारी + त्व - नारीत्व, पुरुष + त्व - पुरुषत्व।

(ई) सुंदर नारी, शीतल जल

(उ) जान पड़ता है नेत्र देख बड़े-बड़े हीरकों में गोल नीलम हैं जड़े।

(ऊ) पण्डित-पण्डिताइन, आत्मज-आत्मजा, तरुणी-तरुण, पत्नी-पति।

(ए) वीभत्स रस का।

(ऐ) बलाघात

4- (अ) 'बाम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसायटी' में सालिम अली को रोचक, सुखद एवं आश्चर्यपूर्ण अनुभव प्राप्त हुए। वहाँ उन्होंने प्रोफेसर मिलार्ड के सान्निध्य में तरह-तरह के पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। पक्षियों की इसी परख ने उन्हें एक महान पक्षी विज्ञानी बना दिया।

(आ) जब संगीत समाज के लिए एक प्रेरणादायक स्रोत बन जाए, तब संगीत का महत्व बढ़ जाता है। क्योंकि संगीत से मिली वह प्रेरणा समाज को नया बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती है। जिससे समाज में व्याप्त बुराइयाँ व कुरीतियाँ समाप्त हो सकें एवं लोगों में नई चेतना व ऊर्जा का संचार हो।

(इ) कारकों के चिह्न (परसर्ग) निम्न हैं-

	कारक	चिह्न (परसर्ग)
1.	कर्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से (के द्वारा)
4.	संप्रदान	के लिए (को)
5.	अपादान	से (पृथक होने पर)
6.	सम्बंध	का, की, के, रा, री, रे
7.	अधिकरण	में, पे, पर
8.	संबोधन	हे!, ओ!, अरे!

(ई) मोहन पढ़ने में चतुर है और वह गाना भी गाता है।

(उ) 'वसीयतनामे का रहस्य' कहानी में बूढ़े किसान की दूरदर्शिता एवं राजा की न्याय कुशलता का वर्णन है। बूढ़े किसान ने अपनी मृत्यु के समय संपत्ति के तीन हिस्से किए जबकि उसके चार पुत्र थे। लोग इस घटना से अचंभित हुए। बूढ़े किसान ने मरने से पहले यह भी कहा था कि "जो मेरी संपत्ति का वसीयत के अनुसार बँटवारा कर देगा, उसी से मेरी बेटी का विवाह होगा।" एक दिन चारों भाई तथा गाँव के लोग इस घटना को लेकर राजा के पास पहुँचे तथा उनसे न्याय की गुहार लगाई। राजा ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए, सभी भाइयों को अलग-अलग कमरों में बंद कर दिया। उन्हें एक तलवार देकर एवं संपत्ति का लालच देकर एक-दूसरे की हत्या के लिए उकसाया। तीन भाई इस तरह के लालच में नहीं आए किन्तु चौथा भाई स्वार्थवश शेष तीन भाइयों की हत्या के लिए तैयार हो गया। इस प्रकार राजा ने वसीयत के असली हकदारों की पहचान कर ली। शर्त के अनुसार उन तीनों भाइयों ने अपनी सुंदर बहिन का विवाह राजा के साथ कर दिया।

(ऊ) (i) मेरा स्वराज्य

(ii) स्वराज्य का ध्येय अपनी सभ्यता की विशेषता को अक्षुण्ण बनाए रखना है।

(iii) ऐसा तभी कहा जा सकेगा, जब जनता यह अनुभव करने लगेगी कि उसे अपनी उन्नति करने तथा रास्ते पर चलने की आजादी है।

5. (अ) 172, पटेल नगर,
ग्वालियर
दिनांक 20/07/20--
सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक जी,
रा. उ. प्रा. विद्यालय, ग्वालियर
विषय-तीन दिवस के अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मेरे मामाजी का परिवार हमारे यहाँ आया हुआ है। हम सभी ने मिलकर साँची घूमने की योजना बनाई है, जिससे साँची के प्रसिद्ध स्तूप को भी देख पाएँ। अत: मुझे 21 जुलाई, 20-- से 23 जुलाई, 20-- तक दिन दिवस का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अभिषेक शर्मा
कक्षा-8 'ब'

अथवा

विद्याभवन, जयपुर
दिनांक 16 नवम्बर, 20--
आदरणीय माताजी,
सप्रेम नमस्ते! मैं यहाँ सकुशल हूँ। उम्मीद है आप भी कुशल होंगी। दो दिन पहले 14 नवम्बर को हमारे विद्यालय में बालदिवस मनाया गया। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम हुए। मैंने भाषण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। हम सबने भरपूर आनंद लिया तथा बाल दिवस के महत्व को भी जाना। पिताजी को प्रणाम व छुटकी को प्यार।
आपकी पुत्री
शैलजा कुमारी
कक्षा-8 'स'

(आ) (1) गणतंत्र दिवस

विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के व्याकरण (रचना) में पृष्ठ 255 पर निबंध क्रमांक 5 'गणतंत्र दिवस' देखें।

(2) तुलसीदास

प्रस्तावना—हिन्दी में जिन महान कवियों ने अपनी वाणी को समाज की मंगल साधना का लक्ष्य बनाया उनमें महाकवि तुलसीदास का स्थान विशिष्ट है। जिस कवि ने घोर संकट, संताप और तिरस्कार से हताश भारतीय समाज को आशा और आत्मविश्वास के उद्घोष से जनजीवन प्रदान किया, उसके प्रति मेरी विशेष आस्था होना स्वाभाविक है।

तुलसी का जीवन—रामाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं सन्त, तुलसीदास जी की जन्मतिथि और जन्मस्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। सामान्यत: उनका जन्म 1532 ई. में हुआ माना जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार इनका जन्म संवत् 1554 (1497 ई.) में श्रावण शुक्ल की सप्तमी के दिन हुआ था। तुलसी के जन्म-स्थान के विषय में भी कई मत प्रचलित हैं। इनमें दो मत प्रमुख हैं—उत्तर प्रदेश में बाँदा जिले का राजापुर ग्राम। एटा जिले का सोरों नामक स्थान। एक किंवदन्ती के अनुसार जब ये उत्पन्न हुए थे तभी इनके मुख में दाँत थे। इनके बचपन का नाम रामबोला था इनके पिता का नमा आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इन्हें बचपन में ही माता-पिता ने त्याग दिया था, अत: ये भीख माँगकर पेट भरते रहे।

जन्मकाल की परिस्थितियाँ—तुलसी का जन्म विषम परिस्थितियों में हुआ। हिन्दू समाज अशक्त होकर विदेशी चंगुल में फँस चुका था। हिन्दू समाज की संस्कृति और सभ्यता पर निरन्तर आघात हो रहे थे। कहीं पर कोई उचित आदर्श नहीं था। इस युग में मन्दिरों का विध्वंस और ग्रामों व नगरों का विनाश हो रहा था। संस्कार

समाप्त हो रहे थे। तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। सर्वत्र धार्मिक विषमता व्याप्त थी।

तुलसीदास जी का कृतित्व—तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ— 1.रामलला नहछू, 2. वैराग्य संदीपनी, 3. रामाज्ञा-प्रश्न, 4. जानकी-मंगल 5. श्रीरामचरितमानस-इस विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ में कवि ने मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का व्यापक वर्णन किया है। 6. पार्वती-मंगल 7. गीतावली, विनय-पत्रिका आदि हैं।

तुलसीदास : एक लोकनायक— हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का कथन है—"लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की संस्कृतियाँ, जातियाँ और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। इस दृष्टि से तुलसीदास एक महान लोकनायक थे।

उपसंहार—तुलसी ने अपने युग और भविष्य, स्वदेश और विश्व, व्यष्टि और समष्टि सभी के लिए महत्वपूर्ण सामग्री दी है। तुलसी को आधुनिक दृष्टि ही नहीं, हर युग की दृष्टि मूल्यवान मानेगी। मणि की चमक अन्दर से आती है, बाहर से नहीं।

(3) कम्प्यूटर का उपयोग व महत्व

प्रस्तावना—पूरे मानव समाज के लिये विज्ञान का अनोखा और पथप्रदर्शन करने वाला उपहार है कम्प्यूटर। अपनी सुगमता और कार्य-क्षमता के कारण इसका प्रयोग व्यापक तौर पर होता है जैसे—ऑफिस, बैंक, होटल, शिक्षण संस्थान, स्कूल कॉलेज, दुकान, उद्योग आदि।

कम्प्यूटर क्या है?— यह एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो गणना करने तथा बड़ी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष है। यह हमारे कौशल को बढ़ाने में और आसानी से जानकारी प्राप्त करने में भी हमारी मदद करता है। यह एक डेटा आधारित मशीन है। यह हमें कई सारे टूल्स उपलब्ध कराता है जैसे—टेक्स्ट टूल्स, पेंट टूल्स आदि जो बच्चों के लिये बहुत फायदेमंद है और विद्यार्थी इसे अपने स्कूली तथा प्रोजेक्ट कार्यों में काफी प्रभावपूर्ण रूप में उपयोग कर सकते हैं। यह एक बड़ा शब्दकोश और बड़ा स्टोरेज डिवाइस है जो किसी भी तरह के डेटा को सुरक्षित रखने के लिये उपयुक्त है।

कम्प्यूटर का महत्व—कार्य स्थल, शिक्षा के क्षेत्र में तथा निजी उपयोग के लिए कम्प्यूटर का बहुत ही महत्व है। पुराने समय में हम सारे काम अपने हाथ से करते थे लेकिन आज खातों के प्रबंधन, डेटाबेस बनाने, आवश्यक जानकारी संग्रहीत करने जैसी विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कम्प्यूटर का उपयोग किया जाता है। हम इसका प्रयोग बड़े और छोटे गणितीय गणनाओं के लिये सटीक ढंग से कर सकते हैं। इसका उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, किताब, न्यूज पेपर, डाइग्नोजिंग आदि के लिये किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन रेलवे आरक्षण, होटल या रेस्टोरेंट की बुकिंग के लिये किया जाता है।

उपसंहार—आजकल हर कोई इंटरनेट के जरिये कम्प्यूटर पर काम करना आसान मानता है। वास्तव में आज के समय कम्प्यूटर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

(4) मेरा प्रिय शिक्षक

विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के व्याकरण (रचना) भाग में पृष्ठ संख्या 256 निबंध क्रमांक 6 'मेरे प्रिय शिक्षक' देखें।

6. **(अ) प्रसंग**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' कक्षा-8 के पाठ-13 'न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है' पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत पद्यांश में कवि हमारे देश के धैर्य व शौर्य का परिचय दे रहा है।

भावार्थ—हम सदा शान्ति का संदेश देते आए हैं। इसका मतलब यह नहीं कि हम अहिंसा का आचरण अपनाकर वीरता का त्याग कर देंगे और कायर बन जाएँगे। इसका मतलब यह भी नहीं है कि हम अपने देश की नारी (बहनों-माताओं) का अपमान सह लेंगे। सभी को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि जब धरती पर पैरों के नीचे

दबी-कुचली, लाचार अवस्था में सोई हुई धूल भी पैरों की ठोकर खाने पर आकाश में उमड़कर चारों तरफ छा जाती है तो इंसान अपमानित होकर कैसे चुप बैठ सकता है।

अथवा

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा भारती' कक्षा-8 के पाठ-1 'वर दे' से लिया गया है। इसमें कवि हम सबको परतंत्रता व अज्ञानता से मुक्त होने की प्रेरणा देता है।

भावार्थ—मनुष्यमात्र के अज्ञानता से भरे हृदय के सभी बंधनों को काट दीजिए और उनके हृदयों में ज्ञान का ज्योतिरूपी झरना बहा दीजिए। मन के अन्दर जितने भी क्लेशरूपी दोष और अज्ञानता के विकार हैं, उनको दूर कर दीजिए तथा ज्ञान का प्रकाश भर दीजिए। इस प्रकार सम्पूर्ण संसार को जगमगा दीजिए।

(आ) प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'भाषा-भारती' के पाठ-3 'मध्यप्रदेश की संगीत विरासत' से लिया गया है। इसमें लेखक समाज में संगीत के महत्व को बताता है।

भावार्थ—संगीत हमारे ऋषि-मुनियों और साधकों की हजारों वर्ष पुरानी तपस्या व अभ्यास का प्रतिफल है। कहा जाता है कि शोक के स्वर से श्लोक बना यानि जब व्यक्ति ने पहली बार अपनी व्याकुलता को स्वर के माध्यम से अभिव्यक्त किया तो संगीत का जन्म हुआ। समय व परिस्थिति के अनुसार संगीत का निरंतर विकास होता गया। संगीत एक कला है, जिस समाज में यह कला उपस्थित नहीं होती वह समाज असभ्य आचरण वाला व अव्यवस्थित बन जाता है।

अथवा

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक भाषा-भारती के पाठ-7 'भेड़ाघाट' से ली गई हैं। इनमें लेखक नर्मदा नदी के किनारे स्थित पहाड़ियों के अनोखे सौंदर्य का वर्णन करता है।

व्याख्या—नर्मदा के किनारे की चट्टानें अद्भुत, विशाल व आकर्षक हैं। उनकी सुंदरता प्रकृति के अनुरूप ढलती रहती है। रात को जब चाँद निकलता है तो ये पहाड़ियाँ चाँदी जैसी धवल व उज्ज्वल हो जाती हैं। दिन के समय सूरज की तेज धूप से पीली दिखाई देने लगती हैं।

●●